पहिला बयान

जहाज पर की घटना

"वाह क्या बात है," काउन्टेस डी. कूड ने दबी जुबान से कहा।

"हैं ?" काउन्ट ने अपनी युवती स्त्री की तरफ घूमते हुये पूछा, "किसकी तारीफ हो रही है ?" वे इधर उधर नजर दौड़ा कर देखने लगे कि कौन चीज ऐसी हो सकती है जिसे देख कर उनकी स्त्री आश्चर्य में आ गई हो।

"नहीं, कुछ नहीं," काउन्टेस ने हिचकिचाहट के साथ कहा और साथ ही उनके गुलाबी गालों पर गहरा रंग दौड़ गया, "मुझे न्यूयार्क के वे बड़े ऊंचे ऊंचे मकान याद आ गये।" इतना कह कर खूबसूरत काउन्टेस ने झुक कर वह किताब उठा ली जो 'कुछ नहीं' ने उनके हाथ से छुटा के जमीन पर गिरा दी थी और फिर आराम से डासना लगा कर स्टीमर की कुर्सी पर बैठ गईं।

काउन्ट महोदय फिर अपनी किताब पढ़ने लगे, लेकिन इस बात का आश्चर्य उन्हें जरूर हुआ कि न्यूयार्क से रवाना हुये तीन दिन हो चुके हैं, उनकी स्त्री को अब तक वहां की इमारतों का खयाल न आना था, और अब वह उन्हीं मकानों की तारीफ कैसे करने लगीं जिन्हें पहिले भयानक और बदसूरत बतलाती थीं।

थोड़ी देर बाद काउन्ट ने किताब बन्द करके कहा, "मैं पढ़ते पढ़ते थक गया, ओल्गा, जाता हूं देखता हूं, अगर साथी मिल गये तो ताश खेलूंगा। यहां और काम ही क्या है।"

"ओह, मेरे काउन्ट, तुम बड़ी जल्दी घबड़ा जाते हो," युवती ने मुसकुराते हुये कहा, "और मैं तुम्हें इस लिये छुट्टी देती हूं कि मैं खुद पढ़ते पढ़ते घबड़ा गई हूं। जाओ, साथी मिल जायं तो ताश खेलो। मैं अभी यहीं बैठी हूं।"

काउन्ट के चले जाने बाद काउन्टेस ने एक छिपी नजर फिर उधर डाली जिधर थोड़ी दूर पर, एक लम्बा नौजवान कुर्सी पर लेटा हुआ था। उनके मुंह से फिर निकला, "वाह, क्या शान है।"

काउन्टेस ओल्गा डी. कूड की आयु बीस वर्ष की थी, और

उनके पति की चाजीस की। यद्यपि साधारणतः वह बड़ी स्वामिभक्त और वफ़ादार स्त्री थीं, पर इसका यह अर्थ नहीं था कि जिस आदमी को उनके ओहदेदार रशियन पिता और भाग्य ने उनका पति बना दिया था और जिसके चुनाव में उनसे सम्मति तक न ली गई थी उसे वे गहरे प्रेम और हार्दिक स्नेह की दृष्टि से देखती हों। और एक सुन्दर नौजवान को देख के वह आश्चर्य में आ गईं और प्रसन्न हो उठी थीं इसका यह मतलब भी न लगा लेना चाहिये कि उनके विचार किसी प्रकार ख़राब थे या वह अपने पति के साथ विश्वास-घात कर रही थीं। जैसे कि किसी भी तारीफ़ करने लायक चीज़ को देख के लोग प्रसन्न हो जाते हैं, वैसे वह भी खुश हो गई थीं। साथ ही एक बात और थी, वह नौजवान मामूली से अधिक सुन्दर और बड़ी ही आकर्षक चाल ढाल का था।

काउन्टेस की छिपी निगाहें जैसे ही उस नवयुवक के चेहरे पर पड़ीं वैसे ही वह उठ खड़ा हुआ और भीतर जाने के लिये पीछे घूमा। काउन्टेस ने पास से जाते हुए जहाज के एक नौकर को बुला के पूछा, "यह सज्जन कौन हैं?"

खानसामा ने जवाब दिया, "इन्होंने अपना नाम, 'मानश्यूर टार्जन, अफ्रिका निवासी,' लिखाया है, मैडम।"

"रहने की जगह तो बड़ी लम्बी चौड़ी है" युवती ने मन ही मन सोचा, पर वह बोली कुछ नहीं। उसने इरादा कर लिया कि हो सके तो इनके बारे में विशेष पता लगाना चाहिये।

टार्जन जब टहलते हुये सिगार पीने के कमरे के पास पहुंचे तो

यकायक उनकी निगाह दो आदमियों पर पड़ी जो बाहर ही खड़े धीमी आवाज में कुछ बातें कर रहे थे। वे उन पर कुछ भी ध्यान देते और चुपचाप भीतर चले जाते, पर उनके मन में संदेह सहसा इस कारण पैदा हो गया कि उनमें से एक ने छिपी नजर से इनकी त देख के तुरत निगाह नीची कर ली। उन्हें देख के टार्जन को वे बनावटी बदमाश याद आ गये जिन्हें उन्होंने पेरिस के थियेटरों में अकसर देखा था। दोनों ही काले थे, और दोनों की बातचीत, ढंग, चाल ढाल और रूप रंग ठीक उन बदमाशों ऐसा था। अन्दर जाकर उन्होंने एक कुर्सी खींच ली और जो लोग पहिले से बैठे हुये थे उनसे जरा हट कर एक तरफ बैठ गये। उनकी इस वक्त किसी से बातचीत करने की इच्छा न थी। एक घूंट शराब का पीकर और कुर्सी से ढासना लगा के बैठ कर वे मन ही मन उन विचित्र घटनाओं को सोचने लगे जो पिछले कई सप्ताहों में लगातार एक के बाद एक हो गई थीं। उनको बराबर खयाल होता था कि अपना टाइटिल, अपना धन, अपना सर्वस्व एक ऐसे आदमी को दे देना ठीक हुआ या नहीं जिसे वे बहुत थोड़े समय से जानते थे और जिसका जरा सा भी अहसान उनकी गर्दन पर न था। क्या हुआ जो क्लेटन से उनकी जान पहिचान और दोस्ती थी। यहां दोस्ती का तो सवाल न था। दोस्ती के ही कारण तो उन्होंने अपना सब कुछ विलियम सेसिल क्लेटन, लार्ड ग्रेस्टोक—को नहीं सौंप दिया था, उन्होंने जो कुछ किया था उस स्त्री के कारण जिसे वे और क्लेटन, दोनों ही चाहते थे, और जिसे निर्दयी भाग्य ने उनसे छीन के क्लेटन को दे दिया था।

वह स्त्री उनसे प्रेम करती थी, यह और असहनीय और कठिन ...त थी और इसी ने उनके काम को और कष्टप्रद औ संदेहजनक बना दिया था। तो भी उन्होंने उस रात को, विनकोन्सिन के उस ...टे से स्टेशन पर, वही किया जो उनका कर्तव्य था, उससे कम, या उससे भिन्न, वे कुछ कर ही न सकते थे। उस स्त्री के सुख का ध्यान ही उनका पहिला काम था और सभ्य संसार के थोड़े से समय ...रहन सहन और रीति रिवाज ने उन्हें बतला दिया था कि बिना सम्मान और धन के बहुतों को अपना जीवन भार स्वरूप और दुःख-मय हो जाता है।

जेन पोर्टर धन और सम्मान, दोनों के बीच में पैदा हुई थी, और अगर टार्जन इन दोनों चीजों को उसके भावी पति से छीन लेते, तो उसे अपना सारा जीवन कष्टों और आपत्तियों से लड़ते हुए बिताना पड़ता। टाइटिल और स्टेट क्लेटन से छीन लेने से जेन पोर्टर उनसे विवाह करने से इनकार कर देगी, यह एक क्षण भर के लिये भी टार्जन के मन में न आया, वह स्वयं जैसे सच्चरित्र और उच्च गुणों से युक्त थे वैसे ही सच्चरित्र और गुणवान वह दूसरों को भी समझते थे। और इस मामले में उनका वैसा सोचना और करना होता भी गलत। जेन पोर्टर के क्लेटन से विवाह करने के वादे को अगर कोई वस्तु और दृढ़ और पक्का कर सकती थी तो वह किसी ऐसी ही आपत्ति का क्लेटन के ऊपर गिर पड़ना था।

बीती हुई बातों पर से होते हुये टार्जन के विचार जब अपने भविष्य पर गये तो वे सोचने लगे कि उन जंगलों में लौट चलने में

कितना आनन्द आवेगा जो उनके जन्म-स्थान हैं और जहां उन्होंने अपनी आयु के बाईस में से बीस वर्ष बिताये हैं। वह भयानक और खूंखार जंगल अब कैसा होगा, वहां के रहने वालों में से कितने या कौन अब उनका स्वागत करेंगे? कोई नहीं, उनमें से केवल हाथी को ही वह अपना दोस्त कह के पुकार सकते थे, बाकी सब पहिले की तरह उनसे भागेंगे और उन्हें तंग करेंगे। उनकी जाति के 'एप' बन्दर भी अब उनसे दोस्ती करना स्वीकार न करेंगे।

अगर सभ्य समाज के साथ के रहन सहन ने टार्जन में और कोई परिवर्तन नहीं किया था तो कम से कम इतना उन्हें अवश्य सिखला दिया था कि वे अपने ही ऐसे मनुष्य जाति के लोगों का अब संग खोजने लगे थे। साथ ही साथ अन्य श्रेणी के जीवों के साथ उन्हें कुछ विराग भी पैदा हो गया था। अगर अब उनसे कहा जाता कि अपने दोस्तों को छोड़ के रहो, उनकी भाषा बिल्कुल मत बोलो, उनका साथ बिल्कुल मत करो, तो टार्जन के लिये यह काम असम्भव हो जाता। जैसे वे मनुष्यों का साथ खोजते थे, वैसे ही उनकी भाषा से भी उन्हें प्रेम हो गया था। यही कारण था कि पहले का जंगली जीवन अब उनके लिये उतना आकर्षक और रुचिकर नहीं रह गया था और वे उसे उतने उत्साह से नहीं देखते थे।

हासना लगा के सिगरेट का धूंआ उड़ाते हुये यकायक टार्जन की निगाह उस शीशे पर पड़ी जो उनके बिल्कुल सामने दीवार में लगा हुआ था। उसमें उन्होंने देखा कि उनके पीछे चार आदमी टेबुल के चारो तरफ बैठे ताश खेल रहे हैं। यकायक उनमें से एक

उठ के बाहर चला गया और एक दूसरा पास आया। भाव भंगी से मालूम हुआ कि इस नये आदमी ने उनसे साथ बैठ के खेलने की इजाजत मांगी जिसमें खेल में विघ्न न पड़े। यह उन दोनों में से एक था जिनको थोड़ी देर हुई टार्जन ने सिगार पीने के कमरे के बाहर बातें करते देखा था और यह अपने साथी से कद में नाटा था।

वह उन्हीं में से एक था इससे टार्जन को कुछ दिलचस्पी मालूम हुई और वह अपनी बातें सोचते सोचते शीशे में टेबुल के पास बैठे खिलाड़ियों की तरफ भी देखने लगे। जो आदमी अभी आया था उसको तो टार्जन पहिले देख ही चुके थे, उसके सिवाय इन चारों में से केवल एक को टार्जन और जानते थे, उनको जो इस नये आदमी के सामने बैठे थे। उनका नाम काउन्ट राउल डी. कूड था और एक बातूनी खानसामा ने उन्हें बताया था कि ये बड़े भारी आदमी और फ्रांसीसी युद्ध विभाग के कोई बड़े अफसर थे।

सहसा टार्जन का ध्यान फिर शीशे की तरफ खिंचा। दूसरा बदमाश भी भीतर आ के काउन्ट की कुर्सी के पीछे खड़ा हो गया था। उसने एक बार कमरे में चारों तरफ अपनी निगाह घुमाई— लेकिन शीशे पर उसकी दृष्टि इतनी देर तक स्थिर न रही कि वह टार्जन की आंखों का प्रतिबिम्ब उस में देख सके—और जब उसे निश्चय हो गया कि कोई उसकी कार्यवाई को देख नहीं रहा है तो धीरे से अपने जेब से उसने कोई चीज बाहर निकाली। टार्जन देख न सके कि यह कौन चीज है, क्यों कि वह अपनी हथेली में उसे छिपाये हुये था।

धीरे धीरे वह हाथ काउन्ट की तरफ बढ़ा और तब बड़ी फुर्ती से वह चीज काउन्ट के जेब में डाल दी गई। हाथ फिर अपने ठिकाने पर हो गया, पर वह आदमी वहां से हटा नहीं, वहीं खड़ा वह फ्रांसीसी की ताशों को देखता रहा। टार्जन को आश्चर्य हुआ कि यह क्या हो रहा है। पर वे बड़े ध्यान से आगे की कार्रवाई देखने लगे, बाद को फिर कोई भी बात उनकी आंखों से छूटी नहीं।

करीब दस मिनट तक खेल होता रहा और काउन्ट बहुत सा रुपया उस आदमी से जीत गये जो नया उनके सामने आके बैठा था। यकायक काउन्ट के पीछे खड़े आदमी ने अपने साथी को सिर हिला के कुछ इशारा किया। वह तुरत उठ खड़ा हुआ और काउन्ट की तरफ उंगली उठा के बोला, "अगर मैं यह जानता कि मानश्यूर ताश के खेल में बेईमानी करते हैं, तो मैं कभी साथ में खेलने के लिये न बैठता।"

काउन्ट तथा उनके दोनों साथी उठ खड़े हुये। डी॰ कूड का चेहरा क्रोध से लाल हो गया और उन्होंने चिल्ला के कहा—

"इसका क्या मतलब है जी, तुम जानते हो तुम किससे बातें कर रहे हो?"

दोष लगाने वाला बोला, "मैं उस से बातें कर रहा हूं जो खेल में जीतने के लिये बेईमानी करते भी नहीं हिचकती।"

काउन्ट ने टेबुल पर झुक के एक थप्पड़ बोलने वाले के मुंह पर मारा और साथ ही और लोगों ने बीच में पड़ के दोनों को अलग किया। दोनों खेलने वालों में से एक बोला, "जरूर आपके

कहने में कुछ न कुछ गलती हुई है। ये तो फ्रांस के काउन्ट डी. कूड हैं!"

बदमाश बोला, "अगर मेरी गलती साबित कर दी जायगी तो मैं जरूर माफी मांगने के लिये तैयार रहूंगा। पर पहिले काउन्ट महोदय यह तो बतावें कि उन्होंने अपने बगल वाले जेब में ताश के जो पत्ते रख लिये हैं वे किस लिये हैं?"

वह आदमी जिसने पत्ते काउन्ट के जेब में डाले थे अब घूम के बाहर जाने लगा। पर यह देख के उसकी घबड़ाहट का ठिकाना न रहा कि भूरी आंखों वाला एक लम्बा अजनबी दर्वाजे के बीचोबीच में खड़ा रास्ता रोके हुये है। उसने बगल से जाने की कोशिश करते हुये कहा, "माफ कीजियेगा, मैं बाहर जाऊंगा।"

टार्जन ने कहा, "ठहर जाओ।"

दूसरा क्रोध से बोला, "क्यों मानश्यूर, क्यों ठहर जाऊं, हटिये।"

टार्जन फिर बोले, "ठहरो, यहां एक घटना ऐसी हो गई है जिसमें शायद तुमसे कुछ पूछने की जरूरत पड़े।"

आदमी ने गुस्से से पागल हो के टार्जन को धक्का दिया और बगल से होके बाहर निकल जाने की कोशिश की। टार्जन ने मुसकुरा के पीछे से उसका गला थाम लिया और लड़ते झगड़ते और गालियें देते हुये उस आदमी को खींच कर टेबुल के पास ले आये। यद्यपि उसने बड़ी ही कोशिश की कि इस आदमी से छूट के अलग हो जायं, पर उन लोहे की उंगलियों ने उसके गले को ऐसा पकड़ा हुआ था जैसे मालूम होता था कि गला शिकंजे में जकड़ा हुआ है। निकोलस

रोकफ को टार्ज़न की ताकत का यह पहिला अनुभव था, जो ताकत लड़ाई में लड़के न्यूगा, शेरसे विजय पा चुकी थी और जिसने टरकोज़, "एप" बन्दरों के राजा को हरा दिया था, निकोलस रोकफ ने आज पहिले पहिल उस ताकत का स्वाद चखा।

वह आदमी जिसने काउन्ट को दोष लगाया था, और साथ के दोनों खेलने वाले, तीनों काउन्ट की तरफ गौर से देख रहे थे। चारो तरफ के और बहुत से यात्री आ गये थे और देख रहे थे कि झगड़ा क्यों हो रहा है।

काउन्ट ने कहा, "यह आदमी पागल है। आप लोगों में से कोई मेरी तलाशी ले के देख लें।"

एक खेलने वाले ने कहा, "यह आदमी बिल्कुल झूठा मालूम होता है।"

दोष लगाने वाला बोला, "मैं झूठा हूं या सच्चा इसका इम्तेहान तो इसी से हो जायगा कि आप काउन्ट के जेब में हाथ डालिये और जो कुछ उसमें है उसे बाहर निकालिये।" जब उसने लोगों को हिच-किचाते हुए देखा तो वह आगे बढ़ के बोला, "ठहरिये, आप लोगों की हिम्मत नहीं पड़ती तो मैं खुद तलाशी लेता हूं।"

डी. कूड ने पीछे हट के कहा, "नहीं, मैं किसी सज्जन के हाथों अपनी तलाशी दे सकता हूं, तुमको नहीं।"

"काउन्ट की तलाशी लेना व्यर्थ है, ताश के पत्ते उनकी जेब में हैं, मैंने खुद उन्हें वहां रक्खे जाते देखा है।"

सभों ने घूम के देखा कि बोलने वाला सुडौल बदन का एक सुन्दर

युवक है जो जबर्दस्ती एक आदमी को उनकी तरफ खींचे लिये आ रहा है।

डी. कूड क्रोध से बोले, "यह सब जालसाजी है, मेरे जेब में कोई पत्ता नहीं है।" यह कह के उन्होंने अपना हाथ जेब में डाला, चारो तरफ गहरा सन्नाटा छा गया। यकायक काउन्ट का चेहरा सफेद हो गया और उन्होंने बहुत धीरे धीरे अपना हाथ जेब से बाहर खींचा। लोगों ने देखा कि उनकी उंगलियों में ताश के तीन पत्ते हैं।

आश्चर्य और गुस्से के मारे काउन्ट से बोला न गया और धीरे धीरे गहरी लज्जा और शर्म उनके अब तक के सफेद चेहरे को लाल बनाने लगी। उन्होंने आंखें ऊंची करके लोगों की तरफ देखा। जो लोग एक भले आदमी की इज्जत की सत्यानाशी का यह नाटक देख रहे थे उनके चेहरे घृणा और दया से भर गये।

"यह सब जालसाजी है, मानश्यूर!" भूरी आंखों वाला अजनबी बोला, "सज्जनो, मानश्यूर काउन्ट नहीं जानते थे कि ये ताश के पत्ते उनकी जेब में हैं, उनकी बिना जानकारी के ये उसमें रक्खे गये थे। उस कुर्सी पर बैठा हुआ मैं उस शीशे में सब कुछ देख रहा था। यह आदमी जो बाहर भागा जा रहा था, इसी ने काउन्ट की जेब में पत्ते रक्खे थे।"

डी. कूड ने टार्जन पर से निगाहें हटा के उस आदमी की तरफ देखा जिसे वे पकड़े हुये थे। उन्होंने चौंक के कहा, "हैं, निकोलस, तुम?"

वे अपने पर दोष लगाने वाले आदमी की तरफ घूमे और गौर से उसकी तरफ देख के बोले, "और आप मानश्यूर, आप को भी दाढ़ी न रहने के कारण मैं पहिचान न सका। इससे तो तुम्हारा चेहरा बिल्कुल ही बदल गया, पालविच, और तुम्हारी इन कार्रवाइयों का मतलब भी मैं समझ गया। अब सब बातें साफ हो गईं, सज्जनो!"

टार्जन ने पूछा, "मानश्यूर, इन दोनों के साथ क्या किया जाय। क्या मैं इन्हें कप्तान के सपुर्द कर दूं?"

काउन्ट जल्दी से बोले, "नहीं मानश्यूर, यह व्यक्तिगत मामला है और इसे आप जहां का तहां छोड़ दें। मैं उस भारी इलजाम से बरी हो गया यही मेरे लिये बहुत यथेष्ट है। ऐसे आदमियों से जितना दूर रहा जाय उतना ही अच्छा है। लेकिन आप मानश्यूर, आपने इतनी बड़ी दया जो मेरे ऊपर की है, उसके लिये मैं आपको किस तरह धन्यवाद दूं। यह मेरा कार्ड कृपया गृहण कीजिये। अगर कभी भी, किसी समय भी ऐसा अवसर आ उपस्थित हो कि मैं आप की सेवा कर सकूं, तो मुझे आज्ञा देना न भूलियेगा।"

टार्जन ने रोकफ को छोड़ दिया और वह अपने साथी पालविच को साथ लेकर कमरे से बाहर निकल गया। जाते वक्त उसने टार्जन की तरफ देख के कहा, "मानश्यूर ने आज बिना कारण दूसरे के मामले में दखल दिया है। इसके लिये उन्हें यथेष्ट पश्चात्ताप करना पड़ेगा।"

टार्जन ने मुसकुरा दिया, और तब काउन्ट की तरफ घूम के और उन्हें अभिवादन करके अपना कार्ड दिया। काउन्ट ने पढ़ा—

वे बोले, "मानश्यूर टार्जन, इस मामले में अगर आपने दखल न दिया होता तो शायद अच्छा होता। अपने इस काम से आपने यूरोप के दो सब से बड़े बदमाशों को अपना दुश्मन बना लिया है। उनसे जरा सावधान रहियेगा।"

टार्जन ने कहा, "मुझे इनसे अधिक भयानक दुश्मनों से काम पड़ चुका है मानश्यूर काउन्ट, और मैं अभी तक जीता जागता और बेफिक्र हूं। मैं समझता हूं इनमें से कोई भी मुझे कष्ट पहुंचाने का अवसर न पा सकेगा।"

डी. कूड बोले, "हम लोगों को ऐसी ही आशा करनी चाहिये। तब भी सावधान रहने में कोई हर्ज न होगा। साथ ही यह भी जाने रहना चाहिये कि आपने एक दुश्मन कम से कम ऐसा आज जरूर बना लिया है जो न कभी भूलता है न कभी क्षमा करता है और जिसके दुष्ट दिमाग में अपने को नीचा दिखाने और हराने वाले के विरुद्ध तरह तरह की भयानक साजिशें बराबर पैदा हुआ और बढ़ा करती हैं। अगर निकोलस रोकफ को शैतान कहा जाय तो वह भी एक तरह से शैतान पर लांछन लगाने के समान होगा।"

उस रोज रात को टार्जन अपने कैबिन में घुसे तो जमीन पर उन्होंने एक मोड़ा हुआ कागज रक्खा पाया। शायद किसी ने इसे दर्वाजे के नीचे की दरार से भीतर डाल दिया था। उन्होंने खोल के पढ़ा—

"मा. टार्जन,—आपने आज अनजान में काम किया है इसी से

शायद आप न समझ सकें कि वह कितना बड़ा अपराध था और उसकी कितनी बड़ी सजा हो सकती है। मैं अभी तक यह मानने को तैयार हूँ कि वह काम आपने भूल से किया और उससे किसी अजनबी से दुश्मनी खरीदने की आप की इच्छा न थी। अगर आप उसके लिये माफी मांगें, और इस बात का वादा करें कि भविष्य में किसी अन्य के मामले में हस्तक्षेप न करेंगे तो मैं आप को क्षमा करने को तैयार हूं। अगर आप ऐसा न करेंगे तो.........। लेकिन आप खुद बुद्धिमान हैं, आपको ज्यादा समझाने की जरूरत नहीं है।

आपका—

निकोलस रोकफ"

टार्जन गंभीरता से मुसकुरा उठे और उस घटना को ध्यान से बिल्कुल हटा कर सोने के लिये बिछौने पर चले गये।

पास के एक दूसरे कैबिन में काउन्टेस डी. कूड अपने पति से कह रही थीं।

"क्यों मेरे राउल, आज इतने उदास क्यों हो। क्या कोई खास बात है?"

डी. कूड बोले, "ओल्गा, निकोलस इसी जहाज पर है, तुमको मालूम है?"

काउन्टेस ने घबड़ा कर के कहा, "इसी जहाज पर! कैसे, वह तो जर्मनी में कैद होगा।"

काउन्ट बोले, "मैं भी ऐसा ही समझता था—पर उसे देख के मुझे आश्चर्य हुआ, और उसके संग वह बदमाश पालविच भी था।

ओल्गा, मैं इस तकलीफ को और अधिक अब नहीं सह सकता—नहीं, तुम्हारे लिये भी मैं ऐसा नहीं कर सकता। कभी न कभी मैं जरूर उसे पुलिस के हाथ में सौंप दूंगा। कभी न, कभी क्यों, मेरा विचार है कि आज ही कप्तान से सब हाल कह दूं। फ्रांसीसी जहाज पर उसे हमेशा के लिये तै करवा देना सहज बात है।"

काउन्टेस चीख मार कर डी. कूड के सामने घुटने के बल बैठ गई और बोलीं, "नहीं, नहीं, राउल, ऐसा न करना। तुम जो वादा मुझसे कर चुके हो, उसे याद करो। मुझे विश्वास दिला दो कि तुम कभी उसकी खबर दूसरों को न दोगे, कभी उसे धमकाओगे भी नहीं।"

डी. कूड ने अपने दोनों हाथों में अपनी स्त्री के हाथ पकड़ कर गौर से उसके घबड़ाये और पीले हो गये हुये चेहरे की तरफ देखा, जैसे वे उन सुन्दर आंखों के द्वारा उसके दिल का सारा भेद खींच कर यह जान लेना चाहते हों कि यह उस आदमी का बचाव बराबर क्यों किया करती है! फिर बोले, "खैर वैसा ही सही, जैसा तुम कहती हो, ओल्गा! मेरे समझ में नहीं आता कि तुम्हारा मतलब क्या है, क्यों तुम उसका पक्ष करती हो। तुम्हारे प्रेम, तुम्हारी वफादारी, तुम्हारे आदर, इनमें से अब किसी पर भी उसका दावा रह नहीं गया है। वह तुम्हारे जीवन और तुम्हारी इज्जत के लिये खतरनाक है, तुम्हारे पति की इज्जत और जिन्दगी के लिये भी वह भयानक है। तुम उसका पक्ष ले रही हो, ईश्वर करे तुम्हें कभी इसके लिये पछताना न पड़े।"

काउन्टेस ने शीघ्रता से कहा, "नहीं राउल, मैं उसका पक्ष नहीं करती, मैं भी उससे उतनी ही घृणा करती हूं जितनी तुम स्वयं करते हो, पर—राउल, खून पानी से ज्यादा गाढ़ा होता है।"

डी. कूड गंभीरता से बोले, "वही तो आज मैं देखना चाहता था, ओलगा! उन दोनों ने आज मेरी पूरी बेइज्जती करने का बन्दोबस्त किया था।" यह कह कर उन्होंने सिगार-रूम में जो कुछ हुआ था सब सुनाया और बोले, "अगर वे बेचारे बेजान पहिचान के सज्जन मदद न करते तो आज उनका इरादा पूरा ही हो चुका था। मेरे जेब में ताश के पत्ते छिपे पाने पर मेरी अकेली बात का कौन विश्वास करता और कौन समझता कि ये दोनों बदमाश हैं, झूठ बोल रहे हैं। मैं तो खुद अपने पर सन्देह करने लग गया था, पर ये मानश्यूर टार्जन तुम्हारे निकोलस को पकड़े हुये सामने आये और सब हाल ब्योरेवार सुनाया तब लोगों को उसके पाजीपन का पता लगा।"

काउन्टेस ने आश्चर्य से पूछा, "कौन, मानश्यूर टार्जन?"

"हां, क्या तुम उन्हें जानती हो?"

"नहीं, खाली दूर से देखा है। एक खानसामा ने बताया था कि ये ही मानश्यूर टार्जन हैं।"

काउन्ट बोले, "ओह, मैं नहीं जानता था कि वे जहाज पर इतने प्रसिद्ध हैं।"

ओलगा डी. कूड दूसरे विषयों पर बातें करने लगीं। उन्होंने यकायक सोचा कि अगर ये पूछ बैठे कि खानसामा ने इतने आदमियों

के बीच में सुन्दर मानश्यूर टार्जन ही को उन्हें क्यों दिखलाया, तो उनके लिये उस बात का जवाब देना कठिन हो जायगा। शायद उनका चेहरा कुछ लाल भी हो उठा, क्योंकि काउन्ट विचित्र निगाह से अपनी स्त्री की तरफ़ देखने लगे। ओल्गा ने मन में सोचा, "ठीक ही तो है, दोषी हृदय सन्देह पैदा ही करता है।"

दूसरा बयान

घृणा और दुश्मनी

टार्जन ने अनजान में ही अपने को जिस मामले में फंसा दिया था उससे सम्बन्ध रखने वाले प्रधान पात्रों की उनसे दूसरे रोज शाम तक फिर मुलाकात न हुई, और उस समय हुई भी तो ऐसे वक्त और ढंग पर कि मामला सुलझने के बजाय और उलझ गया और टार्जन अपने पैदा किये जाल में और मजबूती से जकड़ गये।

टार्जन डेक पर टहलते टहलते जब एक ऐसे स्थान पर पहुंचे

जहां ज्यादातर सन्नाटा रहा करता था और विशेष आदमी उस तरफ नहीं आया करते थे, तो उनकी निगाह यकायक निकोलस रोकफ़ और पालविच पर पड़ी जो उनकी तरफ पीठ किये खड़े एक औरत से कुछ बहस कर रहे थे। टार्जन ने देखा कि वह कीमती कपड़े पहिने हुये है और कद और चाल ढाल से युवती मालूम होती है। उसका चेहरा मोटे कपड़े से ढंका था इससे वे यह न जान सके कि इसकी शकल कैसी है।

आदमी दोनों तरफ खड़े थे और स्त्री टार्जन की तरफ पीठ किये बीच में थी और वे तीनों ही बातों में ऐसे फंसे थे कि उन्हें मालूम भी न हुआ और टार्जन उनके बहुत नजदीक पहुंच गये। बातचीत के ढंग से मालूम हुआ कि रोकफ़ उसे कुछ धमका रहा है, और स्त्री प्रार्थना के तौर पर कुछ कह रही है। वे तीनों किसी विचित्र भाषा में बोल रहे थे इससे टार्जन यह तो न समझ सके कि उनके कहने का मतलब क्या है, पर इतना वे जान गये कि औरत बड़ी डरी और घबड़ाई हुई है।

रोकफ़ की चाल ढाल प्रगट कर रही थी कि वह इस समय बड़े क्रोध में है और आवश्यकता पड़ने पर हाथापाई करने में भी न हिचकेगा, अस्तु टार्जन क्षण भर के लिये उन तीनों के पीछे ठिठक गये, उन्हें सन्देह हुआ कि यह दुष्ट इस स्त्री को कहीं कोई शारीरिक कष्ट न दे। उनका सन्देह था भी ठीक। टार्जन मुश्किल से तीनों के पीछे आ के रुके होंगे कि रोकफ़ ने झपट कर उस औरत का हाथ पकड़ लिया और उसे बेदर्दी से उमेठने लगा

जैसे वह तकलीफ दे के उससे किसी प्रकार का वादा करवाना चाहता हो। रोकफ के काम का क्या नतीजा होता या वह अपने मनवाली कर पाता तो उससे उसे क्या फल मिलता इसका केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है। वह अपने दिल की आधी बात भी शायद पूरी न कर सका। जैसे ही उसने स्त्री का हाथ पकड़ के मरोड़ना शुरू किया, पीछे से लोहे ऐसी उंगलियों ने उसकी गर्दन थाम ली, और किसी के मजबूत हाथ ने उसे धक्का दे के अपनी तरफ घुमा लिया। उसने फिर के आश्चर्य और क्रोध भरी आंखों से देखा कि यह वही अजनबी है जिसने एक दिन पहिले उसकी सारी कार्रवाई चौपट कर दी थी।

उसने गुस्से से पागल होके चिल्ला के कहा, "हैं! इसका क्या मतलब, क्या तुम को बुद्धि नहीं है कि तुम फिर दूसरी बार निकोलस रोकफ का अनादर करने की चेष्टा करते हो?"

टार्जन धीमी आवाज में बोले, "मानश्यूर, तुमने जो चीठी भेजी थी उसका यह जवाब है।" यह कह के उन्होंने उसको इतने जोर से धक्का दिया कि वह कटघरे के पास जाके चित्त जमीन पर गिरा।

उसने उठने की चेष्टा करते हुए चिल्ला के कहा, "गदहे, पाजी, तुमको इसके लिये अपनी जान से हाथ धोना होगा।" उसने पिस्तौल निकालने के लिये अपना हाथ पतलून की जेब में डाला और टार्जन पर झपटा।

युवती ने डर से पीछे हट कर चीख मार के कहा, "नहीं, नहीं, निकोलस! ऐसा मत करो," और टार्जन को तरफ घूम के बोली,

"मानश्यूर, आप भाग जाइये, जल्दी भागिये, वह आपको मार डालेगा।" पर भागने के बदले स्थिरता से निकोलस की तरफ बढ़ते हुये टार्जन बोले, "मानश्यूर, बेवकूफी न करो।"

एक अनजान आदमी ने उसकी इतनी बड़ी बेइज्जती कर दी थी इससे रोकफ़ गुस्से से एक दम पागल हो उठा था और उसने अपनी पिस्तौल जेब से निकाल ली थी। पर युवती की चिल्लाहट सुन वह क्षण भर के लिये रुक गया था। टार्जन को अपनी तरफ बढ़ते देख उसने उसकी नली उनकी छाती की तरफ की और घोड़ा दबा दिया। हथौड़ा बिना कारतूस को चेंबर पर टकरा कर क्लिक करके रह गया। टार्जन का हाथ क्रोधित सांप के फन की तरह आगे बढ़ा, रोकफ़ के हाथ को एक कड़ा झटका लगा और पिस्तौल हवा में उड़ती हुई जहाज के कटघरे को पार करके दूर एटलान्टिक महासागर के पानी में जा गिरी।

क्षण भर तक एक दूसरे की तरफ देखते हुये दोनों चुपचाप खड़े रहे। इसके बाद कठिनता से अपने को सम्हालते हुये रोकफ़ बोला—

"यह दूसरी बार है कि बिना समझे बूझे मानश्यूर ने दूसरे के मामले में हस्तक्षेप किया है। यह दूसरी बार उन्होंने निकोलस रोकफ़ की बेइज्जती की है। पहिली बार तो यह समझ के टाल दिया गया कि मानश्यूर ने अनजाने में ऐसा किया होगा, पर यह दूसरी बार की घटना बिना खयाल किये नहीं छोड़ दी जायगी। अगर मानश्यूर निकोलस रोकफ़ को अब तक नहीं जान पाये हैं, तो

यह घटना उन्हें अच्छी तरह बतला देगी—इतनी अच्छी तरह कि शायद जन्म भर मानश्यूर उसे न भूलें।"

टार्जन घृणा भरे स्वर में बोले, "मानश्यूर, तुम कायर और पाजी हो! तुम्हारे बारे में इतना ही जानना मेरे लिये यथेष्ट है। और अधिक मैं नहीं जानना चाहता।" यह कह के टार्जन पीछे युवती की तरफ यह पूछने के लिये घूमे कि उसे कहीं चोट तो नहीं लगी है। पर वह वहां से गायब हो गई थी। अस्तु टार्जन बिना रोकफ़ और उसके साथी की तरफ निगाह डाले टहलते हुये डेक पर आगे बढ़ गये।

टार्जन को आश्चर्य हो रहा था कि इन बातों का भेद क्या है और ये दोनों पाजो कौन सी जालसाजी की चाल चल रहे हैं। उस स्त्री के बारे में कुछ परिचित होने का शक उन्हें होता था, पर उन्होंने उसका चेहरा नहीं देखा था इस कारण वे नहीं कह सकते थे कि उन्होंने पहिले कभी उसे देखा है या नहीं। एक बात उन्होंने ध्यान दे के देखी थी। रोकफ़ ने युवती का जो हाथ पकड़ा था उसकी एक उंगली में विचित्र बनावट की एक अंगूठी पड़ी हुई थी। उन्होंने सोचा कि आगे वे साथ की स्त्री-यात्रियों की उंगलियों पर निगाह रक्खेंगे और देखेंगे कि उस विचित्र अंगूठी वाली औरत कौन है। अगर वह मिलेगी तो पूछेंगे कि रोकफ़ ने फिर तो उसे तंग नहीं किया।

टार्जन डेक पर कुर्सी पर बैठे हुये सोचने लगे कि अब से चार वर्ष पहिले जब कि उनकी निगाह पहिले पहिल अपने से अन्य,

एक दूसरे आदमी-कोलुंगा-पर पड़ी थी, उस समय से ले के अब तक मनुष्यों की निर्दयता, स्वार्थपरता और लालच के कितने उदाहरण वे देख चुके हैं। पहिले पहिल कोलुंगा ने, जब वे छोटे ही थे—उनका पालन पोषण करने वाली कोला को बरछे से मार डाला। इसके बाद उन्होंने किंग की मौत देखी, जिसे कि चूहे की शकल वाले स्नाइप्स ने अपने फ़ायदे के लिये सुरधाम पहुंचाया। इसके बाद देखो, 'ऐरो' के जहाजियों ने प्रोफ़ेसर पोर्टर और उनके साथियों को जंगल में अकेला ही छोड़ दिया और उनका खजाने का सन्दूक ले के भाग गये। इसके बाद मोंगा के गांव में, वहां के औरत और मर्द कैदी के साथ कैसा अत्याचार करते थे और उसे किस बेरहमी से मारते थे!

उन्होंने मन में कहा, "सभी एक ऐसे थे, सभी लालची, बेरहम और हत्यारे थे।

"ठगी, खून, झूठ बोलना, लड़ना, सब एक ऐसी चीज के लिये जिसे कि जंगल के जानवर भी तुच्छ और बेकार समझें—रुपया, जो कि कमजोर दिल और कमजोर दिमाग वालों की शौकीनी और ऐयाशी का सामान इकट्ठा करता है। ऐसे बेवकूफी के ढंगों और नियमों, कायदे और कानूनों से बंधे हुए जो कि उन्हें गुलामों की तरह कष्टों और असुविधाओं की जंजीर में जकड़े रहते हैं, तिस पर भी मनुष्य समझते हैं कि मैं सृष्टि में सब से मुख्य, सब से प्रधान, सब का राजा हूं—और मैं ही सृष्टि का असल आनन्द भोगता हूं। भला जंगल का कोई जानवर इस बात को सह सकता है कि वह चुप-

चाप दर्शक की तरह खड़ा देखता रहे और दूसरा जो जी चाहे उसकी स्त्री को, जहां जी चाहे ले जाय ! नहीं, इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह दुनिया बेवकूफ और कम अक्ल है और मैंने बहुत बुरा किया जो जंगल की स्वतंत्रता और वहां का आनन्द छोड़ इसमें रहने के लिये आया।"

यकायक टार्ज़न को ज्ञान पड़ा जैसे पीछे से उन्हें कोई देख रहा हो। उनके जंगली जीवन का भूला और छिपा हुआ अज्ञात ज्ञान सभ्यता के आवरण को फाड़ के बाहर निकल पड़ा। वह इतनी तेज़ी से पीछे घूमे कि जो स्त्री उनकी तरफ ध्यान और दिलचस्पी के साथ ताक रही थी उसे अपनी आंखें नीची करने का भी मौका न मिला और उनकी तेज भूरी आंखें स्थिर दृष्टि से सीधे उन्हीं पर जम गईं। उस युवती ने जब अपनी निगाह और अपना चेहरा नीचे किया तो टार्ज़न ने देखा कि एक हलका गुलाबी रंग गालों पर दौड़ गया है।

अपने अनुचित और असभ्य काम पर टार्ज़न को कुछ हंसी आई। उनको मुनासिब था कि युवती की आंखों से आंखें मिलने पर वे अपनी निगाह हटा लेते। पर वे एक दृष्टि से उसी तरफ देखते गये थे। शायद इसका यह कारण हो कि वह साधारण से अधिक सुन्दर और देखने में बड़ी ही भोली मालूम होती थी, या यह भी कारण हो सकता है कि वह टार्ज़न को कुछ परिचित सी मालूम हुई, जिससे वे सोचने लगे कि इसको मैंने कहीं देखा है। वे अपनी जगह पर ही बैठे रहे। थोड़ी देर बाद उन्हें मालूम हुआ कि वह उठ के डेक के आगे की तरफ जा रही है। वे घूमे और इस आशा से उसकी तरफ देखने लगे कि

शायद कोई चिन्ह ऐसा दिखाई पड़े जिससे वे पहिचान सकें कि यह कौन है।

उन्हें निराश न होना पड़ा। थोड़ी दूर जाके उस युवती ने अपने एक हाथ से गर्दन के पास के लटकते हुये अपने घने और काले बालों को ठीक किया—स्त्रियों का वह खास काम जिससे प्रगट होता है कि वे जानती हैं कि कोई पीछे से उन्हें उत्सुक नेत्रों से देख रहा है—और तब टार्जन ने देखा कि उसकी एक उंगली में वही विचित्र बनावट की अंगूठी पड़ी हुई है जो थोड़े समय पहिले उन्होंने उस मुंह ढांके हुई औरत के हाथ में देखा था।

ठीक है, यही वह खूबसूरत औरत है जिसको रोकफ़ तंग कर रहा था। लेकिन यह कौन है, और उस दाढ़ी वाले झगड़ालू रशियन से इस सुन्दरी का क्या सम्बन्ध हो सकता है!

संध्या को खाना खाने के बाद टार्जन डेक पर आगे को तरफ चले गये और वहां रात होने के बाद तक सहकारी कप्तान से बातें करते रहे। जब वह अफसर काम से दूसरी जगह चला गया तो टार्जन टहलते हुये लौटे और कटघरे के पास एक जगह खड़े हो कर उछलते-हुये पानी पर चन्द्रमा की रुपहली किरणों के पड़ने का दृश्य देखने लगे। यकायक उनके कानों में दो आदमियों के बातें करने की आवाज़ आई जो उन्हीं की तरफ बढ़े आ रहे थे। वे कैबिन-हाउस की आड़ में थे इससे बातें करने वालों ने उन्हें न देखा और अपनी धुन में लगे आगे बढ़ते गये। उनमें से एक की आवाज तो टार्जन को रोकफ़ की मालूम हुई और जरा सा निगाहें घुमा के देखने पर

दूसरा पालविच जान पड़ा। न जाने ये शैतान किस नीयत से इस तरफ जा रहे हैं यह सोच कर टार्जन भी दबे पांव उनके पीछे पीछे चले।

उनमें से एक के बोले हुये कुछ शब्द भी टार्जन के कानों में पड़े थे, और थोड़े होने पर भी वे शब्द सन्देह पैदा कर देने के लिये यथेष्ट थे। एक ने कहा था, "—और अगर वह चिल्लायेगी तो तुम तब तक उसका गला दबाये रहना जब तक कि.........।" टार्जन इतने ही से समझ गये थे कि ये दोनों किसी न किसी बदमाशी की फिक्र में हैं। वे दोनों चलते हुये स्मोकिंग-रूम के पास पहुंचे, लेकिन उनमें से कोई भीतर न घुसा। एक ने दर्वाजे पर खड़े होके देख लिया कि जिस पर वह निगाह रखना चाहता है वह भीतर है न, और तब तेजी से चलते हुये वे उस तरफ बढ़े जिधर नम्बर दो के डेक पर पहिले दर्जे के कैबिन पड़ते थे। यहां टार्जन को उनसे छिपते रहने में बड़ा तरद्दुद हुआ, लेकिन उनको कोई देख न सका, और जब वे दोनों एक कोठरी के दर्वाजे पर खड़े हुये तो टार्जन बड़ी फुर्ती से बढ़ कर बगल के एक दर्वाजे की आड़ में छिप गये जो उनसे दस बारह कदम से ज्यादा फासले पर न पड़ता था।

उनके खटखटाने पर एक औरत की आवाज ने फ्रेंच में पूछा, "कौन है ?"

रोकफ की पहिचानी हुई आवाज में टार्जन को जवाब सुनाई दिया, "मैं हूं ओल्गा, निकोलस, मैं अन्दर आ सकता हूं ?"

पतले दर्वाजे के उस तरफ से औरत की आवाज आई, "तुम

क्यों मुझे तंग करते हो, निकोलस! मैंने तो तुम्हारा कोई नुकसान नहीं किया है।"

रोकफ ने मुलायम आवाज में कहा, "नाराज क्यों होती हो ओल्गा! मुझे तुम से केवल दो चार बातें करनी हैं। मैं तुम्हें कोई तकलीफ न दूंगा, न दर्वाजे के अन्दर ही घुसूंगा। लेकिन दर्वाजे के बाहर से चिल्ला के तो अपनी बात नहीं न कह सकता।"

भीतर से दर्वाजे की सिटकिनी हटने की आवाज आई। अपने छिपने की जगह से जरा सा आगे निकल कर टार्जन देखने लगे कि दर्वाजा खुलने पर क्या होता है। उन्हें अभी तक ये शब्द याद थे, "अगर वह चिल्लाये तो तुम उसका गला दबा देना।"

रोकफ दर्वाजे के सामने खड़ा था और पालविच अन्धेरे में सामने की दीवार से चिपका हुआ था। दर्वाजा खुलने पर रोकफ भीतर घुस गया और दर्वाजे के साथ पीठ सटा के धीमी आवाज में औरत से कुछ बातें करने लगा। टार्जन जहां खड़े थे वहां से वह औरत दिखाई न देती थी, पर क्षण भर बाद उसकी तेज पर शान्त आवाज टार्जन को सुनाई दी—

"नहीं निकोलस, तुम्हारा कहना बिल्कुल व्यर्थ है। तुम कितना भी धमकाओ, मैं तुम्हारी बात नहीं मान सकती। मेहरबानी करके बाहर चले जाओ। तुम्हें भीतर घुसने का कोई अधिकार नहीं है, और तुमने वादा किया था कि मैं भीतर न घुसूंगा।"

रोकफ बोला, "अच्छा ओल्गा, मैं जाता हूं, लेकिन इतना याद रक्खो, पीछे तुम पछताओगी कि तुमने मेरी बात क्यों न मान ली।

अन्त में मैं अपने मन की कर ही लूंगा, इस लिये क्यों न अभी ही मेरा कहा करके तरद्दुद और आफत से बचो। क्यों तुम अपनी और साथ में अपने पति की भी बेइज्जती............।"

औरत ने कुछ क्रोध से बात काट के कहा, "नहीं, कभी नहीं," और तब टार्जन ने रोकफ़ को पीछे घूम के पालविच की तरफ कुछ इशारा करते और स्वयं दर्वाजा खोल के पीठ अड़ा के खड़े हो जाते देखा। पालविच अपनी अन्धेरी जगह से आगे बढ़ा और झपट के भीतर घुस गया। दर्वाजा बन्द हो गया, टार्जन ने भीतर से पालविच को सिटकिनी बन्द करते सुना। रोकफ़ सिर झुकाये हुये दर्वाजे के पास बाहर खड़ा रहा, जैसे वह भीतर उन दोनों में होती हुई बातों को सुनना चाहता हो। एक घृणा व्यञ्जक हंसी उसके ओंठों पर दिखाई दी।

टार्जन ने सुना कि भीतर से वह स्त्री उस आदमी को क्रोध से बाहर निकल जाने के लिये कह रही है। वह चिल्ला के बोली, "मैं अपने पति को बुलवा भेजूंगी और वह आने पर तुम पर जरा भी दया नहीं दिखायेंगे।"

पालिशदार दर्वाजे के भीतर से पालविच के जोर से हंसने की आवाज आई। उसने कहा, "जहाज का खानसामा शीघ्र ही तुम्हारे पति को बुलाने के लिये जायगा, मैडम! उनको खबर कर दी गई है कि तुम कोठरी बन्द करके पति के बजाय एक दूसरे आदमी को भीतर रक्खे हुई हो।"

औरत ने घृणा भरे स्वर में कहा, "ओह, मेरे पति सम

कि यह तुम्हारी बदमाशी है।" झा," "इसका

पालविच बोला, "ठीक है, शायद तुम्हारे पति समझ जायं, पर वह खानसामा तो नहीं न समझेगा जो तुम्हारे पति को बुलाने गया हुआ है, और वे अखबार वाले तो नहीं न समझेंगे जिन्हें जहाज से उतरते ही किसी गुप्त रीति से तुम्हारी इस कार्रवाई का पता लग जायगा। वे इसे बड़ी बढ़ियां कहानी समझेंगे, और कहानी ही के तौर पर इसे तुम्हारे दोस्त भी पढ़ेंगे। अखबार कब उनके हाथों में पहुंचेगा! हां, ठीक है, आज मंगलवार है—बुध, बीफे, शुक्र को यह खबर उन्हें मिल जायगी। और यह जान के उन्हें और आनन्द आवेगा कि जिस आदमी को तुम भीतर बुलाये हुई थीं वह और कोई नहीं, तुम्हारे भाई का रूसी नौकर था।"

औरत की स्थिर भयहीन आवाज टार्जन के कान में आई, "एलेकसिस पालविच, तुम बड़े भारी डरपोक हो, और अगर अभी मैं धीरे से एक नाम तुम्हारे कान में कह दूं तो तुम मुझे धमकाना और अपनी बात स्वीकार कराना एक दम भूल जाओ, तब तो तुम तुरत कोठरी से निकल के भागो और फिर कभी मेरे सामने आने की हिम्मत न करो। बोलो, कहूं।" छण भर सन्नाटा रहा और टार्जन ने सोचा कि वह स्त्री बदमाश की तरफ झुक के उसके कान में कुछ कह रही होगी, और तब यकायक आदमी का क्रोध से कुछ बड़बड़ाना उन्होंने सुना, भीतर से धमधमाहट की आवाज आई, स्त्री ने चीख मारी—और तब एक दम सन्नाटा हो गया।

रोकिफ की आवाज बन्द कोठरी में गूंज के मुश्किल से खतम रक्खो, पीछे टार्जन अपनी जगह से उछले। रोकफ भागने के लिये

दौड़ा पर उन्होंने गर्दन पकड़ के उसे पीछे खींच लिया। दोनों में से कोई भी न बोला, पर दोनों ही समझते थे कि कोठरी के भीतर खून हो रहा है। टार्जन को विश्वास था कि रोकफ ने पालविच को कभी इस बात की आज्ञा नहीं दी होगी। उसका इरादा कुछ और ही होगा, निर्दयता से हत्या करने के अतिरिक्त इस शैतान का अन्य ही कई विचार होगा जो हत्या से भी ज्यादा कलुषित और पापपूर्ण होगा।

वे इस बात के लिये न रुके कि भीतर वालों से कुछ पूछा या जाना जाय। उन्होंने कमजोर पल्ले को भारी कन्धे का धक्का दिया और लकड़ी को तोड़ते हुये और रोकफ को अपने पीछे घसीटते हुये भीतर घुस गये। उनके सामने एक कोच पर औरत पड़ी हुई थी, पालविच उसके ऊपर था,—और उसकी उंगलियां कोमल गले को पकड़े हुई थीं। नीचे पड़ी हुई औरत दोनों हाथों से हत्यारे का मुंह नोच रही थी और उन उंगलियों को गले से हटाने का उद्योग कर रही थी जो धीरे धीरे, सांस की नली बन्द कर के, उसका जीवन प्रदीप बुझाना चाहती थीं।

उनके घुसने की आवाज सुन पालविच उठके खड़ा हो गया और जलती हुई आंखों से उनकी तरफ देखने लगा। धीरे धीरे उद्योग करके युवती भी हाथ से अपना गला पकड़े हुये और रुक रुक के सांसे लेती हुई उठके बैठ गई। यद्यपि वह बहुत घबड़ाई हुई और पीली हो रही थी तथापि टार्जन ने पहिचान लिया कि यह वही स्त्री है जो उस रोज दिन के वक्त उसकी तरफ देख रही थी।

उन्होंने रोकफ की तरफ घूम के भारी आवाज में पूछा, "इसका

क्या मतलब है, ऐसी कार्रवाइयें क्यों की गई ?" रोकफ़ चुप रहा, टार्जन बोले, "कृपया बटन दबाइये, अभी जहाज का कोई न कोई अफ़सर यहां पहुंच जाता है—यह मामला अब बहुत बढ़ गया है।"

युवती यकायक चीख मार के उठ खड़ी हुई और बोली, "नहीं, नहीं, ऐसा न कीजियेगा, मैं समझती हूं मुझे नुकसान पहुंचाने का इन दोनों का दिली इरादा न था। मैंने किसी बात से इस आदमी को क्रोधित कर दिया था, इससे वह अपने आपे से बाहर हो गया। बस, इतना ही तो हुआ। मैं नहीं चाहती कि यह मामला आगे बढ़े, मानश्यूर।" उसकी आवाज में इतनी गहरी प्रार्थना भरी हुई थी कि टार्जन से आगे उसके विरुद्ध कुछ कहा ही नहीं गया। लेकिन उन्होंने मन में सोचा कि यहां कोई गहरी साजिश दिखाई देती है जिसकी खबर उचित अधिकारियों को कर देनी चाहिये।

उन्होंने पूछा, "तो क्या आप चाहती हैं कि मैं इस मामले में कुछ न करूं ?"

उसने जवाब दिया, "जी हां।"

"ये दोनों दुष्ट आपको बराबर तंग करते रहें इससे आपको सन्तोष होगा ?"

वह स्त्री इसका कोई जवाब न दे सकी, लेकिन जान पड़ता था कि टार्जन की बात ने उसे कुछ कष्ट दिया है। टार्जन ने देखा कि रोकफ़ के बदसूरत चेहरे पर हलकी मुसकुराहट दिखाई दे रही है—शायद यह स्त्री इन दोनों से किसी कारण डरती है और इस लिये उनके सामने अपने दिल की बात नहीं कह सकती।

टार्जन ने कहा, "तब मैं अपने उत्तरदायित्व पर कार्य करूंगा।" उन्होंने रोकफ की तरफ देखा और बोले, "देखो, तुम और तुम्हारा साथी, दोनों इस बात का ध्यान रक्खो कि अब से लेकर इस यात्रा के अन्त तक मैं स्वयं तुम दोनों पर निगाह रखूंगा, और अगर मैंने तुम्हारा कोई काम ऐसा देखा कि जिससे इस युवती को तनिक भी कष्ट हुआ, तो खयाल रक्खो, उसका जवाब तुमको देना होगा, और मैं किस तरह जवाब तलब करता हूं सो तो तुम जानते ही होगे। अच्छा, अब तुम दोनों यहां से निकलो!"

टार्जन ने दोनों की गर्दन पकड़ी और धक्का देके दर्वाजे के बाहर निकाल दिया, इसके बाद जूते की दो चार ठोकर मार के उन्हें और आगे बढ़ा दिया, और तब उस युवती की ओर घूमे। उन्होंने देखा कि वह ताज्जुब भरी निगाहों से उनकी तरफ देख रही है। वे बोले—

"और आप मैडम, मुझ पर बड़ी कृपा करेंगी यदि इस बात की खबर मुझे कर देंगी कि आगे ये दोनों पाजी आपको कोई कष्ट तो नहीं पहुंचाते।"

युवती धीमी आवाज में बोली, "आह, मानश्यूर, कहीं ऐसा न हो कि आपने मेरे लिये जो इतना कष्ट उठाया है उसके कारण आप को कोई हानि उठानी पड़े। आपने ऐसे आदमी को अपना दुश्मन बनाया है जो बड़ा ही बदमाश और बड़ा ही काइयां है और जो अपनी घृणोत्पादक साजिशों को पूरा करने में कहीं रुकेगा नहीं, कोई बात उठा नहीं रक्खेगा। इससे आप सावधान रहेंगे, मानश्यूर—"

टार्जन ने कहा, "क्षमा कीजियेगा मेडम, मुझे लोग टार्जन कहते हैं।"

युवती बोली, "—मानश्यूर टार्जन, और मैंने इस मामले की खबर आपको ऊंचे अफसरों को नहीं करने दिया इससे आप यह न समझियेगा कि आपके इस साहस से भरे दयापूर्ण काम के लिये मैं आपकी कृतज्ञ नहीं हूँ या इस कृपा के लिये आप की आभारी नहीं बनना चाहती। गुडनाइट, मानश्यूर टार्जन, आपने जो बोझ मेरे ऊपर लाद दिया है उससे मैं कभी उऋण न होऊंगी।" इतना कह के एक सुन्दर हंसी के साथ, जिसमें उसके उज्वल मोती के समान दांतों की पंक्ति साफ़ नजर आती थी, उस युवती ने झुक के टार्जन का अभिवादन किया और उससे विदा हो के वे बाहर डेक पर चले आये।

यह सोच के टार्जन को आश्चर्य हुआ कि इस जहाज पर दो आदमी ऐसे हैं—एक काउन्ट डी. कूड और दूसरी यह युवती—जिन दोनों ही ने रोकफ़ और उसके साथी के हाथों अपमान सहा है और जो दोनों ही इस बात की खबर उचित स्थानों में नहीं करना चाहते। उनका ध्यान बार बार उस सुन्दरी युवती की ओर जाता था जिसके उलझे हुये जीवन के रहस्यमय जाल के अन्दर भाग्य ने उन्हें इस तरह जबर्दस्ती डाल दिया था। उन्हें खयाल आया कि वे उसका नाम पूछना भूल गये, पर वह विवाहित अवश्य है इसका उनको निश्चय था, कारण उसके बायें हाथ की तीसरी उंगली में सोने की एक अंगूठी पड़ी हुई थी। वे सोचने लगे कि वह भाग्यवान न जाने कौन है जिसकी यह सुन्दरी स्त्री है।

इस छोटे से नाटक के पात्रों में से किसी के साथ भी टार्जन की मुलाकात यात्रा के अंतिम रोज तक फिर न हुई। उस रोज दोपहर के बाद जब टार्जन कैबिन से बाहर निकले और डेक पर पड़ी एक कुरसी की तरफ बढ़े तो उन्होंने देखा कि सामने से वही युवती चली आ रही है जिसको उस रोज कोठरी में उन्होंने रोकफ़ और पालविच के फंदे से छुड़ाया था। उसने हंस के इनका स्वागत किया और तुरत ही बातों का सिलसिला उस घटना की ओर ले गई जो दो रात पहिले उसके कैबिन में हुई थी। कदाचित उसका खयाल था कि रोकफ़ ऐसे आदमियों के साथ उसके किसी प्रकार के व्यवहार ने टार्जन के मन में कोई सन्देह पैदा किया होगा और वे सोचते होंगे कि इन दोनों का असल सम्बन्ध क्या है। वह बोली—

"मुझे आशा है कि मानश्यूर ने पिछले मंगलवार की घटना से मेरे बारे में कोई अनुमान नहीं लगा लिया होगा। मुझे उससे बड़ी चिन्ता रही है—उस दिन के बाद से अब आज मैं अपनी कोठरी के बाहर निकली हूँ। मुझे एक प्रकार की लज्जा मालूम होती रही है।"

टार्जन ने जवाब दिया, "किसी सुन्दर हरिन के विषय में कोई मनुष्य उन शेरों को देख के नहीं अनुमान लगा लेता जो उस पर आक्रमण करते हैं। जिस रोज उन्होंने आप पर आक्रमण किया उस के एक रोज पहिले, जहां तक मुझे याद आता है—उन्होंने सिगार-रूम में इसी प्रकार एक सज्जन पर अपनी साजिशें चलानी चाही थीं, उसी वक्त मैंने उनकी कार्रवाइयों के ढंग को देखा था। मुझे विश्वास

है कि उनकी दुश्मनी ही किसी काम के अच्छे होने की गारंटी है। उनके ऐसे आदमियों को स्वभाव से ही भले और दोषहीन से घृणा होती है।"

स्त्री बोली, "उस मामले को इस दृष्टि से देखना एक प्रकार की आप की सज्जनता है। मैं उस ताश के खेल वाली घटना का हाल सुन चुकी हूं। मेरे पति ने पूरी कहानी मुझे सुनाई थी। वे प्रधान रूप से आपकी बहादुरी और ताकत की तारीफ कर रहे थे और बता रहे थे कि आपकी उस कठिन समय की सहायता ने उनके सिर पर अहसान का एक भारी बोझ लाद दिया है।"

टार्जन ने आश्चर्य से पूछा, "आप के पति ने?"

"जी हां, मैं काउन्टेस डी. कूड हूं।"

"तब तो—मैंने काउन्टेस डी. कूड की किसी प्रकार की सेवा की है यह जानना ही मेरे सब कामों का पुरस्कार हो गया, मैडम!"

"आह, मानश्यूर, मैं पहिले ही से आपके अहसानों के नीचे दबी हुई हूं। फिर ऐसी बातें कह के उस बोझ को और अधिक न बढ़ावें।" यह कह के काउन्टेस टार्जन की तरफ देख के इतनी मधुरता से मुसकुराई कि टार्जन ने सोचा कि इस मुसकुराहट को देखने और पाने के लिये आदमी उससे बड़े बड़े काम कर सकता है जितना मैं कर चुका हूं।

उस रोज फिर काउन्टेस से टार्जन की मुलाकात न हुई, और दूसरे रोज सुबह जहाज से उतरने की झंझट में टार्जन को उनकी ओर ध्यान देने का मौका ही न मिला। पर कल डेक पर बिदा होते

वक्त काउन्टेस ने जो निगाह टार्जन पर डाली थी, उसे टार्जन अभी तक न भूल सके थे, वह अभी तक उसके कलेजे में गड़ी हुई थी। बातों का सिलसिला और विषयों पर से होते हुए इस बात पर आ गया था कि रेल और जहाज की यात्रा में कितने सहज में कितनी गहरी दोस्तियें बन जाया करती हैं और फिर कैसे सहज में—कितनी जल्दी जहाज से उतरने पर वे छुट जाती हैं। उस वक्त काउन्टेस की उदास आंखों की तरफ देखने से जान पड़ता था जैसे उनमें एक प्रकार की उत्सुकता, एक प्रकार की वेदना छिपी हुई हो। टार्जन सोचने लगे कि क्या फिर कभी काउन्टेस से मुलाकात होगी!

तीसरा बयान

रिउमाल की घटना

पेरिस में पहुंचने पर टार्ज़न सीधे अपने पुराने दोस्त डी. आरनट के डेरे पर चले गये और वहां सब हाल सुन के डी. आरनट उनकी कार्रवाइयों पर बहुत नाराज़ हुये। उन्होंने अपने पिता लार्ड ग्रेस्टोक के खिताब और उनकी भारी जायदाद को इस तरह व्यर्थ, दूसरे के लिये छोड़ दिया, इसके लिये उन्होंने टार्ज़न की बहुत लानत मलामत की। वे बोले—

"यह तुम्हारे पागलपन के अतिरिक्त और कुछ नहीं है, मेरे दोस्त! तुमने अपने इस काम से अपनी जायदाद और धन दौलत ही से नहीं हाथ धोया बल्कि दुनियां को यह सिद्ध करने का मौका भी गवां दिया कि हां तुम्हारी नसों में इंगलैंड के दो बड़े प्रसिद्ध और ऊंचे दर्जे के घरानों का रक्त दौड़ रहा है—और तुम बनमानुस के बच्चे नहीं हो। फिर उन लोगों ने तुम्हारी बात पर विश्वास कैसे किया? खास करके मिस पोर्टर ने कैसे इस बात को माना! मैंने तो कभी भी तुम्हारी कही बात को ठीक नहीं समझा। शुरू में ही, जब मैंने तुम्हें अफ्रिका के घने जंगलों में जानवर की तरह कच्चा मांस दांत से चिचोड़ के खाते और अपनी गीली उंगलियों को जांघ में पोंछते देखा था—तब भी, उस समय भी, क्षण भर के लिये भी मैंने इस बात को नहीं सोचा था कि तुम बनमानुस कोला के लड़के होगे। उस वक्त तो तुम्हारे कहने के विरुद्ध मुझे कोई सबूत नहीं मिला था—पर बुद्धि भी कोई चीज होती है, दुनियां की जानकारी भी काम आती है। उन लोगों ने—मिसपोर्टर वगैरह ने तो इनसे भी काम नहीं लिया। तुम्हारे पिता की डायरी से अच्छी तरह मालूम हो गया है कि उन्होंने और तुम्हारी मां ने अफ्रिका के उस भीषण स्थान पर कितनी तकलीफें उठाईं थीं। तुम्हारे जन्म समय की घटनायें भी उस डायरी में लिखी हैं। तुम जब छोटे थे, उस समय तुमने अपनी उंगलियों से डायरी के एक पन्ने पर जो चिन्ह कर दिये थे, वे भी मौजूद हैं! फिर मेरे समझ में नहीं आता कि इन सबूतों के मौजूद रहते—तुम बिना नाम के, बिना पैसे के, गरीब आवारे क्यों बने रहना चाहते हो!"

टार्जन ने जवाब दिया, "मेरा नाम टार्जन ही मेरे लिये यथेष्ट है, मैं और कोई नाम नहीं चाहता। बाकी रही बिना पैसे के गरीब बने रहने की बात—सो वैसा बने रहने की तो मेरी इच्छा नहीं है। मैं तुम्हारी स्वार्थहीन मित्रता पर दूसरा और कदाचित अन्तिम बोझ जो डालना चाहता हूं वह यह होगा कि तुम मेरे लिये एक नौकरी खोज दो।"

डी. आरनट बोले, "छीः छीः टार्जन, तुम भी कैसी बात करते हो और कैसा उलटा मतलब समझ लेते हो। मेरे कहने का वह तात्पर्य नहीं था जो तुम सोच रहे हो। मैंने तुमसे पचीस दफे नहीं कह दिया है कि मेरे पास इतना धन है कि जिससे बीस आदमियों का काम मजे में चल सकता है और जो कुछ मेरे पास है उसका आधा तुम्हारा है। और फिर अगर मैं अपनी सारी दौलत तुम्हें दे दूं—तो क्या वह उस मूल्य का दशमांस भी होगा जो मैं तुम्हारी मित्रता का लगाता हूं। नहीं, मेरे टार्जन, मेरी सारी जायदाद से भी उस अहसान का बदला नहीं चुकाया जा सकता जो तुम मेरे ऊपर कर चुके हो। अगर तुम अफ्रिका में, मोंगा के गांव के बीच में बन्धे उस खूंटे से मुझे न छुड़ा लेते, तो न जाने वे राक्षस मेरी क्या दुर्गति करते और किस कष्ट से मुझे मारते! अगर तुम मेरे जख्मी होने की हालत में मेरी उतनी हिफाजत और सेवा न करते तो कदाचित आज दिन मैं दुनिया में मौजूद न होता। यह तुम्हारी ही बदौलत है कि आज मैं जीता जागता लोगों को दिखाई दे रहा हूं। यह तो मुझे पीछे मालूम हुआ कि मेरे जख्मी रहने की हालत में तुम जो मेरे साथ बन्दरों के

दमदम के स्थान में रुक गये थे—उससे तुम्हारा कितना भारी नुक-सान हो गया था। जब हम लोग किनारे पर आये और पता लगा कि मिस पोर्टर और उनके साथ के लोग चले गये—तब मुझे इस बात का ध्यान होना शुरू हुआ कि हां तुमने बिना जान पहिचान के एक मनुष्य के लिये कितना भारी स्वार्थ त्याग किया है। यह न समझना कि मैं रुपया दे कर तुम्हारे अहसान के बोझ को उतारने की कोशिश कर रहा हूं, टार्जन! मैं रुपये की मदद इसी लिये करना चाहता हूं कि तुम्हें उसकी आवश्यकता है। अगर तुम्हें किसी दूसरी वस्तु की इस समय आवश्यकता होती तो तुम्हारे लिये उसे लाके प्रस्तुत करने को भी मैं उतना ही व्यग्र होता जितना इस समय रुपये के लिये हूं। मैं सदा दोस्त बन के तुम्हारी सेवा करता रहूंगा, मेरे तुम्हारे विचार एक ऐसे हैं, मेरी तुम्हारी रुचि एक ऐसी है। मैं तुम्हारे लिये जो भी करूं कम है। मैं रुपये से इस वक्त तुम्हारी मदद कर सकता हूं—और करूंगा।"

टार्जन ने हंस के कहा, "जाने दो, रुपये के मामले में हम लोग आपस में झगड़ेंगे नहीं। मुझे अगर दुनिया में रहना है तो मुझे रुपया अवश्य ही चाहिये। पर मुझे अगर कोई काम करने को मिल जाय तो उससे मेरा मन यहां ज्यादा लगेगा। तुम मेरी मित्रता का अगर कोई मूल्य समझते हो तो मेरे लिये इतना अवश्य कर दो—मेरे लिये कोई नौकरी खोज दो। नहीं तो खाली बैठना तो मेरे लिये मृत्यु के समान कष्टदायी होगा। रही मेरे जायदाद, धन दौलत और खिताब की बात—सो उसके बारे में मुझे विशेष चिन्ता नहीं, वह

अच्छे हाथों में है। क्लेटन ने जबर्दस्ती उन्हें मुझ से नहीं छीना है। वह जानता और समझता है कि वही असली अर्ल ग्रेस्टोक है और मैं सोचता हूं, अफ्रिका के जंगल में पैदा हुए मुझ असभ्य और अशिक्षित जंगली की बनिस्बत वह अपने ऊंचे दर्जे और खिताब के उत्तरदायित्व को ज्यादा अच्छी तरह समझेगा। तुम जानते ही हो कि मैं अब भी आधा जंगली हूं। मुझे थोड़ी देर के लिये भी क्रोध चढ़ने दो—देखो मैं सभ्यता और मनुष्यता के सब नियमों को भूल जाता हूं और ठीक वैसे ही काम करता हूँ जैसे एक जंगली जानवर को करने चाहियें। और फिर, अगर मैं अपना भेद खोल देता तो उसका यह मतलब होता कि जिस औरत को मैं प्यार करता हूं उससे मैं उस धन दौलत और ऊंचे पद को छीन लेता जो अब क्लेटन के साथ की शादी से उसे मिलेंगे। ऐसा मुझ से कभी नहीं हो सकता था—क्या मैं ऐसा कर सकता था, पाल !"

बिना जवाब की राह देखे टार्जन फिर बोले, "पैदाइश का मामला भी मेरे लिये, मेरी सम्मति में उतना मूल्यवान नहीं है जितना लोग समझते हैं। जिस परिस्थिति में मैं पैदा हुआ और बढ़ा हूँ उसमें मेरा यह खयाल हो गया है कि मनुष्य स्वयं अपने कामों से ही, अपनी शारीरिक ताकत और दिमागी शक्ति के बल से ही ऊंचे उठ सकता और संसार में नाम पैदा करने लायक बन सकता है। खिताब और रुतबा, जो बाप दादों के वक्त से घराने में चला आता है, व्यर्थ का बोझ और अनुचित आडम्बर है, और अगर वह मिलना भी चाहिये तो उसी आदमी को जो अपने कामों से अपने को उसके

पने लायक साबित कर दे। मैं जिस निगाह से उस बेचारी अंगरेज़ लड़की को देखता हूं जो मुझे पैदा करके एक वर्ष बाद मर गई, उसी निगाह, उसी प्रसन्नता, उसी प्रेम से मैं कोला को भी याद करता हूं जो अपने भयानक और जंगली ढंग पर सचमुच मुझे प्यार करती थी। उसने असली मां के मरने के बाद से ही, जब मैं बिल्कुल छोटा था, तभी से मुझे दूध पिलाया, बराबर वह मेरी रक्षा के लिये जंगल के खूंखार जानवरों और अपनी जाति के भयानक पशुओं से लड़ती रही, बराबर उसने मुझे वही स्नेह दिखाया जो किसी भी मां को अपने पुत्र के साथ दिखाना चाहिये।

"और मैं भी उससे प्रेम करता था, पाल, कितना करता था इस का ठीक पता मुझे तभी लगा जब मोंगा के गांव के हबशी के जहरीले तीर और निर्दयी भाले ने उसको मुझ से छीन लिया! मैं उस समय बिल्कुल लड़का था, और लड़का जिस तरह अपनी मां के लिये रोता है उसी तरह उसके ठंढे बदन से लिपट कर मैं भी रोया और व्याकुल हुआ था। तुम अगर उसे देखते पाल, कोला को—तो तुम्हारी निगाह में वह बदसूरत और भयानक शकल की ही दिखाई देती, पर मेरे लिये वह सुन्दर से भी सुन्दर थी—प्रेम इस प्रकार अपने सुनहरे जाल से प्रेमिक को ढांक लेता और उसे बदल देता है! और इसी लिये मैं सदा के लिये, बराबर के वास्ते, आजन्म, बनमानुस कोला का लड़का बना रहने में ही संतुष्ट हूं।"

डी. आरनट ने कहा, "मैं तुम्हारे इस प्रेम और भक्ति को कम प्रशंसा की दृष्टि से नहीं देखता, पर ऐसा एक वक्त आवेगा जब तुम

खुशी खुशी अपनी चीज को स्वयं लेने को प्रस्तुत हो जाओगे, मेरी बात को खयाल रखना। ईश्वर करे उस समय भी तुम्हें वह उतनी ही सरलता से मिल जाय जितनी सरलता से अब मिल सकती है। तुम जानते होगे कि प्रोफेसर पोर्टर और मि. फिलैंडर, दुनियां में दोही आदमी हैं जो इस बात को जानते हैं कि उस घने जंगल की एकान्त कोठरी में तुम्हारे पिता और माता के ठट्ठर के साथ जो छोटा ठट्ठर मिला था वह बनमानुस के बच्चे का था और उन स्त्री पुरुष की संतान नहीं था। तुम्हारी जीवन समस्या की गुत्थी को सुलझाने के लिये यह सबूत बहुत ही आवश्यक है। प्रोफेसर पोर्टर और मि० फिलैंडर दोनों ही बुड्ढे आदमी हैं, ज्यादा दिन न जीयेंगे। और फिर तुमने यह नहीं सोचा कि मिस पोर्टर को जैसे ही इस बात का पता लगेगा—कि असली लार्ड ग्रेस्टोक तुम्हीं हो—वे क्लेटन के साथ का अपनी शादी का एकरार तोड़ देंगी, और उस वक्त तुम्हें अपना खिताब, अपनी जायदाद और वह स्त्री भी मिल जायगी—जिसको तुम चाहते हो। उस वक्त तुम्हें यह बात नहीं सूझी, टार्जन !"

टार्जन ने सिर हिला कर कहा, "तुम मिस पोर्टर को जानते नहीं। क्लेटन पर किसी प्रकार की आपत्ति का आना उन्हें क्लेटन के जिस प्रकार और नजदीक कर देता उतना और कोई चीज क्लेटन के साथ की उनकी घनिष्टता को न बढ़ाती। वे दक्षिण अमेरिका के एक पुराने खानदान की हैं, और दक्षिण के लोग अपनी सचाई और दृढ़ता पर अभिमान करने वाले होते हैं।"

बाद के दो सप्ताहों को टार्जन ने पेरिस में इधर उधर घूमने में

खर्च किया। दिन को वे लाइब्रे रियों और चित्रालयों में जाते थे। वे पढ़ने के बड़े भारी शौकीन हो गये थे और यह देख के उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ था कि पुस्तकों में ही दुनिया का कितना अगाध ज्ञान भरा हुआ है और मनुष्य अपने सारे जीवन उद्योग करके और उनसे शिक्षा ग्रहण करके भी उस ज्ञान का कितना कम अंश पा सकता है। वे जहां तक हो सकता था दिन को भिन्न भिन्न विषयों पर किताबें पढ़ते थे और रात का समय दिल बहलाव और आराम में बिताते थे। इस काम के लिये उन्होंने देखा कि पेरिस कोई बुरा स्थान नहीं है।

यदि वे बहुत ज्यादा सिगरेट पीते थे, या बहुत अधिक शराब पान कर डाला करते थे—तो इसका कारण यह था कि वे सभ्यता को जैसा पाते थे उसी के अनुसार चलते थे, और वैसा ही करते थे जैसा वे अपने सभ्य भाइयों को करते देखते थे। उनको इस प्रकार का जीवन नया और मधुरता पूर्ण जान पड़ता था। फिर उनके हृदय में एक भारी दुःख और अपूर्ण आशा भरी हुई थी जो कि वे जानते थे कि कभी पूरी न होगी। उन्होंने सोचा कि इन्हीं दोनों के जरिये—पढ़ने और मन बहलाव से, जो कि बेकार आदमी के कार्यक्रम के दो भिन्न सिर हैं—वे भूतकाल को भूल जायंगे और भविष्य की विशेष चिन्ता न करेंगे।

एक दिन रात को एक होटल में बैठे हुये वे धीरे धीरे शराब पी रहे थे और ध्यान से उस सुन्दरी रशियन नाचने वाली को देख रहे थे जिसकी उन्होंने बहुत तारीफ सुनी थी और जो उस रोज नई ही उस होटल में आई थी—कि यकायक उनकी दृष्टि दो काली, पाजीपन

से भरी हुई आंखों पर पड़ी जो उनकी तरफ गौर से देख रही थीं। उन्हें अपनी तरफ घूमते देख के ही उस आदमी ने पीठ मोड़ ली और दर्वाजे पर की भीड़ में मिल के गायब हो गया। इससे टार्जन उसे अच्छी तरह देख न सके कि यह कौन आदमी था। पर इतना उन्हें विश्वास हो गया कि इन आंखों को उन्होंने पहिले कहीं देखा है और वह आदमी ऐसे मामूली तौर से नहीं बल्कि किसी कारण से जानबूझ के उनकी तरफ देख रहा था। उनको थोड़ी देर से शक हो रहा था कि कोई उन पर नजर गड़ाये हुये है, और इसी अज्ञात प्राकृतिक प्रेरणा के वशीभूत होके वे तुरत घूम पड़े थे और अपने ऊपर जमी हुई आंखों से उनकी आंखें मिल गई थीं।

होटल से निकल के बिदा होने के पहिले ही टार्जन इस बातको भूल गये, और जब वे दर्वाजे से बाहर निकले तो उन्होंने उस विचित्र ढंग के कपड़े पहिने हुये आदमी की तरफ निगाह नहीं की जो उन्हें निकलते देख के सामने के एक दर्वाजे के अन्धकार में छिप गया था। अगर वे जानते तो उन्हें मालूम होता कि आज ही नहीं, पहिले भी कई बार रात के वक्त उनका पीछा किया जा चुका है। लेकिन और मौकों पर वे डी. आरनट के साथ थे। आज डी. आरनट किसी दूसरे से मिलने चले गये थे इससे टार्जन अकेले थे।

जब वे उस सड़क की ओर चले जिन पर से होके पेरिस के इस भाग से अपने मकान तक जाने की उनकी आदत थी, तो वह अंधेरे में छिपा हुआ आदमी अपनी जगह से हटा और दौड़ के उसी दिशा में तेजी से चला जिधर टार्जन जाने वाले थे।

टार्जन रात के वक्त रिउमाल के रास्ते से होके जाया करते थे। उस समय शहर का वह भाग बहुत ही अन्धकार पूर्ण और शान्त रहा करता था और उसे देख के उन्हें अफ्रिका के घने और भयावने जंगल याद आ जाते थे। चारो ओर की कोलाहल पूर्ण और रंगबिरंगी रोशनियों से भरी हुई गलियें और सड़कें उन्हें पसन्द न थीं। आपने अगर पेरिस देखा होगा तो आप रिउमाल की तंग और बेढंगी गलियों से भो परिचित होंगे। अगर आप उनसे न परिचित हों तो आप किसी भी पुलिस वाले से पूछ लें। वह आपको बता देगा कि तमाम पेरिस में रिउमाल के अतिरिक्त ऐसा और कोई स्थान नहीं है जिस से रात के वक्त आप को ज्यादा हटे रहना और बचे रहना चाहिये।

टार्जन दोनों ओर के पुराने मकानों के घने अन्धकार के बीच से होते हुये पचास कदम से ज्यादा आगे न बढ़े होंगे कि यकायक सामने वाली इमारत के तीसरे खंड से उन्हें किसी के चिल्लाने की आवाज आई। आवाज औरत की थी और वह मदद के लिये चिल्ला रही थी। उसकी पहिली आवाज अभी अच्छी तरह गली में गूंजी भी न होगी कि टार्जन उस मकान की तरफ झपटे और सीढ़ियें चढ़ते हुये तेजी से ऊपर चले।

तीसरे खंड के बरामदे में टार्जन ने एक दर्वाजा जरा सा खुला हुआ देखा, और उसमें से फिर वही आवाज आई जो टार्जन को यहां तक खींच लाई थी। दूसरे क्षण में वे उस कमरे के बीच में पहुंच गये। वहां हलकी रोशनी हो रही थी। ऊंची जगह पर रक्खा हुआ तेल

का एक लंप अपनी मद्धिम रोशनी दस बारह बदसूरत चेहरों पर डाल रहा था, जिनमें एक के सिवाय और सब मर्दों के थे। एक औरत थी, जिसकी उम्र इस समय करीब तीस वर्ष की होगी। किसी वक्त वह शायद खूबसूरत रही हो, पर इस समय तो उसका चेहरा खराब चालचलन और हृदय के नीच भावों की छाप से भरा हुआ था। एक हाथ से अपना गला पकड़े हुये वह बगल वाली दीवार से सटी खड़ी थी।

टार्जन को देखते ही उसने चिल्ला के कहा, "मदद करो, मान-श्यूर, मदद करो, ये लोग मुझे मारे डालते हैं।"

टार्जन ने बीच में बैठे लोगों पर निगाह डाली। सभी पुराने बद-माश और मक्कार मालूम होते थे। उन्हें ताज्जुब होने लगा कि उन-को आते देख के भी वे सब भागने की कोशिश क्यों नहीं कर रहे हैं। यकायक अपने पीछे किसी किस्म की आहट पा वे घूम पड़े। दो बातें उन्होंने देखीं जिनमें से एक से उन्हें विशेष ताज्जुब हुआ। उन्होंने देखा कि एक आदमी दबे पांव धीरे धीरे चलता हुआ कमरे के बाहर चला जा रहा है और यद्यपि वे उसका चेहरा अच्छी तरह न देख सके, उस हलकी निगाह ने ही उन्हें बता दिया कि यह रोकफ है।

दूसरी बात जो उन्होंने देखी उसने उनका ध्यान बहुत जल्दी अपनी तरफ खींच लिया। उन्होंने देखा कि भारी डील डौल वाला एक कद्दावर आदमी हाथ में एक बड़ा सा लकड़ी का कुंदा लिये हुये दबे पैर चलता हुआ उनके पास बढ़ा आ रहा है। जब उसने और उसके साथियों ने देखा कि टार्जन ने उसकी चालाकी देख ली

है कि वे सब एक साथ चारों तरफ से टार्जन पर टूट पड़े। किसी ने छुरी निकाल लिया, किसी ने कुर्सी उठा ली, और वह आदमी जिसके हाथ में लकड़ी का कुंदा था—उसने अपना हाथ तेजी से ऊपर उठाया। अगर वह कुंदा टार्जन के सिर पर बैठता तो उनके सिर का कचूमड़ निकल जाता।

लेकिन वह मस्तिष्क, वह तेजी और चालाकी, वह बदन जो भयानक जंगलों में टरकोज और न्यूमा की असाधारण ताकत और उनकी खूंखार फुर्ती से बच चुका था, वह पेरिस के इन बदमाशों और गुन्डों की पकड़ में उतने सहज में नहीं आ जाने वाला था जितना उन्होंने सोचा था।

उन्होंने सभों पर निगाह डालते ही समझ लिया कि इनमें यह कुंदे वाला आदमी ही सबसे ज्यादा भयानक जान पड़ता है और पहिले इसी की खबर लेना ठीक होगा। वे सीधे उसी की तरफ झपटे और उसके हाथ के हथियार की मार को बचा में उसकी ठुड्डी पर ऐसा घूंसा जमाया कि वह बिना कुछ बोले चाले या हाथ पैर हिलाये पीठ के बल जमीन पर जा रहा।

तब वे दूसरों पर घूमे। यह उन्हें खेल मालूम होने लगा। लड़ाई की खुशी और रक्तपात की लालच उनके दिमाग पर एक तरह का नशा सा चढ़ाने लगी, सभ्यता का पर्दा उन पर से इस प्रकार गिर पड़ा—उसे फाड़ और फेंक के वे इस प्रकार बाहर निकल पड़े—जैसे वह कमजोर और रद्दी—एक ऐसा आवरण हो जो जरा सा भी ठेस लगने से फट जाता हो। उन दस कद्दावर पाजियों ने देखा कि

एक छोटे से कमरे में वे खूंखार जंगली जानवर के साथ फंस गये हैं जिसकी भारी ताकत और जिसके लोहे के बदन के आगे उनकी शक्ति और उनका शरीर—एक दम तुच्छ है।

बाहर बरामदे में खड़ा रोकफ लड़ाई का फैसला होने की राह देख रहा था। वह टार्जन का मर जाना निश्चय करके तब यहां से जाना चाहता था। पर यह उसकी इच्छा न थी, यह वह न चाहता था, कि खून होने के समय वह स्वयं भीतर रहे और बादको फिर अपने को उस मामले में फंसावे।

औरत अब तक वहीं खड़ी थी जहां टार्जन ने घुसते वक्त उसे देखा था। पर इन कुछ आखिरी मिनटों में उसके चेहरे के भाव एक दम परिवर्तित हो गये थे। पहिले जिस पर दुःख और निराशा की छाया थी, वह चेहरा अब उत्सुकता और काइयांपन प्रगट कर रहा था। पर टार्जन ने इस भाव परिवर्तन को नहीं देखा था। वे हमला करने वालों की तरफ घूमे हुये थे।

पहिले ताज्जुब और फिर डर का भाव उस औरत के चेहरे पर आ गया। और यह था भी प्राकृतिक। वह भलेमानसों के कपड़े पहिने हुये आदमी जिसको उसकी चिल्लाहट ने खींच कर यहां तक ला फंसाया था, जो यहां आके सहज में और बिना किसी तरद्दुद के उसकी समझ में मरने वाला था—वह यकायक भयानक राक्षस बन गया था। वह पागल सा हो गया था।

उसने चिल्ला के कहा, "हे भगवान यह तो खूनी जानवर है!" टार्जन के सफेद दांत अपने एक दुश्मन के गले में धंस रहे थे और

टार्जन इस समय वैसे ही लड़ रहे थे जैसे अफ्रिका के जंगलों में उनकी लड़ने की आदत रही थी।

कमरे के बीच में कभी इधर कभी उधर उछलते और कूदते हुये टार्जन सब जगहों पर एक साथ ही मौजूद दिखाई देते थे, और उन्हें झपटते और छलांगें मारते देख के उस औरत को वह चीता याद आ रहा था जिसको उसने अजायबघर में देखा था। कभी टार्जन की लोहे ऐसी उंगलियों में पड़ के किसी की कलाई की हड्डी टूटती थी, तो कभी उनके हाथों के झटके से किसी की बांह जबरदस्ती ऊपर उठाने और पीछे मोड़ने से कन्धे के पास से चटक जाती थी।

भय, घबड़ाहट और ताज्जुब से चीखें मारते हुये वे लोग जहां तक जल्दी से जल्दी हो सका भाग कर बाहर के दालान में चले आये, लेकिन सभों के आने के बहुत पहिले ही—उसी समय जब कि पहिला आदमी खून से भरा हुआ, लंगड़ाता और कराहता हुआ कमरे के बाहर निकला, उसी समय रोकफ समझ गया कि जैसा उसने सोचा था वैसा न होगा, आज यह राक्षस उसकी आशा के मुताबिक यहां मरेगा नहीं! वह दौड़ के पास के दूसरे मकान में गया और वहां से टेलीफोन द्वारा पुलिस को खबर की कि रिउ-माल के २७ नम्बर के एक मकान के तीसरे खंड में एक आदमी खून कर रहा है।

जब पुलिस के आदमी पहुंचे, उन्होंने देखा कि तीन आदमी जमीन पर पड़े कराह रहे हैं, एक डरी हुई औरत हाथों से अपना मुंह ढांके हुये पास के एक मैले बिछौने पर पड़ी हुई है और अच्छे

कपड़े पहिने एक आदमी कमरे के बीच में खड़ा है जो देखने में भला-मानस मालूम होता है। शायद वह सीढ़ियों पर से इनके चढ़ने की आहट सुन के ही समझ गया है कि मदद आ रही है, और इसी से चुपचाप उनके आसरे खड़ा है। पुलिस वालों का सोचना और जो कुछ भी ठीक हो, उनका यह आखिरी खयाल गलत था—टार्जन ने उन आने वालों को एक दम से अपना मददगार ही नहीं समझ लिया था—वे सीढ़ियों पर से मदद आ रही है यही सोच के नहीं रुक गये थे, उन्हें रुक इसी लिये जाना पड़ा था कि अब सामने मुकाबला करने वाला उन्हें कोई नहीं दिखाई देता था। अब जब इन लोगों को उन्होंने आते देखा तो वे फिर तन के और होशियार होके खड़े हो गये। इस वक्त वे वैसे सज्जन नहीं थे जैसे अपने कपड़ों से प्रगट हो रहे थे, इस समय वे आदमी से जंगली जानवर बन रहे थे—जंगली जानवर ही की तरह भूरी आंखों और आधी झुकी हुई पलकों के नीचे से उन की तरफ देख रहे थे। खून की महक ने सभ्यता का आखिरी पर्दा उनके ऊपर से उतार फेंका था और अब वे उसी तरह खड़े थे जिस तरह शेर शिकारियों से घिर के खड़ा होता है, हमेशा होशियार, चौकन्ने, लोगों के हर एक काम को गौर से देखते हुये और किसी पर जरा सा भी शक होने पर उस पर उछलने के लिये तैयार!

पुलिस वालों में से एक ने पूछा, "यहां क्या हुआ है?"

टार्जन ने संक्षेप में सब हाल सुनाया और जब अपनी बातों की पुष्टि के लिये उस औरत की तरफ घूमे तो उसका जवाब सुन वे

भौंचक से रह गये। उसने पतली आवाज में चिल्ला के कहा, "यह झूठ बोल रहे हैं। मैं इस कमरे में अकेली थी कि ये सन्नाटा पाके किसी बुरे मतलब से भीतर घुस आये। मैंने इनकी बात मानने से जब इनकार किया तो ये मेरी जान लेने को तैयार हो गये। मैं जोर से चिल्लाई, चिल्लाहट सुन के ये सब भलेमानस, जो उस वक्त मकान के नीचे से जा रहे थे, अन्दर घुस आये। यह राक्षस हैं, मानश्यूर ! राक्षस, इन्होंने अकेले सिर्फ अपने दांत और हाथ से—दस आदमियों की करीब करीब जान ले डाली है।"

टार्जन उस औरत की अकृतज्ञता से ऐसे स्तंभित हो गये कि उसकी बातें सुन के उनके मुंह से आवाज तक न निकली, पर पुलिस वाले उसकी बातें मानने को बिल्कुल तैयार नहीं मालूम होते थे। उन्हें पहिले भी इस औरत और उसके भलेमानस दोस्तों से काम पड़ चुका था। लेकिन तब भी वे पुलिस के सिपाही थे, जज नहीं—और उन्होंने सोचा कि इस कमरे के सब आदमियों को गिरफ्तार करके उचित न्यायकर्ता के सामने रखना ठीक होगा, दोषियों और निर्दोषियों की जांच करना जिसका काम है वही दोनों को छांट के अलग करेगा।

पर उन्होंने देखा कि इस भलेमानस से यह कहना कि तुम गिरफ्तार हो गये हो दूसरी बात है और उससे जबर्दस्ती उस आज्ञा को मनवाना दूसरी बात !

टार्जन ने शांत स्वर में कहा, "नहीं, मैंने कोई अपराध नहीं किया है। मैंने तो आवश्यकता पड़ने पर केवल अपनी रक्षा भर की है। मैं नहीं जानता यह औरत झूठी बातें आप लोगों से क्यों कह

रही है, मैंने आज के पहिले इसकी सूरत तक न देखी थी। मैं तो उसकी चिल्लाहट सुन उसकी मदद करने को ऊपर आया-!"

पुलिस वालों में से एक ने कहा, "चलिये, चलिये, वहां आपकी बातें जज लोग सुनेंगे।" यह कहता हुआ वह टार्जन के कन्धे पर हाथ रखने के लिये आगे बढ़ा। क्षण भर बाद वह एक कोने में लुढ़का हुआ दिखाई देने लगा। जब उसके साथी चारो तरफ से टार्जन पर झपटे, तो वे भी उसी ताकत का स्वाद चखने लगे जिस को टार्जन के पहिले के दुश्मनों ने चखा था। इतनी फुर्ती और इतनी बेरहमी से टार्जन उनके संग पेश आये कि उन लोगों को कमर से अपनी पिस्तौलें तक निकालने का मौका न मिला।

इस थोड़ी देर की लड़ाई में टार्जन की निगाह खुली हुई खिड़की पर पड़ी थी, और उसके बाहर उन्हें एक पेड़ का तना या तार का एक खंभा भी दिखाई दिया था, दोनों में से कौन था इसे वे निश्चय रूप से नहीं समझ सके थे। पुलिस का अन्तिम आदमी भी जब जमीन पर गिर पड़ा तो उनके एक साथी ने कोशिश करके कमर से पिस्तौल निकाल ली और उसे टार्जन की तरफ निशाना कर के छोड़ा। गोली ठीक जगह न बैठी और टार्जन के कान के पास से होती हुई निकल गई। इसके पहिले कि वह दूसरी गोली छोड़ सके टार्जन ने उछल के एक हाथ लैंप में मारा, वह जमीन पर गिर पड़ा और सारा कमरा अन्धकारमय हो गया।

इसके बाद पुलिस वालों ने एक काली छाया को दौड़ के खिड़की के पास जाते देखा। क्षण भर वहां रुक के उसने एक छलांग मारी और

कूद के गली के उस पार का तार का खम्भा पकड़ लिया। पुलिस के आदमी उठ के नीचे आये उस वक्त उनका शिकार वहां से गायब हो चुका था!

जिन आदमियों और औरत को उन्होंने पकड़ लिया था और थाने पर ले जा रहे थे उनसे वे मुलायमियत से नहीं पेश आये, उस वक्त की बेइज्जती के उन्हें जैसा शर्मिन्दा किया था वैसा ही उनके क्रोध का पारा भी ऊपर चढ़ा दिया था। यह सोच के उन्हें बड़ी फिक्र हो रही थी कि कैसे वे अपने बड़े अफसर को सब हाल सुनावेंगे कि एक खाली हाथ आदमी ने उन सभों को जमीन पर सुला दिया था और फिर उनके देखते देखते खिड़की से निकल के भाग गया था!

वह पुलिस वाला जो गली में खड़ा था, उसने निश्चयपूर्वक कहा कि कोई आदमी खिड़की से कूदा नहीं है और जब से वे लोग मकान में घुसे हैं उसके बाद से उनके आने के पहिले तक किसी ने इस इमारत को इस गली की ओर से नहीं छोड़ा है। उसके साथियों ने समझा कि यह झूठ बोल रहा है, पर वे इसे साबित न कर सके।

जब टार्जन ने अपने को तार के खम्भे से चिपके हुये पाया तो अपनी जंगल में पड़ी आदत के अनुसार उन्होंने झांक के देखा कि नीचे कोई दुश्मन तो नहीं है जो उतरने पर उनका सामना करे। उन्होंने अच्छा किया जो देख लिया, क्योंकि तार के खम्भे के ठीक नीचे, एक पुलिस वाला खड़ा था। ऊपर की तरफ उनका कोई

दुश्मन नहीं दिखाई दे रहा था। इससे वे नीचे उतरने के बजाय ऊपर चढ़ने लगे।

खम्भे का ऊपर का सिरा मकान की छत के ठीक सामने पड़ता था, अस्तु जो मजबूत बदन कई वर्षों तक जंगल में पेड़ की इस चोटी से उस चोटी और इस डाली से उस डाली तक कूदने की आदत लगाये हुए था, उसके लिये यह बीच का फासला बिल्कुल मामूली था। पलक झपते में टार्जन छत के ऊपर हो गये और इसके बाद एक मकान से दूसरे पर दौड़ते और उछलते हुये वे एक चौमुहानी के पास जा पहुंचे। यहां उन्हें एक दूसरा खम्भा दिखाई दिया जिस पर से उतर के वे जमीन पर आ रहे।

थोड़ी देर तक वे तेजी से दौड़े और इसके बाद रात भर खुले रहने वाले एक होटल में घुस गये। वहां एक एकान्त कमरे में जाके उन्होंने अपने कपड़ों और बदन पर से उस लड़ाई और दौड़ धूप के चिन्ह को दूर कर लिया जिसमें से होके वे अभी आ रहे थे और इसके बाद बाहर निकल के टहलते हुये अपने घर की तरफ चले।

घर से थोड़ी ही दूर पर उन्हें रोशनी से खूब जगमगाती हुई एक चौड़ी सड़क को पार करना पड़ा। सामने से आती हुई एक मोटर से बचने के लिये जब वे रोशनी के एक खम्भे के नीचे खड़े हो गये तो यकायक उन्होंने अपना नाम किसी स्त्री की धीमी आवाज में पुकारे जाते सुना। उन्होंने देखा कि मोटर की पिछली सीट पर बैठी हुई काउन्टेस डी. कूड आगे की तरफ झुकी हुई हैं। उन्हें देख के

टार्जन ने सिर झुकाया और जब वे फिर सीधे हुये उस वक्त तक मोटर दूर जा चुकी थी।

वे मन ही मन बोले, "काउन्टेस डी. कूड और रोकफ, दोनों एक ही रोज में! मालूम होता है पेरिस बड़ा छोटा सा शहर है!"

चौथा बयान

काउन्टेस की आत्मकहानी

दूसरे रोज सबेरे टार्जन ने रात का सब किस्सा, रात को ड्रिमाल में लड़ाई होने और बदमाशों और पुलिस को पीटने का, डी. आरनट को सुनाया और बोले, "तुम्हारा पेरिस तो मेरे जंगलों की बनिस्बत भी ज्यादा भयानक मालूम होता है, पाल! उन्होंने मुझे वहां बुला के क्यों फंसाया, क्या वे भूखे थे?"

डी. आरनट ने इस प्रकार सिर हिलाया जैसे वे टार्जन की यह

विचित्र घृणित बात सुन के एक दम भयभीत हो गये हों, पर फिर हंस के बोले, "तुम सब बातों को जंगल ही के नियमों और व्यवहारों की दृष्टि से देखते हो, सभ्य समाज के उन्नत कायदों और रीतियों को खयाल में रखते हुये उन्हें उस निगाह से समझने का उद्योग नहीं करते। क्यों, है न मेरे दोस्त?"

टार्जन ने मुंह बना के कहा, "सभ्य समाज के उन्नत कायदे और रीतियें! छिः, उन्हें देख लिया। जंगल के नियम अकारण अत्याचार की आज्ञा नहीं देते। वहां हम अपनी रक्षा करने या अपना खाना संगृह करने के लिये जीवहत्या करते हैं, या इस लिये मारते हैं जिसमें अपने लिये स्त्रियें पा सकें या अपने बच्चों का दुश्मनों से बचाव कर सकें—हमेशा किसी न किसी भारी प्राकृतिक नियम का पालन करने के लिये काम करते हैं। पर यहां! यहां तो मैं देखता हूं कि सभ्य आदमी जानवरों से भी ज्यादा खूंखार हैं, वे बिना कारण ही हत्या करते हैं, अपने स्वार्थ के लिये लोगों की जान लेते हैं। यही नहीं, वे अपने बेखबर शिकार को मौत के जाल में फंसाने के लिये एक बड़े ही उच्च और महान भाव को—मनुष्य की सर्वव्यापी बन्धुता को—अपने काम में ला के उसे बुरी तौर से इस्तेमाल करते हैं। अपने एक भाई की, अपने ऐसे एक मनुष्य की दया प्रार्थना की आवाज सुन के ही मैं अन्दर उस कमरे में गया था, जहां खूनी हत्यारे मेरी राह देख रहे थे। मैंने उस समय नहीं समझा—बहुत देर बाद तक भी नहीं समझ सका—कि किसी स्त्री की आत्मा इतनी नीच हो सकती है कि वह अपनी रक्षा करने वाले

को मौत के घाट उतारने के लिये बुलावे। मुझे सन्देह तो तब हुआ जब मैंने रोकफ को देखा, और दुःखमय निश्चय तब हुआ जब उसने पुलिस से बिल्कुल झूठी बातें कहीं और मुझी को दोषी ठहराया। रोकफ जानता होगा कि मैं बराबर उस रिउमाल के रास्ते आया करता हूं, वह पहिले ही से इन्तजाम करके बैठा था, बल्कि उसने यह भी तै कर लिया था कि अगर घटना क्रम उलट जाय तो क्या करना होगा—उस वक्त पुलिस बुलाई जायगी और वह औरत ऐसी बातें उनसे कहेगी। ठीक है, मैं अब सब समझ रहा हूँ।"

डी. आरनट बोले, "कम से कम एक बात का तो फायदा हुआ। मेरे कहने को तो तुम न मानते थे पर अब तो तुम्हें निश्चय हो न गया कि रिउमाज की तरफ रात के वक्त न जाना चाहिये।"

टार्जन ने मुसकुरा के कहा, "नहीं तुम गलत कहते हो, कल की घटना ने मुझे यह बता दिया कि तमाम पेरिस में वही एक स्थान है जहां कोई आदमी कुछ देर को दिलचस्पी पा सकता है। अब मैं उधर से आते जाते उस जगह एक बार जाना कभी न भूलूंगा, क्यों कि अफ्रिका छोड़ने के बाद से उस जगह की इसी घटना ने मुझे कल सच्चा आनन्द दिया है।"

डी. आरनट बोले, "वहां बिना दूसरी बार जाये ही तुम्हें सच्चा आनन्द मिल जायगा। तुम अभी पुलिस से नहीं निपटे हो। मैं पेरिस की पुलिस को अच्छी तरह जानता हूं और मुझे निश्चय है कि अपने साथ का तुम्हारा व्यवहार उन्हें जल्दी नहीं भूलेगा।

कभी न कभी वे तुम्हें पकड़ेंगे, मेरे दोस्त! और तब वे जंगल के स्वतन्त्र आदमी को लोहे के सीखचों के अन्दर बन्द कर देंगे। वह तुम्हें कैसा मालूम होगा, टार्जन!"

टार्जन ने गंभीरता से उत्तर दिया, "वे टार्जन, जंगल के राजा को, सीखचों के अन्दर बन्द नहीं रख सकते।"

टार्जन की आवाज में कुछ ऐसी विचित्रता थी कि डी. आरनट ने यकायक सिर उठा के उनके मुंह की तरफ़ देखा। उस पर उन्होंने जो चिन्ह देखे उनसे उन्हें निश्चय हो गया कि ये जो कुछ कह रहे हैं ठीक कह रहे हैं। ये सहज में किसी के हाथ न आयेंगे, न अपनी ताक़त और साहस के अतिरिक्त दूसरा कोई कानून ये मानेंगे! इनके लिये इनकी इच्छा ही कानून है। पुलिस के साथ कोई दूसरा झगड़ा होने के पहिले ही कोई ऐसी इन्तजाम करना चाहिये जिसमें इनमें और उनमें मेल हो जाय।

उन्होंने शान्त स्वर में कहा, "टार्जन, तुमको अभी बहुत कुछ सीखना है। मनुष्यों ने जो कानून बना दिये हैं उनको तुम्हें मानना होगा, चाहे वे तुम्हें पसन्द हों या नहीं। अगर तुम बराबर पुलिस से झगड़ते रहोगे, बराबर उन्हें नीचा दिखाने की कोशिश करते रहोगे, तो इसके सिवाय और कोई फल इसका न होगा कि तुम और तुम्हारे दोस्त इससे तकलीफ़ उठावेंगे। अब तक जो कुछ हो चुका है उसके बारे में मैं उन्हें समझा बुझा सकता हूं। पर आगे के लिये ध्यान रक्खो, अगर कानून कहे कि 'आओ' तो तुम्हें आना पड़ेगा, अगर वह कहे 'जाओ' तो तुम्हें जाना पड़ेगा। अब चलो तुम्हें

अपने दोस्त पुलिस के प्रधान अफसर के पास ले चलूं, वहां यह रिडमाल वाला सब मामला तै हो जायगा।"

आधे घन्टे बाद वे दोनों पुलिस अफसर के आफिस में घुसे। उन्होंने बड़ी खातिर से इन्हें बैठाया। वे टार्जन को जानते थे, उन्हें टार्जन का तभी से खयाल था जब वे और डी. आरनट उंगलियों के छाप के सम्बन्ध में उनके पास आये थे।

जब डी. आरनट पहिले रोज रात की घटना को बयान कर चुके तो पुलिस अफसर के चेहरे पर एक हलकी मुसकुराहट दिखाई दी। उन्होंने हाथ बढ़ा के एक बटन दबाया और उसकी आवाज सुन के जब तक क्लर्क भीतर आवे इस बीच में उन्होंने अपने टेबुल पर रक्खे कागजों में से छोटा सा एक कागज बाहर निकाल रक्खा। उसके आने पर उन्होंने कहा, "जूबन, इन पुलिस वालों को बुलाओ, उनको अभी आने को कहो।" यह कह के वह कागज उन्होंने उस क्लर्क के हाथ में दे दिया।

इसके बाद उन्होंने धीमी आवाज में कहा, "मानश्यूर, आपका अपराध बड़ा भारी है, और अगर मेरे ये दोस्त मुझे सब बातें इस तौर पर सुना न दिये होते तो शायद मैं इस मामले को कुछ कड़ी निगाह से देखता। अस्तु, अब मैं एक नई बात करना चाहता हूं। मैं उन पुलिस वालों को सामने बुलाता हूं, वे डी. आरनट के मुंह से सब हाल सुनेंगे और इसके बाद वे ही निश्चय करेंगे कि आगे इस विषय में आपके विरुद्ध कोई कार्रवाई की जाय या नहीं।

"अभी आपको सभ्य संसार की बहुत सी बातें सीखनी हैं।

बहुत सी ऐसी बातें जो आपको विचित्र और अनावश्यक जान पड़ती हैं, उनको आपको स्वीकार करना होगा, जब तक कि आप यह न समझ लें कि उनके किये जाने के असल कारण क्या हैं, और किन भावों से प्रेरित होके वे की जा रही हैं। वे सिपाही जिन पर आपने हमला किया था—वे केवल अपना कर्त्तव्य पालन कर रहे थे, उनका कोई स्वार्थ या उनकी कोई खास इच्छा इस विषय में न थी। रोज वे दूसरों की जानें और दूसरों के माल असबाब बचाने में अपनी जिन्दगी खतरे में डाला करते हैं। मौका पड़े तो वैसाही वे आप के लिये भी करेंगे। वे साहसी और बहादुर हैं, और इसका उन्हें दुःख है कि अकेले, खाली हाथ एक आदमी ने उन्हें मारा पीटा और हरा दिया। आपने जो कुछ किया है—इस बात का उद्योग करें कि वे लोग उसे भूल जायं। आप स्वयं एक बहादुर आदमी जान पड़ते हैं, और मैंने सुना है कि बहादुर उदारचित्त होते हैं।"

चारों पुलिस वालों के आने से आगे बात न हो सकी। जैसे ही उन आने वालों की निगाह टार्ज़न पर पड़ी वे आश्चर्य से उनकी तरफ देखने लगे।

पुलिस अफसर बोले, "मेरे भाइयो, ये ही वे सज्जन हैं जो तुम्हें कल रात को रिउमाल में मिले थे। आज वे स्वयं यहां आके उपस्थित हो गये हैं। मैं चाहता हूं कि तुम लोग ध्यान से लेफ्टेनेंट डी. आरनट की बातें सुनो, ये तुम्हें इन महाशय के बीते हुये जीवन का कुछ हाल सुनावेंगे। उससे तुम समझ जाओगे कि रात को इन्होंने तुम्हारे साथ वैसा बर्ताव क्यों किया था। हां, लेफ्टेनेंट शुरू करो।"

डी. आरनट आधे घन्टे तक उन पुलिस वालों से बातें करते रहे। उन्हें उन्होंने टार्जन के पिछले जंगली जीवन की बहुत सी बातें सुनाई और बताया कि उन्हें आरंभ से ही जंगल में कैसी शिक्षा मिली है और कैसे उन्होंने होश सम्हालते ही अपनी जान बचाने के लिये दूसरों से लड़ना सीखा है। पुलिस वाले समझ गये कि टार्जन ने जो हमला उन पर किया था वह उन्होंने किसी खास मतलब से या उन्हें बेइज्जत करने के लिये नहीं किया था, बल्कि अपनी पुरानी प्रकृति या आदत के अनुसार किया था। वे असल में उन पुलिस वालों का इरादा नहीं समझे थे। जैसे वे जंगल में बराबर दूसरों को—जो कि प्रायः सभी उनके दुश्मन होते थे—प्रतिद्वन्द्विता की दृष्टि से देखा करते थे, वैसे ही उन्होंने इन पुलिस वालों को भी देखा था, इनको भी उन्होंने अपना दुश्मन ही समझा था।

डी. आरनट अन्त में बोले, "आप लोग इसमें अपना अपमान समझते होंगे कि एक अकेले आदमी ने आप चारों को नीचा दिखाया! इससे आपके आत्माभिमान में ठेस लगी होगी। लेकिन वैसा खयाल आप बिल्कुल न करें। अगर आप उस कमरे में किसी शेर के साथ बन्द कर दिये जाते, या किसी जंगली बनमानुष को उस जगह आप के साथ छोड़ दिया जाता तो क्या उससे हार खाने में आपको कोई अपमान मालूम होता! वैसा ही इस सम्बन्ध में भी समझिये। आप को मालूम नहीं था, आप नहीं जानते थे, पर उस रोज आपने जिस ताकत का उदाहरण पाया था, वह ताकत कई बार, बार बार, जंगल के इन खूंखार पशुओं से लड़ और जीत चुकी है! जंगल के

राजा टार्जन से हार जाना कोई भी शर्म या अपमान की बात नहीं है !"

डी. आरनट चुप हो गये, पुलिस के सिपाही हैरान हो कर कभी अपने अफसर और कभी टार्जन की ओर देखने लगे, और तब टार्जन ने ऐसा काम किया कि जिससे उन सिपाहियों के मन का क्रोध हमेशा के लिये उनके दिल से निकल गया होगा। वे उठ खड़े हुये और हाथ फैला के उनकी तरफ बढ़ते हुये बोले, "मैंने गलती किया और मुझे उसके लिये दुःख है। आगे से हम लोग दोस्त रहेंगे।" सभों ने उनसे हाथ मिलाया और तमाम मामला खतम हो गया। उसके बाद से टार्जन पुलिस बैरक में प्रसिद्ध से हो गये और चारो पुलिस वाले तो उनके सच्चे दोस्त बन गये।

जब दोनों डेरे पर लौटे तो लेफ्टेनेंट को विलियम सेसिल क्लेटन लार्ड ग्रेस्टोक का एक पत्र मिला। उन दोनों में तब से ही पत्र व्यवहार चल रहा था जब 'एप' बन्दर टार्कोज जेन पोर्टर को चुरा ले गया था और वे दोनों कई आदमियों के संग उसकी खोज में निकले थे। पत्र पढ़ कर डी. आरनट बोले, "दो महीने बाद लंदन में उन दोनों का विवाह होगा !" टार्जन चुप रहे, वे समझ गये कि 'उन दोनों' से डी. आरनट का क्या मतलब है। इसके बाद सारे दिन वे चिन्तित और गंभीर बने रहे।

शाम को दोनों थियेटर देखने गये। टार्जन के दिमाग में अभी तक वही बात चक्कर लगा रही थी। उनकी आंखों के सामने रह रह कर उस सुन्दर अमेरिकन बालिका की तस्वीर आ जाती थी जो एक

बार उन पर अपना प्रगाढ़ प्रेम प्रगट कर चुकी थी और जो अब दो महीने में दूसरे से ब्याही जाने वाली थी। वे बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहे थे कि स्टेज पर क्या हो रहा है। यकायक उन्हें मालूम हुआ जैसे कोई उनकी तरफ गौर से आंखें जमा के देख रहा हो। अपनी जंगल में पड़ी आदत के अनुसार उन्होंने गर्दन घुमा के ठीक उसी तरफ निगाह उठाई जिधर से वे आंखें देख रही थीं। उन्होंने देखा कि ओल्गा, काउन्टेस डी. कूड हंसती हुई उनकी तरफ ताक रही हैं। उन्होंने सिर झुका के जब अभिवादन किया तो उन्हें साफ मालूम हुआ कि काउन्टेस की आंखों में आग्रह और उत्सुकता भरी हुई है।

दूसरी बार जब पर्दा गिरा और रोशनी हुई तो टार्ज़न काउन्टेस के बाक्स में पहुंच गये।

काउन्टेस मुसकुराती हुई बोलीं, "आप से मिलने की बड़ी ही इच्छा थी। मुझे यह सोच के बराबर दुःख हो रहा था कि उस रोज आपने मेरी और मेरे पति की इतनी भारी मदद की और मैंने उस बारे में आपको कुछ भी न बताया, न यही प्रगट किया कि मैंने उन दोनों आदमियों के विरुद्ध कोई कार्रवाई क्यों न की। आप कदाचित मुझे अकृतज्ञ ही समझते होंगे।"

टार्ज़न ने जवाब दिया, "नहीं नहीं, आप अपने मन में ऐसा न सोचें, न यही खयाल करें कि उन घटनाओं के बारे में मुझे कुछ बताना आवश्यक है। मैं जब भी आपको याद करता हूं तो प्रसन्नता और आदर के साथ! क्या उन लोगों ने आपको फिर कोई तकलीफ दी थी?"

काउन्टेस ने उदासी से जवाब दिया, "उनका तकलीफ देना कभी बन्द नहीं होता। मेरा मन होता है कि मैं किसी से सब बातें कह दूं, और आप के सिवाय कोई दूसरा ऐसा आदमी दिखाई नहीं देता जो उन बातों के जानने का अधिक अधिकारी या ज्यादा अच्छा पात्र हो। यदि आप आज्ञा देंगे तो सब बातें मैं आपको सुनाऊंगी, और वे बातें आपको समय पर काम भी देंगी। अभी आप अपने को निकोलस रोकफ से निश्चिंत भया हुआ न समझियेगा, मैं उसे बहुत अच्छी तरह जानती हूं। वह कोई न कोई तर्कीब आपसे बदला लेने की निकालेगा। अगर आप सब बातें जाने रहेंगे तो अपनी रक्षा कर सकने में भी शायद समर्थ हों! मैं यहां तो वे बातें नहीं कह सकती, पर कल पांच बजे संध्या को मैं घर पर मानश्यूर टार्जन की राह देखती रहूंगी।"

टार्जन ने बिदा होते हुये कहा, "कल पांच बजे तक का मेरा समय बड़ी उत्सुकता में बीतेगा।"

थियेटर के एक कोने में खड़े रोकफ और पालविच टार्जन को काउन्टेस डी. कूड से बातें करते देख रहे थे। दोनों के मुंह पर हलकी मुसकुराहट थी।

दूसरे रोज संध्या को साढ़े चार बजे काउन्टेस डी. कूड के महल ऐसे मकान के पिछले दर्वाजे पर जाकर एक बदसूरत दाढ़ी वाले आदमी ने कुंडा खटखटाया। एक आदमी ने दर्वाजा खोला, पर बाहर कौन खड़ा है इसे देख के उसके माथे पर बल पड़ गये। दोनों में कुछ देर तक धीरे धीरे बातें होती रहीं। पहिले तो नौकर ने बाहर

खड़े आदमी की बात सुन के सिर हिलाया, जैसे उसके किसी प्रस्ताव से इनकार किया हो, पर बाद को जब उसने अपने हाथ की कोई चीज़ धीरे से नौकर के हाथ में रख दी तो नौकर चुप हो रहा और क्षण भर कुछ सोच के उसको हाथ से पीछे आने का इशारा करके भीतर घुसा। काउन्टेस डी. कूड जिस कमरे में संध्या को चाय पिया करती थीं उसके बगल में सटा हुआ एक छोटा सा कमरा था। एक दूसरे रास्ते से घुमाते हुये नौकर ने लाकर उस आदमी को उसी में बैठा दिया।

आधे घन्टे बाद टार्जन को एक नौकर लाकर चाय पीने वाले कमरे में पहुंचा गया और साथ ही सामने वाले दर्वाजे से मुसकुराती हुई और अपना हाथ आगे बढ़ाये हुये काउन्टेस डी. कूड बाहर निकलीं।

उन्होंने हंस के कहा, "बड़ी प्रसन्नता की बात है कि आप आ गये।"

टार्जन ने जवाब दिया, "मैं आने से रुक ही किस तरह सकता था।"

दोनों में थोड़ी देर तक मामूली विषयों पर बातें होती रहीं। थियेटर कैसा था, पेरिस का ध्यान आज कल प्रधान रूप से किस बात की ओर आकर्षित है, जहाज पर की उस विचित्र और घटना-पूर्ण मुलाकात के बाद अब पुनः मुलाकात कर दोनों को कितनी प्रसन्नता हुई है, इन्हीं बातों पर कुछ देर तक बातचीत होती रही, और इसके बाद ही उस विषय पर सिलसिला चला जो उन दोनों के दिमाग में घूम रही थी।

काउन्टेस डी. क्रूड बोलीं, "आपने आश्चर्य किया होगा कि रोकफ़ बराबर हम लोगों के पीछे क्यों पड़ा रहता है। उसका कारण बहुत ही छोटा और साधारण है। मेरे पति काउन्ट महोदय को युद्ध विभाग के बहुत से गुप्त भेद मालूम हैं, उनके पास ऐसे कागज रहा करते हैं कि जिन्हें पाने के लिये अन्य राष्ट्र करोड़ों अरबों रुपया खर्च करने को तैयार हो जायंगे, जिन्हें अधिकार में करने के लिये उनके जासूस और भेदिये खून और डाकेजनी सभी कर सकते हैं! आज कल उनके सपुर्द ऐसा ही एक मामला है। इस मामले के गुप्त भेद यदि कोई रशियन अपनी गवर्नमेन्ट को जाकर बतला दे तो उसे फिर नाम और रुपये की कमी न रहेगी। रशियन गवर्नमेन्ट उसे इतना रुपया देगी कि उसे रखने को जगह न रहे। रोकफ़ और पालविच रूसी जासूस हैं। भेद का पता लगाने के लिये वे कुछ भी उठा नहीं रक्खा चाहते। वह जहाज वाली घटना—मेरा मतलब उस ताश के खेल वाले मामले से है—वह भी इन लोगों की सोची विचारी शैतानी थी। उस घटना की मदद से वे डरा धमका कर मेरे पति से उस भेद का पता लगाना चाहते थे। अगर काउन्ट पर ताश खेलने में धोखा देने का अपराध साबित हो जाता, तो एक तरह से उनका सारा जीवन नष्ट हो जाता। उनकी मान प्रतिष्ठा जाती रहती, जहाज में वे बहिष्कृत हो जाते और गवर्नमेन्ट के युद्ध विभाग के इस ऊंचे पद से उन्हें इस्तीफा दे देना पड़ता। वे इन्हीं बातों का उन्हें भय दिखा कर अपना मतलब पूरा करना चाहते थे—वे काउन्ट से कहते कि तुम्हारी इज्जत प्रतिष्ठा मट्टी में मिला चाहती

है पर हम लोग दूसरों से कह सकते हैं कि नहीं ये बातें झूठी हैं, इन्हें बदनाम करने को यह काम इनके दुश्मनों ने किया है, उससे हम तुम्हारा आदर मान बचा सकते हैं, बशर्ते कि तुम वे कागज हमें दे दो जिनकी हमें जरूरत है।

"आपने उनकी इस तर्कीब को चौपट कर दिया। तब उन्होंने दूसरी बात सोची। तब उन्होंने काउन्ट के बदले मेरी इज्जत बिगाड़नी चाही। जब पालविच मेरी कोठरी में घुसा तो उसने मुझसे साफ कहा कि अगर तुम उस भेद का पता लगा के हम लोगों को बता दो तो ठीक है। अन्यथा रोकफ बाहर खड़ा है। मेरे इशारे पर वह जहाज के नौकरों से जा के कहेगा कि तुम अपना दर्वाजा बन्द करके भीतर किसी दूसरे आदमी को रक्खे भई हो। वे नौकर जहाज के हर एक आदमी से यह बात कहेंगे और जहाज के किनारे पहुंचने पर यहां के अखबारों के संवाददाताओं को भी वह सन्देसा पहुंचा देंगे।

"कितनी भयानक बात थी! लेकिन मैं एक ऐसी बात जानती हूं कि अगर सेंटपीटर्सबर्ग की पुलिस को वह मालूम हो जाय तो मानश्यूर पालविच फांसी पर लटक जायं। मैंने उससे कहा कि अगर हिम्मत हो, तो तुम अपनी कार्रवाई करो, मैं अपनी करूंगी। मैंने झुक के उसके कान में एक बात कही। बस, वह तो सुनते ही मेरे ऊपर ऐसा झपटा जैसे पागल हो गया हो। अगर आपने मदद न की होती तो वह मुझे मार डालता!"

टार्जन ने धीरे से कहा, "बड़े हत्यारे हैं।"

काउन्टेस डी. कूड बोलीं, "हत्यारे! हत्यारे ही नहीं, वे

अपने पति से कहने की मेरी हिम्मत न हुई वह मैं आपसे क्यों कह देना चाहती हूं। मुझे आशा है कि सुनके आप उसे समझने का उद्योग करेंगे और तब जो करना मुनासिब है वह मुझसे कहेंगे। पर अपना फैसला कड़ाई के साथ न कीजियेगा।"

टार्जन बोले, "मैं बातों का फैसला करने में अच्छा जज साबित होऊंगा यह मुझे आशा नहीं है, मैडम! अगर आप किसी का खून कर दें तो मैं तो यही सम्मति दूंगा कि ऐसी मीठी मौत पाने के लिये मरने वाले को आपके प्रति कृतज्ञ होना चाहिये।"

काउन्टेस ने हंसते हुये कहा, "ओह, नहीं, ऐसा भयानक मामला नहीं है। खैर तो मैं पहिले आपको वह बात बताती हूं जिसके सबब काउन्ट इन दोनों के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं करते। इसके बाद अगर मेरी हिम्मत हुई, तो मैं आपको यह हाल भी सुनाऊंगी जो इनके बर्खिलाफ कार्रवाई न करने का असल कारण कहा जा सकता है। पहिला कारण यह है कि निकोलस रोकफ मेरा भाई है। हम लोग रूसी हैं। जब से मैंने होश सम्हाली, रोकफ को मैं खराब काम ही करते देखती आ रही हूं। वह रूसी फौज में कप्तान था, वहां से किसी कारण निकाला गया, उस घटना पर भी बड़ा झगड़ा मचा, पर मेरे पिता ने दौड़ धूप करके अन्त में उसे तै किया और लोगों से कह सुन के उसे जासूस विभाग में नौकरी दिला दी। तब से वह कई बड़े जुर्म कर चुका है, पर हमेशा किसी न किसी तरह अपनी जान बचा लेता है। हाल ही में एक ऐसा मामला पड़ा था कि उसमें रोकफ के छुट के बच जाने की मुझे ज़रा भी आशा न रह गई थी

पर क्या जाने किस तर्कीब से उसने अपना सारा दोष दूसरे पर डाल दिया, साथ ही उन पर यह भी इलजाम लगा दिया कि ये रूस सम्राट जार के विरुद्ध षड़यन्त्र करते हैं। बस फिर क्या था, रूसी पुलिस ने इसे तो छोड़ दिया और उन बेकसूरों को पकड़ लिया। आप जानते ही हैं रूस के पुलिस और जासूसी विभाग के अफसर इस तरह का जुर्म कितने सहज में दूसरे पर लगा देते हैं और उस को साबित कर देते हैं!"

टार्जन ने पूछा, "वह आपका भाई और रिश्तेदार है इससे आपकी दया और सहानुभूति पर अवश्य ही उसका कुछ अधिकार है, पर आपके विरुद्ध इतने षड़यन्त्र और इतने अत्याचार जो वह कर चुका है तो क्या इन कुकर्मों ने उसके उस अधिकार को छीन नहीं लिया है या तोड़ नहीं दिया है। जब वह भाई हो के अपनी बहिन की प्रतिष्ठा की कोई परवाह नहीं करता—उसे खराब कर देने का उद्योग करता है, तो आप ही क्यों उस पर दया दिखाती जा रही हैं या उस रिश्तेदारी का आदर क्यों निभाये जाती हैं?"

काउन्टेस बोलीं, "आपका कहना ठीक है, पर आप भूले जा रहे हैं कि एक दूसरा कारण भी है जो उसके विरुद्ध कोई कार्रवाई करने से मुझे रोकता है। उसके साथ की रिश्तेदारी का ख्याल यदि मैं न भी करूं तो भी उस डर को मैं अपने दिल से नहीं हटा सकती जो उसके प्रति मेरे दिल में समाया हुआ है। वह मेरे जीवन की एक ऐसी गुप्त बात जानता है जिसे मैं बड़ी होशियारी से अब तक छिपाये हुई हूं।"

काउन्टेस चुप हो गईं और उन्होंने मुंह नीचा कर लिया। फिर क्षण भर बाद बोलीं, "लेकिन नहीं, अब मैं उस भेद को कम से कम आप से नहीं छिपाऊंगी। आप से कहने की मेरी बड़ी इच्छा है। मैंने एक कानवेंट में शिक्षा पाई थी। जब मैं वहां थी तो मेरी मुलाकात एक आदमी से हुई जिसे मैं सभ्य और सज्जन समझती थी। मैं मनुष्यों के बारे में कुछ भी नहीं जानती थी, और उससे भी कम प्रेम के विषय में समझती थी। मेरे बेवकूफ दिमाग में यह बात पैदा हुई कि मैं इस आदमी को प्यार करती हूं, और उसके बहुत कहने पर मैं उसके संग भाग चलने को तैयार हो गई। उसने वादा किया था कि मैं तुमसे विवाह करूंगा।

"मैं उसके साथ केवल तीन घन्टे रही, और वह समय भी दिन के वक्त सार्वजनिक स्थानों—रेल के स्टेशनों और गाड़ी पर बीता। जब हम लोग उस स्थान पर पहुंचे जहां के लिये रवाना हुये थे और जहां हमारा विवाह होने वाला था, तो वहां गाड़ी से उतरते ही पुलिस के दो अफसर मेरे साथी के पास आकर खड़े हो गये। उन्होंने उसे गिरफ्तार कर लिया। वे मुझे भी पकड़ लेते, पर मैंने सब हाल उनसे साफ साफ कह दिया। उन्होंने मुझे रोका नहीं बल्कि एक स्त्री के साथ मुझे पुनः उसी कानवेंट में भेज दिया। पीछे मुझे मालूम हुआ कि वह आदमी सज्जन नहीं—भारी बदमाश था। वह फौज से भागा हुआ था, कई जुर्म कर चुका था और यूरोप के प्रत्येक शहर के पुलिस आफिस में उसकी कार्रवाइयों का विवरण मौजूद था।

"कानवेंट के अधिकारियों ने मामले को छिपाया। मेरे माता पिता तक को इसका पता न लगा। पर मेरा भाई जा के उस आदमी से मिला और उसका हाल उससे पूछ लिया! अब वह मुझसे कहता है कि तुम मेरे कहे मुताबिक न चलोगी तो मैं वह सब हाल तुम्हारे पति से कह दूंगा।"

टार्जन हंसते हुये बोले, "ओह, अभी तक आपका हृदय छोटी सी बालिका ऐसा ही है, अगर ऐसा न होता तो आप समझ जातीं कि इस बात का प्रगट होना आप की प्रतिष्ठा में कोई खराबी नहीं पैदा कर सकता। आप तुरत ही—आज ही रात को—अपने पति से सब हाल कह दीजिये, ठीक उसी तरह जिस तरह आपने मुझसे कहा है। अगर मेरा खयाल गलत नहीं है तो तो वे भी मेरी ही तरह आपके भय पर हंस पड़ेंगे, और तब ऐसा उद्योग करेंगे जिसमें आपका यह दुलारा भाई कैदखाने की आरामदेह कोठरी में रख दिया जाय।"

काउन्टेस बोलीं, "मुझे हिम्मत होती तो मैं ऐसा ही करती, लेकिन मुझे उनसे कहते डर लगता है। मैं आरंभ से ही लोगों से भय करना सीखती आई हूं। पहिले मैं अपने पिता से भय करती थी, फिर निकोलस से और बाद को फिर कानवेंट के अधिकारियों से—मेरी प्रायः सभी साथिनें अपने पतियों से डरती हैं, तब मैं क्यों न डरूं?"

टार्जन ने भौंह सिकोड़ के कहा, "पर स्त्रियों को पुरुषों से डरने की आवश्यकता ही क्या है! मुझे सभ्य समाज का तो नहीं पर

जंगल निवासियों का ज्यादा अनुभव है। उनमें तो बिल्कुल इसके विपरीत होता है! उनमें पुरुष स्त्री से डरता है। जंगल के तमाम बाशिन्दों में मैंने केवल हबशियों को ऐसा पाया जिनमें स्त्री को पुरुष से दब के रहना पड़ता है। पर उनकी कोई गिनती न करनी चाहिये, वे बुद्धि में जंगली जानवरों से भी नीचे होते हैं। यह बिल्कुल अनुचित है कि सभ्य संसार में, सभ्य स्त्रियें पुरुषों से डरें—उनसे भय करें जो उनकी रक्षा करने के लिये पैदा किये गये हैं। नहीं, मुझे तो यह पसन्द नहीं है, मुझे तो यह सुन के भी घृणा हो कि कोई स्त्री मुझसे भय करती है।"

ओल्गा डी. कूड ने मुलायम आवाज में कहा, "पर मैं ऐसा समझती भी नहीं कि आपसे मिल के कोई औरत आपसे भय करेगी, मेरे दोस्त! मेरी आपकी बहुत मामूली मुलाकात है, पर—न जाने क्यों, मुझे आश्चर्य होता है......आप ही एक ऐसे आदमी अब तक मुझे मिले हैं जिनसे भय करने का मेरा बिल्कुल मन नहीं होता। मैं आपसे डरूं तो कोई आश्चर्य नहीं, आप इतने लम्बे चौड़े, मजबूत......पर मुझे तो आप को देख के भय होने के बदले खुशी होती है। उस रोज रात को जहाज पर आप ने निकोलस और पालबिच को बड़ी सरलता से नीचा दिखाया था। सचमुच वह तारीफ का काम था।"

थोड़ी देर बाद टार्जन जब काउन्टेस डी. कूड से बिदा हो कर चलने को तैयार हुये और उन्होंने उनसे हाथ मिलाया तो उनके हाथ के दबाव से उन्हें कुछ हलका सा आश्चर्य हुआ, और वह आश्चर्य-तम

और भी बढ़ गया जब काउन्टेस बड़े आग्रह के साथ उनसे यह वादा कराने लगीं कि वे दूसरे रोज मिलने के लिये जरूर आवें। अस्तु दूसरे रोज फिर आने का वादा कर टार्जन काउन्टेस से विदा हुये, पर आते वक्त की उनके सामने खड़ी काउन्टेस की वे अधखुली आंखें और वे लाल मुलायम होंठ—टार्जन को दिन भर याद आते रहे। सचमुच ओल्गा डी. कूड बड़ी ही सुन्दर थीं, और जितनी वे सुन्दर थीं, टार्जन उतने ही उदासचित्त और साथियों से विहीन व्यक्ति थे। टार्जन के जख्मी हृदय को चिकित्सा की आवश्यकता थी, और उस हृदय की चिकित्सा स्त्री ही कर सकती थी।

दर्वाजे तक टार्जन को पहुंचा के जब काउन्टेस कमरे में घुसीं तो उन्होंने देखा कि सामने निकोलस रोकफ खड़ा है!

उन्होंने एक कदम पीछे हटते हुये घबड़ाई हुई आवाज में कहा, "तुम यहां कब से हो?"

रोकफ चिढ़ाने के ढंग से मुसकुराते हुये बोला, "तुम्हारे प्रेमी के यहां आने के और पहिले से!"

ओल्गा डी. कूड तेज आवाज से बोलीं, "चुप, तुम मुझसे—अपनी बहिन से—ऐसी बात कहने की हिम्मत कैसे करते हो?"

वह बोला, "जाने दो, मेरी प्रिय ओल्गा! अगर तुम उसे अपना प्रेमी नहीं समझतीं तो जाने दो। पर वह तुम्हारा प्रेमी नहीं है इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है। मैं औरतों की जितनी जानकारी रखता हूं, उसकी दसवां हिस्सा जानकारी भी अगर उसमें होती तो इस समय तुम उसकी गोदी में होतीं। वह बेवकूफ है, ओल्गा!

तुम्हारी हर एक बात, तुम्हारा हर एक काम उसको अपनी ओर आकर्षित कर लेना चाहता था, और उसे इतनी बुद्धि नहीं थी कि वह तुम्हारा मतलब समझे !"

काउन्टेस ने हाथों से अपने कान ढांक के कहा, "मैं नहीं सुनूंगी, मैं तुम्हारी गन्दी बातें सुनना नहीं चाहती। तुम मुझे चाहे जिस तरह भी धमकाओ, पर यह जरूर समझते होगे कि मैं अच्छी और पवित्र हूँ। आज रात के बाद तुम मुझे तकलीफ न दे सकोगे। मैं काउन्ट से सब हाल कह दूंगी और वे समझदार हैं—समझ जायेंगे। तब—तब तुम्हें होशियार हो जाना पड़ेगा, मानस्यूर निकोलस !"

रोकफ कड़ी आवाज में बोला, "तुम अपने पति से कुछ भी न कहोगी, ओल्गा, यह नया मामला जो मेरे हाथ में आ गया है, यह तुम्हारा मुंह खुलने थोड़े ही देगा ! वक्त आने पर यह सब हाल, थोड़ा बढ़ा चढ़ा के, तुम्हारे ही एक नौकर द्वारा, जिस पर मैं विश्वास करता हूं, तुम्हारे पति के कानों में डाला जायगा और तब काउन्ट महोदय समझ जायंगे कि उनकी स्त्री कितनी पवित्र और साफ है। अब तो मुझे एक बात मिल गई जिस पर मैं कार्रवाई कर सकता हूं। छिः तुम पर काउन्ट महोदय इतना विश्वास करें और तुम्हारा यह हाल ओल्गा ! छिः, तुम्हें शर्म करनी चाहिये।" काउन्टेस चुप रहीं, वे काउन्ट से जो कहने वाली थीं वह कह न सकीं और मामला सुलझने के बजाय उलझ गया। पहिले तो उन्हें एक ही बात का डर था, अब दो का हो गया। उनके हृदय की कमजोरी ने इस बेजड़ की बात को पुष्ट करने में और मदद की।

पांचवां बयान

नया षड़यन्त्र

एक महीने तक टार्जन सुन्दरी काउन्टेस डी. कूड के सौन्दर्य-मन्दिर के अनन्य भक्त और उपासक रहे। वहां उनका बड़े ही प्रेम से स्वागत होता था। अकसर उनकी मुलाकात वहां पर काउन्ट डी. कूड के उन चुने हुये दोस्तों और साथियों से भी हो जाती थी जो उनके यहां मिलने और चाय पीने आ जाते थे, पर ज्यादातर काउन्टेस ओलगा डी. कूड तरकीबें निकाल कर उन्हें और सभों से

मुलाकातें होती थीं और तब उन दोनों की अकेले में बातें होती थीं।

कुछ दिनों तक काउन्टेस के दिमाग में रोकफ की बातें डरावनी शक्ल से घूमती रहीं। यद्यपि उन्होंने इस मजबूत नौजवान आदमी को दोस्ती के अतिरिक्त और किसी दूसरी निगाह से न देखा था, पर जब से उन्होंने निकोलस की गन्दी बातें सुनी थीं, उनका दिमाग अवश्य ही उनकी मीमांसा करने लगा था। उन्हें आश्चर्य हो रहा था कि उनका चित्त इस अपरिचित की तरफ इतना अधिक आकर्षित क्यों रहता है। वे उससे प्रेम नहीं करना चाहती थीं, वे नहीं चाहती थीं कि टार्जन ही उनसे प्रेम करें। फिर क्या कारण था कि उनके हृदय में टार्जन के प्रति इतना खिंचाव पैदा होता था!

इसके उत्तर और काउन्टेस के पक्ष में एक बात कही जा सकती थी। काउन्टेस की उमर अपने पति से बहुत ही कम थी, और यद्यपि वे इसे जानती न हों या स्वीकार न करें, उनका हृदय अज्ञातरूप से किसी ऐसे मनुष्य की दोस्ती के लिये व्याकुल था जो उमर में उनके करीब करीब बराबर हो! बीस वर्ष की काउन्टेस को अपने चालीस वर्ष के पति से बातें करने में कुछ संकोच अवश्य जान पड़ता था, पर टार्जन की उमर केवल बाईस वर्ष की थी, वे उनके हृदय के प्रत्येक भाव को समझ सकेंगे इसका भी काउन्टेस को निश्चय था। वे सज्जन, बहादुर और उदारचित्त थे, काउन्टेस को उनसे किसी बात का भय न मालूम होता था। उन पर प्रत्येक बात के लिये विश्वास किया जा सकता है इसका काउन्टेस को आरंभ से ही विश्वास था।

रोकफ़ दूर से इस बढ़ती हुई घनिष्ठता को द्वेषपूर्ण प्रसन्नता से देख रहा था। जब से उसे यह मालूम हुआ था कि टार्जन को उस के रूसी जासूस होने का पता लग गया है, तब से उसके हृदय की संचित घृणा का कुछ स्थान डर ने भी अधिकार में कर लिया था। उसे सन्देह हो गया था कि कहीं टार्जन उसका भेद पुलिस के सामने खोल न दें। वह ऐसे मौके के लिये ठहरा हुआ था कि उसका अबकी का वार आखिरी बार हो सके और उससे टार्जन किसी तरह बच न सकें। वह टार्जन से अबकी बार सदा के लिये निश्चिन्त हो जाना चाहता था और साथ ही उन बेइज्जतियों और अपमानों का बदला भी उनसे ले लेना चाहता था जो उसने टार्जन के हाथों उठाये थे।

जंगल छोड़ने के बाद से अब तक टार्जन का जीवन इतना सुखमय नहीं बीता था जितना अब काउन्टेस के साथ की इस नई दोस्ती में बीत रहा था। उनके दोस्तों के साथ बात करने में उन्हें प्रसन्नता होती थी और काउन्टेस के अपने ऊपर के विश्वास और सरल मित्रता के नाते से उन्हें एक तरह का सन्तोष और सुख प्राप्त होता था। यह सन्तोष और सुख थोड़ी देर के लिये उनके हृदय से उन दुश्चिन्ताओं और तरद्दुदों को हटा देता था जिनके जंगल छोड़ने के बाद से वे शिकार बने हुये थे और उनके जख्मी कलेजे के लिये मलहम का काम करता था।

कभी कभी डी. आरनट भी टार्जन के साथ काउन्टेस के यहां चले जाया करते थे। उनसे और काउन्ट से बहुत दिनों से जान

सहचरी थी। और प्रायः स्वयं काउन्ट ही चले आते थे। पर वे अधिकतर अपने आफिस के झगड़ों में फंसे रहने और कामों की चिन्ता में पड़े रहने के कारण ज्यादा रात तक घर के बाहर ही रहते थे।

रोकफ बराबर टार्जन पर निगाह रखता था और सदा इस फिक्र में रहता था कि अगर कभी टार्जन रात के समय डी. कूड के मकान में जायं तो वह अपनी कार्रवाई करे। पर उसे निराशा ही हाथ लगती थी। टार्जन कभी भी डी. कूड के आलीशान मकान के भीतर रात के समय न घुसते थे। प्रायः वे और काउन्टेस थियेटर से रात को लौटते थे तो दर्वाजे ही से बिदा हो के टार्जन अपने डेरे पर चले जाते थे। रोकफ को इससे बड़ा भारी दुःख होता था।

जब रोकफ ने पूरी तरह समझ लिया कि टार्जन स्वयं अपने किसी काम से उसके फन्दे में न फंसेंगे तो उसने पालविच के साथ मिल के और सलाह करके कोई ऐसी तर्कीब सोचना शुरू किया जिससे वे किसी न किसी तरह उसके फेर में पड़ जायं और ऐसी स्थिति में पहुंच जायं जिससे निकलना उनके लिये मुश्किल ही नहीं असंभव हो जाय।

कई दिनों तक वे दोनों अखबारों को देखते रहे और काउन्ट डी. कूड और टार्जन की गतिविधि पर लक्ष्य रक्खे रहे। आखिर उनका काम पूरा होने का लक्षण दिखाई दिया। एक पत्र में सूचना निकली कि दूसरे रोज संध्या को जर्मन राजदूत के वहां एक चाय-पार्टी होने वाली है जिसमें काउन्ट डी. कूड भी शामिल होंगे। इसका

मतलब यह कि अगर वे उस पार्टी में गये तो आधी रात से पहिले घर न लौट सकेंगे।

पार्टी वाली रात को पालविच जर्मन राजदूत के मकान के सामने पहुंच के एक खम्भे की आड़ में खड़ा हो गया और वहां से तीक्ष्ण दृष्टि से देखने लगा कि कौन कौन मेहमान शामिल होने के लिये आ रहे हैं। उसे ज्यादा देर ठहरना न पड़ा, दस ही मिनट बाद उसकी निगाह डी. कूड पर पड़ी जो अपने शाफ़र को कुछ कहते हुये मोटर से नीचे उतर रहे थे। फिर वह वहां न ठहरा। तेजी से रास्ता तय करके वह सीधा अपने डेरे पर पहुंचा जहां रोकफ़ उसकी राह देख रहा था। दोनों वहां ग्यारह बजे तक बातें करते हुये ठहरे रहे। ग्यारह बज चुकने बाद पालविच ने टेलीफ़ोन का रिसीवर हाथ में उठाया और भोंपे में मुंह लगा के किसी स्थान का नम्बर बताया।

कनेक्शन हो जाने पर उसने पूछा, "क्या यह लेफ्टेनेन्ट डी. आरनट का मकान है?"

उधर से कुछ जवाब आया। वह फिर बोला, "मुझे मानश्यूर टार्जन से कुछ कहना है, क्या वे कृपा कर टेलीफ़ोन तक आवेंगे?" एक मिनट तक सन्नाटा रहा। इसके बाद उसने पूछा, "मानश्यूर टार्जन? अच्छा, मैं हूं फ्रैंकोज, शायद आप मुझ गरीब को भूले न होंगे। मैं काउन्टेस डी. कूड का नौकर हूं।

"हां, मानश्यूर, मुझे काउन्टेस महोदया का एक सन्देसा—बहुत जरूरी सन्देसा, आप से कहना है। उन्होंने आप को तुरत बुलाया है। वे किसी आफत में पड़ी हुई हैं।

"नहीं मानश्यूर, बेचारा फ्रैंकोज क्या जाने कि काउन्टेस महोदया को आपसे क्या काम है। क्या मैं मैडम को खबर कर दूँ कि आप तुरत आ रहे हैं?

"अच्छा मानश्यूर, धन्यवाद। ईश्वर आप की रक्षा करें।"

पालविच ने रिसीवर टांग दिया और हंसता हुआ रोकफ की तरफ घूमा।

रोकफ बोला, "जल्दी करो, टार्जन आधे घन्टे में काउन्टेस के यहां पहुंच जायंगे। तुम जर्मन राजदूत के मकान तक यदि पन्द्रह मिनट में पहुंच सको तो डी. कूड पैंतालीस मिनट में अपने मकान आ जायंगे। अब सन्देह रह गया तो यही कि जब उस बेवकूफ को पता लगेगा कि उसे धोखा दिया गया है तो वह बाद को पन्द्रह मिनट तक रुकेगा या नहीं। पर मैं तो समझता हूँ कि ओल्गा उसे इतनी जल्दी लौटने न देगी। यह लो डी. कूड वास्ते चीठी। अब तुम तुरत रवाना हो जाओ।"

पालविच जल्दी जल्दी कदम बढ़ाता हुआ जर्मन राजदूत के घर की तरफ रवाना हुआ। दर्वाजे पर पहुंच के उसने एक नौकर को किनारे बुलाया और उसके हाथ में चांदी का एक सिक्का और चीठी रख के बोला, "यह चीठी काउन्ट डी. कूड की है और तुरत उनके हाथ में पहुंच जानी चाहिये, जल्दी उन्हें दे दो।" नौकर ने सलाम किया और भीतर घुसा।

क्षण भर बाद काउन्ड डी. कूड ने अपने मेजबान से आज्ञा

मांगते हुये लिफाफा फाड़ा और पत्र बाहर निकाला। उन्होंने को पढ़ा उससे उनका चेहरा सुफेद हो गया और हाथ कांपने लगा।

यह लिखा था—

"एक ऐसा आदमी जो आपके ऊंचे सम्मान की रक्षा करना चाहता है इस पत्र द्वारा आपको सूचना देता है कि इस समय आपके घर की पवित्रता में बाधा पड़ रही है।

एक आदमी जो कई महीनों से आपकी अनुपस्थिति में आपके घर जाया करता था इस समय आपकी स्त्री के संग है। यदि आप तुरत इसी समय काउन्टेस ने निजी कमरे में जायं तो उन दोनों को एक साथ पावेंगे।

आपका—

एक दोस्त"

पालविच ने जब टार्जन से बातें कीं उसके बीस मिनट बाद रोकफ ने टेलीफोन का कनेक्शन ओल्गा के मकान से करवाया। उनकी दासी ने काउन्टेस के निजी कमरे से जवाब देते हुये कहा, "—लेकिन काउन्टेस सो रही है, वे इस समय आप से बातें नहीं कर सकतीं!"

रोकफ बोला, "मुझे बहुत जरूरी बात कहनी है, और सो भी इसी समय और स्वयं काउन्टेस से। तुम जा के उन्हें जगा दो और कहो कि हलका सा कपड़ा बदन में डाल के टेलीफोन के पास आवें। मैं पांच मिनट बाद फिर आता हूं।"

यह कह के रोकफ ने टेलीफोन का रिसीवर टांग दिया और साथ ही पालविच ने कमरे के अन्दर पैर रक्खा।

रोकफ ने पूछा, "काउन्ट के हाथ में मेरा पत्र पहुंच गया ?"

पालविच बोला, "वे अब तक घर के लिये रवाना भी हो चुके होंगे।"

रोकफ हंसता हुआ कहने लगा, "बहुत ठीक। तब मेरा काम पूरा हो गया। काउन्टेस महोदया इस समय अपने निजी कमरे में बैठी होंगी। थोड़ी देर बाद, बिना किसी तरह की खबर दिये, विश्वासी जैक्स मानश्यूर टार्जन को उनके सामने ले जा के खड़ा कर देगा। कुछ मिनट तक सवाल जवाब होता रहेगा। ओल्गा अपनी रात की पतली और महीन हलकी पौशाक पहिने बड़ी ही सुन्दरी और ललचौंहीं मालूम हो रही होगी और यद्यपि वह टार्जन को देख के ताज्जुब में आ जायगी—पर अप्रसन्न और असंतुष्ट न होगी।

"अगर उस आदमी के बदन में सच्चे खून का जरा सा भी अंश होगा, और जरा भी मर्दानगी उसमें होगी, तो पन्द्रह मिनट बाद जब काउन्ट उस कमरे में घुसेंगे तो उन्हें दो प्रेमियों के मिलने का बड़ा अद्भुत दृष्य दिखाई देगा। सचमुच हम लोगों ने पूरी तकीब सच्ची उतारी, मेरे दोस्त ! अब चलो किसी निराली जगह चल के एक एक प्याले शराब से मन और शरीर की थकावट मिटावें, और साथ ही मानश्यूर टार्जन को भी धन्यवाद दें जिनकी कृपा से हमारा काम पूरा हुआ। शायद उन्हें यह पता न होगा कि काउन्ट डी. कूड पेरिस भर में सब से अच्छे तलवार के चलाने वाले हैं और उनके बराबर पिस्तौल का निशाना लगाने वाला भी यहां कोई नहीं है।"

जब टार्जन काउन्टेस के मकान पर पहुंचे दर्वाजे पर खड़ा जैक्स उनकी राह देख रहा था।

"इधर आइये, मानश्यूर" कहते हुए जैक्स ने उन्हें पीछे आने का इशारा किया और चौड़ी संगमर्मर की सीढ़ियों पर चढ़ता हुआ आगे बढ़ा। क्षण भर बाद उसने एक दर्वाजा खोला और मोटे मखमल के भारी पर्दे को बगल में हटाते हुये उसने टार्जन को भीतर घुसने का इशारा किया। इसके बाद वह तुरत नीचे उतर गया।

टार्जन ने देखा कि कमरे के उस पार एक छोटे से टेबुल के पास ओल्गा बैठी हुई हैं और सामने उनके टेलीफोन रक्खा है जिसकी ओर वे उत्सुकता से देख रही हैं। शायद उन्होंने टार्जन के आने की आहट नहीं सुनी थी।

टार्जन ने भीतर कदम रखते हुये कहा, "ओल्गा, क्या मामला है?"

ओल्गा के मुंह से हलकी ताज्जुब की चीख निकली और उन्होंने टार्जन की तरफ सिर घुमा के कहा, "हैं जीन, तुम यहां कहां, तुमको किसने यहां पहुंचाया, तुम यहां कैसे आये?"

टार्जन एक दम चौंक उठे, तुरत ही उनके दिमाग में सच्ची बात का एक अंश बिजली की तरह दौड़ गया।

उन्होंने पूछा, "तुमने मुझे बुलाया नहीं, ओल्गा?"

ओल्गा आश्चर्य से बोली, "मैं तुम्हें इस समय रात को बुला-! हे भगवान, क्या तुमने मुझे एक दम पागल समझ लिया जीन?"

टार्जन ने कहा, "पर फ्रैंकोज ने मुझे टेलीफ़ोन में कहा कि तुम किसी आफत में पड़ गई हो और तुमने मुझे तुरत बुलाया है !"

"फ्रैंकोज ! फ्रैंकोज कौन ?"

"उसने अपना नाम फ्रैंकोज बताया और कहा कि वह तुम्हारा नौकर है !"

ओलगा हंस के बोली, "ओह, मालूम होता है किसी ने तुम्हारे साथ दिल्लगी की है। फ्रैंकोज नाम का कोई आदमी मेरे यहां नौकर नहीं हैं।"

टार्जन ने गंभीर आवाज में कहा, "दिल्लगी ! नहीं, यह दिल्लगी नहीं होगी, इसमें कोई भेद छिपा होगा।"

ओलगा बोली, "भेद, कैसा भेद, क्या तुम समझते हो कि...।"

टार्जन ने बात काट के पूछा, "काउन्ट कहां हैं।"

"जर्मन राजदूत के यहां !"

टार्जन बोले, "तो यह तुम्हारे लायक भाई की कार्रवाई मालूम होती है ! कल काउन्ट को मालूम होगा, नौकरों से पूछताछ करेंगे, और फिर सब बातों से वे वही समझेंगे जो कि रोकफ उन्हें समझाना चाहता है !!"

ओलगा हठात् उठ के खड़ी हो गईं और दो कदम बढ़ के टार्जन के पास आ गईं। उनके चेहरे से डर और घबराहट बरसने लगी और उनकी आंखों में वह भाव आ गया जो शिकारी को देख के, भय से किंकर्तव्यविमूढ़, अपने भविष्य की चिन्ता से व्याकुल—बेचारे गरीब हरिन के बच्चे की आंखों में आजाता है। उनका शरीर कांपने लगा

और उन्होंने अपने को सम्हालने के लिये टार्जन के कन्धे पर हाथ रखते हुये धीमी आवाज में कहा, "अब क्या होगा, जीन! यह तो बड़ी भयानक बात है, कल सारा पेरिस इसे जान जायगा। मेरा भाई इतना करने में कोई कसर न रक्खेगा!"

ओल्गा की निगाहों में, उनकी भावभंगी में, उनके शब्दों में प्रार्थना का भाव भरा हुआ था। सहायता चाहने की वह आकांक्षा भरी हुई थी जो कि हमेशा से, पुराने जमाने से—स्त्री जाति अपने प्राकृतिक रक्षक मनुष्यों के प्रति रखती आई है। टार्जन ने अपनी छाती पर रक्खे ओल्गा के कोमल हाथ को अपनी मजबूत उंगलियों में दबा लिया। यह उन्होंने किसी इच्छा या इरादे के वशीभूत हो के नहीं किया, बल्कि सान्त्वना और धीरज देने के भाव से ही उनसे ऐसा हुआ, और उसी भाव ने उनके एक हाथ को ओल्गा के कन्धों पर भी पहुंचा दिया।

इसका असर बिजली की तरह हुआ। टार्जन ने अब तक कभी ओल्गा के शरीर को इस तरह नहीं छूआ था। दोनों ने यकायक भयभीत होकर एक दूसरे की तरफ देखा। और जब कि यहां पर ओल्गा को दृढ़ता दिखानी चाहिये थी, उनका हृदय और भी शक्ति-हीन हो गया। वह टार्जन के शरीर के और पास खसक आईं और उन्होंने अपने दोनों हाथ उनके गले में डाल दिये। टार्जन ने क्या किया! उन्होंने अपनी मजबूत बाहों में ओल्गा को दबा लिया और उनके नरम होंठों को बार बार चूमने लगे!

काउन्ट राउल डी. कूड ने पत्र पढ़ने बाद कुछ कह सुन के अपने

मेज़बान से जल्दी जल्दी बिदा ली। बाद को कभी भी उन्हें याद न आया कि आखिर इतनी जल्दी लौटने का उन्होंने बहाना क्या निकाला था। जब तक वे घर न पहुंचे, सभी चीजें उन्हें धुंधली और अस्पष्ट मालूम होती रहीं, पर घर के दर्वाजे पर खड़े होने बाद वे बहुत शान्त और गंभीर बन गये। उनके कदम शान्ति के साथ बिना आवाज के जमीन पर पड़ने लगे। आधी सीढ़ी भी न चढ़े होंगे कि किसी अज्ञात कारण से जैक्स ने उनके लिये दर्वाजा खोल दिया। उस समय उन्हें यह न सूझ पड़ा कि मेरे बिना खटखटाये जैक्स ने आखिर दर्वाजा खोला क्यों, पर बाद में उन्होंने विचार करके इसे आश्चर्य की बात समझा!

बड़े धीरे धीरे पंजों के बल सीढ़ियें चढ़ते हुये वे ऊपर के दालान में पहुंचे और उसी तरह सावधानी से अपनी स्त्री के कमरे के दर्वाज़े पर जा पहुंचे। उनके हाथ में मोटी सी लकड़ी थी, और उनके हृदय में थी अपमान का बदला लेने और हत्या करने की भयानक इच्छा!

पहिले ओल्गा की निगाह उन पर पड़ी। भय की एक चीख मार कर वह टार्जन की बांहों से अलग हो गई, और साथ ही टार्जन पीछे की तरफ घूमे। वे ठीक समय पर घूमे—क्योंकि जैसे ही उनकी निगाह डी. कूड पर पड़ी वैसे ही उन्होंने यह भी जान लिया कि कोई चीज उनके सिर पर आ रही है! उन्होंने हाथ ऊंचा करके उस भयंकर वार को रोका जो डी. कूड ने उनके सिर को लक्ष्य करके चलाया था। एक—दो—तीन दफे, बिजली की तरह की तेजी से, वह

मजबूत लकड़ी टार्जन के ऊपर गिरी, और उसका प्रत्येक वार टार्जन को आदमी से—सभ्य पुरुष से—जंगली जानवर बनने में मदद देता गया।

धीमी गुर्राहट की आवाज के साथ—ठीक वैसी ही गुर्राहट के साथ जैसी कि 'एप' बन्दरों की होती है—टार्जन अपने सामने खड़े फ्रांसीसी की ओर झपटे। एक झटका मार कर भारी लकड़ी उन्होंने उनके हाथ से छीन ली और जिस तरह दियासलाई की तीली तोड़ी जाती है उसे तोड़ कर उन्होंने दूर फेंक दिया। इसके बाद गला पकड़ उन्होंने डी. कूड को अपनी तरफ खींचा।

बाद में क्षण भर तक रुकी हुई ओल्गा डी. कूड अपने सामने के भयानक कृत्य को निस्तब्ध, निश्चेष्ट, देखती रहीं; पर बाद में यकायक उन्हें होश हुआ। वे झपट कर वहां पहुंचीं जहां टार्जन उनके पति को मारे डाल रहे थे—जान से मार रहे थे—इस तरह गला पकड़ कर हिला रहे थे जैसे छोटे से चूहे के बच्चे को बड़ा बुलडाग कुत्ता हिलावे!

उन्होंने टार्जन के मजबूत हाथों को पीछे से खींचने की चेष्टा करते हुये पागल की तरह चिल्ला कर कहा, "हैं, हैं! हे भगवान, जीन! तुम मेरे पति की जान लिये ले रहे हो!!"

गुस्से से आत्मविस्मृत टार्जन की श्रवण शक्ति लोप हो गई थी। उन्होंने ढकेल कर डी. कूड को जमीन पर गिरा दिया और उनकी छाती पर पैर रखके अपने सिर को ऊंचा किया। फिर काउन्ट डी. कूड के समूचे महल में—उनके महल के एक एक कमरे में, 'एप'

कूड की भारी, कलेजे को हिला देने वाली आवाज गूंज उठी! पांच खंड के मकान के ऊपर से नीचे तक के नौकर उसी तरफ दौड़े जिधर से आवाज आई थी। उन्होंने जो दृश्य देखा उससे उनका कलेजा कांप उठा, मुंह से आवाज न निकली! बेचारी काउन्टेस अपने पति की देह के पास घुटनों के बल बैठ कर ईश्वर प्रार्थना करने लगी।

धीरे धीरे टार्जन के आंखों के आगे का लाल रंग का कोहरा हटने लगा। चीजें अपने वास्तविक रूप में उनके सामने आने लगीं। थोड़ी देर के लिये वे पशु बन गये थे, अब वे फिर सभ्य पुरुषों की श्रेणी में आने लगे। उनकी आंखें घुटने टेक के बैठी हुई ओल्गा के ऊपर पड़ीं। वे धीमे स्वर में बोले "ओल्गा!" ओल्गा ने आंखें उठा के उनकी ओर देखा। उनको आशा थी कि वे टार्जन की आंखों में खून की पिपासा देखेंगी। बदले में उन्होंने देखा दुःख और पश्चात्ताप की आग।

उन्होंने रो के कहा, "ओह, जीन, देखो—तुमने क्या कर डाला! वे मेरे पति थे, मैं उन्हें प्राणों से भी ज्यादा चाहती थी। तुमने उन्हें मार डाला!"

बहुत ही मुलायमियत से टार्जन ने काउन्ट डी. कूड को हाथों पर उठा लिया और लेजा कर धीरे से एक कोच पर लेटा दिया। फिर उन्होंने उनकी छाती पर अपना कान लगाया और भारी आवाज में बोले, "ओल्गा, थोड़ी शराब लाओ!"

काउन्टेस शराब लाईं। दोनों ने कोशिश करके, उनके दांत खोल

के, उसका थोड़ा सा अंश गले के नीचे उतारा। एक धीमी आह की आवाज काउन्ट के सफेद होंठों के बाहर निकली, सिर जरा सा हिला—आंखें जरा सा घूमीं।

टार्जन बोले, "ठीक है, ये मरे नहीं हैं। मुझ पर दया करके ईश्वर ने इन्हें बचा रक्खा है।"

काउन्टेस ने पूछा, "तुमने ऐसा किया क्यों जीन!"

टार्जन बोले, "मैं नहीं कह सकता। इन्होंने मुझ पर हमला किया और साथ ही मैं पागल सा हो उठा। मेरी जाति के "एप" बन्दर हमला किये जाने पर जैसा करते हैं, वैसा ही मैंने भी किया। मैंने अभी तक अपना जीवनवृत्तान्त नहीं सुनाया है, ओल्गा! अच्छा होता अगर तुम उसे जानती होतीं। तब यह घटना न होने पाती जो आज हो गई है। अपने पिता को तो मैं जानता ही नहीं कौन थे, केवल अपनी मां को जानता हूं जो भयानक "एप" बन्दरी थीं। पन्द्रह वर्ष की अवस्था तक मैंने मनुष्य की शकल न देखी। और बीस वर्ष की अवस्था के बाद गोरे मनुष्य पर पहिले पहिल मेरी निगाह पड़ी। अब से वर्ष भर पहिले मैं खूनी जानवर की शकल में नंगा अफ्रिका के भयानक जंगलों में घूमा करता था। मेरे विषय में बुरे खयाल मत करना, ओल्गा, गोरी जाति को जानवर से मनुष्य बनने में कई सदियें बीत गईं हैं, मुझे तो मनुष्य बनने का उद्योग करते दो वर्ष भी नहीं हुये हैं।"

ओल्गा बोलीं, "मैं तुम्हारे विषय में कभी भी कोई बुरी बात नहीं सोच सकती, जीन! आज जो कुछ हुआ है मेरी गलती के कारण

हुआ। लेकिन अब तुम जाओ। वे जब होश में आवें—तो उनकी निगाह तुम पर न पड़नी चाहिये। बिदा!"

मन में दुःख और दिल में निराशा भरे हुये टार्जन सिर झुकाये हुये काउन्ट डी. कूड के महल के बाहर निकले।

बाहर आते ही बहुत से खयाल उनके दिमाग में तेजी से चक्कर मारने लगे और जल्दी ही उन्होंने निश्चय कर लिया कि अब उन्हें क्या करना है। कुछ ही मिनटों के अन्दर वे पुलिस की उस चौकी पर पहुंचे जो रिउमाल के नजदीक पड़ती थी। यहां उन्हें उनमें से एक अफसर मिल गया जिनसे पहिले उनकी लड़ाई हुई थी। टार्जन को देख कर बेचारा बहुत प्रसन्न हुआ और वहां आने का कारण पूछने लगा। कुछ दूसरी बातें करके टार्जन ने पूछा, "क्या आपने कभी निकोलस रोकफ या एलेक्सिस पालविच का नाम सुना है?"

अफसर बोला, "कई बार, मानश्यूर! दोनों का नाम पुलिस के रजिस्टरों में दर्ज है, और यद्यपि उनके विरुद्ध कोई खास जुर्म नहीं है, हम लोग बराबर उनके रहने के स्थानों का पता रखते हैं। न जाने कब उनकी जरूरत हमें पड़ जाय। जितने जुर्म करने वालों के नाम हमारे यहां दर्ज हैं हम सब का रहने का स्थान जानते हैं। क्या मानश्यूर को कोई काम है?"

टार्जन ने जवाब दिया, "हां, मुझे मानश्यूर रोकफ से जरा मिलना है। यदि आप कृपा कर उनका पता बतला देते तो......।"

कुछ ही मिनटों के अन्दर उन्हें निकोलस रोकफ का पूरा पता

मिल गया। एक कागज पर उसे लिख कर टार्जन ने जेब में रखा और उस ओर रवाना हुये जहां किराये की मोटरें मिलती थीं।

रोकफ और पालविच दोनों ही अपने कमरों में लौट आये थे और बैठे हुये इन्हीं मामलों पर बातें कर रहे थे। उन्होंने प्रातःकाल प्रकाशित होने वाले दो समाचार पत्रों के आफिसों में टेलीफोन द्वारा सूचना दे दी थी, और प्रत्येक क्षण आशा कर रहे थे कि उनके प्रतिनिधि आवें और हम उन्हें ऐसी घटना का हाल सुनावें जिसको पढ़ पेरिस के सामाजिक मंडलियों में खलबली मच जाय।

बाहर सीढ़ियों पर भारी पैरों की आहट आई। रोकफ ने प्रसन्न होके कहा, "लेकिन सचमुच ये अखबार वाले हैं बड़े फुर्तीबाज।" दर्वाजे पर एक धक्का लगा और वह बोला, "भीतर चले आइये, मानश्यूर!"

भीतर आने वाले की कड़ी, भूरी आंखों पर निगाह पड़ते ही उसके होठों की हंसी न जाने कहां गायब हो गई!

उसने चिल्ला के उठते हुये कहा, "हैं! तुम यहां कैसे आये?"

टार्जन ने कहा, "चुपचाप बैठ जाओ!" ये शब्द उन्होंने इतनी धीमी आवाज में कहे कि वे दोनों मुश्किल से सुन सके, लेकिन उनके कहे जाने का ढंग ऐसा था कि रोकफ को तो अपनी कुर्सी पर फिर से बैठ जाना पड़ा, और पालविच उठने की हिम्मत न कर सका।

उसी धीमी आवाज में टार्जन फिर बोले, "तुम जानते हो मैं यहां किस लिये आया हूँ! उचित तो था कि मैं तुम्हें मार डालता।

पर कभी ऐसा नहीं करूंगा—कारण तुम ओल्गा डी. कूड के भाई हो। मैं अब की बार तुम्हारी जान और छोड़ देता हूं। पालविच को मै किसी गिनती में नहीं समझता, वह बेवकूफ तो केवल तुम्हारा हथियार बना हुआ है। जब तक मैं तुम्हें जीते रहने देता हूं—मैं उस पर भी हाथ न उठाऊंगा। आज मैं तुम दोनों को तभी इस कोठरी में जीता छोड़ के जाऊंगा जब तुम दो काम कर दोगे।

"एक तो तुमको आज की सारी घटना का पूरा हाल, और तुमने जो भाग उसमें लिया हो वह, एक कागज पर पूरा पूरा लिखना पड़ेगा, और उस पर दोनों को दस्तखत करना पड़ेगा। दूसरे, मुझसे यह पक्का वादा करना पड़ेगा कि आज की घटना का समाचार किसी अखबार में न पहुंचने पावे। अगर तुम दोनों यह मंजूर न करोगे, तो इस दर्वाजे के बाहर अब तुम्हारा जीवित शरीर न जायगा इसको समझ लो। लो जल्दी करो, यह स्याही है—और यह कागज और कलम रक्खी हुई है।

रोकफ की भीतर से तो डर के मारे जान निकली जाती थी, पर ऊपर से उसने अपना मुंह ऐसा बना लिया जैसे उसे टार्जन की बातों की कुछ परवाह ही न हो। उसने सोचा कि मैं बातें बना के टार्जन को टाल लूंगा। यह खयाल उसका गलत निकला। क्षण भर बाद ही टार्जन के दाहिने हाथ की मोटी उंगलियें उसके गले पर दिखाई देने लगीं। पालविच ने भागने का इरादा किया पर टार्जन ने बायें हाथ में उसे उठा लिया और इस जोर से कोने में फेंका कि वह बेहोश हो के वहीं लेट रहा। जब रोकफ का चेहरा काला होने लगा

तो टार्जन ने ढकेल कर उसे फिर कुर्सी पर बैठा दिया। उसने खौलते हुये अपनी बड़ी बड़ी खूनी आंखों से टार्जन की तरफ देखा, जैसे वह देख के ही टार्जन को भस्म कर डालना चाहता हो! पालविच भी होश में आ गया और टार्जन के हुक्म से लंगड़ाता हुआ आके अपनी कुर्सी पर बैठ गया।

टार्जन बोले, "अब लिख डालो, फिर अगर मुझे तुम पर हाथ चलाना पड़ा तो मैं उतना मुलायम न बना रहूंगा।"

रोकफ ने कलम उठाई और लिखना शुरू किया।

टार्जन ने कहा, "देखो कोई बात छूटने न पावे, और नाम भी सब बराबर देते जाना।"

थोड़ी देर बाद दर्वाजे पर खटखटाने की आवाज आई। टार्जन ने जवाब दिया, "चले आओ।"

एक दुबला पतला नाटे कद का आदमी भीतर घुसा। उसने गौर से चारो तरफ़ निगाह डाली और बोला, "मैं 'मैटिन' समाचार-पत्र के कार्यालय से आया हूं। शायद मानश्यूर रोकफ मुझे कोई बात बताना चाहते हैं।"

टार्जन शीघ्रता से बोले, "आपने गलत खबर सुनी, मानश्यूर, मेरे प्रिय मित्र निकोलस को कोई भी खबर अखबार में प्रकाशित करवानी नहीं है। क्यों निकोलस, ठीक है न?"

निकोलस ने लिखते हुये लाल आंखें उठा कर टार्जन की तरफ देखा, फिर बोला, "नहीं, अब तो—कोई खबर नहीं छपवानी है।"

टार्जन बोले, "न अब, न आगे कभी, मेरे निकोलस!" संवाद-

दोनों ने तो नहीं, पर निकोलस ने अवश्य ही वह चमक देख ली जो क्षण भर के लिये टार्ज़न की आंखों में आ गई थी वह जल्दी से बोला, "न आगे कभी !"

टार्ज़न ने नौजवान की तरफ घूमते हुये कहा, "क्षमा कीजियेगा, आपको व्यर्थ कष्ट उठाना पड़ा, बन्दगी !" उन्होंने हाथ का सहारा देके उसे दर्वाजे के बाहर कर दिया और दर्वाजा बन्द कर फिर अपनी जगह पर आ गये।

घन्टे भर बाद, अपने कोट के जेब में कागज का एक मोटा पुलिन्दा रखते हुए टार्ज़न बोले, "मैं तो तुमको यही राय दूंगा, निकोलस, कि तुम फ्रांस छोड़ दो। अगर तुम यहां रहे, तो कभी न कभी मुझे बहाना जरूर ही मिल जायगा कि मैं तुम्हें मार भी डालूं और तुम्हारी बहिन के सामने बुरा भी न बनूं।"

छठवां बयान

द्वन्द युद्ध

रोकफ़ के पास से निकल टार्जन जब मकान पहुंचे तो डी. आरनट सो रहे थे। टार्जन ने उन्हें उठाना मुनासिब न समझा। दूसरे दिन सबेरे उन्होंने रात की सारी घटना, एक एक शब्द, डी. आरनट को सुना दिया। कोई बात छोड़ी नहीं। अन्त में बोले, "मैंने भी कैसी बेवकूफी की! डी. कूड और उनकी स्त्री दोनों मेरे दोस्त हैं। और मैंने उनकी दोस्ती का बदला कैसे चुकाया! प्रायः काउन्ट

की जान मार कर। मैं एक भली औरत की बदनामी का कारण बना, और शायद उन दोनों के सुखी जीवन में झगड़ा पैदा करने का कलंक भी मेरे ही सिर लगेगा।"

डी आरनट ने पूछा, "क्या ओल्गा डी. कूड से तुम प्रेम करते हो?"

टार्जन बोले, "अगर मुझे यह निश्चय न होता कि काउन्टेस मुझे प्यार नहीं करतीं, तो शायद मैं तुम्हारी बात का उत्तर न दे सकता पाल! लेकिन उनका किसी तरह का निरादर किये बिना ही मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूं कि न तो वे मुझे प्यार करती हैं—न मैं ही उन्हें प्यार करता हूं। वह तो एक तरह का—क्षण भर का पागलपन था, वह प्रेम नहीं था—और अगर डी. कूड न भी आये होते, तो हम दोनों को बिना किसी तरह का नुकसान पहुंचाये वह पागलपन क्षण भर के अन्दर ही हम लोगों को छोड़ भी दिये होता। तुम जानते ही हो मुझे स्त्रियों के विषय में कितना कम अनुभव है। ओल्गा डी. कूड बड़ी सुन्दर हैं! उनकी सुन्दरता, उस समय की धीमी रोशनी, चारो तरफ की ललचौंही सजावट, और उनकी रक्षा पाने के लिये मेरे प्रति प्रार्थना, इन सब से बचाव एक ज्यादा सभ्य—सामाजिक रीति रिवाजों से ज्यादा परिचित कोई मनुष्य कर सकता है। मेरी सभ्यता, मेरी सामाजिक जानकारी तो मेरे चमड़े तक भी नहीं घुसी है, मेरे कपड़ों ही में खतम हो जाती है! फिर मैं क्या कर सकता था!

"मैं समझ गया कि पेरिस मेरे रहने लायक नहीं है। यहां रह के

मैं बराबर गड्ढों में गिरता जाऊंगा। मनुष्य की बनाई रुकावटें, उसके बनाये नियम मुझे तकलीफ देने वाले और अप्राकृतिक मालूम होते हैं। मुझे हमेशा ऐसा मालूम होता रहता है जैसे मैं कैद में पड़ा होऊं। मैं अब इसे अधिक नहीं सह सकता, मेरे दोस्त! मैं अब फिर अपने उसी पुराने जंगल में चला जाना चाहता हूं, और फिर वैसी ही जिन्दगी बिताना चाहता हूं जैसी कि वहां मुझे पैदा करती समय ईश्वर ने मेरे लिये निर्धारित कर दी थी।"

डी. आरनट गंभीर स्वर में बोले, "ऐसा हतोत्साह मत हो जाओ, जीन! तुमने जिस तरह सब बातें की हैं, बहुतेरे 'सभ्य' कहलाने वाले मनुष्य मौका पड़ने पर वैसा न कर सकते। बाकी रही पेरिस छोड़ के जाने वाली बात, सो उसके बारे में शीघ्र ही राउज डी. कूड के पास से कोई न कोई सन्देसा आवेगा। तुम यह निश्चय रक्खो।"

और डी. आरनट का सोचना था भी ठीक। एक सप्ताह बाद, करीब ग्यारह बजे दोपहर को, जब कि टार्जन और डी. आरनट दोनों खाना खा रहे थे, मानश्यूर फ्लाबर्ट के आने की सूचना मिली। मानश्यूर फ्लाबर्ट बड़े सभ्य और नम्रता से बोलने वाले थे। उन्होंने बहुत दफे झुक झुक के, बड़ी शिष्ट भाषा में काउन्ट डी. कूड की ओर से टार्जन को लड़ने की चुनौती दी और कहा, "बड़ी कृपा हो यदि महाशय अपने किसी परिचित को थोड़ी देर बाद मेरे पास भेज दें, जिनसे मैं सब बातें तै कर लूं। कोई भी बात ऐसी न होनी चाहिये जिससे किसी को कोई असुविधा हो।"

टार्जन ने उन्हें धन्यवाद देते हुये कहा, "जरूर, जरूर, मैं

ओर से बात करने का सब भार अपने दोस्त लेफ्टेनेंट डी. आरनट पर छोड़ता हूं। ये जब भी चाहें आपके पास जाके सब बातें तै कर सकते हैं।" तै हुआ कि उसी रोज दोपहर को दो बजे, डी. आरनट मानश्यूर फ्लाबर्ट के यहां जायंगे और उनसे बातें कर लेंगे। इसके बाद झुक झुक के धन्यवाद देते हुये बेचारे मानश्यूर फ्लाबर्ट बिदा हुये।

जब वे चले गये और दोनों अकेले रह गये तो डी. आरनट ने टार्जन की तरफ देख के पूछा, "कहो जी, सुना ?"

टार्जन बोले, "अच्छी तरह। अब या तो अपने पिछले पापों में मैं मनुष्य की हत्या का पाप और जोड़ूं, या मैं स्वयं अपनी जान से हाथ धोऊं। क्यों मेरे दोस्त, मैं कितनी शीघ्रता और तत्परता से अपने सभ्य भाइयों की चालें सीख रहा हूं।"

डी. आरनट ने पूछा, "तुम हथियार कौन पसन्द करोगे ? डी. कूड तलवार चलाने में बड़े होशियार हैं, और पिस्तौल का निशाना भी सच्चा लगाते हैं।"

टार्जन हंस के बोले, "तो मुझे चाहिये कि मैं बीस कदम के फासले पर खड़े हो के जहरीले तीर चलाने की शर्त रक्खूं, या फिर बरछे पसन्द करूं। खैर, तलवार और पिस्तौल में मैं पिस्तौल पसन्द करूंगा।"

डी. आरनट बोले, "तुम अपनी जान बचा न सकोगे, जीन !"

टार्जन ने कहा, "सो तो मुझे निश्चय है, पर मैं किसी न किसी रोज मरूंगा तो जरूर ही।"

डी. आरनट बोले, "तो तलवार रक्खो। उसमें कोई खतरनाक जख़्म लगने की विशेष संभावना नहीं है, और डी. कूड तुम्हें जख्मी करके ही छोड़ देंगे।"

टार्जन ने गंभीर स्वर में कहा. "नहीं, पिस्तौल ठीक है।"

डी. आरनट ने टार्जन को तलवार ही पसन्द करने के लिये बहुत आग्रह किया पर टार्जन ने न माना, अन्त में पिस्तौल ही का निश्चय रहा।

चार बजे के बाद डी. आरनट मानश्यूर फ्लाबर्ट से मिलके लौट आये। आते ही बोले, "सब तै हो गया। सभी बातें संतोषजनक हैं। कल प्रातः काल का ठीक रहा। ईट्रंप्स के पास सड़क पर एक जगह है जहां लोग कम आते जाते हैं। फ्लाबर्ट ने उसी के लिये प्रस्ताव किया। मुझे कोई खराबी न मालूम हुई इससे मैंने स्वीकार कर लिया।"

टार्जन ने केवल "बहुत ठीक" कहा, वे विशेष कुछ न बोले। बाद को यह मामला फिर उन्होंने परोक्ष रूप में भी न उठाया। रात को सोने के पहिले उन्होंने कई पत्र लिखे। सभों पर पता लिख के उन्हें बन्द करने बाद उन सब को उन्होंने एक बड़े लिफाफे में रक्खा और उस पर डी. आरनट का नाम लिख दिया। कपड़ा उतारते वक्त टार्जन के धीमे स्वर में धीरे धीरे गुनगुना के गाने की आवाज डी. आरनट के कानों में गई।

डी. आरनट मन ही मन कुड़बुड़ा उठे। उन्हें निश्चय हो चुका था कि दूसरे रोज प्रातः काल टार्जन अवश्य अपनी जान से हाथ

धोयेंगे, और इससे उन्हें भरपूर दुःख हो रहा था। टार्जन को इस बात की कोई भी चिन्ता नहीं है यह देख उन्हें क्रोध आ गया।

प्रातः काल, अन्धेरा था तभी, टार्जन के नौकर ने उन्हें आराम की गहरी नींद से उठाया। यद्यपि वे छः घन्टे सो चुके थे, पर उन्हें मालूम हुआ जैसे सोने के साथ ही किसी ने उन्हें उठा दिया हो। उन्होंने दर्वाजे में डी. आरनट को कपड़े पहिने खड़े देख के कहा, "एक दूसरे की हत्या करने के लिये तो यह बड़ा अनुपयुक्त समय है, डी. आरनट।"

डी. आरनट को चिन्ता के मारे रात भर नींद न आई थी, इससे टार्जन की बेफिक्री देख कर उन्हें कुछ गुस्सा चढ़ना स्वाभाविक था। उन्होंने ताने के ढंग से कहा, "तुम तो जान पड़ता है खूब आराम से रात भर सोये होगे?"

टार्जन हंस के बोले, "तो मैं करता क्या पाल, क्या समूची रात जागता रहता। तुम्हारे ढंग से तो मालूम होता है कि मैंने रात भर सो के जैसे कोई भारी अपराध किया हो।"

डी. आरनट ने कहा, "नहीं जीन, मेरा वह मतलब नहीं है। लेकिन तुम इस मामले में इतने बेफिक्र हो कि मुझे—मुझे देख के बुरा मालूम होता है। तुम्हें देख के कोई यह नहीं कह सकता कि तुम फ्रांस के सब से होशियार पिस्तौल का निशाना लगाने वाले का मुकाबला करने जा रहे हो। लोग यही समझेंगे जैसे तुम चिड़ियाओं का शिकार करने जाते हो।"

टार्जन ने सिर हिला के कहा, "मैंने एक भारी अपराध किया

है, पाल, और आज मैं उस अपराध का प्रायश्चित करने जा रहा हूं। मेरा प्रतिद्वन्द्वी बहुत अच्छा निशाना लगाना जानता है इससे इस बात का निश्चय होता है कि मेरा वह प्रायश्चित पूरा उतरेगा। फिर इसमें चिन्ता करने और दुखित होने की कौन सी बात है। तुमने ही तो कहा है न कि काउन्ट डी. कूड पिस्तौल का निशाना लगाने में प्रसिद्ध हैं?"

डी. आरनट ने डरे हुये ढंग से कहा, "तो क्या तुमने आशा करली है कि तुम निश्चय मारे जाओगे?"

टार्जन बोले, "नहीं मैंने यह आशा तो नहीं की है, लेकिन यह तो तुम्हें स्वीकार करना ही पड़ेगा कि मेरे जीते जागते बच आने की बहुत कम संभावना है!"

अगर डी. आरनट यह जानते कि टार्जन के दिमाग में कौन सा इरादा जमा हुआ है—अगर उन्हें यह मालूम होता कि शुरू से ही, इस बात का पता लगते ही कि उन्हें लड़ाई के मैदान में काउन्ट डी. कूड के आगे अपने कार्यों का हिसाब देना होगा, उन्होंने अपने मन में क्या निश्चय कर रक्खा है, यदि यह डी. आरनट जानते—तो वे भय और चिन्ता के मारे पागल हो जाते।

चुपचाप दोनों डी. आरनट की मोटर में घुसे, और चुपचाप ही उस शान्तिमय सड़क पर दौड़ चले जो उन्हें ईटम्पस पहुंचाती थी। दोनों अपने अपने ध्यान में थे। डी. आरनट बहुत दुखित थे। वे टार्जन से बहुत प्रेम करते थे। यद्यपि दोनों का जीवन बिल्कुल भिन्न भिन्न रहा था, दोनों की शिक्षायें बिल्कुल एक दूसरे से अलग थीं,

पर दोनों में आरम्भ से ही एक सच्ची दोस्ती पैदा हो गई थी जो साथ में रहने से और बढ़ के पुष्ट हो गई थी। दोनों ही ऊंचे खयालों के थे, दोनों ही बहादुर, दोनों ही इज्जत के लिये जान देने की हिम्मत रखने वा ले और दोनों ही उदार चित्त के थे। वे एक दूसरे को समझते थे। और दोनों ही एक दूसरे की मित्रता पर गर्व रखने थे।

टार्जन पिछली बातें सोच रहे थे, उन्हें अपने बीते हुये जंगली जीवन के सुखमय और शान्तिमय दिन याद आ रहे थे। उन्हें लड़कपन के उस समय का ध्यान आया जब वे छोटे से लड़के थे और अपने मृत पिता की कोठरी में स्टूल के ऊपर बैठ के सुन्दर तस्वीर की किताबों के ऊपर झुके हुये बिना किसी की मदद के, बिना मनुष्यों की बोल चाल की आवाज को सुने ही, उस भाषा को सीखने का उद्योग कर रहे थे जिसको लोग लिखते, बोलते और पढ़ते हैं। उनके होठों पर मुसकुराहट आ गई, जब उन्हें वह दिन खयाल आया, वह सुन्दर दिन याद आया—जब वे जेन पोर्टर के संग उस भारी जंगल के बीच में एक दम अकेले थे। उनका दिल संतोष की हंसी हंस उठा।

गाड़ी रुकने की आहट से उनकी विचार धारा टूट गई। उन्होंने समझ लिया कि उनके उतरने का स्थान आ पहुंचा और साथ ही उनका ध्यान उस काम पर आया जिसके लिये वे यहां आये थे। वे जानते थे कि उन्हें मरना होगा, पर इसका उन्हें डर न था क्रूर जंगल के बाशिन्दों को मृत्यु एक मामूली चीज मालूम होती

है। प्रकृति के प्राथमिक नियम के अनुसार वे जीवन को प्यार करते हैं, उसके साथ मजबूती से चिपके रहते हैं, उसके लिये लड़ते हैं—पर वह नियम उन्हें डरना नहीं सिखलाता।

डी. आरनट और टार्जन उस स्थान पर पहिले पहुंचे थे। क्षण भर बाद काउन्ट डी. कूड, मानश्यूर फ्लाबर्ट और एक सज्जन और आ गये। इनकी जब डी. आरनट और टार्जन से जान पहिचान कराई गई तो उन्हें मालूम हुआ कि ये डाक्टर हैं।

डी. आरनट और मानश्यूर फ्लाबर्ट कुछ देर तक धीरे धीरे बातें करते रहे। काउन्ट डी. कूड और टार्जन अलग अलग खड़े रहे। थोड़ी ही देर बाद वे बुलाये गये। दोनों पिस्तौलों को जांच के देखा गया कि वे ठीक हैं या नहीं, और तब मानश्यूर फ्लाबर्ट ने उन्हें वे शर्तें बताईं जिनके अनुसार युद्ध होने को था!

उन शर्तों का मतलब यह था कि दोनों को, टार्जन और डी. कूड को, पीठ से पीठ सटा के खड़े हो जाना होगा। मानश्यूर फ्लाबर्ट जब इशारा करेंगे तो वे अपने अपने सामने विपरीत दिशा में चलना शुरू करेंगे। दोनों की पिस्तौलें हाथ में नीचे लटकती रहेंगी। जब दोनों दस कदम चल चुकेंगे तो डी. आरनट आखिरी इशारा करेंगे, जिसे पाते ही दोनों घूम जायंगे और एक दूसरे पर गोली चलायेंगे। वे तब तक गोली चलायेंगे जब तक कि दोनों में से एक गिर न जाय या दोनों आदमियों के पिस्तौलों की तीन तीन गोलियें खतम न हो जायं।

मानश्यूर फ्लाबर्ट जब नियम सुना रहे थे टार्जन ने जेब से

कि उनके हर एक अंग से प्रगट हो रही थी, गोली खा के भी उनके तन के खड़े रहने और फक फक सिगरेट का धूंआं मुंह से निकालने से—फ्रांस का सब से बड़ा निशानेबाज भी घबड़ा गया था। इस बार टार्जन चौंके नहीं, पर होशियार निशाने बाज डी. कूड जान गये कि उनके पिस्तौल की यह गोली भी सामने खड़े दुश्मन के बदन में घुस गई है।

यकायक बिजली की तरह एक खयाल डी. कूड के दिमाग में दौड़ गया! उनका प्रतिद्वन्दी इस लिये चुपचाप खड़ा है कि वह समझता है कि डी. कूड के पिस्तौल की तीन गोलियों में से एक भी शायद उसे कारी जख्म न पहुंचावें, और जब डी. कूड की तीन गोलियें खतम हो जायं—जब उनकी पिस्तौल खाली हो जावे—तो वह अपनी पिस्तौल से खूब आराम से और होशियारी से निशाना लगा के उन्हें मार डाले, उनका खून करे, उनकी हत्या करे! उस वक्त डी. कूड क्या करेंगे, बदला लेने लायक—अपना बचाव करने लायक तो रहेंगे नहीं, वे तो फिर दुश्मन की दया के ऊपर निर्भर रहेंगे! बेचारा फ्रांसीसी जरा सा कांप उठा। यह पैशाचिकता है, यह राक्षसीपना है। यह मनुष्य के लायक कृत्य नहीं है! पर यह आदमी कैसा है, जो दो गोलियें खा के चुपचाप खड़ा है और तीसरी की राह देख रहा है!

अब की डी. कूड ने सावधानी से निशाना साधा, पर उनकी मानसिक स्थिरता ने उनका साथ छोड़ दिया था और गोली निशाने से बहुत दूर पड़ी। वह टार्जन को लगी नहीं।

टार्ज़न का हाथ अभी तक बगल में लटक रहा था। उन्होंने एक बार भी उसे ऊंचा नहीं किया था।

दोनों ने एक बार एक दूसरे की तरफ गौर से देखा। टार्जन के चेहरे पर खेद और निराशा थी, डी. कूड का चेहरा तेजी से बढ़ते हुये डर—भय का लक्षण प्रगट कर रहा था।

डी. कूड अपने को अब और न सम्हाल सके, उन्होंने चिल्ला के कहा, "हे भगवान, आप रुके क्यों हैं मानश्यूर, गोली क्यों नहीं चलाते?"

टार्जन ने पिस्तौल न उठाई, बल्कि धीरे से डी. कूड की तरफ बढ़े। डी. आरनट और मानश्यूर फ्लाबर्ट ने उनका इरादा बुरा समझ के उन्हें रोकना चाहा पर टार्जन ने हाथ से इशारा किया और कहा, "आप लोग घबड़ाइये मत, मैं कोई अनुचित काम न करूंगा।"

यह कायदे के बिल्कुल विपरीत और विचित्र बात थी, पर दोनों चुपचाप रहे। टार्जन बढ़ते हुये डी. कूड के बिल्कुल पास आ गये।

उन्होंने मुलायम स्वर में कहा, "मानश्यूर की पिस्तौल कुछ खराब होगी, या शायद असावधानी में मानश्यूर ने निशाना ठीक न लगाया होगा। मानश्यूर मेरी पिस्तौल लें और फिर से कोशिश करें।" यह कह के, पिस्तौल को नली की तरफ से पकड़ के और उसका मुट्ठा आगे करके, टार्जन ने उसे आश्चर्य से पागल डी. कूड की तरफ बढ़ाया।

डी. कूड के मुंह से क्षण भर आवाज न निकली। उन्होंने उद्योग

करके अपना मुंह खोला और आंखें फाड़ के टार्जन की तरफ देखते हुये पूछा, "वाह मानश्यूर, क्या आप पागल हो गये हैं ?"

टार्जन ने स्थिर स्वर में जवाब दिया, "नहीं, मेरे दोस्त, मैं मरना चाहता हूं। यही एक रास्ता है जिसके जरिये मैं एक बहुत ही भली स्त्री के प्रति किये गये अपराध का प्रायश्चित कर सकता हूं। आप बिल्कुल मत हिचकिये, मेरी पिस्तौल लीजिये, और जैसा मैं कहता हूं वैसा करिये।"

डी. कूड ने कांपती आवाज में कहा, "यह तो हत्या करना होगा मानश्यूर, पर यह तो बताइये, आपने मेरी स्त्री के प्रति क्या अपराध किया, वे तो मेरे से प्रतिज्ञापूर्वक कह रही थीं कि......।"

टार्जन ने जल्दी से कहा, "नहीं, मेरा वह मतलब नहीं है। हम दोनों के बीच में वही हुआ जो आप ने देखा। पर वह—केवल वही, उनके भले नाम में हमेशा के लिये एक धब्बे के तौर से हो गया, और उसने एक ऐसे सज्जन का सुख नष्ट कर दिया जिसके प्रति मुझे कोई शत्रुता न थी। उसमें सभी दोष मेरा था, और उस दोष के प्रतिकार के लिये मैं आज अपनी जान देना चाहता था। मुझे दुःख है कि मानश्यूर वैसे सच्चे निशानेबाज नहीं हैं जैसा कि मुझे विश्वास दिलाया गया था।"

डी. कूड ने उत्सुकता से पूछा, "क्या आपका यह कहना है कि सब दोष आप का था ?"

"जी हां, सब मेरा, मानश्यूर ! आपकी स्त्री बड़ी भली और पवित्र हैं। वे केवल आप ही से प्रेम करती हैं। गलती जो आपने

देखी सो मेरी थी। असल बात जिसके कारण ऐसे समय में वहां गया, वह आप को इस कागज के पढ़ने से पूरी मालूम होगी। उसमें न तो काउन्टेस का रत्ती भर दोष था न मेरा।" इतना कह के टार्जन ने जेब में से वह कागज निकाला जो रोकफ ने लिखा था और जिस पर उसका दस्तखत था।

डी. कूड ने उसे लेके पढ़ा। डी. आरनट और मानश्यूर फ्लाबर्ट भी पास आ गये और इस विचित्र द्वन्द युद्ध के विचित्र प्रकार से समाप्त होने को ताज्जुब और प्रसन्नता से देखने लगे। जब तक डी. कूड ने कागज पूरा पढ़ न लिया, कोई न बोला। इसके बाद डी. कूड ने सिर उठा के टार्जन की तरफ देखा और बोले—

"आप बड़े ही बहादुर और सच्चे सज्जन हैं, मानश्यूर, इसमें कोई सन्देह नहीं। ईश्वर को धन्यवाद है कि मेरे द्वारा आपकी जान न गई।"

डी. कूड फ्रांसीसी थे, और फ्रांसीसी भावपूर्ण और उदार दिल के होते हैं। उन्होंने अपनी बाहें टार्जन के गले में डाल दीं और उन्हें छाती से लगा लिया। मानश्यूर फ्लाबर्ट और डी. आरनट भी गले मिले। डाक्टर से गले मिलने के लिये कोई न था इससे शायद कुछ चिढ़ के ही उसने इन सभों के बीच में हस्तक्षेप किया और टार्जन के जख्मों को जांचने की आज्ञा चाही।

वह बोला, "इन महाशय को एक गोली तो कम से कम जरूर लगी है, और तीन लगी हों तो आश्चर्य नहीं।"

टार्जन ने कहा, "नहीं, तीन नहीं, केवल दो। एक बायें कन्धे

में और एक बाईं ओर पसली में। दोनों, जहां तक मैं समझता हूं, मामूली घाव हैं।" टार्जन तो टाल देना चाहते थे पर डाक्टर की जिद्द से उन्हें जमीन पर लेट जाना पड़ा और डाक्टर ने घाव साफ करके उस पर पट्टी बांध दी।

द्वन्दयुद्ध का एक नतीजा यह जरूर हुआ कि वे सच्चे दोस्त बन गये और एक साथ ही डी. आरनट की गाड़ी में घर लौटे। डी. कूड अपनी स्त्री के इस दूसरी बार भली साबित होने से इतने प्रसन्न थे कि उनको टार्जन की ओर से अब जरा भी रंज न था। यह जरूर था कि टार्जन ने दोष का बहुत ज्यादा हिस्सा अपने सरों मढ़ लिया था, पर अगर वे कुछ झूठ बोले भी थे तो एक स्त्री के लिये और एक सज्जन की तरह बोले थे, और उनका वह दोष क्षमा किया जा सकता था।

टार्जन को कई रोज बिस्तरे पर पड़े रहना पड़ा। वे तो इसकी कोई जरूरत नहीं समझते थे और इसे अनावश्यक कहते थे पर डाक्टर और डी. आरनट की जिद्द से आखिर उन्हें चुपचाप पड़े ही रहना पड़ा। उन्होंने केवल इन दोनों को प्रसन्न करने के लिये यह बात मन्जूर कर ली, वे हंस के बोले, "छि: यह भी एक दिल्लगी है। बिछौने पर इस लिये पड़े रहना कि बदन में एक सूई घुस गई है। क्यों, जब मैं सिर्फ छोटा सा लड़का था और गोरिल्लों के राजा बोलगैनी ने मेरा सारा बदन अपने पैने दांतों से फाड़ दिया था, तो क्या मुझे उस समय मुलायम बिस्तर सोने के लिये मिला था? नहीं, बिल्कुल नहीं, केवल जंगल की सड़ी हुई गीली पत्तियें

ही मेरा बिछौना थीं। एक झाड़ी में छिपा हुआ मैं कई दिन, कई हफ्ते पड़ा रहा और केवल कोला मेरी हिफाजत करती रही। बेचारी चाट चाट के मेरे जख्मों को साफ कर देती थी और दरिन्दे जानवरों को मेरे से दूर रखती थी !

"जब मैं पानी मांगता था तो बेचारी अपने मुंह में भर के ले आती थी। उसे और कोई तरीका ही न मालूम था जिससे वह उसे मुझ तक पहुंचाती। न तो वहां दवाइयों से शुद्ध की हुई रूई थी जो जख्मों पर लगाई जाती, न कायदे के बने हुये बेंडेज थे, जिनसे जख्म बांधे जाते, वहां कोई चीज ऐसी न थी जिसे देख हमारे दोस्त डाक्टर साहब पागल न हो जाते। और तब भी मैं आराम हो ही गया ! उन भयानक जख्मों से अच्छा होके अब एक मामूली खरोंच के कारण बिस्तरे पर लेटा हूँ, सो भी ऐसी खरोंच कि किसी जंगल के रहने वाले के जब तक यह नाक पर न हो उसे पता ही न लगे कि आखिर वह शरीर के है किस हिस्से पर !"

खैर, शीघ्र ही वह बिछौने पर पड़ा रहना भी समाप्त हो गया और टार्ज़न फिर भले चंगे हो गये। बीच में डी. कूड उन्हें देखने कई बार आये और जब उन्हें मालूम हुआ कि टार्ज़न किसी किस्म का काम अपने लिये चाहते हैं, तो उन्होंने वादा किया कि वेइसके लिये उद्योग करेंगे।

जिस रोज टार्ज़न आराम हो के बाहर निकले उसी रोज उन्हें डी. कूड का एक सन्देसा मिला कि यदि हो सके तो वे उनके आफिस तक चले आवें।

डी. कूड बड़ी उत्सुकता और प्रसन्नता से उनकी राह देख रहे थे, और बड़ी नम्रता और आदर से उनसे मिले। उन्होंने टार्ज़न के पूरी तौर से अच्छे हो जाने पर सच्चे दिल से संतोष प्रगट किया। उस घटना के बाद से दोनों में से किसी ने भी द्वन्दयुद्ध या उसके कारण का आपस में जिक्र नहीं किया था, जैसे दोनों ही उस दुःखद बात को भूल गये हों।

टार्ज़न के कुर्सी पर बैठ जाने पर डी. कूड बोले, "मानश्यूर टार्ज़न, मैंने आप के लिये एक बड़ा अच्छा काम खोजा है, ठीक वैसा ही जैसा आप चाहते होंगे। उसमें किसी बड़े ही विश्वसनीय मनुष्य की आवश्यकता थी, जो अपने भारी उत्तरदायित्व को समझ सके, और शरीर से भी खूब मजबूत और साहसी हो। मुझे उस योग्य आपके ऐसा और कोई आदमी दिखाई न दिया। आपको थोड़ा बाहर घूमना होगा—जहां जरूरत पड़े वहीं जाना होगा—पर यह काम यदि पूरा उतरा तो आगे इसी के जरिये आपको इससे भी अच्छी एक जगह मिल जायगी। आप संभवतः राजनीतिक विभाग में एक पद पा जायंगे।

"पहिले तो, केवल कुछ दिन के लिये, आपको युद्ध विभाग में एक विशेष कार्य सौंपा जायगा। आइये, मैं आपको उन सज्जन के पास ले चलूं जिनके आधीन हो के आप काम करेंगे। वे आपको आपके काम मुझ से ज्यादा अच्छी तरह समझा सकेंगे, और तब आप निश्चय कीजियेगा कि आप वह काम लेंगे या नहीं।"

काउन्ट डी. कूड स्वयं उठके टार्ज़न को जनरल रोचेरी के

आफिस में ले गये। ये जनरल रोगेरी ही उस विभाग के प्रधान अफसर थे जिसके आधीन हो के कार्य स्वीकार करने पर टार्जन को काम करना पड़ता। वहां टार्जन के बारे में बहुत कुछ कह के और उनकी बहुत सी प्रशंसा करके डी. कूड ने टार्जन को छोड़ दिया और स्वयं अपने स्थान पर चले आये।

आधे घन्टे बाद टार्जन काउन्ट रोचेरी के आफिस के बाहर निकले। उन्होंने सब बातें समझ ली थीं और प्रसन्नता से उस कार्य को स्वीकार किया था जो उन्हें दिया गया था। कल उन्हें फिर कुछ बातें समझने के लिये यहां आने को जनरल रोचेरी ने कह दिया था और यह भी बता दिया था कि "आप अपने बाहर जाने की पूरी तैयारी तुरत कर डालिये, शायद कल ही आपको बाहर चले जाना पड़ेगा और कितने दिन बाहर रहना पड़े इसका कोई ठीक नहीं।"

यह पहिला कार्य था जो टार्जन को मिला था! खुशखबरी डी. आरनट को सुनाने की नीयत से जल्दी जल्दी कदम बढ़ाते हुये टार्जन घर की ओर बढ़े। वे दुनिया में कुछ काम कर सकेंगे, अब वे रुपया कमा सकेंगे, और सब से बड़ी बात तो यह है कि वे अब घूम फिर के दुनियां को देख सकेंगे!

डी. आरनट के कमरे में वे अभी अच्छी तरह घुसे भी न होंगे कि उन्होंने हंसते हुये अपनी खुशकिस्मती उन्हें कह सुनाई। डी. आरनट सुन के उतने प्रसन्न न हुये।

वे बोले, "यह सोच के तुमको खुशी हो रही है कि तुम घूमो फिरोगे और दुनिया देखोगे, पर इस बात का तुमको जरा भी रंज

नहीं है कि पेरिस छूट जायगा और हम दोनों एक दूसरे को शायद महीनों न देख सकेंगे, सचमुच टार्जन, तुम बड़े अकृतज्ञ हो।" यह कह के डी. आरनट हंस पड़े।

टार्जन बोले, "नहीं पाल, मैं अकृतज्ञ नहीं हूं, मैं छोटे बच्चे ऐसा हूँ। मुझे एक नया खिलौना मिल गया है, और मैं उससे खेलने को व्याकुल हूं।"

दूसरे रोज टार्जन ने पेरिस छोड़ दिया और मार्सेलीज और ओरन की तरफ रवाना हुये।

सातवां बयान

सिदी–आयशा की नाचने वाली

टार्जन का पहिला काम न तो विशेष महत्व पूर्ण और न उत्साहवर्धक ही था! सिपाहियों का एक लेफ्टेनेन्ट था जिसका नाम जरनोइस था। गवर्नमेंट को सन्देह था कि यह लेफ्टेनेन्ट जर-नोइस यूरोप की किसी अन्य राज्य शक्ति से मिला हुआ है और भीतर भीतर उसकी मदद कर रहा है। आज कल यह लेफ्टेनेन्ट जरनोइस सिदी–बेल–एबेस में था, पर यहां भेजे जाने के कुछ

दिन पहिले उसे प्रधान आफिस में कुछ काम मिला हुआ था, और वहीं रोजाना कामों के सिलसिले में उसके हाथ में कुछ ऐसी खबरें आ गई थीं जो युद्ध विभाग के भारी गुप्त भेदों के समान थीं। गवर्नमेन्ट को शक था कि यूरोप का कोई दूसरा राष्ट्र इस लेफ्टेनेन्ट से सौदा करके उन गुप्त भेदों को खरीद लेना चाहता है।

यह कोई पक्की खबर न थी। पेरिस के बदनाम मुहल्ले में रहने वाली एक खराब औरत ने गुस्से और डाह में भर के इस विषय में केवल दो शब्द भर मुंह से निकाल दिये थे। पर वे दो शब्द ही लोगों के मन में सन्देह पैदा करने को काफी थे। प्रधान आफ़िस वाले अपने भेदों को जान की तरह छिपाते और उनकी कदर करते थे। और वहां दगाबाजी या उसका सन्देह इतनी भारी बात हो जाती थी कि अधिकारीगण उसका इलाज करने में कोई बात उठा न रखते थे। यही कारण था कि टार्जन अमेरिकन शिकारी और यात्री के रूप में अल्जीरिया आये थे, और उन्हें हुक्म मिला था कि लेफ्टेनेन्ट जर्नोइस पर कड़ी निगाह रक्खें।

उन्हें जब यह मालूम हुआ था कि उन्हें अफ्रिका जाना होगा, और पुनः उस सुन्दर और दिलचस्प देश को देखने का मौका मिलेगा, तो वे बड़े प्रसन्न हुये थे। पर उसका उत्तरी भाग दक्षिणी भाग से इतना भिन्न निकला कि उन्हें मालूम ही नहीं होता था कि यह वही अफ्रिका है जिसमें बचपन में वे रहते थे। ओरन में एक रोज के लिये वे रुके और विचित्र और नई चीजें देखते हुये दिन भर उस अरब-शहर की टेढ़ी और सकरी गलियों में घूमते रहे। वहां से

वे सिदी-बेल-एबेस पहुंचे और वहां उन्होंने सरकारी अफसरों को वे चीठियें और हुक्मनामे दिखाये जो उन्हें पेरिस के प्रधान आफिस से मिले थे, जिनमें उनके सम्बन्ध की और बातें तो लिखी थीं पर यह नहीं लिखा था कि वे असल में वहां भेजे किस काम से गये हैं!

टार्जन को अंगरेजी जबान प्रायः अच्छी तरह मालूम थी, अस्तु वे अरबों और फ्रांसीसियों के बीच में अपने को अमेरिकन कह कर अपना परिचय मजे में दे सकते थे। वहां जरूरत भी इसी की थी। जब वे किसी अंगरेज से मिलते थे तो फ्रांसीसी भाषा में बातें करते थे। जिसमें वह यह न समझ सके कि ये अंगरेजी पूरी नहीं जानते, पर दूसरे देश वालों से—उन लोगों से जो जरा भी अंगरेजी समझते थे, वे अंगरेजी में ही बात करते थे, जिसमें वे उनका मतलब तो समझ जायं, पर बोलने की और उच्चारण की उस हलकी गलती को न समझ सकें जो अंगरेजी बोलने में अकसर उनसे हो जाती थी।

यहां सिदी-बेल-एबेस में उनसे कई फ्रांसीसी अफसरों से जान पहिचान हो गई, और धीरे धीरे कई उसके दोस्त भी बन गये। यहां उन्हें जरनोइस भी दिखाई दिया, जो उम्र में करीब चालीस वर्ष का मालूम होता था, और स्वभाव का तीखा और लोगों से कम बोलने वाला था। अपने साथियों और जान पहिचान वालों में उसकी बहुत कम लोगों से—या किसी से भी—घनिष्टता न थी।

एक महीने तक कोई विशेष बात न हुई। जरनोइस के पास मिलने कोई भी न आता था, और जब कभी वह शहर भी जाता

था, तो उससे ऐसा कोई आदमी न मिलता था जिस पर भूले भी या खींचतान के भी किसी विदेशी राष्ट्र के गुप्त दूत होने का सन्देह किया जा सकता था। टार्जन को धीरे धीरे यह खयाल हो रहा था कि इस पर सन्देह गलत किया गया है! इसी बीच में हुक्म आया कि जरनोइस को वहां की अफसरी दूसरे के सपुर्द करके बाऊ-सादा जाना होगा जो पेटिट सहारा के पास बहुत दूर दक्षिण में पड़ता था।

हुक्म के मुताबिक सिदी-बेल-एबेस से सिपाहियों का एक दस्ता और साथ में तीन अफसर बाऊ-सादा जायंगे, और वहां के सिपाहियों को दूसरी जगह जाने की छुट्टी देंगे! भाग्य से उन तीन अफसरों में एक अफसर कैप्टेन जेरर्ड से टार्जन की गहरी दोस्ती हो गई, और जब टार्जन ने यह प्रस्ताव किया कि वे भी इस मौके पर उन्हीं के साथ बाऊ-सादा चले चलें और वहां शिकार खोजने का उद्योग करें—तो किसी ने भी शक न किया और उनके भी साथ में चलने की बात पक्की हो गई।

बुइरा में सब लोग रेल से उतरे और घोड़ों पर बैठे, क्योंकि जहां उन्हें जाना था वहां तक रेल न जाती थी। टार्जन भी अपने लिये कोई जानवर तलाश कर रहे थे, कि यकायक उनकी निगाह एक आदमी पर पड़ी जो यूरोपियन पौशाक पहिने हुये एक चाय की दूकान के दर्वाजे पर खड़ा उन्हें गौर से देख रहा था। उन्हें अपनी तरफ देखते देख वह चिहुंका और भीतर घुस गया। टार्जन को कुछ सन्देह हुआ कि मैंने इस आदमी की सूरत पहिले कभी देखी

है। पर उन्होंने उस मामले पर फिर विशेष ध्यान न दिया और आगे बढ़ गये।

लामेल पहुंचते तक टार्जन थक गये, क्योंकि घोड़े पर चढ़ने की उन्हें बिल्कुल ही आदत न थी। वहां पहुंच के अफसर और सिपाही तो अपनी बैरकों में ठहरे पर टार्जन मुलायम बिस्तरे की खोज में होटल ग्रोसेट में घुस गये, और वहां भोजन करके आराम से सोये।

दूसरे रोज सबेरे उनकी नींद जल्दी ही खुली, और यद्यपि उन्होंने जलपान वगैरह करके सफर के लिये तैयार होने में भी शीघ्रता ही की, उनके साथ के सिपाही उनके पहिले ही रवाना हो चुके थे। वे अपना काम जल्दी जल्दी निपटा रहे थे कि उनकी निगाह खाने के कमरे के बाहर, दर्वाजा पार करके बार-रूम में जा पड़ी।

यह देख उन्हें आश्चर्य हुआ कि जरनोइस अभी यहीं है, यही नहीं, उन्होंने देखा कि वह उसी अजनबी से बातें कर रहा है जो एक रोज पहिले बुइरा में काफी-हाउस के दर्वाजे पर खड़ा उनकी तरफ गौर कर रहा था। यद्यपि उस अजनबी की पीठ टार्जन की तरफ थी, तब भी उसकी चालढाल और उसका कद पहिचानने में उन्हें धोखा नहीं हो सकता था!

टार्जन की आंखें उन्हीं दोनों की तरफ थीं, और वे मन ही मन सोच रहे थे कि ये दोनों न जाने क्या बातें कर रहे हैं, कि यकायक जरनोइस ने घूम के पीछे देखा और उसकी तेज निगाहें टार्जन पर पड़ीं। उस वक्त वह अजनबी बड़े धीमे स्वर में कुछ कह रहा था।

जरनोइस ने उसे इशारा किया और दोनों आगे बढ़ के टार्जन की दृष्टि से बाहर हो गये।

यह पहिला मौका था कि टार्जन को जरनोइस के विषय में किसी प्रकार का सन्देह करने की जगह मिली थी। और उन्हें निश्चय था कि जरनोइस उस अजनबी को साथ लिये उस बार-हाउस से इसी लिये हट गया था कि उसने टार्जन को वहां देख लिया था। उस अजनबी की चाल ढाल और सूरत से भी टार्जन को कुछ सन्देह हो रहा था, अस्तु उन्होंने सोचा कि इस मामले में जरा निगाह रखना उत्तम होगा।

क्षण भर बाद बार-रूम में जाके टार्जन ने देखा कि उन दोनों में से वहां कोई नहीं है। बाहर गली में भी कोई नजर न पड़ा, और टार्जन यद्यपि इधर उधर कई दूकानों के सामने भी घूमे, उन्हें फिर उनमें से किसी की भी शक्ल दिखाई न दी। लाचार वे अपने साथ के सिपाहियों की तरफ रवाना हुये जो अब तक उनसे बहुत आगे बढ़ चुके थे। उन्होंने सिदी-आयशा तक जाके, तब कहीं उनसे भेंट कर पाई। वे लोग वहां घन्टे भर आराम करने के लिये ठहर गये थे। उनके साथ जरनोइस भी मौजूद था, पर यूरोपियन कपड़े पहिने वह अजनबी वहां कहीं दिखाई न दे रहा था।

दोपहर का वक्त था, और आज बाजार का दिन था, अस्तु सिदी-आयशा का छोटा सा कसबा रेगिस्तान से चले आते हुये सैकड़ों ऊंटों के कारवानों और उनको खरीदने के लिये चिल्ला चिल्ला कर मोलभाव करने के लिये इकट्ठे अनगिनती अरबों से

भरा हुआ था। बाजार में खूब चहल पहल थी। टार्जन की इच्छा हुई कि वे एक दिन यहां टिक रहें, और यहां का हाल चाल देखें। अस्तु उनके साथ के सिपाही तो बाऊ-सादा की तरफ चल पड़े, पर वे वहीं रुक रहे। संध्या को अन्धेरा होने तक वे वहीं बाजार में इधर उधर टहलते रहे। उनके साथ में अब्दुल नाम का एक अरब नौजवान था, जिसकी सरायं वाले ने सिफारिश कर दी थी और जिसे उन्होंने इस इरादे से साथ ले लिया था कि यह यहां की सब बातें बतावेगा और अरबी भाषा का अनुवाद करके उसका मतलब भी उन्हें समझाता जायगा।

यहां टार्जन ने अपना वह घोड़ा छोड़ दिया जो बुइरा में खरीदा था, और उससे अच्छा एक घोड़ा ले लिया। घोड़ा बेचने वाले रोबीले अरब से जब उन्होंने बातें कीं तो उन्हें मालूम हुआ कि इस का नाम कादर बेन सादन है और यह डी-जेलफा से बहुत दूर दक्खिन की तरफ रहने वाली रेगिस्तानी अरबों की एक जाति का शेख है। अब्दुल के जरिये बातें करके टार्जन के उससे अपने साथ भोजन करने की प्रार्थना की और तीनों आदमी सरायं की तरफ बढ़े। रास्ते में घोड़ों, ऊंटों, खच्चरों और उनके खरीदने वालों की भीड़ में से जगह बनाते हुये जब ये लोग जा रहे थे, यकायक अब्दुल ने टार्जन की बांह पकड़ के खींची।

वह धीमी आवाज में बोला, "साहब, पीछे देखिये, जल्दी।"

टार्जन जल्दी से पीछे घूमे। उन्होंने देखा कि काला कपड़ा

और सफेद पगड़ी पहिने एक अरब उनको घूमता देख के बगल के एक टट्टी की आड़ में हो गया है।

अब्दुल फिर बोला, "यह दोपहर भर हमारा पीछा करता रहा है।"

टार्जन ने कहा, "मैंने सफेद पगड़ी और काले कपड़े पहिने एक अरब को देखा था। क्या तुम उसी को बता रहे थे?"

अब्दुल बोला, "हां, मुझे उस पर शक इसलिये होता है कि वह यहां का रहने वाला नहीं मालूम होता, और जब से दिखाई दिया है, हमारा पीछा ही कर रहा है। उसने केवल अपनी आंखें खुली रक्खी हैं, और बाकी का अपना सारा चेहरा कपड़े से ढांके हुआ है, जिससे जान पड़ता है कि वह अपनी सूरत भी हमसे छिपाना चाहता है। ये ढंग ईमानदार अरब के नहीं हैं; जरूर वह कोई बदमाश होगा जो किसी बुरे मतलब से हमारा पीछा कर रहा है। भला आदमी इस तरह व्यर्थ के काम में अपना समय नष्ट न करेगा।"

टार्जन हंस के बोले, "अगर वह हमारा पीछा कर रहा है तो गलती करता है, अब्दुल! मैं तुम्हारे इस देश में पहिले पहिल आया हूं, किसी से मुझसे दुश्मनी नहीं है, और न कोई मुझे जानता ही है। थोड़ी ही देर में उसे अपनी गलती मालूम हो जायगी और वह हमारा पीछा करना छोड़ देगा।"

अब्दुल बोला, "लेकिन अगर वह मौका पा के हमें लूटना चाहता हो तो?"

टार्ज़न बोले, "तो भी कोई हर्ज नहीं। अब जब उसके वास्ते तैयार हो गये हैं तो बड़ी प्रसन्नता से उसके आने की गाह देखेंगे। वह आवे भी तो! उसे भी मालूम हो जो जायगा कि लूट मार में कैसा मजा आता है!" इतना कह के टार्ज़न ने वह बात अपने मन से निकाल दी और जैसा कि उनका स्वभाव था, उस ओर से बेफिक्र हो गये। पर उन्हें यह नहीं मालूम था कि कुछ ही घन्टों के बीच में एक विचित्र घटना होगी, जिसके कारण उन्हें इस घटना को फिर से याद करना पड़ेगा।

कादर बेन सादन भोजन कर चुकने बाद जाने के लिये तैयार हुआ। उसने नम्रता पूर्वक धन्यवाद देते हुये टार्ज़न को अपनी दोस्ती का विश्वास दिलाया और प्रार्थना की कि समय पाने पर एक बार वे उसके रहने के स्थान पर भी आवें। वहां बारहसिंघे, हरिन, सूअर और शेर भी काफी तायदाद में मिलेंगे—इतनी यथेष्ट संख्या में मिलेंगे कि शौकीन से शौकीन शिकारी भी उन्हें मारते मारते थक जायगा!

उसके चले जाने बाद टार्ज़न फिर अब्दुल को साथ लेकर सिदी-आयशा की गलियों में घूमने लगे। घूमते फिरते उनकी निगाह एक सराय पर गई जिसके दर्वाजे के अन्दर से गाने बजाने की बड़े जोर की आवाज़ आ रही थी। आठ बजे का वक्त था और टार्ज़न जब अन्दर घुसे उस समय नाच खूब तेजी से हो रहा था। कमरा एक सिरे से दूसरे सिरे तक अरबों से भरा हुआ था जिनमें से कुछ तो काफ़ी पी रहे थे और कुछ अपने मुंह से धूयें के बादल निकाल रहे थे।

बाजा बजाने वाले अपने बड़े बड़े अरबी नगाड़ों को इतने जोर से पीट रहे थे, और तुरही बजाने वालों का स्वर भी इतना ऊंचा था, कि पहले तो शान्ति के प्रेमी टार्जन ने उनसे बहुत दूर एक जगह कोने में बैठना चाहा, पर जब उन्होंने देखा कि वहां जगह की तंगी है, तो वे बीच ही में एक स्थान पर बैठ गये। युवती जो नाच रही थी शकल सूरत से अच्छी और देखने में सुन्दर थी। उसने जब टार्जन की यूरोपियन पौशाक देखी तो तुरत उसे आशा बन्ध गई कि इनसे कुछ ज्यादा इनाम मिलेगा। उसने नाचते नाचते पास आके टार्जन के कन्धे पर अपना रूमाल रक्खा और अदा के साथ झुक गई। टार्जन ने जेब से निकाल के एक फ्रांक उसमें फेंक दिया।

थोड़ी देर बाद वह नाचने वाली हट गई और उसका स्थान एक दूसरी ने लिया। कमरे के किनारे की तरफ दीवार के पास एक दर्वाजा था जो भीतर के एक आंगन की तरफ खुलता था। इस आंगन के तीनों ओर ऊपर कमरे बने हुये थे जिनमें नाचनेवालियां रहा करती थीं। वह पहिली नाचने वाली जब इस दर्वाजे के पास पहुंची तो अब्दुल की तेज निगाहों ने देखा कि भीड़ में से दो अरब निकल के उसके पास पहुंचे और धीमे स्वर में उससे कुछ बातें करने लगे। अब्दुल को उससे कोई शक न होता, पर उसे सन्देह तब हुआ जब उन दोनों में से एक ने धीरे से उसी तरफ इशारा किया जहां वह और टार्जन बैठे थे। उस नाचने वाली ने घूम के एक निगाह टार्जन पर डाली, जवाब में कुछ कहा और दोनों अरब दर्वाजे से निकल के आंगन के अन्धकार में घुस गये।

जब उस पहिली युवती की फिर नाचने की पारी आई, तो नाचते नाचते जानबूझ कर वह बारबार टार्जन के पास तक आने लगी। उसकी सारी मुसकुराहट, सारी अदायें, अब टार्जन ही के लिये होने लगीं। चारो तरफ बैठे अरब क्रोध भरी आंखों से इस कद्दावर जवान की तरफ देखने लगे, जिसने जान पड़ता था नाचने वाली का सारा ध्यान अपनी तरफ खींच लिया है। पर न तो मुसकुराहट और न क्रोध भरी निगाहों ने ही देखने में कोई असर टार्जन पर किया। युवती ने फिर टार्जन के कन्धे पर अपना रेशमी रूमाल रक्खा, और फिर उसे एक फ्रांक ईनाम में मिला। जैसा कि औरों का कायदा था, उस सिक्के को अपने माथे पर चिपकाती हुई वह टार्जन की तरफ झुक पड़ी और उसी समय धीरे से टूटी फूटी फ्रेंच में बोली—

"बाहर आंगन में दो व्यक्ति हैं जो आपको कष्ट पहुंचाना चाहते हैं, मानश्यूर! उन्होंने मुझसे कहा है कि आपको फुसला के वहां तक बुला लाऊं, पर आपने मुझ पर कृपा दिखाई है इस से मैं वैसा काम कदापि नहीं कर सकती। आप भागिये, मैंने उनका काम पूरा नहीं किया, यह पता उन्हें लगने के पहिले आप चले जाइये। वे भारी शैतान जान पड़ते हैं।"

टार्जन ने मुसकुरा के उसे धन्यवाद दिया, और विश्वास दिलाया कि अब मालूम हो गया है इससे वे उस ओर से खबरदार रहेंगे। वह उनके पास से हट के फिर नाचने लगी और अपना वक्त पूरा होने पर वहां से हट कर उसी दर्वाजे की राह आंगन में चली गई। टार्जन ज्यों के त्यों वहां बैठे रहे।

आधे घन्टे तक कोई नई बात न हुई। इसके बाद एक बदसूरत अरब गली वाले दर्वाजे की राह सराय में घुसा और टार्जन के पास आके खड़ा हो गया। उसने चारो तरफ निगाह की और इसके बाद टार्जन की तरफ देख देख कर वह यूरोपियनों के बारे के आमतौर से गाली बकने लगा। वह अपनी अरब भाषा में बोल रहा था इससे टार्जन के समझ में कुछ न आया और वे थोड़ी देर चुप रहे। इसके बाद उन्होंने अब्दुल से पूछा कि यह क्या कह रहा है।

अब्दुल धीमे से बोला, "यह आदमी बदमाश मालूम होता है, साहब, और जान पड़ता है कुछ बदमाशी करने का इसका इरादा है। यह अकेला नहीं है, मौका पड़ने पर यहां जितने बैठे हैं सभी आप ने बखिलाफ हो जायंगे। यहां से अब चुपचाप चले चलना ही उत्तम होगा।"

टार्जन बोले, "पूछो यह क्या चाहता है।"

अब्दुल ने कहा, "यह कहता है कि क्रिश्चियन कुत्तों ने उसकी नाचने वाली प्रेमिका की बेइज्जती की है। कुछ शैतानी करने पर यह तुला हुआ जान पड़ रहा है, मानश्यूर।"

टार्जन बोले, "इससे कहो कि मैंने उसकी या किसी की प्रेमिका की बेइज्जती नहीं की है! न मुझे उससे कोई दुश्मनी है, न उसे मुझसे। वह यहां से चला जाय और मुझे तंग न करे।"

यह सन्देशा अब्दुल ने उस अरब से कहा, और फिर टार्जन से बोला, "यह कहता है कि तुम तो कुत्ते हो ही, तुम्हारा बाप भी कुत्ता

था, और तुम्हारी मां सियारिन थी। तुम झूठे और दगाबाज भी हो।"

चारो तरफ बैठे लोगों का ध्यान भी अब इस झगड़े की तरफ आकर्षित हो गया था, और गालियों को सुन के लोगों के जोर से ठठा के हंसने ने यह साफ बता दिया कि यहां वालों की सहानुभूति किस तरफ है।

टार्जन को लोगों की हंसी का पात्र बनना पसन्द न था, और न उन्हें वे शब्द ही अच्छे लगे थे जो उस अरब ने इनके विषय में कहे थे। उनके चेहरे पर क्रोध का कोई लक्षण न दिखाई दिया, पर वे धीरे से उठे, एक हलकी मुसकुराहट उनके होंठों पर आई और साथ उनके लोहे जैसे हाथों ने आगे बढ़ के एक मुक्का उस अरब की नाक पर जमाया जो उनके पास खड़ा उन्हें गाली दे रहा था। वह मुक्का उनके हिसाब से धीरे ही से लगा था, लोगों की निगाहों में भी वह मामूली ही ताकत से चलाया गया था, पर जिसको लगा था वह तुरत जमीन पर लेटा दिखाई देने लगा।

उसके जमीन पर गिरते ही पांच छः अरब दरवाजे के रास्ते भीतर घुस आये—शायद वे वहां मौके पर लड़ाई में शामिल होने के लिये ही खड़े थे—और यह कहते हुये टार्जन पर टूटे कि "मारो अधर्मी को, क्रिस्चियन कुत्ते को मार डालो।"

वहां बैठे हुये अरबों में से कई नौजवान यह देख कि लड़ाई शुरू हो गई है, उसमें शामिल होने के लिये निहत्थे यूरोपियन की तरफ बढ़े, और उन्होंने ढकेल कर टार्जन को कमरे की दीवार के पास,

उधर कर दिया जिधर वह आंगन का दर्वाजा था। अब्दुल ने उस वक्त् सच्ची वफ़ादारी दिखाई और छुरा निकाल कर हमला करने वाले अरबों से वह लड़ने लगा।

टार्जन के मजबूत हाथों की पहुंच के अन्दर जो भी आया, फिर वह अपने पैरों पर खड़ा न रह सका। दाहिने बायें मारते हुये टार्जन दुश्मनों को नीचे गिराने लगे। लेकिन तब भी उनके मुंह से कोई शब्द न निकल रहा था और होठों पर वही मुसकुराहट थी जो पहिले, गाली देने वाले अरब को मारते वक्त, उनके चेहरे पर आ गई थी। उनके चारो ओर घेरे हुये अरबों के पास, प्रायः सभी के पास छुरे या तलवारें थीं, और अगर उनके इस्तेमाल का मौका आ जाता तो, फिर टार्जन या अब्दुल के जान की खैर न थी, पर गनीमत यही थी कि टार्जन के दुश्मन उस छोटे से कमरे में इतने कसे हुये थे कि किसी को कोई भी हथियार चलाने की जगह न थी, हमला करने वालों की अत्यन्त अधिक संख्या ही टार्जन की इस वक्त रक्षा कर रही थी। लोगों के पास कुछ बन्दूकें भी थीं, पर वे टार्जन के ऊपर उसे इस डर से नहीं चलाते थे कि शायद वह उनके ही किसी साथी को न लग जाय।

आखिर टार्जन ने लड़ते झगड़ते अपने दुश्मनों में से एक को पकड़ लिया और हाथ की तलवार को एक ही झटके में जमीन पर गिरा कर उसे दोनों हाथों में ऊपर उठा लिया। उसे हाथों में लेकर और उसकी ढाल बनाये हुये टार्जन अब्दुल को साथ लिये धीरे धीरे उस दर्वाजे की तरफ बढ़ने लगे जो भीतर आंगन में जाने का रास्ता

था। चौकठ पर वे क्षण भर के लिये रुके, अरब को उन्होंने सिर से ऊंचा किया और जोर से उसे अपने पर हमला करने वालों के मुंह पर फेंका—इसके बाद वे पीछे अन्धकार में हट गये।

आंगन में रहने वाली नाचनेवालियां भी शोर गुल की आवाज सुनके घबड़ा उठी थीं और अपनी अपनी कोठरी के बाहर सीढ़ी के ऊपर आके खड़ी हो गई थीं। आंगन में ज्यादा चांदना न था। उसके घने अन्धकार को अपने पीले प्रकाश से केवल वे मोमबत्तियें दूर करने की चेष्टा कर रही जिन्हें हर एक नाचने वाली ने मोम के सहारे अपने अपने दर्वाजे की चौकठ पर जमा रक्खा था, जिसमें उधर के आने वाले उनकी सुन्दरता को अच्छी तरह देख सकें।

टार्जन और अब्दुल कठिनता से अभी आंगन में घुसे होंगे कि यकायक बगल की सीढ़ी के नीचे से पिस्तौल की आवाज आई और गोली टार्जन के बगल से होती हुई निकल गई। दोनों ही तेजी से इस नये दुश्मन का सामना करने घूमे और साथ ही अन्धकार से निकल के दो काली शकलें गोलियें चलाती हुई उनकी तरफ झपटीं। टार्जन ने उछल के एक का गला पकड़ा, क्षण भर बाद वह अपनी दाहिने हाथ की टूटी हुई कलाई को बायें हाथ से पकड़े कोने में गिरा नजर आने लगा। दूसरे ने अपनी पिस्तौल अब्दुल के सिर की तरफ सीधी की पर गोली निशाने से हाथ भर दूर हट के निकल गई और उसी क्षण अब्दुल के हाथ का छुरा दस्ते तक उस की पसली में घुस गया। वह हाय कहता हुआ जमीन पर लोट गया।

सराय क भीतर के पागल अरब अब दुश्मन को हाथ से निकला

देख इधर आंगन में आ रहे थे। नाचनेवालियों में से एक ने चिल्ला के इशारा कर दिया था जिससे सभों ने अपने अपने दर्वाजे पर की रोशनी बुझा दी थी और अब आंगन में प्रायः अन्धकार था। केवल हलका सा प्रकाश उस दर्वाजे की राह आ रहा था जो भीतर सरायं में खुलता था, पर उसे भी रोके हुये लोग खड़े थे। अब्दुल का छुरा खा के जो आदमी गिरा था, टार्जन ने उसकी तलवार ले ली थी और अब खड़े उन लोगों की राह देख रहे थे जो अन्धेरे में उन्हें तलाश करते उनकी तरफ बढ़े आ रहे थे।

सहसा उनके कन्धे पर किसी के हाथ का हलका दबाव पड़ा, और एक औरत की धीमी आवाज उनके कानों में गई, "जल्दी करिये मानस्यूर, इधर आइये, मेरे पीछे पीछे!"

टार्जन ने धीरे से अब्दुल से कहा, "आओ अब्दुल, इसी के साथ चलें। यहां जैसी झन्झट में पड़े हैं, दूसरी जगह उससे ज्यादा झन्झट न होगी।"

औरत घूमी और सकरी सीढ़ियों पर से होती हुई उस दर्वाजे की तरफ बढ़ी जो ऊपर कोठरी में जाने का रास्ता था। टार्जन भी पीछे पीछे बढ़े। उनकी निगाह सोने और चांदी के उन गहनों पर पड़ी जो वह अपनी कन्धे तक खुली हुई बाहों में पहिने हुई थी, उन्होंने बालों से लटकती हुई वे सुनहरी जञ्जीरें देखीं जिनमें सोने की मुहरें पिरोई हुई थीं, और उसकी सुन्दर और ठाठदार पोशाक पर भी उनका ध्यान गया। वे समझ गये कि यह उन नाचनेवालियों में से कोई है, और उनके हृदय ने कहा कि यह वही होगी जिसने

घन्टा भर पहिले धीरे से झुक के उनके कान में आने वाले खतरे की सूचना दी थी।

सीढ़ी के ऊपर पहुंचने पर उनके कानों में क्रोधित अरबों में चिल्लाने और गालियें देने की आवाज आई। वे नीचे अन्धेरे में उन दोनों को ढूंढ रहे थे।

साथ लाने वाली युवती धीरे से बोली, "शीघ्र ही वे यहां पहुंच आयंगे, और जब वे यहां आवें तो आप उनको न दिखाई देने चाहियें। आप लड़ते तो हैं दस आदमियों की ताकत से, पर वह ताकत आप को बचायेगी नहीं। अन्त में वे आपको मार डालेंगे। आप मेरे कमरे में घुस के सामने वाली खिड़की से बाहर गली में उतर जाइये, और जब तक उन्हें पता लगेगा कि आप यहां नहीं हैं तब तक आप बगल की होटल में घुस के हिफाजत में हो जाइयेगा।"

युवती की बात अभी पूरी नहीं हुई थी कि कई आदमियों ने उस सीढ़ी पर चढ़ना शुरू कर दिया जिसके ऊपर वे खड़े थे। एक ने यकायक चीख मारी—उसने टार्जन को देख लिया था—और आवाज सुन और इशारा समझ झुन्ड का झुन्ड सीढ़ी की तरफ दौड़ा। सीढ़ी पर का सब से आगे वाला दुश्मन टार्जन पर झपटा पर उसे अपने सामने वह तलवार दिखाई दी जो टार्जन ने एक अरब से छीनी थी और जिसे उन के हाथ में पाने की उसे बिल्कुल आशा न थी—वह समझता था कि वे खाली हाथ होंगे।

चिल्ला कर वह आदमी अपने पीछे के अरबों पर गिरा, और एक पर एक लुढ़कते हुये सब नीचे की तरफ चले। पुरानी, सड़े

हुये काठ की सीढ़ी, जो इतने बोझे से पहिले ही चरमरा रही थी इस नये धक्के को न बर्दास्त कर सकी और चरचराती हुई अरबों को लिये दिये टूट कर नीचे बैठ गई। टार्ज़न, अब्दुल और वह युवती ऊपर के कमजोर तख्ते पर खड़े रह गये।

नाचने वाली बोली, "आइये, वे लोग दूसरी सीढ़ी चढ़ कर मेरे बगल के कमरे से यहां घुस आवेंगे तो मुश्किल होगी। अब एक क्षण की भी देर न करनी चाहिये।"

कमरे में घुसते हुये अब्दुल ने सुना और टार्ज़न को समझाया, नीचे आंगन में एक अरब अपने साथियों से कह रहा था कि कुछ लोग गली में जाके उधर से भागने का रास्ता रोक लें।

युवती ने घबड़ा के कहा, "अब हम लोग फंस गये।"

टार्ज़न आश्चर्य से बोले, "हम लोग?"

युवती बोली,"हां मानश्यूर, वे मुझे भी मार डालेंगे। क्या मैंने भागने में आपकी मदद नहीं की है?"

यह बिल्कुल दूसरी बात थी जिस पर टार्ज़न का ध्यान न गया था। अब तक लड़ाई से,उससे पैदा होने वाले खतरे से—उन्हें आनन्द आ रहा था। उन्होंने यह न सोचा था, इसका उन्हें ख्याल भी न आया था, कि झगड़े में चोट खाने या किसी तरह तकलीफ उठाने के अतिरिक्त और किसी दूसरी तरह से भी इस युवती या अब्दुल पर आफत आ सकती है। वे लड़ते हुये जरा सा हट गये थे, सो केवल अपने प्राणों के थोड़े से बचाव में, उनको भागने की इच्छा न थी, न वे यही चाहते थे कि जब तक इस जगह अपनी जान का

बचाना असंभव समझें तब तक इस जगह को छोड़ें। अकेले वे उस भीड़ में कूद पड़ते और दाहिने बायें मारते हुये, जिस तरह न्यूमा,—शेर मारता है—उनके बीच में ऐसी आफत मचा देते कि वे हमला करने वाले घबड़ा स्वयं भागने की जगह दे देते और वे निकल जाते। लेकिन अब उन्हें इन दोनों वफ़ादार दोस्तों का खयाल करना होगा!

वे उस खिड़की के पास गये जो गली की तरफ़ पड़ती थी। क्षण भर के अन्दर उसके नीचे भी दुश्मन भर जायंगे! बगल वाली कोठरी की सीढ़ी उनमें से कुछ चढ़ रहे थे—यह आहट भी टार्जन को लग रही थी, मिनट भर के अन्दर वे बीच का दर्वाजा तोड़ के यहां पहुंच जायंगे। उन्होंने खिड़की के बाहर कारनिस पर पैर रक्खा और ऊपर देखा। कोठरी की नीची छत बहुत नजदीक—हाथभर से ज्यादा फासले पर न पड़ती थी। उन्होंने युवती को बुलाया, और जब वह पास आ गई तो अपनी लम्बी और मजबूत बाहों में उसे कन्धे पर उठा लिया। इसके बाद वे अब्दुल से बोले, "तुम यहीं रुको, अभी क्षण भर में मैं तुम्हें ऊपर से उठा लेता हूं। इस बीच में तुम फुर्ती से एक काम करो। कमरे में जितनी चीजें पाओ सभों को उस दर्वाजे के पास इकट्ठी कर दो, वे कुछ न कुछ उन्हें रोकेंगी ही।"

युवती को कन्धे पर लिये हुये टार्जन ने कारनिस पर पैर रक्खा और उससे धीरे से बोले, "देखो मजबूती से मुझे पकड़े रहो।" दूसरे क्षण में बन्दर की तरह चतुरता और आसानी से छत पर चढ़ गये। अपने बोझ को उन्होंने बगल में बैठा दिया और किनारे पर

झुक के अब्दुल को आवाज दी। वह झट खिड़की के पास आ गया। वे धीमे स्वर में बोले, "अपना हाथ दो।"

बगल वाले कमरे में दुश्मन भड़ाभड़ दर्वाजे पर चोटें मार रहे थे। यकायक वह टूट कर अपने पास इकट्ठी की गई चीजों पर होता हुआ अन्दर गिरा, साथ ही अब्दुल ने अपने को कागज की तरह आसानी से ऊपर उठते पाया। टार्जन ने उसे भी युवती के बगल में बैठा दिया। टूटे हुये दर्वाजे की राह जब कि क्रोध से पागल पचीसों अरब अपने दुश्मन की खोज में कोठरी में घुस रहे थे, उनके थोड़े से साथी गली के दर्वाजे से निकल के नाचने वाली की खिड़की के नीचे आ के खड़े हो गये थे, टार्जन और उनके दोनों साथी आराम से खतरे की पहुंच के बाहर—छत पर बैठे हुये थे।

आठवां बयान

रेगिस्तान में लड़ाई

नाचने वालियों के कमरों के ऊपर छत पर बैठे हुये तीनों सुन रहे थे। नीचे कोठरी में उन्हें तलाश करते हुये अरब गालियें दे रहे थे तथा कोस रहे थे। अब्दुल थोड़ी थोड़ी देर में उनकी बातों का मतलब टार्जन को समझाता जाता था।

वह बोला, "देखिये, अब कोठरी के खोजने वाले नीचे गली वालों से झगड़ रहे हैं। वे कहते हैं कि नीचे वालों ने दुश्मन को

कैम्प में भाग जाने दिया, उन्हें पकड़ा नहीं। नीचे वाले कह रहे हैं कि नहीं, दुश्मन भागे नहीं हैं, वे सभी मकान ही में होंगे, भागते तो वे जरूर उन्हें देखते। ऊपर वाले डरपोक स्वयं हैं, जो भय के मारे दुश्मन को पकड़ने की हिम्मत तो करते नहीं, उलटे बहाना करते हैं कि वे भाग गये। देखिये, अगर थोड़ी देर तक आपस में इस तरह झगड़ते रहे तो उनमें स्वयं आपस ही में हाथापाई हो जायगी। हमें खोजना और पकड़ना भी वे भूल जायंगे।"

थोड़ी देर बाद कोठरी वालों ने अपनी खोज बन्द कर दी और नीचे सरायं में चले गये। गली में आपस में बातें करते और सिगरेट पीते हुये दो चार आदमी रह गये।

टार्जन ने अब मौका पा के युवती को धन्यवाद दिया और कहा कि एक बिल्कुल अजनबी के लिये तुमने जो किया वह बहुत बड़ा स्वार्थ त्याग था, और दूसरा कोई उतना न करता।

युवती सादगी से बोली, "आपकी चाल ढाल मुझे पसन्द आई। सरायं में आने वाले दूसरे आदमियों की तरह आप नहीं थे। आप मुझसे रुखाई से न बोले, न रुपया देते वक्त ही आपका ढंग निरादर पूर्ण था।"

टार्जन ने पूछा, "लेकिन अब तुम क्या करोगी। सरायं में तो तुम जा न सकोगी, और कदाचित इस शहर में रहने से भी तुम पर कोई आपत्ति आवे!"

युवती बोली, "नहीं, कोई भी नहीं। ये लोग इस घटना का ध्यान थोड़े रक्खेंगे, कल ही सब इसे भूल जायंगे। पर बड़ा ही

अच्छा हो यदि अब मुझे इस—या किसी भी सरायं में लौट के न आना पड़े। मैं अब तक रही सो अपनी मर्जी से, नहीं मैं यहां कैद थी।"

टार्जन ने आश्चर्य से पूछा, "कैद!"

युवती निगाह नीची करके बोली, "बल्कि गुलाम बना के रक्खा है यह कहा जाय तो ज्यादा ठीक होगा। रात के वक्त हत्यारों ने मुझे पिता के डेरे से चुरा लिया और साथ लेके यहां भाग आये। यहां उन्होंने उस अरब के हाथ मुझे बेच दिया जो इस सरायं का मालिक है। दो बरस हो गये, मैंने अपनी जाति के एक आदमी की शकल नहीं देखी है। वे बहुत दूर दक्षिण में रहते हैं। यहां सिदी-आयशा कभी नहीं आते।"

टार्जन ने कहा, "तो क्या तुम अपनी जाति वालों के पास लौट के जाना चाहती हो? मैं तुम्हें कम से कम बाऊ—सादा तक पहुंचा सकता हूं। वहां फौजी अफसर से कह के और साथ में आदमी दे के और आगे भेजवा दूँगा।"

युवती की आंखें डबडबा आईं, वह बोली, "आह, मानश्यूर, अगर आप ऐसा कर सके तो उस नेकी का बदला मैं जीते जी आप को न चुका सकूंगी। क्या आप सचमुच एक गरीब नाचने वाली के लिये इतना कष्ट स्वीकार करेंगे। आपको यथाशक्ति इसका पारितोषिक मिलेगा। मेरे पिता संपन्न आदमी—एक जाति के शेख हैं, आपको खुश कर देंगे। उनका नाम कादर बेन सादन है।"

टार्जन ताज्जुब से बोले, "हैं, कादर बेन सादन! वे तो

यहीं—इसी कसबे में मौजूद हैं। दो घन्टे हुये उन्होंने मेरे संग खाना खाया है !"

आश्चर्य और प्रसन्नता से भर के उत्कंठित स्वर से युवती बोली, "अरे तब तो अल्लाह की मेहरबानी है, मेरी जान बच गई !"

यकायक अब्दुल बोला, "चुप, चुप, सुनिये यह कैसी आवाज है !"

नीचे से जो आवाजें आती थीं वे रात के सन्नाटे में साफ सुनाई देती थीं, पर उनका मतलब टार्जन कुछ भी न समझ सकते थे। अब्दुल और उस युवती ने समझाया। युवती बोली—

"वे लोग आपको खोज रहे हैं, और आपका पता नहीं लग रहा है इससे अब निराश हो के चले जा रहे हैं। उनका कहना है कि जिस अजनबी ने आपको जान से मार डालने पर उन्हें ईनाम देने को कहा था, उसका हाथ टूट गया है और वह अकमद-दीन-सूलेफ के घर पड़ा है। लेकिन उसने कहा है कि अगर कुछ लोग बाऊ-सादा जाने वाली सड़क पर छिपे रहें और आप को जाते वक्त मार डालें तो उन्हें और ज्यादा ईनाम वह देगा।"

अब्दुल ने कहा, "तो वही आपके पीछे पीछे बाजार में भी घूम रहा होगा। मैंने उसको और उसके एक साथी को सराय के अन्दर इस युवती से बातें करते भी देखा था। बातें करके वे सराय के बाहर आंगन में चले आये थे। शायद उन्हीं लोगों ने आंगन में आने पर हम लोगों पर गोली भी चलाई थी। क्यों मानश्यूर, वे आपकी जान क्यों लेना चाहते हैं ?"

टार्जन बोले, "क्या जाने, मैं कह नहीं सकता, शायद...।" इतना कह टार्जन यकायक रुक गये। उन्हें एक बात का ध्यान आया जो कि एक तरह पर इन पिछली घटनाओं का कारण कही जा सकती थी, पर जो इतनी अनहोनी मालूम होती थी कि उन्हें विश्वास न होता था कि सचमुच ऐसा होगा।

धीरे धीरे नीचे के आदमी हटने लगे और थोड़ी ही देर बाद गली और भीतर के आंगन, दोनों में सन्नाटा हो गया। बड़ी सावधानी से खिड़की से उतर टार्जन ने नीचे झांका। युवती की कोठरी में कोई न था। उन्होंने अब्दुल को हाथ पकड़ कर नीचे उतार लिया और पुनः छत पर चढ़ कर युवती को भी अब्दुल के हाथों में पकड़ा दिया।

नीचे गली बहुत ज्यादा नीची न पड़ती थी। अब्दुल खिड़की थाम के नीचे उतर गया। टार्जन ने युवती को बाहों में पकड़ लिया और उछाल मार कर जमीन पर आ रहे। उनको जंगलों में बोझा लेकर पेड़ों से कूदने की बराबर इतनी आदत रही थी कि यद्यपि उस युवती को कूदते वक्त डर मालूम हुआ कि शायद चोट न लगे, पर टार्जन इतनी मुलायमियत से नीचे जमीन पर आये कि उसे एक झटका तक न लगा। उन्होंने उसे धीरे से पैरों पर खड़ा कर दिया।

युवती क्षण भर उनके साथ चिपटी रही, फिर प्रसन्नता भरे स्वर में बोली, "आह, मानश्यूर, आप कितने ताकतवर हैं, और आप में फुर्ती कितनी है। कदाचित 'एल एड्रिया'—काले शेर में भी आपके ऐसी शक्ति और फुर्ती न होगी।"

टार्जन ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हारे इस 'एल एड्रिया' से एक बार मिलना चाहता हूं, देखूं उसमें कितनी ताकत है। मैंने उसकी बड़ी तारीफ सुनी है।"

युवती बोली, "आप मेरे पिता के गांव की तरफ आवें तो रात में उसे देख सकेंगे। वह हम लोगों के उत्तर पहाड़ों के बीच एक भयानक घाटी में रहता है और प्रायः रोज ही रात को गांव के आस पास के मवेशी उसके शिकार बनते हैं। उसके भारी पंजे की एक चोट कद्दावर से कद्दावर भैंसे के सिर को चूर कर देने के लिये काफी है, और अगर अभाग्य से रात के वक्त कोई रास्ता भूला हुआ मुसाफिर उसके सामने पड़ जाय—तो समझिये उसकी मौत आ गई! किसी प्रकार, किसी तरह भी वह अभागा फिर अपनी जान उस काले शेर से बचा नहीं सकता!"

कुछ कदम चल कर वे पास के एक होटल में पहुंच गये। नींद से उठे हुये होटल के मालिक ने इस समय इतनी रात को कादर-बेन-सादन को तलाश करने से इनकार किया, पर जब टार्जन ने सोने का एक सिक्का उसकी हथेली पर रख दिया तो वह एक दम चुप हो गया। उसने अपने नौकर को उठाया और उन छोटी छोटी सरायों में कादर-बेन-सादन को तलाश करने के लिये भेजा जहां कि आराम से अपने और अपने साथियों के लिये शायद उन्होंने जगह पाई होगी। टार्जन ने सोचा था कि आज ही पता लगा के युवती को उसके पिता से मिला देना चाहिये। शायद कल सुबह बहुत सबेरे ही वे अपने घर की तरफ रवाना हो जायं, और फिर उनका पता लगाने में असुविधा हो।

आधे घण्टे से अधिक उन्हें न ठहरना पड़ा होगा कि नौकर कादर बेन सादन को अपने साथ लिये आ पहुंचा। बेचारे वृद्ध शेख के चेहरे पर इतनी रात को जगाये जाने के कारण कुछ असंतोष का भाव दिखाई दे रहा था, पर उन्होंने कमरे में घुसते हुये बड़ी मुलायमियत से कहा, "मानश्यूर ने बड़ी कृपा की जो..." यकायक उनकी निगाह अपनी लड़की पर पड़ी। दोनों हाथ बढ़ा के उसकी तरफ बढ़ते हुये वे बोले, "आह, मेरी लड़की! सचमुच अल्लाह बड़ा मेहरबान है!" यह कहते हुये उनकी आंखों में आंसू भर आये।

जब लड़की ने सब हाल अपने पिता को सुनाया, और बताया कि किस तरह वह चुराई गई थी, किस तरह इतने दिन गुलामी में पड़ी रही, और फिर किस तरह इन दयालु सज्जन ने उसकी जान बचाई तो कृतज्ञता में भर कर शेख ने अपना हाथ टार्जन की तरफ बढ़ाया और धीमे स्वर में कहा—

"जो कुछ कादर बेन सादन का है, सब आप का है, उसकी जान तक आप के एक इशारे पर हाजिर है।" उनका ये बातें कहने का ढंग बहुत सादगी का था—पर टार्जन समझते थे कि यह जो कह रहे हैं, वक्त पर उसका प्रत्येक शब्द पूरा करने के लिये तैयार रहेंगे।

राय हुई कि अब उन लोगों को सोना न चाहिये और सबेरे खूब जल्दी उठ कर के बाऊ-सादा की तरफ रवाना हो जाना चाहिये और कोशिश करनी चाहिये कि दिन रहते वहां पहुंच जाया जाय। उन दोनों पुरुषों के लिये तो ऐसा करना कठिन न होगा, लेकिन

भी सुन्दर और आकर्षक न था। चारों तरफ जहां तक निगाह जाती थी, मैदान ही मैदान—जिसमें जगह जगह बालू के छोटे छोटे टीले से बने हुये थे। कहीं पानी या तरी का नाम न था, जगह जगह जो घास दिखाई देती थी, या पौदे नजर आते थे, वे भी निर्जीव और बिल्कुल मरे से जान पड़ते थे। दूर पर दक्षिण में सहारा के इस सिरे से उस सिरे तक गये हुये ऐटलस पहाड़ की धुन्धली आभा नजर आ रही थी! टार्जन सोचने लगे कि यह दृश्य उसके लड़कपन के अफ्रिका के हरे भरे घने जंगलों से कितना भिन्न है।

होशियार अब्दुल बराबर आगे पीछे देखता हुआ चल रहा था। वह जितनी बार आगे देखता था उतनी ही बार पीछे भी घूम के निगाह डाल लिया करता था। जितने टीले या ऊंचे स्थान रास्ते में उसके सामने आते थे, वह सभों पर चढ़ के घोड़े की पीठ पर ऊंचा होके चारो तरफ दृष्टि डाल लेता था। आखिर उसका इस प्रकार देखना सफल हुआ।

यकायक उसने तेज आवाज से कहा, "देखिये, वह देखिये, छः घुड़सवार हमारा पीछा करते आ रहे हैं।"

कादर बेन सादन बोले, "ये शायद उन्हीं के साथी होंगे जिन्होंने कल रात को आप पर हमला किया था।"

टार्जन बोले, "अवश्य, इसमें कोई सन्देह नहीं मालूम होता। मुझे दुःख है कि मेरे साथ के कारण आप के सफर और आराम में भी बाधा पड़ा चाहती है। अगले गांव में मैं रुक जाऊंगा और आप आगे बढ़ जाइयेगा। तब मैं इनसे पूछूंगा कि इस पीछा करने

का क्या कारण है। मुझे बाऊ-सादा आज ही पहुँच जाने की कोई आवश्यकता नहीं है और इसको भी कोई आवश्यकता नहीं मालूम होती कि मेरे कारण आप बीच में रुकें।"

कादर बेन सादन सूखे कंठ से बोले, "अगर आप ठहरियेगा तो मैं भी ठहरूंगा। जब तक दुश्मन पीछा किये हुये हैं या जब तक आप अपने साथियों के पास हिफाजत से नहीं पहुँच जाते तब तक मैं आप से अलग नहीं हो सकता। बस, इसमें ज्यादा कहने सुनने की जरूरत नहीं।"

टार्जन कुछ न बोले, उन्होंने केवल जवाब में सिर झुका दिया। उन्हें ज्यादा बोलने की आदत न थी, और शायद यही कारण था कि कादर बेन सादन उन्हें इतना चाहने लग गये थे। अरब को अगर किसी बात से घृणा होती है तो वह है ज्यादा बोलने की आदत!

दिन भर वे पीछे के घुड़सवार बराबर साथ रहे, पर न और नजदीक आये और न दूर ही हुये। इन लोगों के रुकने या ठहरने पर वे भी ठहर जाते थे, और इनके रवाना होने पर फिर चलना आरंभ करते थे।

कादर बेन सादन बोले, "शायद ये लोग संध्या होने की राह देख रहे हैं।"

और हुआ भी वही जिसकी उन लोगों को आशंका थी। बाऊ-सादा पहुँचने के पहिले ही चारों तरफ से धीरे धीरे घिर आने वाले अन्धकार ने उन्हें अपने बीच में छिपाना शुरू किया। आखिरी दफे

जब अब्दुल ने पीछे फिर के उन सफेदपोश सवारों को देखा तो उसे मालूम हुआ कि वे धुंधली शक्लें अपनी चाल तेज कर रही हैं और उस फासले को जल्दी तय करना चाहती हैं जो उनके और उनके शिकार के बीच में पड़ता था। उसने धीरे से झुक के टार्जन के कान में यह बात कही, उसने न चाहा कि बेचारी वह लड़की भी इस बात को सुने और डरे।

टार्जन ने ठिठकते हुये कहा, "अब्दुल, तुम आगे बढ़ के उन लोगों के संग हो जाओ। यह मेरा झगड़ा है और मैं इसे तय कर लूंगा। शीघ्र ही कोई मुनासिब जगह देख के मैं रुक जाता हूं और इन आने वालों से जवाब तलब करता हूं।"

अब्दुल ने स्थिर आवाज में कहा, "अगर आप रुकेंगे तो मैं भी रुकूंगा। मैं आगे नहीं बढ़ सकता।" टार्जन ने उसे कितना ही समझाया, वे उस पर कितने ही नाराज हुये, पर उसने एक न सुनी।

अन्त में टार्जन बोले, "अच्छा, यह जगह अच्छी है, यहां टीले के ऊपर बड़ी बड़ी बहुतेरी चट्टानें हैं। हम यहीं छिप जायंगे और ये सज्जन जब आयेंगे तो इनसे समझेंगे।"

घोड़े बगल में करके दोनों नीचे उतर पड़े। दूसरे लोग, जो आगे आगे जा रहे थे, वे बढ़ के अन्धकार में छिप गये थे और अब दिखाई नहीं पड़ते थे। सामने कुछ दूर पर बाऊ-सादा की रोशनियें चमक रही थीं। टार्जन ने अपनी बन्दूक और रिवाल्वर तसमों से खोल के हाथ में ले ली और अब्दुल से धीमी आवाज में

बोले, "तुम इन घोड़ों को ले के चट्टानों की आड़ में हो जाओ, जिसमें तुम्हें गोली न लगे।"

अब्दुल ने दिखाने को तो वैसा ही किया जैसा उसे टार्जन ने हुक्म दिया था। पर जब वह दोनों घोड़ों को मजबूती से एक चट्टान के साथ बांध चुका तो वह भी धीरे से घसकता हुआ टार्जन के चार कदम पीछे आ गया और वहां पेट के बल लेट के देखने लगा कि क्या होता है।

टार्जन बीचोबीच सड़क में खड़े हो कर आने वालों की राह देखने लगे। उन्हें ज्यादा ठहरना न पड़ा। घोड़ों के टापों की आवाज शीघ्र ही पास आ पहुंची और टार्जन ने पास के अन्धकार में से चार पांच शकलों को निकलते देखा।

उन्होंने तेज आवाज में कहा, "ठहरो, नहीं तो हम गोली चलावेंगे।"

सफेद शकलें एक दम रुक गईं और क्षण भर तक एक दम सन्नाटा रहा। फिर आपस में बातें करने की धीमी आवाज आई, और ये भूतों की सी शकलें तेजी के साथ चारो तरफ फैल के इधर उधर हो गईं। फिर सन्नाटा छा गया, लेकिन यह भयावना और डरावना जान पड़ता था।

अब्दुल ने घुटने के सहारे उठ के चारो तरफ निगाह घुमाई, टार्जन अपने तेज कानों को सीधा करके आहट सुनने का उद्योग करने लगे, और साथ ही उन्हें मालूम हुआ जैसे उनकी दाहिनी तरफ कोई बालू में चल रहा है। शीघ्र ही आगे पीछे और बायें

तरफ से भी आवाज आई। वे समझ गये कि वे चारो तरफ से घेर लिये गये हैं। यकायक रात के सन्नाटे को तोड़ती हुई बन्दूक की आवाज उस ओर से आई जिधर मुंह किये वे खड़े थे और गोली सनसनाती हुई सिर के ऊपर से निकल गई। उन्होंने भी बन्दूक ऊंची करके तुरत उस तरफ गोली चलाई जिधर चमक मालूम हुई थी।

यह जैसे लड़ाई के शुरू होने का इशारा था! शीघ्र ही चारो तरफ का निस्तब्ध मैदान बन्दूकों की आवाज से भर उठा। टार्जन और अब्दुल केवल बन्दूकों की चमक पर गोली चलाते थे—वे देख तो सकते नहीं थे कि गोली चलाने वाले किधर हैं। धीरे धीरे उन्हें मालूम होने लगा जैसे दुश्मन चारो तरफ घूमते और गोलियें छोड़ते हुये अपना घेरा छोटा करते जा रहे हैं। उन्हें शक हो गया है कि उनका सामना करने वालों की संख्या बहुत कम है।

लेकिन घूमता हुआ उनमें से एक बहुत नजदीक आ गया—अथवा यों कहना चाहिये कि वह टार्जन को दिखाई दे गया। उन्हें जंगल के अन्धकार में अपनी आंखें इस्तेमाल करने की आदत थी, और जंगल के घने अन्धकार के बराबर कालिमा फिर कब्र के इस पार और कोई नहीं होती—टार्जन ने पिस्तौल उठाई और चिल्लाहट की आवाज़ के साथ घोड़े की पीठ खाली हो गई।

टार्जन ने हंस के कहा, "देखो अब्दुल, अब संख्या कम होने लगी।"

लेकिन तब भी अभी दुश्मन उनसे बहुत ज्यादा थे—और जब

सभों ने एक इशारे पर एक साथ हमला किया तो ऐसा मालूम हुआ जैसे लड़ाई अब खतम हुआ ही चाहती है। पर टार्जन और अब्दुल उछल कर चट्टानों की आड़ में आ रहे, जिसमें वे दुश्मनों को अपने सामने रख सकें। टापों की आवाजों और बन्दूकों के शब्दों से जगह फिर गूंज उठी, दोनों तरफ से गोलियें चलीं, और तब अरब लोग फिर से हमला करने के लिये पीछे हट गये। उस समय मालूम हुआ कि कि दो के मुकाबले को अब केवल चार रह गये हैं।

कुछ मिनटों तक सन्नाटा रहा और चारो तरफ के अन्धकार में से किसी तरह की आवाज का आना बन्द हो गया। टार्जन सोचने लगे कि क्या मामला है। क्या अबकी दुश्मन अपने नुकसान से संतुष्ट हो मैदान से हट गये, या क्या वे आगे सड़क पर यह सोच के चले गये हैं कि इधर से आवेंगे तो फिर हमला करेंगे! टार्जन को ज्यादा देर शक में रहने की जरूरत न पड़ी। यकायक एक तरफ से घोड़ों के टापों की आवाज आई। जान पड़ा कि बाकी दुश्मनों ने एक साथ ही एक तरफ से हमला किया है! एक बन्दूक छूटी, पर उसकी आवाज मुश्किल से गूंज के खतम हुई होगी कि अरबों के पीछे की तरफ से दस बारह बन्दूकों के छूटने की आवाज आई, बहुत से घोड़ों के टापों की आवाज सन्नाटे मैदान में सुनाई दी और कई आदमियों के चिल्लाने की आहट भी सुन पड़ने लगी। मालूम हो गया कि लड़ाई में शामिल होने के लिये एक नया दल बाऊ-सादा के तरफ की सड़क से बढ़ा आ रहा है।

अरब इस लिये न रुके कि वे ठहरें और देखें कि आने वाले कौन हैं। तेजी से घोड़ों को दौड़ाते हुये और बन्दूकों की एक बाढ़ छोड़ते हुये वे उस तरफ भागे जिधर सड़क सिदी–आयशा की तरफ जाती थी। क्षण भर बाद कादर बेन सादन और उनके साथी वहां आ पहुंचे।

बेचारे बूढ़े शेख को यह देख के बड़ी प्रसन्नता हुई कि टार्जन और अब्दुल किसी को जरा सी भी चोट कहीं नहीं लगी है। उनके घोड़े भी नहीं घायल हुये हैं। उन आदमियों को खोजा गया जो टार्जन की गोली से गिरे थे और देखने से मालूम हुआ कि दोनों मर चुके हैं, अस्तु वे जहां के तहां छोड़ दिये गये।

कादर बेन सादन ने निराशा भरे स्वर में पूछा, "आपने मुझे क्यों नहीं बताया कि आप पीछे रुक के इनका सामना किया चाहते हैं? अगर हम सब लोग रुक जाते तो इनमें से कोई भी जीता बच के न जाने पाता।"

टार्जन बोले, "अगर सब लोग रुक जाते तब तो रुकना ही बेकार होता। मेरे कारण सब को लड़ाई में फंसना पड़ता। मैं नहीं चाहता था मेरा झगड़ा दूसरों के सिर पड़े। फिर मुझे आप की लड़की का भी तो खयाल था—ऐसा कैसे हो सकता था कि आपके साथ मैं उसे भी रोक के आफत और खतरे में डालता!"

कादर बेन सादन ने असंतोष से सिर हिलाया। टार्जन अकेले अकेले लड़े यह उन्हें पसन्द न आया।

बाऊ-सादा के इतने पास की लड़ाई की आवाज उस कसबे तक भी पहुंच गई थी और वहां से सिपाहियों का एक छोटा सा दल यह देखने को निकल पड़ा था कि ये गोलियें चलने की आवाज कैसी है। टार्जन और उनके साथ के लोग उन सिपाहियों को शहर के बिल्कुल पास ही मिले। उनके अफसर के सवाल करने पर कादर बेन सादन बोले—

"कुछ थोड़े से डाकू थे जो हमारे साथियों में से दो को पीछे छूटे हुये और अकेले पा के उन पर हमला कर बैठे थे। जब हम लोग उनके सिर पर पहुंचे वे तुरत भाग गये और अपने दो मरे हुये साथियों को पीछे छोड़ते गये। हमारे साथ का कोई घायल न हुआ।"

इस सूचना से अफसर सन्तुष्ट हो गया। उसने शेख के साथ के सब आदमियों के नाम पूछ के लिख लिये और फिर सिपाहियों को साथ ले के उस तरफ चला गया जिधर यह घटना हुई थी। उसका इरादा था कि मरे हुये डाकुओं को शहर में उठा लावें और हो सके तो उनको पहिचानने का उद्योग करें।

बाऊ-सादा पहुंचने के दो रोज बाद कादर बेन सादन अपनी लड़की और साथियों का साथ लेकर दक्खिण की ओर अपने घर की तरफ रवाना हो गये। चलते समय उन्होंने टार्जन को भी साथ चलने का बहुत आग्रह किया, उनकी लड़की ने भी बहुत जिद्द की, पर यद्यपि टार्जन सब बातें उन्हें खोल के न कह सकते थे, न अपने रुकने का कारण उन्हें समझा ही सकते थे पर अपने दिल में अवश्य

समझते थे कि इस मौके पर—जब कि यहां पिछले तीन चार रोजों के अन्दर ये घटनायें हो गई हैं—उनका यहां मौजूद रहना और सब बातों पर नजर रखना बहुत जरूरी है। वे साथ न गये, पर उन्होंने वादा अवश्य किया कि कभी मौका मिला तो मैं आऊंगा। उन लोगों को इस वादे से ही संतोष करना पड़ा।

इन दो दिनों के बीच में टार्जन बराबर कादर बेन सादन और उनकी लड़की के ही साथ रहे। उन्हें ये लोग बहुत ही पसन्द आये थे, और उनकी दोस्ती का लाभ उठा के टार्जन धीरे धीरे उनकी रिवाजें और उनकी चाल ढाल भी समझने की चेष्टा करने लगे थे। उस सुन्दर लड़की से पूछ और समझ कर वे उस भाषा का भी कुछ अंश सीखने लगे थे जिसे दक्षिण के ये बाशिन्दे बोलते थे। उन के चले जाने से उन्हें कम दुःख नहीं हुआ था। उनके बिदा होने के बहुत देर बाद तक—जब तक वे दिखाई देते रहे—टार्जन घोड़े पर वहीं खड़े रहे जहां से वे उनसे बिदा हुये थे, और एक टक उनकी तरफ देखते रहे।

सचमुच ये उनके दिल के पसन्द के अनुसार आदमी थे। खतरे और कठिनाइयों से भरा हुआ इनका जंगली और सादा जीवन टार्जन को जितना पसन्द आया था—उन बड़े बड़े शहरों के मनुष्यों का जीवन टार्जन को उतना पसन्द न आया था जिनकी वे सैर कर चुके थे। उन शहरों के रहने वाले शौकीन मिजाज, ऊपरी तड़क भड़क वाले, कमजोर और अनुदार चित्त के थे। इनका जीवन जंगली जीवन से भी बढ़ के था, यहां उन्हें ऐसे आदमियों का साथ मिल सकता

था जिनकी वे दिल से कद्र कर सकते थे, और साथ ही अपने जंगल के सब आनन्द भी पा सकते थे। उन्होंने सोचा कि जब मेरे सब काम खतम हो जायंगे तो मैं सब झंझटों को छोड़ यहीं चला आऊंगा और अपने जिन्दगी के अंतिम दिन कादर बेन सादन के साथ बिताऊंगा।

टार्जन ने अपने घोड़े का मुंह घुमाया और बाऊ-सादा की तरफ लौटे।

बाऊ-सादा में टार्जन होटल पेटिट सहारा में टिके थे। उसमें बार-रूम बिल्कुल सामने सड़क के किनारे पड़ता था। बार-रूम के बगल में दो खाना खाने के कमरे और उनके बगल में बावर्चीखाना था। बार-रूम से बिल्कुल सटे हुये खाना खाने वाले कमरे थे और अगर कोई बार-रूम में खड़ा हो तो वह दोनों खाने वाले कमरों के भीतर का हाल अच्छी तरह देख सकता था। इन दोनों कमरों में एक केवल फौजी अफसरों वास्ते रिजर्व था और एक साधारण लोगों के लिये था।

कादर बेन सादन को छोड़ के टार्जन वापस हुये तो सीधे बार में पहुंचे। अभी वक्त बिल्कुल सबेरे का था, क्योंकि कादर बेन सादन कुछ अन्धकार रहते ही सफर पर चल पड़े थे और इससे बहुत से लोग खाने के कमरों में बैठे सबेरे का खाना खा रहे थे। टार्जन की निगाह उस ओर गई जिधर अफसरों के खाना खाने का कमरा था, और वहां उन्हें एक ऐसी बात दिखाई दी कि वे कुछ चौकन्ने हो उठे। उन्होंने देखा कि लेफटेनेन्ट जर्नोइस कुर्सी पर बैठे हुये हैं

और सफ़ेद कपड़े पहिने एक अरब उनसे धीरे धीरे कुछ बातें कर रहा है। टार्जन के आने के क्षण भर बाद ही वह दूसरे दर्वाजे से निकल के होटल के बाहर चला गया। बात बिल्कुल मामूली थी और टार्जन को कुछ भी शक न होता, पर उन्हें ज्यादा खयाल उधर तब हुआ जब उन्होंने देखा कि उस अरब का बांयां हाथ घायल है, उस पर पट्टी बन्धी हुई है और वह होशियारी से उसे कपड़े के अन्दर छिपाये हुये है।

नौवां बयान

काला शेर

जिस रोज कादर बेन सादन टार्जन से बिदा होके अपने घर की तरफ रवाना हुये उसी रोज टार्जन को डी. आरनट का एक पत्र मिला जो पहिले सिदी-बेल-एबेस भेजा गया था और वहां से होता हुआ यहां आया था। इसके पढ़ने से टार्जन के दिल का वह जख्म फिर नया हो गया जिसको अब तक भूलने की चेष्टा करते हुये वे अच्छा करने का उद्योग कर रहे थे। पर वे पढ़ कर अप्रसन्न भी न

हुये। अगर संसार में कोई विषय उन्हें खूब रोचक जान पड़ता था तो यही। पत्र में लिखा था—

प्रिय जोन,

आशा है मेरी पिछली चीठी तुम्हें मिली होगी। उसके भेजने बाद मुझे हाल ही में एक काम से लंदन जाना पड़ा था। मैं वहां तीन ही रोज ठहरा और पहिले ही रोज मेरी मुलाकात तुम्हारे एक बड़े पुराने दोस्त से हुई। तुम उनका नाम न जान सकोगे अगर मैं न बतलाऊं। वे थे मि० सैमुयेल टी. फिलेंडर! वे मुझे देख के आश्चर्य में भी आये और प्रसन्न भी हुये और इस बात की जिद्द करने लगे कि मैं उनके साथ उस होटल में चलूं जिसमें वे ठहरे हुये हैं। मुझे उनकी बात माननीही पड़ी, और होटल में जाके मुझे बाकी लोग भी मिले, प्रोफेसर आरकीमेडिस क्यू. पोर्टर, उनकी लड़की मिस पोर्टर, और भारी डीलडौल वाली वह काली औरत—एसमेरल्डा, शायद तुम्हें नाम याद होगा। मैं वहां था तभी क्लेटन भी आ गये, और बाद में मुझे मालूम हुआ कि उन दोनों का विवाह शीघ्र—बहुत शीघ्र होने वाला है। जिस रोज भी उसके लिये हमारे पास खबर पहुंच जाय ताज्जुब नहीं। ज्यादा भीड़ भाड़ न होगी। क्लेटन के पिता की मृत्यु के कारण केवल रिश्तेदार ही आमंत्रित किये जायंगे।

मि० फिलैन्डर से थोड़ी देर अकेले में बातें करने से मुझे कई नई बातों का पता लगा। उन्होंने बताया कि मिस पोर्टर तीन बार विवाह के दिन टाल चुकी हैं। जान पड़ता है वे क्लेटन से विवाह

करने को उतनी उत्सुक नहीं हैं। पर क्लेटन उद्योग में है और जान पड़ता है अबकी विवाह रुकेगा नहीं !

"वे लोग तुम्हारे बारे में भी पूछ रहे थे, पर तुम्हारी मर्जी मुताबिक मैंने तुम्हारी असल पैदाइश के बारे में उन्हें कुछ न बताया और केवल यही कह दिया कि आज कल तुम कहां हो और क्या कर रहे हो।

"मिस पोर्टर तुम्हारा हाल जानने को बड़ी उत्सुक थीं और तुम्हारे बारे में कई बातें पूछ रही थीं। दिल्लगी के तौर पर मैंने तुम्हारा यह इरादा भी जाहिर कर दिया कि तुम फिर अपने उसी अफ्रिका के जंगल में लौट जाया चाहते हो। बाद में मुझे अफसोस हुआ। मैंने देखा कि यह समाचार सुन के उनको हृदय से कष्ट हुआ है और उनकी राय नहीं है कि तुम वहां जा के अपने को फिर से उन्हीं खतरों में डालो जिनसे तुम निकल आये हो। थोड़ी देर बाद वे बोलीं, "लेकिन कौन जानता है शायद उन्हीं का सोचना ठीक हो! मानस्यूर टार्जन वहां और भयानक जंगल में जाके जिस खतरे और आफत में पड़ेंगे, निर्दयी भाग्य उससे ज्यादा आफत और खतरे में दूसरों को डाल सकता है। कम से कम वहां उनके दिल को कष्ट कम होगा। फिर जंगल बुरा नहीं होता। दिन के समय वहां जैसी गंभीरता और शान्ति रहती है, जैसा सुन्दर दृश्य चारों ओर का रहता है, वैसा और कहीं न रहता होगा। इससे आप ताज्जुब न करियेगा कि जंगल में इतने कष्ट पाकर—वहां इतनी भयंकर आफत से बच कर मैं फिर उसी की प्रशंसा कैसे कर रही हूं। सच पूछिये

तो कभी कभी मेरी इच्छा होती है कि मैं फिर से उसी जंगल में लौट चलूं। मैं जानती और समझती हूं कि अपने जीवन के सब से सुखी और आनन्दमय हिस्से को मैंने जंगल ही में बिताया है।

"जिस समय मिस जेन पोर्टर ने ये बातें कहीं उनके चेहरे पर गहरे दुःख और निराशा की छाया आ गई थी। जान पड़ता था वे इस बात को समझती थीं कि मैं उनके दिल के गुप्त भेद को जानता हूं, और मेरे द्वारा वे अपने हृदय का अन्तिम प्रेम-सन्देश तुम्हें भेजवा रही थीं, उस हृदय का प्रेम सन्देश जो अब दूसरे के कब्जे में जाने वाला था लेकिन जिसमें तुम हमेशा देवता के तौर पर बैठे रहोगे।

"जब तुम्हारे विषय में बातें हो रही थीं मि० क्लेटन बड़े चिन्तित और तरद्दुद में पड़े मालूम होते थे। जान पड़ता था उनके दिल पर कोई बोझ पड़ा हुआ है। तब भी वे तुम्हारी बड़ी प्रशंसा कर रहे थे। मुझे शक होता है कि शायद वे तुम्हारा असल हाल जानते हैं।

"टेनिंगटन से भी वहीं मुलाकात हुई। तुम जानते होगे क्लेटन से उनकी बड़ी दोस्ती है। वे अबकी अपने स्टीमर में बैठ के अफ्रिका की परिक्रमा करना चाहते हैं और उनका इरादा है कि और सब लोग भी उनके साथ चलें। मुझे भी साथ चलने के लिये बड़ा आग्रह कर रहे थे। मैंने तो साफ कह दिया कि तुम अपने इस खिलौने ऐसे स्टीमर को जहाज समझते हो, और इससे जहाज ही का काम भी लेना चाहते हो लेकिन एक न एक दिन यह तुमको और तुम्हारे

कुछ दोस्तों को समुद्र के पेंदे में जरूर पहुंचावेगा। अच्छा होगा कि तुम इस पर लम्बे लम्बे सफर करना छोड़ दो!

"मैं परसों पेरिस लौटा हूं, और कल रेस में काउन्ट और काउन्टेस डी. कूड से मेरी मुलाकात हुई थी। दोनों ही तुम्हारे बारे में पूछ रहे थे। जान पड़ता है डी. कूड दिल से तुम्हें चाहते हैं और उनके हृदय में तुम्हारे प्रति कोई भी वैमनस्य नहीं रह गया है। ओल्गा भी पहिले ही की तरह उत्साहपूर्ण लेकिन कुछ सुस्त मालूम होती थीं। तुम्हारे साथ की दोस्ती से उन्हें एक शिक्षा मिल गई है जिसे वे कदाचित जीवन भर याद रक्खेंगी। गनीमत यह रही और डी. कूड और उनकी स्त्री, दोनों के भाग्य अच्छे थे कि उस घटना में तुम रहे अगर तुम्हारे बदले और कोई आदमी उस स्थान पर रहता तो आफत हो जाती।

"एक बात और है। तुमने अच्छा किया जो ओल्गा से प्रेम बढ़ाने की इच्छा न की। अगर तुम ऐसा करते, तो तुम दोनों ही का कहीं ठिकाना न लगता!

"काउन्टेस कह रही थीं—और उन्होंने तुम्हें भी खबर कर देने को कहा है—कि निकोलस रोकफ़ फ्रांस से चला गया है। उन्होंने बीस हजार रुपया इस शर्त पर उसे दिया है कि वह फ्रांस से चला जाय और पुनः फिर कभी वहां न आवे। वह धमकी दे रहा था कि वह जब भी तुम्हें देखेगा, मार डालेगा। वे नहीं चाहती थीं कि तुम्हारा और उसका सामना हो, या उसकी जान तुम्हारे हाथ से जाय इस लिये उन्होंने जल्दी जल्दी वहां से उसे हटा दिया। वे अब तक तुमसे

बड़ा प्रेम करती हैं, और चाहे काउन्ट बेचारे अपने मन में जो भी खयाल करें उनके सामने ही उन्होंने ऐसा कह भी दिया ! उन्हें पूर्ण निश्चय है कि तुम्हारा और रोकफ का जब सामना होगा, तो अवश्य उसकी जान जायगी, और तब व्यर्थ तुम्हारे सिर कलंक लगेगा। काउन्ट की भी यही राय थी, कि अब की रोकफ फिर तुम्हारे साथ कोई बदमाशी करेगा तो फिर बचेगा नहीं। वे तो कह रहे थे कि अगर पचास रोकफ इकट्ठे हो के भी तुम्हें मारने की कोशिश करें तो मार न सकेंगे। वे तुम्हारी बहादुरी और ताकत की बड़ी प्रशंसा कर रहे थे।

"यहां लौट के अपने जहाज में ड्यूटी पर आ गया हूं। दो रोज में उसी पर हैवर की तरफ रवाना हो जाऊंगा। वहां कुछ काम है। अगर तुम जहाज के पते से पत्र का उत्तर दोगे तो वह मुझे मिल जायगा। समय मिलने पर पुनः स्वयं तुम्हें लिखूंगा।

तुम्हारा दोस्त

पाल डी. आरनट"

टार्जन धीरे से बोल उठे, "ओल्गा ने अपना बीस हजार रुपया व्यर्थ ही पानी में फेंका।" वे एक बार पत्र के उस हिस्से को पुनः पढ़ गये जिसमें डी. आरनट ने जेन पोर्टर के कहे हुये कुछ शब्द लिखे थे। पढ़ के टार्जन को एक तरह की दुःख मिश्रित प्रसन्नता हुई। उनके उदास दिल के लिये यही बहुत था।

बाद के तीन सप्ताह फिर कोई नई बात न हुई। वह अरब बराबर दिखाई देता था, और एक बार लेफ्टेनेन्ट जरनोइस से बातें करते

भी टार्जन ने उसे पाया। पर उसके रहने के स्थान का वे पता न लगा सके, यद्यपि इसके लिये उन्होंने बहुत उद्योग किया।

अरनोइस का बर्ताव टार्जन के प्रति पहिले ही से कुछ रूखा था, पर लामेल की उस खाने के कमरे की घटना के बाद से उसका असंतोष कुछ और बढ़ गया था, और अब उसका टार्जन के प्रति बर्ताव एक तरह से दुश्मनी का था।

बाऊ-सादा आने का कारण लोगों से टार्जन ने यही बताया था कि वे शिकार खेलना चाहते हैं। जिसमें लोगों को किसी प्रकार का शक न हो, इससे वे अपना बहुत सा समय बाऊ-सादा के आस पास शिकार की खोज में घूमने में बिताते थे। वे कई कई रोज पहाड़ों की तराइयों में घूमते रहते थे। लोग यही समझते होंगे कि वे नील गाय का शिकार कर रहे हैं, क्योंकि ये सुन्दर जानवर उस ओर बहुतायत से पाये जाते थे—पर टार्जन भूल के भी कभी उन्हें न मारते थे। उनका दिल न होता था कि ईश्वर ने जिस जानवर को इतना सुन्दर बनाया है और जिसे अपने बचाव का कोई भी साधन न दिया है—उसे वे केवल हत्या करने की लालच से मार डालें। कई मौकों पर वे पास भी आये तो टार्जन ने उन्हें निकल जाने दिया और अपनी बन्दूक तक हाथ में न उठाई।

सच पूछा जाय तो टार्जन को 'मारने' में कोई प्रसन्नता न होती थी, न कभी उन्होंने आज तक केवल अपने दिलबहलाव के लिये किसी को मारा ही था। वे बराबर की, मुकाबले की लड़ाई को पसन्द करते थे, उसमें जो प्रसन्नता मिलती थी, उसमें जीत होने से

जो खुशी होती थी—वे उसे चाहते थे। वे शिकार तभी करेंगे जब उन्हें भूख होगी या खाने की इच्छा होगी, ऐसी चीज़ का शिकार करेंगे, या करने का उद्योग करेंगे जिसमें उन्हीं के बराबर बल और बुद्धि हो। अपने बल और अपनी बुद्धि से वे दूसरे के बल और बुद्धि को जीतने का उद्योग करेंगे, उसमें जीत जायंगे तो उन्हें प्रसन्नता होगी और वे उस चीज़ से अपना पेट भरेंगे। इसमें कोई मजा न था कि घर से पेट भर के आये और जंगल में आके बेचारे हरिन, या सीधी साधी नील गाय को गोली से मार डाला, यह तो अपने एक भाई की हत्या करने के समान या उससे भी बढ़ के हुआ! नहीं टार्जन कभी ऐसा न चाहते थे, और इसी से वे अकेले शिकार खेलने निकलते थे, जिसमें उनके भेद को कोई जान न सके और कोई उन पर शक न करे।

वे अकेले रहते थे इससे एक बार उनकी जान जाते जाते बच गई! वे एक छोटी सी घाटी में से जा रहे थे कि यकायक पीछे से पास ही में बन्दूक की आवाज आई और गोली उनके कार्क के टोप को छेदती हुई पार निकल गई। वे तुरत घूमे और सारी घाटी का उन्होंने चक्कर लगा डाला, पर कोई दुश्मन न दिखाई दिया। वे खोजते हुए बाऊ-सादा तक लौटे पर किसी आदमी पर नजर न पड़ी।

वे मन ही मन बोले, "देखो मैं ठीक कहता था, ओल्गा ने अपना बीस हजार रुपया व्यर्थ पानी में फेंका।"

उस रात उन्हें भोजन करने का न्योता मिला और वे कैप्टेन जेरर्ड के यहां गये।

कैप्टेन ने खाते हुए उनसे पूछा, "आपको यहां शिकार में शायद आनन्द नहीं आया!"

टार्जन ने जवाब दिया, "नहीं, यहां के जानवर बड़े डरपोक हैं, आहट पाते ही भाग जाते हैं। दूसरे मैं चिड़ियों या बारहसिंघों का शिकार करना भी नहीं चाहता। मेरा विचार है मैं दक्षिण जाऊं और वहां आपके अल्जीरियन शेरों पर भाग्य आजमाऊं।"

कैप्टेन जेरर्ड प्रसन्नता से बोले, "ठीक है, आपने अच्छा सोचा। कल सुबह हम लोग डी. जेलफा जा रहे हैं। आप हमारे साथ चलें तो कम से कम वहां तक साथ हो जायगा। दक्षिण में एक जगह डाकू बड़ा उपद्रव मचा रहे हैं, सो मुझे और लेफ्टेनेन्ट जरनोइस को हुक्म मिला है कि सौ आदमियों को साथ लेकर उधर रवाना हो जाऊं। अगर मौका मिला तो मैं भी आपके साथ शेर के शिकार में शामिल हो जाऊंगा, बशर्ते कि आप कल चलें। क्यों, क्या राय है?"

टार्जन मन ही मन प्रसन्न हुये और उन्होंने तत्परता से इस साथ चलने के निमन्त्रण को स्वीकार किया। अगर कैप्टेन को यह मालूम होता कि संग चलने में टार्जन का असल अभिप्राय क्या है, तो अवश्य ही उन्हें आश्चर्य होता। जरनोइस टार्जन के सामने ही बैठा था। अपने कैप्टेन के इस निमन्त्रण से वह उतना प्रसन्न न जान पड़ा।

कैप्टेन जेरर्ड बोले, "हरिन मारने की अपेक्षा शेर मारना आप को ज्यादा दिलचस्प और ज्यादा खतरनाक मालूम होगा।"

टार्जन ने जवाब दिया, "अगर कोई अकेले हरिन के शिकार को जाय, तो उसमें भी खतरे हैं, जैसा कि मुझे आज मालूम हुआ। मैंने देखा कि बेचारा हरिन सीधा जितना भी हो, डरे जितना भी, पर वह बुजदिल या धोखेबाज नहीं होता!"

यह कह के टार्जन ने एक छिपी निगाह जर्नोइस पर डाली। वे प्रगट रूप से इस बात को जाहिर नहीं करना चाहते थे कि उन्हें उस पर किसी तरह का शक है या वे उस पर निगाह रक्खे हुये हैं। पर उस बात का असर उस पर देख वे समझ गये कि इधर हाल की घटनाओं से इसका कुछ न कुछ सम्बन्ध जरूर है, या यह उनकी जानकारी जरूर रखता है। बात सुनते ही उसके चेहरे पर एक हलका लाल रंग दौड़ गया। टार्जन ने तुरत बात का सिलसिला बदल दिया और दूसरे विषयों पर बातें करने लगे।

दूसरे रोज प्रातः काल जब सिपाहियों का दस्ता बाऊ-सादा से दक्खिन की ओर रवाना हुआ तो टार्जन ने देखा कि साथ साथ पीछे पीछे छः अरब घोड़े पर चढ़े चले आ रहे हैं।

टार्जन के पूछने पर जेरार्ड बोले, "इनसे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है। ये केवल साथ के लिये हमारे संग हो लिये हैं।"

अल्जीरिया आने के बाद से टार्जन को अरबों की चालचलन के बारे में बहुत कुछ जानकारी हो गई थी, और वे अच्छी तरह जानते और समझते थे कि यहां के बाशिन्दे अनजान आदमियों का संग पसन्द नहीं करते, खास करके फ्रांसीसी सिपाहियों से तो उन्हें एक तरह की नफरत रहती है। फिर ये क्यों संग आ रहे हैं! अवश्य ही

इनका कोई मतलब है। इनपर निगाह रखनी चाहिये और यह समझने की कोशिश करनी चाहिये कि इनका असल मतलब क्या है। टार्जन उनकी सूरत अच्छी तरह न देख सके। वे सिपाहियों के करीब करीब चौथाई मील पीछे आ रहे थे और आराम के लिये इन लोगों के ठहरने पर भी और पास न आते थे।

टार्जन इस बात को समझ रहे थे कि उनके पीछे कुछ हत्यारे लगे हुये हैं जो उनका खून कर डालना चाहते हैं। वे अपने किसी मतलब से ऐसा नहीं करना चाहते बल्कि किसी दूसरे के नियुक्त किये हुये हैं, यह भी उन्हें मालूम था। उन्हें शक था कि इन फसादों की जड़ में जरूर रोकफ है। वह अब क्यों पीछे लगा है, क्या वह पीछे की कार्रवाइयों और बेइज्जतियों का बदला लेना चाहता है, या वह इसलिये दुश्मन बना है कि वे जरनोइस पर निगाह रक्खे हैं, इसका निश्चय टार्जन न कर सके। उन्हें यह शक अवश्य था कि जरनोइस के मामले में उसका कुछ संबंध है। अगर ऐसा होगा तो उन्हें दो ताकतवर और बड़े ही काइयें दुश्मनों से लड़ना पड़ेगा। अल्जीरिया के जंगलों में, जहां कि वे जा रहे हैं, यह बिलकुल सहज बात होगी कि किसी पर अगर दुश्मन होने का संदेह हो तो उसे मार के खपा दिया जाय और पता भी न लगे। उनके दुश्मन इस बात को समझते होंगे यह टार्जन जानते थे।

डी-जेल्फा में दो दिन ठहर कर सिपाहियों का दस्ता दक्षिण पश्चिम की तरफ बढ़ा। समाचार पाया गया था कि उधर ही पहाड़ की तराई में डाकू लोग कसबों को लूट रहे हैं।

जिस रात को सिपाहियों को हुक्म दिया गया था कि सबेरे यहां से रवाना होना पड़ेगा, उसी रात से वे अरब, जो बाऊ-सादा से पीछे पीछे साथ आये थे, गायब हो गये थे। टार्जन ने मामूली तौर पर सिपाहियों में कुछ पूछ पाछ भी की, पर कोई न बता सका कि वे कब चले गये, या किधर गये। टार्जन को इससे कुछ शक हुआ, उन्हें ध्यान आया कि रात को सिपाहियों को जब कैप्टेन ज़ेरर्ड ने हुक्म सुनाया, उससे आध घंटे बाद उन्होंने जरनोइस को उनमें से एक अरब के साथ बातें करते देखा था। केवल टार्जन और जरनोइस ही यह जानते थे कि जाना कहां होगा, बाकी सिपाहियों को केवल यही बताया गया था कि सबेरे कैंप टूटेगा, किधर कूच होगा यह उनमें से किसी को भी मालूम न था। तो क्या जरनोइस और उस अरब की बातचीत से यह समझना चाहिये कि जरनोइस ने उसे अपने जाने का स्थान बता दिया और उसके साथी पता पा अपनी किसी शैतानी की धुन में लग गये!

उस रोज, संध्या होने के कुछ पहिले, सिपाहियों ने एक ओसिस में डेरा डाला। वहीं पर एक शेख रहता था जिसके जानवर चुराये जा रहे थे और जिसके नौकर डाकुओं के हाथ से मारे जा रहे थे। सिपाहियों को देख के अरब लोग अपने खेमों से निकल आये और अपनी भाषा में उनसे तरह तरह के सवाल करने लगे। टार्जन को ये बातें समझने में कठिनता न होती थी, क्योंकि ये सिपाही भी अरब थे, और अपनी अरब भाषा में ही सवालों का जवाब देते थे। अब्दुल के साथ की वजह से टार्जन अब इस भाषा को प्रायः अच्छी तरह जानने लगे थे।

शेख जब कैप्टेन जेरर्ड से मिलने आया तो उसके साथ के एक आदमी से टार्जन ने पूछा, "क्या तुमने छः अरब घोड़सवारों को इधर से कहीं जाते देखा है?"

वह आदमी बोला, "नहीं, इधर से तो कोई घोड़सवार नहीं गये हैं। शायद डी-जेल्फा से दूसरा रास्ता पकड़ कर वे किसी दूसरे ओसिस में चले गये हों, क्यों कि यहां चारों तरफ पचासों ओसिस हैं जहां अरबों के गांव हैं। या हो सकता है कि वे डाकुओं के आदमी हों जो ऊपर पहाड़ पर रहते हैं। अकसर वे पांच पांच सात सात के झुण्ड में बाऊ-सादा जाया करते हैं, और कभी कभी लामेल और बुगा तक पहुंच जाते हैं। शायद आपने जिनको देखा वे डाकुओं में से ही थे, घूम के लौट रहे होंगे, डी-जेल्फा तक आप के साथ आये होंगे और बाद में फिर अपने साथियों के पास चले गये होंगे।"

दूसरे रोज सुबह कैप्टेन जेरर्ड ने अपने सिपाहियों को दो भागों में बांट दिया। आधे उन्होंने अपने आधीन रक्खे और आधे जरनोइस के सपुर्द कर दिये। उनका विचार था कि दोनों दल अलग अलग मैदान के दोनों तरफ के पहाड़ों का चक्कर लगावें। बाद में उन्होंने टार्जन से पूछा, "और आप ने किस दल के साथ रहने का विचार किया है, क्या यह बतावेंगे। या शायद आप डाकुओं का शिकार करने के प्रेमी न हों।"

टार्जन बोले, "नहीं, नहीं, मैं सभी तरह का शिकार पसंद करता हूं, पर ....।"

टार्जन क्षण भर के लिये रुके और सोचने लगे कि वे कौन सा बहाना निकालें जिससे उन्हें जरनोइस के साथ रहने का मौका मिले, पर उन्हें ज्यादा सोचना न पड़ा। जरनोइस स्वयं ही यकायक बोल उठा —

"अगर मेरे कप्तान साहब अबकी दफे के लिये मानश्यूर टार्जन का साथ छोड़ना स्वीकार करें तो मैं बड़ी प्रसन्नता से उन्हें अपने साथ ले लूं। मैं जरा देखूं कि वे शिकार खेलने में क्या सचमुच उतने ही होशियार हैं जितना लोग उन्हें कहते हैं।"

जरनोइस बड़े मुलायम और मीठे ढंग से बोला था, इतनी नरमी से बोला था, कि टार्जन ने सोचा कि इसने अब की बनावट की हद कर दी। पर उन्हें ताज्जुब भी कुछ कम न हुआ। वे यह समझने की चेष्टा करने लगे कि जरनोइस मुझे साथ क्यों ले जाना चाहता है। उन्होंने तुरत ही धन्यवाद देते हुये जरनोइस के साथ चलने के निमंत्रण को स्वीकार किया।

साथ साथ घोड़ों पर चढ़े हुये लेफ्टेनेंट जरनोइस और टार्जन सिपाहियों के आगे आगे पहाड़ों की तरफ रवाना हुये। जरनोइस की नम्रता थोड़ी ही देर के लिये थी। जैसे ही वह कैप्टेन जेरर्ड और उनके सिपाहियों की दृष्टि से बाहर हुआ, उसका टार्जन के प्रति बर्ताव फिर वैसा ही रूखा और दुश्मनी का हो गया। जैसे जैसे वे आगे बढ़ते गये जमीन ऊंची और ऊबड़ खाबड़ होती गई और दोपहर के करीब एक दर्रे में से हो कर वे लोग पहाड़ों के बीच में घुसे। एक छोटी पहाड़ी नदी के किनारे पहुंच कर जरनोइस ने

अपने साथियों को रोका, और वे वहीं ठहर कर जल्दी जल्दी अपने खाने पीने का प्रबंध करने लगे।

एक घंटे बाद, खा पी के तथा जरा सुस्ता के सिपाहियों का दस्ता फिर आगे बढ़ा। उसी दर्रे के रास्ते आगे बढ़ते हुये थोड़ी देर बाद वे एक घाटी में पहुंचे, जहां से चारों तरफ कई दिशाओं में रास्ता फूटा हुआ दिखाई दे रहा था। यहां जरनोइस रुक गया और गौर के साथ चारों तरफ देखने लगा।

क्षण भर बाद वह बोला, "यहां सब लोग कई दलों में बंट जायंगे और प्रत्येक दल अलग अलग रास्तों में घुसेगा।" वह अपने आदमियों को छांट के अलग करने लगा और हर एक फ़रद को उसने एक एक मातहत अफसर के सपुर्द कर दिया। फिर वह टार्जन से बोला, "मानश्यूर टार्जन हम लोगों के लौट के आने तक कृपा कर इसी स्थान पर रुकेंगे।"

टार्जन इस बात को अस्वीकार करने लगे, पर वह बोला, "ये जो दल अलग अलग गये हैं, उनमें न जाने किसको दुश्मन का सामना करना पड़ जाय। उस हालत में अगर न लड़ने वाला कोई आदमी उनके साथ होगा तो उन्हें अपने काम में असुविधा होगी।"

टार्जन बोले, "पर लेफ्टनेंट, मैं तो लड़ने के लिये तैयार हूं। आप जिस सार्जेंट या कारपोरल के आधीन चाहे मुझे कर दीजिये, या अपने साथ रखिये। आप जिस तरह हुक्म दीजिये मैं लड़ूंगा। मैं इसीलिये तो आपके साथ आया ही हूं।"

जरनोइस कड़ी आवाज में बोला, "सो मुझे न समझाइये।

आप मेरे आधीन हैं और जो हुक्म मैं दूंगा वह आपको मानना होगा। बस, मैं ज्यादा बात करना नहीं चाहता।" इतना कह के उसने अपने घोड़े का मुंह घुमा दिया और आगे बढ़ गया। क्षण भर बाद टार्जन ने सुनसान, भयानक पहाड़ी घाटी के बीच में अपने को अकेला पाया।

धूप तेज थी इससे टार्जन बगल हट कर एक पेड़ की आड़ में हो गये। घोड़े को लगाम के सहारे उन्होंने पेड़ के साथ बांध दिया और पत्थर के एक ढोंके पर बैठ सिगार पीने लगे। जरनोइस पर उन्हें बड़ा क्रोध आ रहा था, उसने इस तरह उन्हें धोखा क्यों दिया यह उनकी समझ में न आ रहा था। क्या वह जरा सा तंग करके अपना बदला लिया चाहता था! नहीं, यह बात टार्जन के ध्यान में न जमती थी। जरनोइस इतना बेवकूफ न होगा कि जरा सी बात वास्ते उनको दुश्मन बना के उनसे खुल्लमखुल्ला बैर खरीदे। तो फिर उसका मतलब क्या था। जरूर कोई गहरी बात होगी, जो अभी समझ में नहीं आ रही है। उन्होंने उठ कर जीन में बंधी अपनी राइफल खोली और उसे देखा, भरी हुई थी! अपनी पिस्तौल देखी, उसमें भी पूरी गोलियें थीं! उन्होंने चारो तरफ की पहाड़ की चोटियों पर निगाह डाली और पहाड़ों में गये हुये कई रास्तों पर भी गौर किया! वे पूरे होशियार रहना चाहते थे, यह नहीं चाहते थे कि वे बेखबर रहें और कोई दुश्मन उन पर हमला कर बैठे।

सूर्यदेव नीचे धंसते गये, पर सिपाहियों का कोई पता न था। धीरे धीरे अन्धकार हो गया और पूरी घाटी उसमें छिपने लगी।

टार्जन का आत्मसम्मान उन्हें इजाजत न देता था कि वे बिना सिपाहियों को लौट के आने का पूरा समय दिये उस जगह को छोड़ के चले जायं, क्योंकि निश्चय के अनुसार उन्हें लौट के यहीं आना चाहिये था। रात के आने से वे अपने को कुछ हिफाजत में समझने लगे, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि कोई कितनी ही सावधानी से उनके पास तक क्यों न आवे, उसके आने की आहट उनके तेज और अनुभवी कानों में जाने से बच नहीं सकती। फिर उनकी आंखें—वे रात में भी बड़ी अच्छी तरह देख सकती थीं, और उनकी नाक, वे अच्छी तरह जानते और समझते थे कि जिधर से हवा आ रही है, उधर से कोई दुश्मन आवेगा तो जब वह काफी दूर रहेगा तभी वे उसकी खबर पा जायंगे और होशियार हो जायंगे।

यही कारण था कि रात के आने से उन्होंने अपने को हिफाजत में समझा और किसी तरह का खतरा पास में न समझ उन्होंने अपनी आंखें बन्द कर लीं और पेड़ का ढासना लगा कर बैठ गये।

वे कितनी देर आंखें बन्द किये बैठे रहे और फिर कब सो गये, यह उन्हें कुछ भी पता नहीं, पर वे सोये रहे होंगे कई घंटों तक, क्योंकि जब घोड़े के उछलने कूदने और डर से हिनहिनाने से यकायक उनकी नींद टूट गई तो उन्होंने देखा कि चन्द्रदेव अच्छी तरह आकाश में आये हुये हैं और तमाम घाटी रुपहले रंग से रंगी हुई है, और उनसे दस कदम पर, बल्कि उससे भी कम फासले पर, वह चीज खड़ी है जो उनके घोड़े के डर का कारण थी।

शान के साथ, इस ढंग से जैसे कि वह अच्छी तरह समझता थो कि मैं जंगल का राजा हूं, अपनी सुन्दर दुम को ऊंची किये हुये और हिलाते हुये, अपनी दोनों अंगारे की तरह की आंखों को शिकार पर जमाये हुये, न्यूमा एल एड्रिया—काला शेर खड़ा था! टार्जन की नसों में प्रसन्नता की बिजली सी दौड़ गई। उन्हें ज्ञान पड़ा जैसे अपने किसी बड़े पुराने दोस्त को, बहुत दिनों से बिछुड़े हुये साथी को—यकायक वे आज देख रहे हों! क्षण भर तक वे चुपचाप बैठे रहे, उनका मन न हुआ कि इस सुन्दर जानवर पर से, वे अपनी आंखें हटावें!

लेकिन अब वह जमीन के साथ पेट को सटाये हुये उछलने के लिये तैयार ही था! टार्जन ने धीरे धीरे बन्दूक अपने कन्धे तक उठाई। उन्होंने आज तक, जीवन में अभी तक किसी बड़े जानवर को मारने के लिये बन्दूक से काम न लिया था। अभी तक वे बरछे, जहरीले तीर, अपने रस्से, छुरे या हाथों पर ही अपने बचाव के लिये भरोसा रखते थे, उन्हें खयाल हुआ कि अगर इस समय उनके पास जहरीले तीर या छुरा होता तो कितना अच्छा होता, फिर वे कितने ज्यादा विश्वास के साथ दुश्मन का मुकाबला करते!

शेर बिल्कुल पेट के बल जमीन पर लेटा हुआ था, और उसका सर टार्जन के ठीक सामने था। टार्जन ने सोचा कि अगर इसे एक बगल हट के गोली मारी जायगी तो ज्यादा अच्छा होगा। सामने से मारी गोली कातिल घाव करेगी, यह उन्हें कम आशा थी, और अगर गोली लगने के साथ ही वह तुरत न मर गया, दो मिनट या

एक मिनट भी जीता रह गया, तो फिर यह ऐसे भयानक रूप से आक्रमण करेगा कि उसका सम्हालना कठिन हो जायगा। घोड़ा टार्जन के पीछे खड़ा कांप रहा था। टार्जन ने सामने के दुश्मन पर निगाह जमाये हुये होशियारी से एक कदम बगल में हटाया! शेर ज्यों का त्यों रहा, टार्जन दूसरा कदम हटे, शेर फिर भी न हिला, केवल उसकी आखें घूम गईं, तीसरा कदम हट के टार्जन ऐसी जगह आ गये जहां से वे शेर के कान और आंख के बीच में गोली मार सकते थे। उन्होंने बंदूक उठाई और निशाना साधा।

क्षण भरके लिये उनकी उंगली घोड़े पर रुकी, केवल क्षण भर के ही लिये, और जैसे ही उन्होंने उसे दबाया और बंदूक छूटी, शेर उछला। उसी समय डरे हुये घोड़े ने अपने बंधन से छुटकारा पाने के लिये जोर की एक उछाल मारी, लगाम टूट गई जिसके सहारे वह पेड़ के साथ बंधा हुआ था, और उछलता और कूदता हुआ वह घाटी के मुंह रेगिस्तान की तरफ भागा।

कोई भी साधारण आदमी उन भयानक पंजों की चोट से बच नहीं सकता था। शेर इतने नजदीक से उछला था कि उसकी मार को बचा जाना मुश्किल ही नहीं असंभव था लेकिन टार्जन साधारण आदमियों की श्रेणी में नहीं रक्खे जा सकते थे। अपने छोटेपन से ही जैसा भयानक और संकटपूर्ण जीवन वे व्यतीत करते आ रहे थे, उसने उन्हें सोचने के साथ ही काम करना सिखा दिया था, उनके शरीर को इतना फुर्तीला बना दिया था, उनके मस्तिष्क को इतना अभ्यस्त कर दिया था, कि वे मौका पड़ते ही तुरत ही अपना कर्तव्य

निश्चत कर लेते थे, और निश्चय करने के साथ ही उसे पूरा कर डालते थे। शेर था तो फुर्तीला, लेकिन उससे भी फुर्तीले टार्जन थे। जहां शेर समझता था कि मनुष्य शरीर का मुलायम मांस मिलेगा, वहां उसे मिला एक पेड़ का तना, टार्जन बिजली की तरह की तेजी से चार कदम दाहिने हट गये, और उन्होंने वहां खड़े होके एक दूसरी गोली और शेर को मारी। इसे खा के दहाड़ता और गुर्राता हुआ शेर जमीन पर आ रहा।

टार्जन ने दो गोलियें और शेर पर चलाईं और उनके लगने बाद फिर वह एक दम शान्त हो गया। उसका गुर्राना और उछलना बन्द हो गया। उसे मार के फिर टार्जन पहिले के मानश्यूर जीन टार्जन न रहे, सभ्य सज्जन से बदल कर वे 'एप' बन्दर हो गये, यकायक उनमें भयानक परिवर्तन हो गया। उन्होंने अपना एक पैर शेर पर रक्खा और जिस तरह 'एप' बन्दर कोई शिकार कर के अपनी भारी और भयावनी आवाज से उसकी घोषणा करते हैं, उन्होंने भी चन्द्रमा की तरफ सिर उठा के अपने गले से कलेजे को कंपा देने वाली डरावनी आवाज निकाली। चारो तरफ पहाड़ों पर घूमने वाले जंगली जानवर उसे सुन स्तब्ध होके खड़े हो गये, उन्हें ताज्जुब होने लगा कि कौन उनका नया दुश्मन उनके पड़ोस में आ गया। नीचे रेगिस्तान में रहने वाले अरबों के कान में जब यह आवाज गई, वे अपने खेमों से बाहर निकल आये और आश्चर्य और डर से गर्दन टेढ़ी कर कर के पहाड़ों की तरफ देखने लगे। उनके समझ में न आता था कि यह कौन नई बला यहां आ गई जिसकी इतनी डरावनी

आवाज है। आज तक उन्होंने ऐसी विचित्र आवाज न सुनी थी।

टार्जन जिस घाटी में खड़े थे उससे लगभग आधी मील दूर, बीस अरब लंबी लंबी बन्दूकें लिये और सफेद कपड़ों से अपने अपने चेहरे और बदन ढांके उसी तरफ जा रहे थे। आवाज सुन वे भी खड़े हो गये, एक ने दूसरे की तरफ सवाल की निगाह डाली, क्षण भर रुके रहे, और जब फिर वैसी आवाज न सुनी तो वे आगे बढ़े।

टार्जन को अब निश्चय हो गया था कि जानोइस लौट के न आवेगा, लेकिन उनकी समझ में न आ रहा था कि उन्हें इस सुनसान स्थान में छोड़ के जाने से उसका अभिप्राय क्या था, जब कि वह अच्छी तरह जानता होगा कि ये जब चाहें लौट के अपने स्थान पर जा सकते हैं। उनका घोड़ा भाग ही गया था, इससे उनके खयाल में अब इस स्थान में रहना वेवकूफी थी। चारो तरफ एक निगाह डाल वे घाटी के मुहाने की तरफ रवाना हुये।

टार्जन घाटी के मुहाने से कुछ दूर ही होंगे जब कि घाटी के दूसरे सिरे पर सफेदपोश अरबों ने अपना कदम रक्खा। पल भर तक रुक कर उन्होंने सामने के मैदान को अच्छी तरह देखा, और जब उन्होंने समझ लिया कि यहां कोई नहीं है तो वे आगे बढ़े। सौ कदम जा के एक पेड़ के नीचे उन्होंने मरे हुये काले शेर को देखा। ताज्जुब से घबड़ाये हुये वे उसके चारो तरफ इकट्ठे हो गये और आश्चर्य भरी निगाहों से उसे देखने लगे। पर वे वहां ज्यादा रुके

नहीं। उन्होंने आपुस में कुछ सलाह की और तब कदम दबाते हुये तेजी से उस तरफ बढ़े जिधर उनके थोड़ी दूर आगे टार्जन जा रहे थे। बीच बीच में वे थोड़ी थोड़ी दूर पर रुकते थे, आहट लेते थे और फिर ढोकों की आड़ में छिपते हुये आगे बढ़ते थे।

दसवां बयान

विपद की घाटी

टार्जन जब आराम के साथ धीरे धीरे कदम रखते हुये पूर्णिमा के चांद की रुपहली रोशनी में घाटी के मुहाने की तरफ बढ़े, तो चारो तरफ के सुहावने जंगल और उस समय की ठंडी हवा ने उनके हृदय को आनंद से भर दिया। उनके दिल में फिर जंगल का प्रेम पैदा होने लगा और वे मानश्यूर टार्जन से बदल कर 'जंगल के राजा' टार्जन बन गये। वे जा तो रहे थे बड़ी लापरवाही से पर उनकी

प्रत्येक स्नायविक-शक्ति चैतन्य थी और पूर्ण रूप से वे सतर्क और होशियार थे। चारो तरफ की हलकी से हलकी आवाज भी उनके कान में जाती थी, और वे किसी जंगली दुश्मन के अचानक हमले का सामना करने को पूरी तरह से तैयार थे।

पहाड़ की रात के समय की आवाजें उनके लिये एक तरह से नई थीं, पर उनमें से बहुतेरी उनके हृदय में किसी बीते हुये जमाने की पुरानी स्मृति को जगा देती थीं। बहुतेरी आवाजों को वे पहिचान सकते थे। यह, यह भी पहिचानी हुई आवाज है, चीता खांस रहा है, और इधर यह भेड़िये के गुर्राने की आवाज है!

यकायक एक नई आवाज उनके कान में गई। एक मुलायम धीमी आवाज, जो चारो तरफ की और आवाजों से स्पष्ट हो के बिल्कुल ही दूसरे ही तरह की मालूम होती थी। दूसरे कान इस आवाज को सुन नहीं सकते थे, न वे यही समझ सकते थे कि यह आवाज कैसी है, पर टार्जन ने तुरत ही पहिचान लिया कि यह बहुत से आदमियों के धीमे कदम नंगे पैर चलने की आवाज है। वे उनके पीछे से आ रहे हैं, शायद उनके दुश्मन हैं।

तुरत ही बिजली की तरह यह बात उनके दिमाग में दौड़ गई कि जरनोइस इस सुनसान जंगल में उन्हें अकेला क्यों छोड़ गया था। वे सब बातें समझ गये, और साथ ही यह भी समझ गये कि किये हुये प्रबंध में कुछ गड़बड़ी हो गई! ये आदमी आये तो, पर देर करके आये। पीछे से आनेवाली आहट पास होती गई और बन्दूक हाथ में लिये हुये टार्जन घूम कर खड़े हो गये और उनकी

राह देखने लगे। यकायक उनकी निगाह सफेद पगड़ी और सफेद अंगों पर पड़ी, वे पहिचान गये कि ये अरब हैं। उन्होंने जोर से पुकार के पूछा, "तुम लोग मुझसे क्या चाहते हो?" उधर से जवाब में एक बंदूक की आवाज आई, और उसके साथ ही टार्जन मुंह के बल ज़मीन पर गिर पड़े।

टार्जन के गिरते ही अरब दौड़ के उनके पास नहीं आ गये, वे कुछ देर इस आसरे रुके रहे कि देखें ये चोट खाके भी उठते तो नहीं। जब वे न उठे तो वे लोग पास आ पहुंचे। उन्होंने झुक के टार्जन को जांचा और शीघ्र ही समझ गये कि ये मरे नहीं हैं। एक ने अपनी बन्दूक उनके सिर के साथ लगाई और चाहा कि उन्हें खतम कर दें, पर दूसरे ने रोक के कहा, "नहीं मारो मत, अगर हम इसे जीता ले चलेंगे तो इनाम ज्यादा मिलेगा!"

उन्होंने टार्जन के हाथ और पैर मजबूती के साथ बांध दिये और उठा कर चार आदमियों के कन्धों पर लाद दिया। इसके बाद वे सब रेगिस्तान की तरफ़ रवाना हुये। पहाड़ों से निकल के वे जब मैदान में पहुंचे तो दक्षिण की तरफ़ चले और सवेरा होते होते ऐसे स्थान पर पहुंचे जहां उनके दो साथी कई घोड़े लिये खड़े थे।

अब उनका सफ़र तेजी से होने लगा। टार्जन अब होश में आ गये थे, उनको उन्होंने एक खाली घोड़े की पीठ पर बांध दिया। गोली उनके सिर में लगी थी, पर गहरा घाव न पहुंचाती हुई और चमड़े को काटती हुई बगल से निकल गई थी। खून का निकलना

यह हमारे बीच में रहेगा इसकी वही इज्जत होगी जो एक बहादुर आदमी की होनी चाहिये।"

टार्जन जानते थे कि आर्बों में काले शेर को मारने वाले बड़ी इज्जत से देखे जाते हैं। उन्होंने अपने भाग्य को धन्यवाद दिया जिसने दया करके उन्हें ऐसे लोगों के बीच में डाला था जो कम से कम उन्हें कष्ट न देंगे, न बेइज्जती करके उनका दिल ही दुखावेंगे। थोड़ी देर बाद वे उत्तर की तरफ के एक खेमे में ले जाये गये। वहां उन्हें खाने को दिया गया, और फिर मजबूती से बांध कर वहीं वे छोड़ दिये गये।

उन्होंने देखा कि उनके कैदखाने के बाहर दरवाजे पर एक आदमी उनकी हिफाजत के लिये बैठा हुआ है। उन्होंने थोड़ा सा जोर लगा के उन रस्सों को जांचा जो उनको बांधे हुये थे, और देखा कि वे टूटते हैं या नहीं, पर थोड़ा जोर क्या, उनकी सारी ताकत भी उन चमड़े के रस्सों को न तोड़ सकी जो उनके बांधने में इस्तेमाल किये गये थे। उन्होंने समझ लिया कि बाहर दरवाजे पर आदमी बैठाना भी फजूल है। ये रस्से ही उन्हें कैद में रखने के लिये काफी हैं।

संध्या के पहिले बहुत से आदमी उस खेमे के पास आये जिसमें टार्जन पड़े थे, और उसके अन्दर घुसे। सभी अरबों की पोशाक में थे, लेकिन एक जब आगे बढ़ के टार्जन के पास आया और उसने वह चादर अलग कर दी जो उसके शरीर और उसके मुंह के निचले हिस्से को ढांके हुई थी तो टार्जन ने देखा कि यह निकोलस रोकफ की बदसूरत शकल है। उसके होंठों पर हलकी हंसी थी।

उसने आते ही कहा, "आह, मानश्यूर टार्जन, आप को देख के सच मुच मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। लेकिन आप उठ के अपने मेह-मान का स्वागत क्यों नहीं करते!" इसके बाद वह दांत पीस के बोला, "उठ कुत्ते, उठता क्यों नहीं!" यह कह के अपने बूट पहिने हुये पैर से निकोलस ने एक लात टार्जन की पसली में मारी और इसके बाद "एक, दो, तीन" गिनता हुआ वह उनके मुंह छाती और पेट में लातें मारने लगा। वह बोला, "जितनी बुराइयें तुमने मेरे साथ की हैं, सब के लिये एक एक लात है!"

टार्जन ने कोई जवाब न दिया। पहिली बार जब निगाह डालते ही उन्होंने देख लिया कि यह निकोलस है तो इसके बाद उन्होंने फिर आंख उठा के उसके चेहरे की तरफ न देखा। आखिर शेख से रहा न गया जो पास ही खड़ा कैदी के साथ होते इस दुर्व्यवहार को देख रहा था। वह गुस्से भरी आवाज में बोला, "ठहरो, खबरदार जो तुमने एक भी लात चलाई होगी। तुम इसे मार डालो, पर मेरे सामने वैसी बेइज्जती न कर सकोगे जैसी अब तक करते रहे हो। मेरा मन करता है कि मैं इसके हाथ पांव खोल दूं और तब देखूं। तुम इसे लात मारने की हिम्मत कैसे करते हो!"

इस धमकी ने रोकफ की ज्यादतियों को एक दम रोक दिया। वह न चाहता था कि उसके इतने नजदीक रहते टार्जन के बंधन खोले जायें या उनको कैदीपने से छुटकारा दिया जाय। वह बोला, "अच्छी बात है, मैं इसे मार ही डालता हूं!"

शेख ने कहा, "मेरे गांव के अन्दर नहीं, मेरे यहां से जब यह

जायगा तो जीता ही जायगा। बाहर रेगिस्तान में तुम जो भी इसके साथ करो, उससे मुझे सम्बन्ध नहीं, पर दूसरे आदमी के झगड़े के कारण एक फ्रांसीसी को यहां मार कर मैं उसके खून का इलजाम अपने या अपने आदमियों के ऊपर नहीं ले सकता। वे यहां सिपाहियों को भेजेंगे जो हमारे डेरे खेमे जला देंगे और हमारे मवेशियों को पकड़ ले जायंगे। नहीं, यह काम यहां नहीं हो सकता।"

रोकफ गुस्से से बोला, "अच्छा यहां न सही, मैं इसे गांव के बाहर ले जाता हूं और वहां इसे तय कर देता हूँ।"

शेख ने कड़ी आवाज में कहा, "गांव के बाहर नहीं, यहां से कम से कम एक रोज की चलाई के फासले पर तुम्हें इसको ले जाना होगा। और मैं अपने कुछ आदमी साथ भेजूंगा, जो देखेंगे कि तुम मेरी आज्ञा का उल्लंघन तो नहीं करते। अगर तुमने जरा भी गड़बड़ सड़बड़ किया, तो एक के बदले दो फ्रांसीसियों की जानें जायंगी।"

रोकफ लाचारी की मुद्रा से बोला, "तो फिर मैं कल सवेरे जाऊंगा। इस वक्त तो रात हो रही है।"

शेख बोला, "जैसी तुम्हारी इच्छा हो, लेकिन सवेरा होने के साथ ही चले जाना होगा। मुझे तुम्हारी जात वालों से तो नफरत है ही, डरपोकों और अत्याचारियों से मैं और घृणा करता हूं।"

रोकफ कुछ कड़ा जवाब दिये होता, पर कुछ समझ के वह रुक गया। वह जानता था कि जरा सा बहाना पाते ही यह बुड्ढा उसी पर घूम जायगा और फिर उसे तरद्दुद में पड़ना होगा। दोनों दर्वाजे की तरफ बढ़े। जाने के पहिले टार्जन की तरफ घूम के रोकफ बोला,

"अच्छी तरह सोना, मानस्यूर, और ईश्वर से अन्तिम प्रार्थना कर लेना भी न भूलना। कल जब तुम मरोगे तो ऐसे कष्ट से कि तुम्हें उस समय ईश्वर भी न याद आवेंगे।"

दोपहर के बाद से टार्ज़न को खाना या पानी नहीं मिला था, और इस समय उन्हें प्यास की कड़ी तकलीफ थी। उन्होंने चाहा कि दरवाजे पर बैठे पहरेदार से कह के थोड़ा पानी मंगवावें। पर जब दो तीन बार पुकारने पर भी उसने कोई उत्तर न दिया तो वे चुप हो रहे और उधर से कोई मदद पाने की बिल्कुल आशा फिर उन्होंने छोड़ दी।

खूब दूर ऊँचे पहाड़ पर से शेर के गरजने की आवाज आई! वे सोचने लगे, मनुष्यों के बीच में रहने की अपेक्षा जंगली जानवरों के बीच में रह के मनुष्य कितना बेफिक्र, कितना सुरक्षित रहता है। अपने तमाम जीवन में जब तक वे जंगल के बाशिन्दे बने रहे तब तक, कभी भी वे उतने सताये नहीं गये जितने इधर कुछ महीनों से सभ्य मनुष्य समाज के बीच में रह के वे तंग किये गये और सताये गये। कभी भी वे मौत के उतने नजदीक नहीं हुये थे जितने वे इस समय थे!

शेर फिर गरजा! इस समय मालूम हुआ कि वह और नजदीक आ गया है। उनकी इच्छा हुई कि स्वयं भी अपने जाति वालों की आवाज में उस गरज का जवाब दें। लेकिन अपनी जाति? अपनी जाति कौन? वे तो मनुष्य हैं! वे थोड़ी देर के लिये अपने को 'एप' बन्दरों की जाति का समझ बैठे थे। वे क्रोधित हो उठे, वे झल्ला गये, उन्होंने हाथ उमेठ के उन रस्सियों को तोड़ना चाहा जो उनकी कला-

इयों को जकड़े हुई थीं। कैसा अच्छा होता अगर थोड़ी देर के लिये उनके हाथ उनके मजबूत दांतों के पास आ जाते! तब वे देखते रस्सियाँ कितनी मजबूत हैं! लेकिन ऐसा हो तो कैसे! उनको ऐसा मालूम हुआ जैसे उनके दिमाग पर एक पागलपन का नशा सा चढ़ रहा है!

शेर बराबर गरज रहा था, और उसकी आवाज के नजदीक आते जाने से मालूम होता था कि वह पहाड़ से उतर के नीचे रेगिस्तान में अपना शिकार खोजने आ रहा है। वह कैसा भाग्यवान है, वह स्वतन्त्र है। कोई उसे बकरे की तरह बांध के उसका खून नहीं करेगा। वह जब भी मरेगा लड़के, अपनी जान को बचाने का उद्योग करके! वह हाथ पांव बांध के नहीं मारा जायगा। टार्जन मरने से नहीं डरते थे, मरने का उनको दुःख न था, उनको खेद इसी बात का था कि उनकी जान अपमान के साथ जायगी, वे बिना अपनी रक्षा के लिये लड़ने का अवसर पाये ही मरेंगे—इसी का उनको ख्याल था!

इस समय बजा के होगा? बारह से ज्यादा न होगा। अभी उनको कई घन्टे जीना है। क्या कोई तरकीब ऐसी नहीं हो सकती कि उस लम्बे सफर पर रवाना होने के बदले वे रोकफ को भी साथ लेते चलें। अब शेर बहुत नजदीक आ गया जान पड़ता है। शायद उसका इरादा यहीं पास के मवेशी वगैरह को मारने का है। शायद यहीं से वह अपना खाना संग्रह किया करता है!

बहुत देर तक सन्नाटा रहा। यकायक उनके कानों में किसी के धीरे धीरे चलने की आवाज आई। मालूम हुआ जैसे पहाड़ की तरफ से खेमे के उस हिस्से से जो पीछे की तरफ पड़ता है, कोई इसी तरफ आ

रहा है। यह कौन है, क्या शेर आ पहुंचा। वे चुपचाप इस बात की राह देखने लगे कि देखें आने वाला उनके खेमे के पास से होता हुआ किधर को जाता है। थोड़ी देर के लिये ऐसा गहरा सन्नाटा हो गया कि उन्होंने सोचा कि वे अवश्य शेर के सांस लेने की आवाज सुनेंगे जो उनके खेमे की दीवार के साथ सटा खड़ा है!

ठीक है, फिर आवाज आई, ऐसा मालूम हुआ जैसे वह जीव खेमे के और पास आ गया हो। टार्जन ने आंखें घुमा के उस तरफ देखा। गहरा अन्धकार था, ठीक क्या है वे देख न सके, पर ऐसा मालूम हुआ जैसे पिछला पर्दा हटा हो और एक काली चीज के सिर और कन्धे भीतर घुसे हों। क्षण भर के लिये पर्दा हटने पर बाहर के क्षीण तारों की हलकी रोशनी भी उनकी निगाह में पड़ी!

टार्जन के होंठों पर हलकी मुसकुराहट आई। ठीक है, जान पड़ता है रोकफ को तकलीफ न करनी पड़ेगी, भाग्य उसे धोखा देगा! उसका शिकार अब शेर का आहार बनेगा। सबेरे वह कितना उछले कूदेगा, कितना गुस्से होगा, जब वह देखेगा कि उसके सब बान्धनू शेर ने चौपट कर डाले हैं। लेकिन क्या शेर के द्वारा होने वाली मौत शैतान रशियन के हाथ की मौत की बनिस्बत ज्यादा मीठी न होगी!

खेमे का पिछला पर्दा फिर गिर गया और वहां फिर अन्धकार हो गया। जो भी चीज घुसी हो, वह अब खेमे के अन्दर है। टार्जन को मालूम हुआ जैसे धीरे धीरे वह उनकी तरफ घसकी आ रही है। धीरे धीरे वह बगल में आ गई। टार्जन ने आंखें बन्द कर लीं और भारी पंजों के अपने बदन पर गिरने की राह देखने लगे। दूसरे क्षण

उनके चेहरे पर अंधेरे में टटोलता हुआ किसी का मुलायम हाथ पड़ा और किसी युवती ने अपनी बहुत ही मीठी धीमी आवाज में उनका नाम लिया।

उन्होंने जवाब में धीरे से कहा, "हां मैं ही हूं, पर ईश्वर के वास्ते यह तो बताओ! तुम कौन हो?"

पतली आवाज में उत्तर मिला, "सिदी-आयशा की नाचने वाली!" टार्जन चुप रह गये। उन्होंने देखा कि आने वाली के मुलायम हाथ उनके बंधनों पर गये हैं और रह रह कर चाकू का ठंडा लोहा उनके बदन में सट जाता है। एक मिनट बाद उन्होंने देखा कि वे स्वतंत्र हैं।

युवती की आवाज आई, "मेरे पीछे आइये।"

घुटने और हाथों के बल चलते हुये टार्जन उसी रास्ते से खेमे के बाहर हुये जिस रास्ते वह युवती आई थी। घसक घसक कर धीरे धीरे चलती हुई युवती अपने साथ टार्जन को लिये पास की एक झाड़ी के पास पहुंची, और तब हाथ के इशारे से उसने उनको रुकने को कहा! टार्जन कुछ देर तक उसकी तरफ देखते रहे, बाद में बोले—

"मेरी समझ में नहीं आता तुम यहां पहुंचीं कैसे! तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ कि मैं इस खेमे में कैद हूं और तुम आ कहां से रही हो!"

वह मुसकुराई और बोली, "मैं रातो रात बहुत दूर चली आई हूं। और हम लोगों को बहुत दूर जाना है। तब हम लोग खतरे के बाहर

होंगे। लेकिन अब यहां ठहरना ठीक नहीं। चलिये रास्ते में जो भी पूछियेगा मैं बताऊंगी।"

वे लोग उठे और उस ओर रवाना हुये जिधर रेगिस्तान पार कर के पहाड़ पड़ता था!

कुछ दूर आगे जा के युवती बोली, "मुझे इस बात का पूरा विश्वास नहीं था कि मैं आप तक पहुंच सकूंगी। काले शेर यहां बहुतायत से हैं, और घोड़ा छोड़ के जब मैं पैदल इस ओर रवाना हुई तो मुझे ऐसा सन्देह हुआ कि एक मेरा पीछा कर रहा है। खैर मैं तेजी से बढ़ी चली आई, पर मुझे डर बड़ा लगा।"

टार्जन बोले, "तुम कितनी साहसी हो—और तुमने इतना किया किसके लिये, एक ऐसे आदमी के लिये जो तुम्हारी जाति और धर्म का नहीं, तुम्हारे देश का नहीं, तुम्हारे लिये बिल्कुल अपरिचित है!"

युवती तन के खड़ी हो गई और गंभीर स्वर में बोली, "एक अपरिचित के लिये! अपरिचित कैसे! क्या आपने मेरी जान नहीं बचाई है, क्या आपने ऐसे समय मेरी मदद नहीं की है जब कि आप मुझे एक साधारण नाचने वाली समझते थे, क्या मैं कादर बेन साद्दन की लड़की कहलाने लायक होऊंगी अगर मैं अपनी जान बचाने वाले के लिये अपनी जान खतरे में न डाल दूं और समय पर उसकी मदद न करूं!!"

टार्जन बोले, "जो भी हो, इसमें सन्देह नहीं कि तुमने इस समय भारी साहस दिखाया है। पर तुम्हें मालूम कैसे हुआ कि मैं यहां हूं?"

युवती बोली, "मेरा भाई अहमद साहिब अपने कुछ दोस्तों से मिलने एक दूसरे गांव गया हुआ था। इत्तफ़ाक से उसके दोस्त उसी जाति के थे जिस जाति ने आपको पकड़ा है। वहीं उसे मालूम हुआ कि आज एक फ्रांसीसी को दूसरे फ्रांसीसी ने मारने के लिये पकड़वाया है, बल्कि उसने रास्ते में आपको इस गांव की तरफ लाये जाते भी देखा। घर पहुंच के उसने सब हाल बताया। हुलिया जो उसने बताया उससे मैं समझ गई कि अवश्य यह आप ही होंगे। मेरे पिता उस समय बाहर गये हुये थे। अपने कुछ आदमियों को मैंने समझाया कि वे आपकी मदद करें, पर वे इस पर राजी न हुये, उन्होंने कहा कि अगर हम दूसरों की बातों में दखल देंगे और उनसे नाहक बैर खरीदेंगे तो वक्त पर हमें भी उनके हाथों तकलीफ उठानी पड़ेगी। इससे अच्छा है कि फ्रांसीसी फ्रांसीसी एक दूसरे को मारें और हम उसमें दखल न दें।

"मुझे उनकी बात पसन्द न आई, पर मैंने उनसे अधिक जिद्द न की और चुप हो रही। रात को मैंने दो घोड़े लिये, एक पर तो मैं चढ़ी और दूसरा आपके लिये साथ लेती आई। वे यहां से थोड़ी ही दूर पर बंधे हैं। सवेरा होते तक हम लोग अपने गांव पहुंच जायंगे, और उस वक्त तक मेरे पिता भी वहां मौजूद रहेंगे। तब अगर हिम्मत हो तो आपके दुश्मन आवें और आपको हमारे पास से अलग करें!"

थोड़ी दूर तक वे चुपचाप चले गये, इसके बाद युवती बोली "घोड़ों को मैंने यहीं कहीं बांधा था, वे दिखाई नहीं देते। न जाने किधर चले गये!"

क्षण भर बाद उसके मुंह से हलकी चीख निकली और उसने रुकते हुए एक पेड़ की तरफ इशारा कर के कहा, "ठीक है यहीं मैंने उन्हें बांधा था, पर वे यहां नहीं हैं, अब क्या होगा!"

युवती की घबड़ाहट पर ध्यान न दे टार्जन झुके और गौर के साथ जमीन को देखने लगे। उन्होंने दो तीन निशानों को देखा, एक छोटे से पौधे को जड़ से उखड़ा हुआ वहां पाया और एक चीज और उन्हें मिली। उन्होंने हलकी मुसकुराहट से युवती की तरफ देखा और कहा, "ठीक है, काले शेर के आने के चिन्ह हैं, उसी ने घोड़ों को गायब कर दिया। पर मेरी समझ में वे मरे नहीं हैं, शायद भाग गये! उन्हें थोड़ा भी भागने का मौका मिला होगा तो वे शेर के हाथ में न पड़े होंगे।"

इसके सिवाय और कोई उपाय न था कि अब पैदल चला जाय। वे धीरे धीरे कदम बढ़ाते हुये आगे रवाना हुये। रास्ता पहाड़ के बगल से होता हुआ बड़ा घूम फिर के गया था, पर इस बात की आशंका न थी कि युवती रास्ता भूल जायगी। वह रास्ते को वैसा ही पहिचानती थी जैसे अपने मां के चेहरे को, अस्तु उसे आगे आगे कर के टार्जन स्वयं पीछे हुये। उन्होंने सोचा कि इस तरह इसे थकावट जल्दी न आवेगी। बीच बीच में थोड़ा ठहर के वे इस बात की आहट ले लेते थे कि पीछे कोई आ तो नहीं रहा है।

चन्द्रदेव निकल आये थे, और हवा ठंडी और मन को प्रसन्न करने वाली थी। उनके पीछे कोसों तक सफेद रेगिस्तान ही रेगिस्तान चला गया था, जिसमें कहीं कहीं ओसिसों की काली छाया

धब्बों की तरह मालूम हो रही थी। जिस गांव से टार्जन छूट के आये थे वह भी दूर हो चला था पर उसके खेमे और वहां के चारों तरफ के पेड़ अब भी तेज रोशनी में धुंधले दिखाई दे रहे थे। आगे उनके एक के बाद एक ऊंचा उठता हुआ पहाड़ था। टार्जन का खून तेजी से उनकी नसों में दौड़ने लगा। सचमुच यह स्वर्गीय जीवन है! उन्होंने अपने आगे आगे चलती हुई युवती की तरफ देखा। अपनी सादी अरबी पौशाक में यह कितनी आकर्षक मालूम हो रही है। जैसे रेगिस्तान की रानी जंगल के राजा के साथ कहीं चली जा रही हो। कैसा अच्छा होता अगर उनकी एक बहिन होती, और वह ठीक इसी युवती की तरह की होती, वे उसे कितना प्यार करते। अपने विचारों पर टार्जन मन ही मन हंस पड़े।

उनका रास्ता अब पहाड़ों के बीच से होके जा रहा था और कुछ ऊंचा और पथरीला हो गया था।

कुछ देर से दोनों चुप थे। युवती सोच रही थी कि देखें सही सलामत पीछा करने वालों से बचकर अपने ठिकाने तक पहुंचते हैं या नहीं। टार्जन मन ही मन मना रहे थे कि इस तरह का चलना कभी भी खतम न हो, और वे बराबर इसी तरह इस युवती के साथ चले जायं। अगर उनकी साथिन युवती न होकर पुरुष होती तो यह संभव था, पर उसके स्त्री होने ने इस बात की संभावना बहुत कम कर दी थी। अब टार्जन एक सच्चे दोस्त का अभाव अनुभव कर रहे थे, पर वे दोस्त ऐसा चाहते थे जो शहर की विलासिता और वहां के रहन सहन का प्रेमी न हो कर उन्हीं के ऐसा जंगल का प्रेमी हो,

उन्हीं की प्रकृति का हो, और वे ही बातें पसंद करे जिसके वे शौकीन थे। उन्हें ऐसा दोस्त मिलेगा इसकी कम आशा थी।

आगे चलके रास्ता दाहिनी तरफ घूम गया था और कोने पर एक बड़ी सी चट्टान खड़ी थी। उसे पार करते ही यकायक दोनों चौंक के खड़े हो गये। उनके बिल्कुल सामने, ठीक रास्ते के बीचो-बीच में, एक एबिसिनिया-काला शेर खड़ा था! उसकी हरी आंखों से शरारत टपक रही थी, और गुर्राने के लिये जब उसने मुंह खोला तो उसके बड़े बड़े लंबे और पैने दांत स्पष्ट रूप से दिखाई दिये। अचानक शिकार को सामने पा उसने अपनी दुम खड़ी कर ली और जोर से गरजा, जैसे अपनी कांपने को दहला देने वाली भयानक आवाज से सामने खड़े जोड़े को वह बतला देना चाहता हो कि वह इस समय भूखा तो है ही गुस्से में भी है!

टार्जन ने हाथ फैला के कहा, "छुरा मुझे दो, जल्दी करो!" युवती ने जल्दी से उसका कब्जा फैलाये हुये पंजे में पकड़ा दिया। टार्जन ने कंधा पकड़ के उसे अपने बगल में कर लिया और तब पीछे करते हुये बोले, "जाओ, जितनी जल्दी तुम्हारे पैर ले जांय, तुम रेगिस्तान की तरफ लौट जाओ। अगर मुझे आवाज देते सुनना तो समझना सब ठीक है, तब लौट आना, नहीं तो......... ।"

युवती बात काट के बोली, "नहीं, आशा करना बिल्कुल व्यर्थ है, हम लोगों का अन्त आ गया। मैं यहीं ठहरती हूं और...... ।"

टार्जन हुकूमत के ढंग से बोले, "सुनो, जो मैं कहता हूं करो, पीछे हट जाओ। देखो अब वह उछला ही चाहता है।" युवती पांच

सात कदम पीछे हट गई और घबड़ाई हुई और निराश आंखों से उस दृश्य को देखने लगी जो वह समझती थी कि शीघ्र उसके सामने होगा।

नाक को प्रायः जमीन के साथ सटाये और अपनी कांपती हुई दुम को सीधा किये हुये शेर अब टार्जन की तरफ बढ़ रहा था!

टार्जन चुपचाप खड़े थे, उनकी कमर जरा झुकी हुई थी और युवती का दिया हुआ आधी छुरा चन्द्रमा की उज्वल चांदनी में चमक रहा था। पीछे युवती भी पत्थर की मूरत की तरह थी, लेकिन आश्चर्य के मारे उसकी आंखें चौड़ी हो रही थीं और होंठ खुले हुये थे। उसके दिल में इस समय और कोई विचार या भाव न था, केवल था तो एक इस बात का ताज्जुब कि यह आदमी कितना बहादुर है कि केवल एक छोटे से छुरे की मदद से भयानक शेर से झगड़ने की हिम्मत रखता है। उसकी जाति का कोई आदमी होता—और इस तरह उसके सामने एल एड़िया खड़ा होता—तो वह इस समय घुटने टेक के जमीन पर बैठ जाता और ईश्वर से प्रार्थना करता कि मुझे और किसी मौत मार, पर इस मौत से बचा। वह बिना हाथ पैर हिलाये, बिना मुंह से आवाज निकाले इन भयानक पंजों के नीचे प्राण देता। पर उसके सामने के इस आदमी में जरा भी डर, भय या घबड़ाहट का चिन्ह नहीं है। मरेगा तो यह भी जरूर ही, पर यह बहादुरी से, हिम्मत के साथ, अपने बचाव के लिये लड़ता हुआ मरेगा!

शेर अब बिल्कुल नजदीक आ गया था। उसका और टार्जन का फासला कुछ ही कदमों का था। उसने गर्दन झुकाई, पेट जमीन के साथ सटाया और तब कान को फाड़ने वाली गरज के साथ उछला!

ग्यारहवां बयान

लंदन के जान कैल्डवेल

एल एडिया जब अपने दांतों को खोल के और पंजों को फैला के आगे की तरफ़ झपटा तो उसने समझा कि जैसे पचीसों आदमी पहिले उसके नीचे मर चुके हैं—वैसे ही यह बेचारा भी अपने प्राण देगा। आदमी को वह बड़ा सुस्त, अपनी रक्षा करने में असमर्थ, बिल्कुल बोदा समझता था, उसके लिये उसके मन में तनिक भी इज्जत, तनिक भी आदर न था। लेकिन अबकी उसे यह देख आश्चर्य

हुआ कि इस में भी उतनी ही फुर्ती और तेजी है जितनी वह स्वयं अपने में समझता था ! जब वह अथवा यों कहना चाहिये कि उसका भारी शरीर उछाल मार के उस जगह आया जहां वह समझता था कि मैं अपने शिकार को पाऊंगा—तो वहां उसे खाली जमीन मिली !

इतनी सरलता के साथ टार्जन ने शेर की उछाल से अपने को बचाया कि उनकी फुर्ती और होशियारी देख युवती दंग हो गई। और उसका आश्चर्य तब और बढ़ गया जब उसने देखा कि शेर के उछाल मार के जमीन पर आते ही टार्जन झपट के उसके पीछे जा पहुंचे और उसकी गर्दन के बाल पकड़ के उन्होंने अपनी तरफ खींचा। शेर को घूमने का भी मौका न मिला। बाल खींचे जाने से लाचार हो कर उसे अपने दोनों पिछले पैरों पर खड़े हो जाना पड़ा, और तब टार्जन ने वह काम किया जिसके वास्ते वे पहिले से तैयार थे। उन्होंने अपनी भारी बांह से उसके गले को पकड़ लिया और उनके दूसरे हाथ का लंबा छुरा बार बार इसके तक उसके बायें बगल में बांह के नीचे घुसने और निकलने लगा !

शेर ने बड़ी बड़ी उछालें मारीं, उसकी क्रोध और तकलीफ से भरी गरजने की आवाज सुन कलेजा दहलता था, लेकिन न उछलने ने, न उसकी आवाज ने ही, उसकी पीठ पर चढ़े बहादुर को नीचे उतारा। शेर को इतना अवसर भी न मिला कि अपने पंजों की पकड़ में अपने दुश्मन को लावे, और छुरे की चोट खाते खाते कुछ मिनटों या सेकण्डों का जो समय उसे मिला, कुछ क्षण तक जो वह जीता रहा, उस बीचमें वह अपने प्रतिद्वन्दी को घायल करे या चोट

पहुंचावे। टार्जन की पकड़ में ही उसके प्राण निकल गये और जब टार्जन ने अपनी बांह उसके गले से हटाई, उस वक्त वह बिल्कुल मुर्दा था। इसके बाद उस बेचारी युवती ने जो देखा या सुना उसने उसको शेर के साथ की लड़ाई से भी अधिक डरा दिया, और उसके बदन का सब खून पानी कर दिया! उसने देखा कि उसके सामने खड़े विचित्र आदमी ने शेर के मरे हुये बदन पर अपना एक पैर रक्खा और अपने सुन्दर चेहरे को चन्द्रमा की तरफ उठा के इतने जोर से चिल्लाया कि शेर की कुछ समय पहिले की गरज भी उसके सामने बिल्कुल फीकी थी!

दाहिने हाथ से अपने उछलते हुये कलेजे को थामे हुये बेचारी युवती चार कदम पीछे हट गई। उसने सोचा शेर के साथ की इस भयानक लड़ाई ने इस मनुष्य का दिमाग घुमा दिया है और यह पागल हो गया है। भारी आवाज गूंजती हुई दूर हवा में मिल गई और साथ ही टार्जन का सिर नीचा होने लगा। क्षण भर बाद उनकी बड़ी बड़ी आंखें युवती की नीली आंखों पर आके जम गईं।

तुरत ही उन आंखों में दया और ममता की चमक दिखाई दी और साथ ही टार्जन का चेहरा बड़ी ही मीठी मुसकुराहट से खिल उठा। युवती के जी में जी आया। वह समझ गई कि उसके साथी के होशहवास दुरुस्त हैं। उसके होंठों पर भी हलकी हंसी आई।

उसने धीमी आवाज में पूछा, "आप किस तरह के आदमी हैं, आपने किस तरह ऐसा काम किया जिसे मैंने आज तक किसी को करते न देखा न सुना। किस तरह आपने बिना किसी अस्त्र की

सहायता के, केवल एक छुरा लेकर, एक एड्रिया को मार डाला, तिस पर आपको घायल होना कौन कहे एक जख्म तक न लगा। मैंने अपनी आंखों आज जो देखा है उसका मुझे विश्वास नहीं होता। और आपकी वह आवाज, ओफ! वह किसी मनुष्य की आवाज नहीं कही जा सकती थी! क्यों आपने ऐसी आवाज अपने मुंह से निकाली?"

टार्जन सिर झुका के बोले, "इसलिये कि कभी कभी मैं भूल जाता हूं कि मैं सभ्य आदमी हूं और अपने को जंगली जानवर समझने लग जाता हूं। ऐसा तभी होता है जब मैं किसी को मारता हूं, क्यों कि सच पूछा जाय तो मारना सभ्य आदमी का काम नहीं है!" टार्जन ने और कोई कारण उस बात का न बताया, क्यों कि वे समझते थे कि अगर इस युवती को उनके भूतकाल के जीवन का हाल मालूम होगा तो शायद यह उन्हें घृणा की दृष्टि से देखेगी।

दोनों ने फिर अपना आगे का सफर शुरू किया। घंटे भर दिन चढ़ते चढ़ते वे लोग पहाड़ पार करके फिर रेगिस्तान में आ गये और वहां एक छोटे से सोते के किनारे उन्होंने दोनों घोड़ों को चरते हुये पाया। बेचारे जानवर जान बचा कर दौड़े तो अपने घर ही की तरफ भागे और अब यहां कोई खतरा न पा रुक गये थे।

पुचकार के उन्होंने दोनों घोड़ों को पकड़ लिया और उन पर सवार हो शेख कादर बेन सादन के गांव की तरफ रवाना हुये।

पीछा करने का कोई भी चिन्ह दिखाई न दिया और नौ बजे तक दोनों अपने ठिकाने पर पहुंच गये। शेख कादर बेन सादन को

लौटे ज्यादा देर न हुई थी, और वे अपनी लड़की को वहां न पा अन्य लोगों से सब हाल सुन बड़े चिन्तित हो रहे थे। उनको खयाल हो रहा था कि उसे फिर डाकुओं ने चुरा लिया। पचास आदमियों को साथ ले कर वह स्वयं उसकी खोज में जाने की तैयारी कर रहे थे जब दोनों उनके सामने पहुंचे।

लड़की को सही सलामत लौटा देख के बेचारे बूढ़े शेख को जितनी प्रसन्नता हुई, उतने ही वे टार्जन के प्रति कृतज्ञ भी हुये कि उन्होंने रास्ते के खतरों से बचाते हुये उनकी लड़की को उनके पास ला के पहुंचा दिया। उन्होंने लड़की की बड़ी तारीफ की और ईश्वर को बहुत धन्यवाद दिया कि जिस तरह टार्जन ने उसकी एक बार जान बचाई थी, उसी तरह अबकी बार वह टार्जन की जान बचाने में भी समर्थ हुई!

अपना आदर दिखाने और प्रेम प्रदर्शित करने में कोई भी बात ऐसी न बची जिसे शेख ने टार्जन के लिये उठा रक्खा हो। शायद किसी राजा की भी ऐसी खातिरदारी न होती जैसी टार्जन की हुई। और जब लड़की ने लोगों को हाल सुनाया कि इस तरह इन्होंने अकेले, केवल एक छुरा हाथ में ले कर काले शेर को मारा है—तो उनके चारों तरफ प्रसन्नता और आश्चर्य से भरे अरबों की भीड़ लग गई। इन सीधे सादे आदमियों को कोई चीज इतनी अधिक प्रिय न थी जितनी सच्ची बहादुरी!

बूढ़े शेख ने बहुत समझाया और बड़ी जिद्द की कि टार्जन अब हमेशा के लिये उसके पास ही रह जायं। वह यहां तक तैयार हो गये

सब उन्होंने कहा कि "मैं तुम्हें अपनी जाति में शामिल कर लेता हूं, लेकिन हमेशा के वास्ते इसी गांव को अपना घर समझो।" थोड़ी देर के लिये टार्जन के मन में भी इच्छा पैदा हुई कि इन का कहना ठीक है। ऐसे आदमियों के बीच में उनका जीवन सुख से बीतेगा जिन्हें वह जानने लग गये हैं, और जो उन्हें पहिचानते हैं। युवती से भी उन्हें हलका सा प्रेम हो गया था और यह प्रेम उन्हें और भी यहीं रहने के लिये आग्रह करता था।

पर उन्होंने मन में सोचा कि क्या वे युवती से सदा ऐसा ही प्रेम रख सकेंगे! अगर वह पुरुष होती तो उसका इनका साथ बराबर रह सकता था। वह इनकी सच्ची दोस्त बन सकती थी। वह बराबर इनके साथ रहती, घूमती फिरती, शिकार खेलने जाती। पर उसके स्त्री होने से इसमें भारी बाधा थी। आखिर सामाजिक बंधनों और कायदों पर भी खयाल रखना ही पड़ता, और वे सामाजिक बंधन शहरों में, सभ्य पुरुषों में उतने नहीं माने जाते जितने ये रेगिस्तान के बाशिन्दे उन्हें मानते थे। थोड़े दिन बाद इस युवती का विवाह इन्हीं में से किसी पुरुष के साथ हो जायगा और तब टार्जन की ओर उसकी दोस्ती समाप्ति पर आजायगी! नहीं, यहां रहने में उन्हें अंत में कष्ट के सिवाय और कुछ हाथ न लगेगा यही सोच के उन्होंने शेख के प्रस्ताव को स्वीकार न किया, लेकिन उसके जिद्द करने पर आठ दिन तक उसके मेहमान अवश्य रहे।

जब टार्जन विदा होने को हुये तो कादर बेन सादन ने पचास घोड़ सवार उन्हें साथ बाऊ-सादा तक पहुंचाने के लिये दिये। घोड़े

पर सवार होते समय शेख की लड़की उनसे विदा होने आई। टार्जन ने प्रेम से उसका हाथ दबाया और विदा मांगी। लड़की सिर नीचा करके बोली, "मैं पहिले ईश्वर से प्रार्थना करती थी कि आप यहां रहें, अब मैं ईश्वर से प्रार्थना करूंगी कि आप शीघ्र लौट कर हम लोगों के बीच में आ जायं।"

युवती की सुन्दर आंखों में दुःखमय निराशा की छाया थी, और उसके होंठ जरा फूले हुये मालूम हो रहे थे। टार्जन को देख के कष्ट हुआ! पर उन्होंने इतना ही कहा, "देखो, ईश्वर जो करे!" इसके बाद उन्होंने घोड़े का मुंह घुमा दिया।

बाऊ-सादा के पास पहुंच के टार्जन ने कादर बेन सादन और उनके आदमियों से विदा मांगी। पहिले तो इससे उन्हें आश्चर्य हुआ, पर जब टार्जन ने समझाया और बताया कि इन कारणों से मैं कसबे में अकेला ही घुसना चाहता हूं और मेरा प्रगट रूप से जाना ठीक न होगा, तो वे मान गये। निश्चय हुआ कि अरब लोग पहिले शहर में घुस जायं और किसी से प्रगट न करें कि टार्जन उनके साथ थे। फिर कुछ ठहर कर टार्जन अकेले जायंगे और किसी एकान्त सरायं में ठहर जायंगे।

इसी अनुसार काम हुआ और कुछ अंधेरा होने बाद टार्जन शहर में घुसे। पहिले तो लोगों की निगाह बचाते हुये वे उस सरायं में पहुंचे जिसमें कादर बेन सादन ठहरे थे। वहां उन्होंने भोजन किया और इसके बाद पिछले दर्वाजे से निकल घूमते हुए उस सरायं में गये जिसमें वे पहिले टिके थे। घुसते ही उनकी मुलाकात पहिले

सराय के मालिक से हुई जो उन्हें जीता जागता और तन्दुरुस्त देख क बड़े आश्चर्य में आया।

टार्जन ने उसकी बातों का जवाब देने बाद पूछा, "क्या मेरे लिये कोई चीठियें आई हुई हैं?"

होटल का मालिक बोला, " जी हां, मैं अभी उन्हें लाता हूँ।"

टार्जन ने धीमी आवाज में कहा, "देखो, किसी से यह कहने की जरूरत नहीं कि मैं यहां आया हूं।"

वह बोला, "अच्छा, मैं समझ गया, मैं किसी से कहने ही क्यों लगा।"

क्षण भर बाद वह चीठियें लिये हुए लौटा। एक चीठी टार्जन के अफसर की थी जिसमें लिखा था कि वे अपना काम बन्द कर दें और पहिला स्टीमर जो मिले उसी से केप-टाउन चले जायं। वहां फलाने ठिकाने पर फलाने आदमी से एक पत्र मिलेगा जिसमें आगे की कार्रवाइयों के लिये हुक्म बन्द रहेंगे। उस आदमी का नाम और पता भी दिया था। हुक्म थोड़े में लेकिन साफ तौर से लिखा हुआ था। टार्जन ने निश्चय किया कि कल सुबह वे बाऊ-सादा से रवाना हो जायंगे। इस बीच में उन्होंने सोचा कि कैप्टेन जेरर्ड से मुलाकात कर लेनी चाहिये। होटल के मालिक से उन्हें पहिले ही पता लग चुका था कि कैप्टेन अपने आदमियों सहित कल लौट आये हैं। अस्तु वे उनसे मिलने उस तरफ रवाना हुये जिधर फौज का डेरा था।

कैप्टेन अपने डेरे पर मौजूद थे। टार्जन को सही सलामत देख उनके ताज्जुब और खुशी का हद न रहा।

वे बोले, "लेफ्टनेंट जरनोइस जब लौटे तो उन्होंने मुझे बताया कि पहाड़ों में घुसने के पहिले आप एक स्थान पर रुक गये थे और आपने कहा था कि लौटने तक हम यहीं रहेंगे, लेकिन जब वे लौटे तो उन्होंने आपको निश्चित स्थान पर न पाया। उन्होंने तलाश किया पर आपका पता न लगा। यह सुन मुझे चिन्ता हुई। आदमियों को साथ ले कई रोज तक मैं पहाड़ों को तलाश करता रहा। अन्त में पता लगा कि शेर ने आपको मार डाला। आपकी बन्दूक भी एक आदमी ने लाके दिखाई और आपका घोड़ा भी मिल गया। हमें विश्वास करना ही पड़ा। बेचारे जरनोइस को बड़ा दुःख हुआ। वे कहने लगे कि सब गलती मेरी ही है। अगर मैं उनके कहने मुताबिक उन्हें वहां छोड़ न देता तो ऐसी नौबत क्यों आती। जिद्द करके उन्होंने अकेले ही आपको खोजने की इजाजत मांगी और वे ही उस अरब को भी पकड़ के लाये जिसके पास आपकी बन्दूक थी। वे आपको जीता जागता देख के बड़े खुश होंगे!"

टार्जन ने मुसकुरा के कहा, "जरूर!"

कैप्टेन जेरर्ड बोले, "मैं अभी ही उन्हे बुलवाता, पर मुश्किल यह है कि वे शहर गये हुये हैं। उनके आते ही मैं उन्हें सूचना दूंगा।"

टार्जन ने अपना जो हाल बताया उसका सारांश यह था कि वे घूमते हुये रास्ता भूल गये और फिर शेख कादर बेन सादन के गांव में जा पहुंचे। वहां उन्हें कई दिन रुकना पड़ा और बाद में कादर बेन सादन के आदमी उन्हें बाऊ-सादा तक पहुंचा गये! जहां तक जल्दी हो सका कैप्टेन जेरर्ड से उन्होंने बिदा मांगी और फिर शहर

की तरफ लौटे। कादर बेन सादन की सराय में उनके आदमियों द्वारा उन्हें एक बढ़िया खबर मिली थी। उन्हें मालूम हुआ था कि कई दिनों से काली दाढ़ी वाला एक गोरा यहां दिखाई देता है जो हमेशा अरबों के वेश में रहा करता है। कुछ दिनों तक लोगों ने उसकी कलाई को टूटी हुई देखा था। बाद में वह बाऊ-सादा से चला गया था, लेकिन अब फिर लौट आया है। टार्जन ने उसके रहने का पता लोगों से पूछ लिया और उसी तरफ रवाना हुये।

बदबूदार पतली और गंदी गलियों में से होते हुये टार्जन एक मकान के सामने जा खड़े हुये और तब एक पुरानी काठकी सीढ़ी पर से ऊपर चढ़े। सीढ़ियां खतम होने पर एक दर्वाजा था जो बन्द था, और दर्वाजे के ऊपर एक छोटी सी खिड़की थी जिसमें शीशा वगैरह कुछ न लगा हुआ था। टार्जन दर्वाजे पर चढ़ गये और खिड़की में आंख लगा भीतर का हाल देखने लगे।

अन्दर रोशनी में एक टेबुल दिखाई दे रहा था, जिसके एक तरफ जरनोइस और दूसरी तरफ रोकरू बैठा हुआ था। जरनोइस कह रहा था—

"रोकरू, तुम पूरे राक्षस हो। तुमने मुझे यहां तक तंग किया कि आत्म सम्मान का आखिरी टुकड़ा भी मेरे दिल से निकल गया और मैं भी तुम्हारे ऐसा हत्यारा हो चला। तुमने मुझे खून तक करने पर मजबूर किया। उस टार्जन की हत्या का बोझ अभी तक मेरे सिर पर है। मैं तो तुम से इतनी घृणा करता हूं कि अगर मुझे इस बात का डर न हो कि तुम्हारा पिशाच दोस्त पालविच मेरा हाल जानता है

और पीछे मुझे तंग करेगा तो मैं अभी अपने इन खाली हाथों से तुम्हें जहन्नुम पहुंचा दूं।"

रोकफ जोर से हंस के बोला, "अरे नहीं नहीं, मेरे दोस्त, तुम ऐसा भूल के भी विचार न करना, नहीं पीछे बड़ा पछताओगे। जैसे ही मेरे प्यारे दोस्त एलेकसिस को इस बात का पता लगेगा कि मेरी हत्या कर डाली गई है तो वह तुरत युद्ध मंत्री के पास पहुंचेगा और तुम्हारा सारा भेद और वह गुप्त बात जिसे तुम बड़ी होशियारी से छिपा रहे हो, सब उनसे पूरा पूरा कह देगा। साथ ही मेरी हत्या का दोष भी तुम्हारे ही सिर मढ़ेगा। इसका फल क्या होगा! सोचो! नहीं, ऐसा कभी न करना!! क्या मैं तुम्हारा सच्चा दोस्त नहीं हूँ? क्या मैंने तुम्हारी इज्जत को अपनी ही इज्जत समझ के अबतक नहीं बचाया है?"

जरनोइस भौंह सिकोड़ के कुछ बुड़बुड़ाया जिसे टार्जन सुन न सके। रोकफ फिर बोला—

"बस, मेरा मांगा रुपया मुझे दे दो और वे कागज मेरे हवाले करो। बाद में मैं कसम खाता हूं, कभी भी तुमसे कुछ न मांगूगा और न कोई भेद ही तुम से पूछूंगा।"

जरनोइस क्रोध से बोला, "फिर मांगोगे क्या, मेरे पास रह ही क्या जायगा। तुम जो मांग रहे हो उसी से मेरी इकट्ठी की हुई रकम का आखिरी पैसा निकल जायगा, और वह भेद भी साथ चला जायगा जिसे मैं बहुत बहुत कीमती समझता हूं और जो मेरा आखिरी सहारा रह गया है। युद्ध विभाग का इससे कीमती इस

टार्जन ने उसे कुर्सी पर बैठा दिया और जब देखा कि उसका चेहरा काला होने लगा है तो उसके गले पर से अपना हाथ हटा लिया। जब उसका खांसना बन्द हुआ तो टार्जन बोले—

"देखा तुमने, मौत कितनी तकलीफदेह होती है, मरने में कितना कष्ट मिलता है। पर यह न समझना कि मैं तुम्हें आज मार ही डालूंगा। मैं आज तुम्हारी जान छोड़ दूँगा, सिर्फ इस लिये, केवल उस भली स्त्री का खयाल करके जिसका दुर्भाग्य यही हुआ कि तुम भी उसी पेट से पैदा हुये जिस पेट से वह पैदा हुई। केवल उसी का खयाल करके मैं आज तुम्हें छोड़ रहा हूं। पर यह खयाल रक्खो—अगर कभी मुझे पता लगा कि तुमने उसको या उसके पति को कष्ट दिया है, अगर कभी तुमने मुझे तकलीफ दी, अगर कभी तुम फ्रांस में या फ्रांस के अधिकृत किसी देश में आये—तो मैं तुम्हारे पीछे पड़ जाऊंगा और तबतक चैन न लूंगा जबतक तुम्हें पकड़ न लूं, फिर मैं गला दबा के उस काम को पूरा कर डालूंगा जिसे आज शुरू कर के अधूरा छोड़ रहा हूं।" इतना कह के टार्जन टेबुल की तरफ घूमे और उनकी नजर उन कागजों पर पड़ी जिन्हें जल्लोडस ने दिया था और जो रोकफ के हाथों से उलते वक्त छूट गये थे। उन्हें उठा के वे गौर से देखने लगे। रोकफ के मुंह से एक ठंढी सांस निकली।

उनमें एक तो चेक था और एक और कागज था जिसमें कुछ अंक वगैरह लिखे हुये थे। उन्हें पढ़ टार्जन ताज्जुब में आ गये। ऐसा भारी भेद उन अंकों में छिपा हुआ था कि अगर वह कागज

फ्रांस के दुश्मन किसी दूसरे राष्ट्र के हाथ में पड़ जाते अगर आफत हो जाती। टार्जन को विश्वास था कि केवल पढ़ लेने से रोकफ इन्हें याद नहीं रख सकता।

उन्हें जेब में रखते हुये टार्जन बोले, "इन्हें देख के प्रधान अफसर प्रसन्न होंगे!"

रोकफ धीरे से बुड़बुड़ाया, उसकी हिम्मत न हुई कि जोर से कुछ बोले।

दूसरे रोज प्रातःकाल टार्जन उत्तर की तरफ—बुइरा और एलजीयर्स की ओर रवाना हुये। होटल के पास से जाते हुये उनकी निगाह ऊपर बरामदे में गई तो उन्हें जरनोइस खड़ा दिखाई दिया। टार्जन देख के प्रसन्न न हुये। उनका इरादा न था कि जरनोइस से उनकी मुलाकात हो। पर यह रुक ही कैसे सकती थी। उन्हें होटल की ओर से होकर तो जाना ही पड़ता। उन्होंने हाथ उठा के जरनोइस को सलाम किया। उसका चेहरा टार्जन पर निगाह पड़ते ही सफेद खड़िया के रंग का हो गया था। उसने भी हाथ उठा के सलाम का जवाब दिया। टार्जन घोड़ा बढ़ा के आगे चले, और जब तक वे दिखाई देते रहे जरनोइस की भय से भरी हुई आखें उन्हीं की तरफ देखती रहीं। उसे ऐसा मालूम हो रहा था जैसे वह भूत देख रहा हो।

सिदी—आयशा में टार्जन की मुलाकात एक फौजी अफसर से हुई जिससे उसकी जान पहिचान थी। उसने देखते ही कहा—

"आप बाऊ-सादा से कब आये? क्या आपने जरनोइस के बारे में खबर सुनी?"

टार्जन को निश्चय हो गया कि अब जरूर उनके छिपे रहने का पता लग जायगा। रोकफ उनसे हाथ भर से ज्यादा फासले पर न था, पर उसकी निगाह दूसरी ओर थी, वह जरनोइस की तरफ देख रहा था। यकायक रुक के जरनोइस ने फिर कुछ सोचा और तब पुनः नीचे की तरफ उतरने लगा। टार्जन को ऐसा मालूम पड़ा मानो रोकफ ने संतोष की एक लंबी सांस खींची हो। वह क्षण भर खड़ा रहा और इसके बाद भीतर जाके उसने किवाड़ बन्द कर लिये।

टार्जन कुछ देर रुके रहे, जिसमें जरनोइस अच्छी तरह आवाज की पहुंच के बाहर चला जाय। इसके बाद उन्होंने दर्वाजा खोला और भीतर घुसे। रोकफ कुर्सी पर बैठा हुआ उन्हीं कागजों को देख रहा था जो उसने जरनोइस से पाये थे। दर्वाजा खुलने की आहट पाते ही उसने उठना चाहा पर इसके पहिले कि वह कुर्सी छोड़ सके टार्जन उसके ऊपर पहुंच गये। उसने आंखें फेरीं और जैसे ही उसकी निगाह टार्जन पर पड़ी उसका चेहरा सफेद पड़ गया।

उसने भर्राई हुई आवाज में कहा, "तुम हो !!"

टार्जन बोले, "हां मैं हूँ।"

रोकफ के मुंह से तुरत कोई आवाज न निकली। टार्जन की सूरत, उनकी आंखों के भाव, को देख के वह इतना घबड़ा गया था कि बहुत कोशिश करने पर भी वह अपने गले को खोल न सका। उसने धीमी आवाज में पूछा, "तुम मुझ से क्या चाहते हो, क्या मेरे को मारने आये हो, नहीं, तुम मुझे मार नहीं सकते। तुम्हें इसके लिये गिलोटिन पर चढ़ना होगा!"

टार्जन बोले, "तुम इसके लिये चिन्ता न करो, रोकफ, मैं अगर इस समय तुम्हें मार भी डालूं तो किसी को इसका पता नहीं लग सकता। कोई नहीं जानता कि तुम यहां हो, या मैं ही यहां हूँ। फिर पालविच तो लोगों से यही कहेगा कि जरनोइस ने तुम्हें मारा है। क्यों, तुम जरनोइस से ऐसा कह न रहे थे? खैर उसकी मुझे फिक्र नहीं। लोग अगर जान भी जायं तो उसका मुझे डर नहीं। तुम्हें मारने में मुझे इतना आनंद आवेगा, कि बाद में मुझे उसके लिये जो भी सजा मिले, वह उस आनंद के मुकाबिले में नहीं पहुंच सकती। मैंने बहुतेरे बदमाश देखे, पर तुम्हारे ऐसा पाजी और हरामखोर आज तक कहीं न पाया। तुम्हारे कामों का पुरस्कार यही हो सकता है कि तुम मार डाले जाओ। क्यों, है न ठीक?" यह कह के टार्जन रोकफ के और पास घसक गये।

रोकफ इतना घबड़ा गया जैसे जान पड़ने लगा कि वह अब होश में न रहेगा। उसने एक चीख मारी और बगल के कमरे की तरफ झपटा! उसकी उछाल आधी भी पूरी न हुई थी कि टार्जन उसकी पीठ पर पहुंच गये। लोहे की उंगलियों ने उसका गला पकड़ लिया और यद्यपि वह इस तरह पें पें करने लगा जिस तरह कुत्ते का बच्चा बोले. पर टार्जन अपनी उंगलियों को कसते ही गये यहां तक कि उसका सांस बन्द होने लगा। टार्जन ने खींच कर उसे पैरों पर खड़ा किया और कुर्सी के पास ले आये। वह कितना लड़ता झगड़ता और छूटने की कोशिश करता रहा पर टार्जन के सामने वह बच्चा था, टार्जन ने उसका गला न छोड़ा।

समय कोई भेद ही नहीं है। तुम्हें तो मुझे इसका दाम देना चाहिये, सो तो दूर रहा तुम साथ में रुपया मांग रहे हो!"

रोकफ बोला, "मैं जो चुप हूं सो क्या तुम समझते हो इसका कोई मूल्य ही नहीं है। क्या मेरा चुप रहना तुम्हारी तमाम दौलत और सारे गुप्त भेदों का पूरा—पूरे से भी ज्यादा—दाम नहीं है? खैर जाने दो, मैं बहस नहीं करना चाहता। साफ जवाब दो, तुम मेरी बात मानोगे या नहीं? मैं केवल तीन मिनट का समय तुम्हें सोचने के लिये देता हूं। अगर तुमने न मंजूर किया तो आज रात को एक चीठी मैं तुम्हारे अफसरों को भेज दूँगा और फिर तुम्हारी भी वही दशा होगी जो बेचारे ड्रेफस की हुई थी, तुमको भी वही दुर्दशा सहनी होगी। उसमें और तुममें फर्क यही होगा कि वह निर्दोष था और तुम दोषी हो!"

माथे को हाथ से पकड़ कर अग्नोइस कुछ देर तक कुर्सी पर बैठा रहा। इसके बाद उठके उसने दो कागज के टुकड़े जेब से निकाले और उन्हें रशियन की तरफ बढ़ाता हुआ निराशा भरी आवाज में बोला—

"मैं जानता था तुम किसी तरह न मानोगे, इससे इन्हें साथ लेता आया था।"

रोकफ के कांइयें चेहरे पर मुसकुराहट दिखाई दी, उसने झपट कर उन्हें अग्नोइस के हाथ से ले लिया और उन पर निगाह डालता हुआ बोला, "तुमने अच्छा किया अग्नोइस कि इन्हें दे दिया। अब मैं तुम्हें तबतक तंग न करूंगा जब तक कि तुम्हारे पास और रकम इकट्ठी

न हो जाय या और कोई गुप्त भेद तुम्हारे पास न आ जाय।" इतना कह रोकफ मुंह बिचका के हंस पड़ा।

जरनोइस क्रोध से बोला, "अब कभी भी तू मुझ से कोई चीज न ले सकेगा, कुत्ते! अब अगर तैने मुझे तंग किया तो मैं तेरी जान लिये बिना न छोड़ूंगा। मैं तो आज ही तेरी जान लेने वाला था। यहां आने के पहिले घंटे भर तक अपने घर पर टेबुल के पास बैठा रहा, और मेरे सामने एक बगल तो पिस्तौल थी और दूसरी बगल कागज के ये दो टुकड़े। मैं यह निश्चय करने की कोशिश कर रहा था कि मैं यहां दोनों में से क्या लाऊं। आखिर मैं कागज ही ले आया। पर आगे मुझ से कोई आशा मत रख। तैने आज मौत को बुलाने की पूरी कोशिश की है, आगे फिर वैसी कोशिश न करियो नहीं तेरी जान न बचेगी।"

इतना कह कर जरनोइस उठ खड़ा हुआ। टार्जन तुरत खिड़की पर से उतर पड़े और दर्वाजे के सामने के अंधकार में छिप रहे। सीढ़ी बहुत छोटी थी इससे वहां जगह कम पड़ती थी, और यद्यपि टार्जन एक दम दीवार के साथ चिपक गये, तब भी वे दर्वाजे से एक फुट से ज्यादा फासले पर न थे। उन्हें विचार करने का मौका बिल्कुल ही न मिला। दर्वाजा खुला और जरनोइस बाहर निकला। रोकफ उसके पीछे था। दोनों में से कोई भी कुछ न बोला। जरनोइस सीढ़ी के नीचे उतरने लगा पर तीन चार सीढ़ी से ज्यादा न उतरा होगा कि रुका और ऐसा जान पड़ा जैसे वह फिर ऊपर आवेगा।

टार्जन बोले, "कैसी खबर, आते वक्त मैंने उन्हें होटल में देखा था।"

अफसर बोला, "वे मर गये, उन्होंने सुबह आठ बजे के करीब अपने को गोली मार ली। अभी खबर आई है।"

दो दिन बाद टार्जन एलजीयर्स पहुंच गये। वहां उन्हें मालूम हुआ कि केप-टाउन के लिये स्टीमर मिलने में अभी दो दिन की देर है। इस बीच के समय को उन्होंने अपने कामों की एक पूरी रिपोर्ट लिखने में बिताया। सब बातें उन्होने साफ साफ ब्योरेवार लिख दीं, पर रोकफ से जो कागज पाया था वह उन्होंने उसमें नत्थी न किया। उनकी हिम्मत न हुई कि उसे अपने कब्जे से बाहर करें, जब तक कि उन्हें हुक्म न मिले कि उसे फलाने को दे दो या स्वयं पेरिस ले के आओ।

दो दिन बाद जब टार्जन स्टीमर पर चढ़े तो उस समय ऊपरी डेक पर खड़े दो आदमी गौर से उनकी तरफ देख रहे थे। दोनों अच्छे कपड़े पहिने हुये थे और दोनों के मूंछ दाढ़ी के बाल एकदम साफ थे। उनमें से जो लंबा था उसके बाल जरा भूरे थे, पर भौंहें काली थीं। बाद में दिन के वक्त डेक पर टार्जन का और उन दोनों का अकस्मात सामना पड़ गया तो तुरत ही एक ने दूसरे का ध्यान किसी दूसरी चीज की तरफ फेर दिया और दोनों घूम के दूसरी तरफ चले गये। टार्जन उन दोनों का चेहरा मोहरा और चाल ढाल न देख सके और न उस ओर उन्होंने ध्यान ही दिया।

जैसा कि उनको हुक्म मिला था, यहां जहाज में उन्होंने अपना

असली नाम नहीं प्रगट किया था बल्कि नकली नाम से—लंदन के जान कैल्डवेल—के नाम से सफर कर रहे थे। उनको ऐसा हुक्म क्यों मिला और केप-टाउन में उन्हें क्या काम करना होगा, यह उनकी समझ में न आ रहा था।

उन्होंने मन में सोचा, "चलो अच्छा हुआ! किसी तरह रोकफ से तो छुट्टी मिली। उसने मुझे बड़ा तंग किया। वह सफाई से नहीं लड़ता था, चालबाजी से काम करता था और मुझे बराबर शक बना रहता था कि न जाने अबकी किस ढंग से उसका वार मुझ पर पड़ेगा। उसके साथ लड़ने में मुझे ऐसा जान पड़ता था जैसे शेर, हाथी और सांप, सभों ने एक राय कर ली हो और सब एक साथ मुझ पर वार करना चाहते हों, उस समय मेरी समझ में न आता था कि अब तीनों में से कौन वार करेगा। यही हाल रोकफ का था। जानवरों से लड़ने में मैं उतना नहीं घबड़ाता जितना आदमियों से मुझे सावधान रहना पड़ता है। जानवर साजिश नहीं करते, वे खुलेआम लड़ते हैं। आदमी तो धोखा दे के वार करता है।"

उस रोज रात को टार्जन जब खाना खाने बैठे तो उन्हें कप्तान की बांई ओर एक युवती के बगल में बैठना पड़ा। कप्तान ने उन दोनों का परिचय करा दिया और युवती का नाम बताया "मिस स्ट्रांग।"

कौन मिस स्ट्रांग, यह नाम तो पहिले सुना है! कहीं सुना है जरूर! टार्जन सोचने लगे। यकायक उस युवती की मां ने उसे

"हेजेज" के नाम से पुकारा, सुनते ही वे चौंक पड़े, साथ ही पुरानी स्मृतियें तेजी से उनके मस्तिष्क में चक्कर मारने लगीं।

हेजेल स्ट्रांग! ठीक है, यही नाम है। इसी नाम की युवती को सुन्दरी जेन पोर्टर उस समय एक पत्र लिख रही थी, जिस पत्र ने पहिले पहिल उनके हृदय में प्रेम पैदा किया था। वह दिन अब भी कैसा स्पष्ट याद आ रहा है। वह अपने पिता की कोठरी के बाहर अन्धेरे में खिड़की के नीचे छिपे थे, और भीतर खिड़की के पास कुर्सी पर बैठी टेबुल को सामने रक्खे जेन पोर्टर पत्र लिख रही थी। कितनी रात तक वह पत्र लिखती रही—और कितनी देर तक वे बाहर उस पत्र के खतम होने की राह देखते बैठे रहे। अगर जेन पोर्टर को मालूम होता कि उनके इतने पास एक भयानक जानवर बैठा है तो वह कितना डरती।

यही जेन पोर्टर की दोस्त हेज़ेल स्ट्रांग है!!

बारहवां बयान

पिछली बातें

कुछ महीने की एक घटना का हाल सुनाने के लिये हम पाठकों को उत्तरी विजकोंजिन के एक छोटे से स्टेशन पर ले चलते हैं। जंगल में लगी हुई आग का धूंआं हवा के साथ बहता हुआ स्टेशन तक आया हुआ है और उससे घिरे हुये छः आदमियों का एक छोटा सा झुंड खड़ा हुआ उस गाड़ी के आने की राह देख रहा है जो उन्हें दक्षिण पहुंचावेगी।

पीठ के पीछे हाथ किये हुये और आगे पीछे बार बार चक्कर लगाते हुये एक तरफ प्रोफेसर आरकिमेडिस क्यू. पोर्टर हैं और उनसे थोड़ी दूर पर उनके सच्चे साथी और सेक्रेटरी मि सैमुयेल टी. फिलैंडर खड़े हुये ध्यान से अपने दोस्त की चेहल कदमी को देख रहे हैं। पिछली कुछ मिनटों में दो बार पागल की तरह बहकते हुये प्रोफेसर साहब रेल की लाइन की तरफ बढ़ गये थे, और दोनों ही बार उनके सेक्रेटरी साहब उन्हें पकड़ के ले आये थे।

एक बगल खड़ी हुई प्रोफेसर की लड़की जेन पोर्टर विलियम सेसिल क्लेटन और जंगल के राजा टार्जन से बात कर रही है। थोड़ी देर पहिले वेटिंग-रूम के अन्दर प्रेम का प्रदर्शन और साथ साथ भारी स्वार्थ का त्याग हो चुका है और उसने इन तीनों में से दो के दिल को हमेशा के लिये चकनाचूर कर दिया है, पर क्लेटन को इसका पता न था।

इन सभों के पीछे एसमेरेल्डा थी, जो इस बात से बड़ी प्रसन्न थी कि अब उसे घर जाने की छुट्टी मिल रही है। आते हुये इंजन और साथ की गाड़ी को देख के उसका कलेजा उछल रहा था।

गाड़ी को आती देख के लोगों ने असबाब सम्हाला। यकायक क्लेटन ने चिल्ला के कहा, "अरे मैं अपना कोट तो वेटिंग रूम में ही भूल आया। जरा लेता आऊं!" यह कहके क्लेटन वेटिंग रूम की तरफ लपके।

टार्जन ने हाथ बढ़ा के कहा "बिदा जेन! ईश्वर तुम्हें प्रसन्न रक्खे।"

जेन कमजोर आवाज में बोली, "बिदा। मुझे भूल जाने का

उद्योग करना—नहीं,—भूलना नहीं–तुम मुझे भूल जाओ यह मुझसे सहन न होगा !"

टार्जन बोले, "नहीं, वैसा होने की आशा नहीं है। मैं ईश्वर से मनाता हूं कि तुम्हें भूल जाऊं, पर इस जीवन में भूल सकूंगा या नहीं, यह नहीं कह सकता। भूल जाना तो अच्छा था, उस अवस्था में जन्म भर दुःख और पश्चात्ताप का कांटा मेरे हृदय में गड़ता न रहता। अस्तु, ईश्वर की मरजी ! तुम सुखी और प्रसन्न रहोगी इसे देख और समझ मैं भी सुखी होने की चेष्टा करूंगा। मैं अब मोटर ही से न्यूयार्क चला जाता हूं। क्लेटन से मिलने की मेरी हिम्मत नहीं होती। यद्यपि मैं उसे दोस्त की दृष्टि से देखता हूं, बराबर दोस्त की दृष्टि से देखता रहूँगा, तब भी कभी कभी मैं भूल जाता हूं कि मैं सभ्य आदमी हूं और मुझे खयाल आ जाता है कि वही–क्लेटन ही–मेरे और मेरे सुखमय भविष्य के बीच में एक बाधा के तौर से हैं उस समय मेरे हृदय में ऐसे भाव पैदा होते हैं जो क्लेटन के लिये कष्टप्रद होंगे।"

क्लेटन वेटिंग रूम में झुक कर जब अपना कोट उठाने लगे तो उन्हे जमीन पर गिरा हुआ एक तार का फार्म दिखाई दिया। उन्होंने समझा कि कोई जल्दी में इसे यहां गिरा गया है। उन्होंने उठा के एक लापरवाही की निगाह उसकी इबारत पर डाली और तब वे यकायक चौंक उठे। वे अपना कोट, स्टेशन पर खड़ी गाड़ी, सभी को भूल गये। कांपते दिल से उन्होंने उसे दो दफे, तीन दफे, पढ़ा––तब वे उसके भयानक अर्थ को समझ सके।

क्लेटन ने कोई उत्तर न दिया। वे सोचने लगे कि किन शब्दों में अपने ऊपर आई हुई इस आफत का हाल इस युवती को सुनावें। खबर का इस पर क्या असर होगा! क्या उसे सुन के भी वह उनसे विवाह करना स्वीकार करेगी? क्या उसे बिना खिताब और रतबे के सादी मिसेज क्लेटन बनना स्वीकार होगा। क्या वह उतना बड़ा स्वार्थत्याग कर सकेगी, और फिर टार्जन मन में क्या सोचते होंगे। क्या वे अपना हक मांगने आवेंगे! अवश्य ही वे इस टेलिग्राम को पढ़ चुके होंगे। जब उन्होंने कहा कि "मैं नहीं जानता मेरे पिता कौन थे" तो वे अवश्य ही इसके मतलब को जानते होंगे। तो फिर उन्होंने उसी समय बताया क्यों नहीं, यह क्यों न कहा कि मैं ही असल लार्ड ग्रस्टोक हूं। उन्होंने यह क्यों कहा कि कोला मेरी मां थी! क्या इस लिये कि वे जेन पोर्टर को दुखी नहीं किया चाहते थे। वे उसके भविष्य की बात सोच रहे थे!!

इसके अतिरिक्त और हो ही क्या सकता है। जब उन्होंने जान बूझ के इस टेलिग्राम की बात को स्वीकार नहीं किया तो इसका इसके सिवाय और क्या अर्थ होगा कि वे अपना अधिकार लेना नहीं चाहते! अगर उन्होंने ऐसा किया तो उनको -विलियम सेसिल क्लेटन को—इस बात का क्या हक है कि वे इस अद्भुत आदमी की इच्छाओं को, उसके स्वार्थत्याग को हानि पहुंचावें, उसको नष्ट करें। जब टार्जन जेन पोर्टर के सुख को नष्ट नहीं करना चाहते तो क्यों वे ही उस सुख में कांटा बनें, उसके स्वार्थ को आघात पहुंचावें, उस युवती के दिल को दुखावें जो अपना सारा भविष्य उनके ऊपर छोड़ रही है!

क्लेटन देर तक ऐसी बातें सोचते रहे और धीरे धीरे उनका पहिले का वह विचार कि सच्ची बात को प्रगट कर के अपना खिताब और रुतबा, धन और दौलत उस आदमी को सौंप देना चाहिये जो उसका सच्चा अधिकारी है, बदलने लगा। जितने सद् विचार पहिले उनके दिल में उठे थे–तरह तरह की स्वार्थपूर्ण युक्तियों से उन्होंने सभों को तोड़ डाला। उन्होंने किसी से भी उस बात का जिक्र न किया पर सफर के अंत तक और बाद के कई दिनों तक वे उदास से अवश्य बने रहे। उनको इस बात का संदेह बराबर रहा कि शायद कभी टार्जन अपने इरादे को बदल दें और आकर अपनी जायदाद और अपने खिताब और रुतबे को मांग न बैठें।

बाल्टीमोर पहुंचने के कई दिन बाद क्लेटन ने जेन पोर्टर से विवाह की बात छेड़ी और कहा कि जल्दी यह काम हो जाता तो अच्छा था।

जेन पोर्टर ने पूछा, "जल्दी हो जाता इससे क्या मतलब ?"

क्लेटन बोले, "यही पांच सात रोज के अन्दर ! मैं लंदन जाना चाहता हूँ। मेरा इरादा था तुम्हें भी साथ लेता चलूं।"

जेन पोर्टर ने कहा, "इतनी जल्दी कैसे हो सकता है। तैयारी होते होते महीना भर तो लगेगा ही।"

क्लेटन के जाने का समाचार जान जेनपोर्टर एक प्रकार से प्रसन्न हुई। उसने सोचा इससे विवाह कुछ दिन और टलेगा और उसे निश्चिन्ती से कुछ दिन बिताने का मौका मिलेगा। वह वादा कर चुकी थी, वह तो उसे पूरा करना ही होगा, उसे पूरा करने को

वह तैयार थी ही, पर बीच में कुछ अवसर मिल जाय तो क्या बुरा है!! क्रेटन के जवाब ने उसका उत्साह कुछ कम कर दिया।

वे बोले, "खैर, जैसा तुम कहती हो वैसा ही सही, महीना भर बाद ही सही। मैं महीने भर के लिये अपना जाना रोक देता हूं। फिर हम तुम संग ही चलेंगे।"

महीना भर जब प्रायः समाप्त होने को आया तो जेन पोर्टर एक और बहाना निकाल बैठी और इससे विवाह का विचार फिर टालना पड़ा। अन्त में हताश हो के, तरह तरह के सन्देहों को मन में लिये हुये क्रेटन अकेले ही लंदन चले गये।

लंदन से उन्होंने कई पत्र भेजे, प्रायः सभी का उत्तर जेन पोर्टर ने दिया, लेकिन उन उत्तरों से भी हतोत्साह क्रेटन की आशा हरी न हुई। अन्त में उन्होंने सीधे प्रोफेसर पोर्टर को पत्र लिखा और अपने काम में उनकी मदद चाही। मि. पोर्टर सदा से इन दोनों के विवाह के पक्षपाती थे। क्रेटन एक तरह से उनके दिल के अनुसार आदमी थे और बुड्ढे और पुराने खयाल के होने के कारण उनके खिताब और रुतबे को भी वे अनादर की दृष्टि से न देखते थे। जेन पोर्टर की दृष्टि में क्रेटन का टाइटिल बिल्कुल मूल्यहीन था पर उसके पिता की निगाह में वह बड़ा ही कीमती था।

क्रेटन ने प्रोफेसर पोर्टर को जो पत्र लिखा था उसमें आग्रह किया था कि वे अपने सब घर वालों के साथ कुछ दिन के लिये लंदन चले आवें और वहीं रहें। उनका खयाल था कि अपना घर छोड़ के जेन पोर्टर जब लंदन आ जायगी तो उसका अपने घर का प्रेम बहुत

कुछ कम हो जायगा और तब वह बहुत दिनों से जो टालमटोल कर रही है उसे बन्द करके उनके साथ विवाह करना स्वीकार कर लेगी। उन्होंने प्रोफेसर साहब को यह बात साफ साफ लिख दी।

जिस रोज प्रोफेसर पोर्टर ने क्लेटन का यह पत्र पाया उसी रोज उन्होंने सब को सूचना दे दी कि अगले सप्ताह लंदन चलना होगा।

लंदन पहुंच के भी जेन पोर्टर की वही अवस्था रही जो बाल्टीमोर में थी। वहां भी वह एक न एक बहाना करके दिन टालती गई। उसी समय उसकी मुलाकात लार्ड टेनिंगटन से हुई जो प्रोफेसर पोर्टर के पुराने दोस्तों में से थे। लार्ड टेनिंगटन अपने स्टीमर में एक लंबे सफर में जा रहे थे और उन्होंने प्रोफेसर पोर्टर, उनकी लड़की, क्लेटन, एसमेरेल्डा, सब को अपने साथ चलने का न्योता दिया। सब से ज्यादा खुशी इस न्योते से जेन पोर्टर को हुई। उसने प्रसन्नता से उसे स्वीकार किया और क्लेटन से कह दिया कि "जब तक मैं लौट के लंदन न आऊं, मैं विवाह नहीं कर सकती। लौट के आने पर फिर मैं इनकार न करूंगी।" क्लेटन को यह बहुत बुरा मालूम हुआ, क्यों कि वह लार्ड टेनिंगटन का पूरा प्रोग्राम जानते थे और उन्हें मालूम था कि इस सफर में एक वर्ष से कम न लगेगा। हर एक देखने लायक स्थान पर ये लोग रुकेंगे, उसे देखेंगे और तब आगे बढ़ेंगे पर लाचार हो कर जेन पोर्टर की बात उन्हें माननी ही पड़ी।

लार्ड टेनिंगटन का इरादा था कि मेडिटरेनियन समुद्र से होते हुये और लाल समुद्र को पार करते हुये भारतीय महासागर चला जाय और वहां से अफ्रिका की पूर्वीय किनारे की सैल करते हुये

और उसका चक्कर लगाते हुये लौट आया जाय। सभों ने उनकी इस राय को पसन्द किया।

उसके कई रोज बाद दो जहाज एक दूसरे की बगल से होकर जिब्राल्टर के पास से निकले। उनमें जो छोटा था वह एक सफेद रंग का सुन्दर स्टीमर था और पूरब की ओर जा रहा था। उसके डेक पर बैठी हुई एक सुन्दर युवती भरी हुई आंखों से अपने गले में पड़े एक हीरे के लाकेट को देख रही थी और साथ ही साथ घने अफ्रिका के जंगलों की कुछ सुहावनी और मनोमोहक घटनाओं को याद करती जाती थी। वह सोच रही थी कि जिस अद्भुत आदमी ने उसे अपनी यह यादगारी दी है वह इस समय कहां होगा!

दूसरा पैसेंजर स्टीमर था। वह भी पूर्व ही की ओर जा रहा था। उसके डेक पर बैठा एक कद्दावर जवान अपने पास बैठी युवती से धीरे धीरे बात कर रहा था। उसकी निगाह भी छोटे स्टीमर पर पड़ी थी और वह सोच रहा था कि यह किसका है और किधर जा रहा है।

तेज चलने वाला स्टीमर जब सामने से निकल गया तो उन दोनों की बातों का सिलसिला फिर शुरू हुआ। जवान बोला, "हां मुझे अमेरिका बड़ा अच्छा मालूम होता है, और इसका कारण शायद यह है कि वहां के रहने वाले मुझे पसन्द हैं। मेरी वहां बहुत से लोगों से जान पहिचान हो गई है। खास आपके शहर ही में मेरे एक दोस्त हैं—प्रोफेसर पोर्टर और उनकी लड़की मिस पोर्टर! दोनों से मेरी यथेष्ट घनिष्ठता है।"

मिस स्ट्रांग आश्चर्य से बोलीं, "मिस पोर्टर! क्या आपका मतलब जेन पोर्टर से है! क्यों, आपकी जान पहिचान उनसे कैसे हुई! वे तो मेरी बड़ी पुरानी दोस्त हैं। हम लोग एक दूसरी को वर्षों से जानती हैं!"

टार्जन मुसकुराते हुये बोले, "अच्छा! मुझे नहीं मालूम था।"

मिस स्ट्रांग फिर बोलीं, "हम लोगों में लड़कपन से ही दोस्ती है और आपस का वर्ताव बिल्कुल बहिनों का सा है। दुःख यही है कि अब हम लोगों की मित्रता में बाधा पड़ जायगी।"

टार्जन बोले, "क्यों, बाधा क्यों पड़ जायगी! अच्छा मैं समझा। आपका मतलब शायद यह है कि अब मिस जेन पोर्टर का विवाह हो जाने से उन्हें लंदन ही रहना होगा और आपसे उनसे ज्यादा भेंट न हो सकेगी।"

युवती सिर हिला के बोली, "हां, और सब से विचित्र बात तो यह है कि वह जिस आदमी से प्रेम करती है उससे उसका विवाह नहीं हो रहा है। वह एक दूसरे आदमी से कर्तव्य के खयाल से विवाह कर रही है। कैसी घृणित बात है! कर्तव्य के खयाल से ऐसे आदमी से विवाह करना जिससे बिल्कुल प्रेम न हो! मुझे तो बड़ा ही बुरा मालूम होता है। मैंने तो उसे साफ साफ कह दिया है कि न तो मुझे यह विवाह पसंद है और न मैं इसमें शामिल ही होऊंगी। मुझे न्योता आया था। रिश्तेदारों के अतिरिक्त केवल मैं ही अकेली ऐसी थी जिसे उन्होंने विवाह में बुलाया था, पर मैंने इनकार लिख दिया। न जाने जेन पोर्टर को कर्तव्य की कैसी धुन समा गई है!

वह निश्चय कर बैठी है कि यह विवाह कर लेना ही इस समय उसके लिये एक आदर्शपूर्ण रास्ता रह गया है और यह विवाह तभी रुकेगा जब कि इसे या तो लार्ड ग्रेस्टोक स्वयं रोकेंगे—जिनसे वह विवाह कर रही है—या मौत इसमें विघ्न डालेगी !"

टार्जन बोले, "मुझे यह सब सुन के खेद होता है ।"

युवती बोली, "और मुझे उस आदमी के भाग्य पर दुःख होता है जिससे बिचारी जेन पोर्टर प्रेम करती है । मुझ से कभी उसकी मुलाकात तो नहीं हुई पर मैंने उन्हीं लोगों से सुना कि वह अफ्रिका के एक भयावने जंगल में पैदा हुआ था जहां बनमानुसों और 'एप' बन्दरों ने उसे पाला । वहीं वह बढ़ा और बड़ा हुआ । पहिले पहिल अपने ऐसे आदमियों पर उसकी निगाह तब पड़ी जब प्रोफेसर पोर्टर, उनकी लड़की और उनके साथी उस जंगल में पहुंचे जिसमें वह रहता था । उसी की कोठरी में वे सब टिके और उसने कई बार जंगली जानवरों और वहां के खूंखार बाशिन्दों से उन्हें बचाया । अन्त में सब से बढ़िया बात यह हुई कि वह जेन पोर्टर पर आशिक हो गया और जेन भी उसे चाहने लगी । वह स्वयं यह नहीं जानती थी कि मैं उससे प्रेम करने लगी हूं । जब वह लार्ड ग्रेस्टोक से विवाह करने का वादा कर चुकी तब उसे पता लगा ।"

टार्जन बोले, "वाह, खूब ।" वे मन ही मन सोच रहे थे कि किसी तरह बातों का सिलसिला बदलना चाहिये । जेन पोर्टर के बारे में जब बातें हो रही थीं तब तो वे बड़ी दिलचस्पी से सुन रहे थे, पर अपने बारे में बातें सुन वे घबड़ा गये थे और उनके समझ में नहीं

सोच रहा था कि क्या जवाब दें। उन्हें ज्यादा सोचने का तरद्दुद न करना पड़ा। मिस स्ट्रांग की मां उसी समय वहां पहुंच गईं और बातों का सिलसिला बदल गया।

बाद के कई दिन तक कोई विशेष घटना न हुई। समुद्र शान्त और आकाश साफ रहा और जहाज बिना रुके दक्षिण की ओर बढ़ता गया। टार्जन के समय का बहुत सा हिस्सा मिस स्ट्रांग और उनकी मां के साथ बीतता था और वे लोग ताश खेलने, डेक पर घूमने फिरने या बातें करते रहते थे।

एक दिन टार्जन ने मिस स्ट्रांग को एक नये आदमी के साथ बातें करते पाया जिसे उन्होंने पहिले कभी नहीं देखा था। टार्जन के पास पहुंचते ही वह आदमी विदा हो के जाने लगा। मिस स्ट्रांग ने उसे रोकते हुये कहा—

"ठहरिये मानश्यूर थूरन, मैं मि. कैल्डवेल के साथ आपकी मुलाकात करा दूं। हम लोग एक ही जहाज के यात्री हैं इससे हमें एक दूसरे को जानना चाहिये।"

दोनों आदमियों ने हाथ मिलाया। टार्जन ने जब मानश्यूर थूरन की आंखों की तरफ निगाह डाली तो उन्हें चेहरा कुछ पहिचाना हुआ सा जान पड़ा।

वे बोले, "अवश्य ही मुझे मानश्यूर थूरन के साथ मिलने का सौभाग्य पहिले कभी प्राप्त हो चुका है। कब और किस जगह यह मुझे स्मरण नहीं।"

मानश्यूर थूरन कुछ घबड़ाये से जान पड़े। वे बोले, "शायद

ऐसा हुआ हो, मानश्यूर, अक्सर किसी बिना जान पहिचान के आदमी से मिलने पर भी ऐसा भ्रम हो जाया करता है।"

युवती बोली, "मानश्यूर थूरन मुझे जहाज के चलाने के बारे में बहुत सी दिलचस्प बातें समझा रहे हैं।"

बाद की बातों पर टार्जन ने बहुत कम ध्यान दिया। वे यह सोचने का उद्योग कर रहे थे कि इस आदमी से पहिले उनकी कब मुलाकात हुई है। मुलाकात जरूर हुई है इसका उनको निश्चय था। थोड़ी देर बाद धूप वहां पहुंच गई जहां डेक पर खड़े तीनों बातें कर रहे थे। युवती ने थूरन से कुर्सी उठा के छाये में कर देने को कहा। थूरन ने कुर्सी जब उठाई तो टार्जन की तेज निगाहों ने देखा कि वे अपनी बाईं कलाई पर ज्यादा जोर नहीं देते। वह कुछ कमजोर मालूम होती है। साथ ही टार्जन के दिमाग में बिजली की तरह बहुत से खयाल घूम गये और वे उस अजनबी को पहिचान गये।

थूरन जाने का कोई बहाना ढूंढ़ रहे थे। कुर्सी हटाने पर क्षण भर के लिये बातों का सिलसिला जो रुका तो उन्होंने सिर झुका के युवती को अभिवादन किया और टार्जन से भी विदा मांग जाने के लिये घूमे। साथ ही टार्जन बोले—

"क्षमा कीजियेगा। अगर मिस स्ट्रांग आज्ञा दें तो मैं दो बातें आप से कर लूं।"

थूरन कुछ घबड़ाहट में जान पड़े। दोनों आदमी जब युवती की निगाहों के बाहर हो गये तो टार्जन ने थूरन के कंधे पर हाथ रक्खा और बोले, "क्यों रोकफ, यहां किस मतलब से?"

रोकफ चिड़चिड़ी आवाज में बोला, "तुम्हारे कहे मुताबिक मैं फ्रांस के बाहर जा रहा हूँ।"

टार्जन बोले, "सो तो मैं भी देख रहा हूं। पर मैं तुम्हारे काइयेंपने से इतनी अच्छी तरह परिचित हूं कि मुझे विश्वास नहीं होता कि मेरा तुम्हारा एक साथ ही इस जहाज पर होना केवल आकस्मिक घटना है। फिर तुम्हारे सूरत बदले हुये होने से मेरा संदेह और पुष्ट होता है।"

रोकफ क्रोध से बोला, "संदेह करने से ही क्या होगा। यह अंग्रेजी जहाज है। इस पर चढ़ने का जैसा तुम्हारा हक है वैसा ही मेरा भी है। तुम झूठे नाम से सफर कर रहे हो, इससे तुम्हारी बनिस्वत मैं इस जहाज पर ज्यादा महफूज हूं।"

टार्जन बोले, "खैर मैं उस बारे में बहस करना नहीं चाहता। मेरा कहना केवल इतना है कि तुम मिस स्ट्रांग से दूर रहना। वह साफ और भली औरत है।"

रोकफ का चेहरा लाल हो गया, पर उसे बोलने का मौका न दे टार्जन बोले, "अगर तुमने मेरी बात न मानी तो इसमें संदेह न समझना कि मैं तुम्हें जहाज के नीचे फेंक दूँगा।" यह कह के बिना उसकी तरफ देखे टार्जन आगे बढ़ गये। क्रोध से भरा रोकफ वहीं खड़ा रह गया।

टार्जन की कई दिनों तक फिर रोकफ से मुलाकात न हुई। पर इस बीच में रोकफ चुपचाप न था। टार्जन की धमकी ने उसे आपे से बाहर कर दिया था। आज अपने कमरे में पालविच के साथ राय

करता हुआ वह बदला लेने की तरह तरह की तर्कीबें सोच रहा था।

वह क्रोध भरी आवाज में बोला, "अगर मुझे निश्चय हो जाय कि वे कागजात उसके बदन पर नहीं हैं तो मैं आज ही उसे जहाज के नीचे ढकेल दूँ। पर उस बात का शक होते हुये मैं ऐसी कार्रवाई नहीं कर सकता। अगर वे कागज भी चले गये तो मैं कहीं का न रहूंगा। तुम ऐसे डरपोक हो, पालविच, कि तुम से यह भी नहीं होता कि तुम उसके रहने के कमरे की तलाशी तो ले लो और देख लो कि वे कागजात वहां हैं या नहीं!"

पालविच मुसकुरा के कहने लगा, "तुम तो मुझ से ज्यादा हिम्मत और बुद्धि रखने की डींग मारते हो न, मेरे दोस्त! क्यों नहीं तुम्हीं कैल्डवेल के कमरे की एक बार तलाशी ले लेते।"

दो घन्टे बाद भाग्य उन पर सदय हुआ। पालविच बराबर निगाह रक्खा करता था। उसने देखा कि टार्जन अपने कमरे में बिना ताला बन्द किये डेक पर चले गये हैं। पांच मिनट बाद रोकफ तो ऐसी जगह बैठ गया जहां से टार्जन को आते देखते ही वह इशारा कर सके और पालविच भीतर उनके असबाब को खोजने लगा।

निराश हो के वह लौटने ही वाला था कि उसकी निगाह एक कोट पर पड़ी जिसे टार्जन अभी उतार के गये थे। उसने जेब टटोले और क्षण भर बाद उसके हाथ में एक बड़ा सा लिफाफा आ गया। उसने खोल के भीतर के कागजों की जल्दी में जांच की और उसके चेहरे पर प्रसन्नता दिखलाई देने लगी।

जब पालविच उस कमरे के बाहर हुआ तो याद में उसे तुरन्त देख के भी टार्जन नहीं कह सकते थे कि उनकी कोई चीज छूई गई है। ऐसी होशियारी से पालविच ने सब चीजों को ज्यों का त्यों कर दिया था। पालविच इन कामों में पूरा होशियार था।

अपने कमरे में जाके पालविच ने लिफाफा जब रोकफ के हाथ में दिया तो उसने जहाज के एक नौकर को बुलाया और उसे शराब की एक बोतल लाने का हुक्म दिया। तब वह मुसकुराता हुआ बोला, "हमें खुशी मनानी चाहिये, क्यों एलेक्सिस !"

एलेक्सिस बोला, "भाग्य ही से आज हमें यह मिल गया निकोलस ! अवश्य वह बराबर इसे अपने साथ रखता था। आज कोट उतारते और बदलते वक्त वह जल्दी में इसे भूल गया और यह मेरे हाथ आ गया। जब उसे इसके चोरी जाने का हाल मालूम होगा तो वह अपने आपे में न रहेगा और तुरन्त समझेगा कि तुमने इसे चुरा लिया है, क्योंकि वह तुम्हें पहिचान चुका है।"

रोकफ मुंह बिचका के बोला, "कोई हर्ज नहीं, मैं ऐसा अच्छा इन्तजाम करूंगा कि उसका मुंह हमेशा के लिये बन्द हो जायगा।"

उस रोज रात होने पर जब मिस स्ट्रांग नीचे अपने कमरे में चली गईं तो टार्जन ऊपर डेक ही पर रह गये। उनकी आदत थी कि वे रात के समय डेक पर रेलिंग के ऊपर झुक के समुद्र की शोभा देखा करते थे। अकसर वे घन्टे घन्टे भर खड़े रह जाते थे। इस बार भी उन्होंने वैसा ही किया। वे रेलिंग पर झुके खड़े रह गये, और वे

आंखें जो उनकी एक एक चाल पर निगाह रखती थीं, वे भी उनकी इस आदत को जानती थीं।

आज भी वे आंखें उन पर से हटी न थीं। धीरे धीरे डेक पर घूमने वाले नीचे अपने कमरों में जाने लगे और वहां सन्नाटा होने लगा। रात साफ थी, पर आकाश में चन्द्रदेव न थे, और डेक पर की चीजें धुन्धली धुन्धली दिखाई देती थीं।

कैबिन से निकल के दो आदमी अन्धेरे में टार्जन की तरफ बढ़े। दोनों बड़ा सम्हाल के कदम रख रहे थे, इससे उनके पांव की आहट प्रायः बिल्कुल नहीं हो रही थी। जो हुई भी उसे समुद्र की लहरों के जहाज में टकराने और इञ्जिनों के चलने की आवाज ने दबा रक्खा।

धीरे धीरे दोनों नजदीक आ गये। पास में क्षण भर के लिये रुक के एक ने हाथ उठाया और उससे तीन दफे इशारा किया। जैसे वे एक—दो—तीन गिनते हों, और उछल के वे टार्जन की पीठ पर पहुंच गये, दोनों ने उनका एक एक पैर पकड़ा और इसके पहिले कि उनको घूमने का मौका मिले, इसके पहिले कि वे अपने बचाव का कोई उपाय कर सकें, वे उठा के रेलिंग के नीचे भूमध्यसागर में फेंक दिये गये।

हेजेल स्ट्रांग अपनी कोठरी की शीशे की खिड़की में से समुद्र का दृश्य देख रही थी। यकायक उसने देखा कि कोई बड़ी सी चीज ऊपर से आई और आंखों के सामने से होती हुई नीचे चली गई। वह इतनी शीघ्रता से पानी में चली गई कि उसे शक ही रह गया कि यह है क्या—कोई आदमी तो नहीं है! उसने कान लगा के सुना कि

ऊपर से कोई आवाज तो नहीं आती, कोई यह तो नहीं कह रहा है "आदमी गिरा !" पर ऐसी कोई आवाज़ न आई। ऊपर डेक पर एक दम सन्नाटा था, नीचे समुद्र एक दम शान्त था !

युवती ने सोचा कि जहाज के किसी नौकर ने ऊपर से कूड़ा फेंका होगा। क्षण भर ठहर के वह अपने बिछौने पर चली गई।

तेरहवां बयान

लेडी एलिस का अन्त

दूसरे रोज सुबह जब सब लोग खाना खाने बैठे और टार्जन की कुर्सी खाली रही तो मिस स्ट्रांग को कुछ आश्चर्य हुआ। टार्जन की आदत थी कि मिस स्ट्रांग और उनकी मां के आसरे रुके रहते थे और उन्हीं के साथ खाना खाते थे। बाद में वह जब डेक पर जाके बैठी तो मानश्यूर थूरन घूमते हुये आ गये और खड़े होके बातें करने लगे। वे बड़े प्रसन्न मालूम होते थे और बड़ा हंस हंस के बातें कर रहे थे।

मिस स्ट्रांग मन में सोचने लगीं कि ये कितने सभ्य और खुशदिल आदमी हैं।

पर आज हेज़ेल स्ट्रांग का मन नहीं लग रहा था। शुरू दिन की जान पहिचान से ही जान कैल्डवेल में उसे कुछ ऐसी बात दिखाई दी थी कि वह उन्हें पसन्द करने लग गई थी। उनकी चाल ढाल, उनका बातें करने का ढंग, उनकी दिलचस्पी से भरी अनुभव पूर्ण बातें, सभी उसे अच्छी लगती थीं। खास करके उनकी जान-वरों के विषय की जानकारी बहुत ही अधिक थी। अकसर वे दिल्लगी के ढंग से जंगली जानवरों और सभ्य मनुष्यों की तुलना किया करते थे, और उस तुलना करने के ढंग से जान पड़ता था कि उनको जंगली जानवरों का अनुभव जितना अधिक है, उतना ही कम आदर की दृष्टि से वे सभ्य और शिक्षित मनुष्यों को देखते हैं।

दोपहर के वक्त हेज़ेल स्ट्रांग से थूरन की फिर मुलाकात हुई। यह समझ के कि बातचीत से उसका दिल कुछ बहलेगा मिस स्ट्रांग भिन्न भिन्न विषयों पर उनसे बातें करने लगीं। पर उनका मन रह रह के जान कैल्डवेल की तरफ चला जाता था। किसी प्रकार से उनका दिल इन दो बातों को एक में जोड़ रहा था—जान कैल्डवेल का एक दम गायब रहना और कल रात के वक्त उस भारी चीज़ का शीशे की खिड़की के आगे से होके नीचे गिरना। आखिर उनसे रहा न गया। वे पूछ बैठीं, "क्या आपने मि. कैल्डवेल को देखा है?"

थूरन सिर हिला के बोले, "नहीं, क्यों?"

मिस स्ट्रांग बोलीं, "आज वे सबेरे खाने के वक्त आपनी जगह पर नहीं थे। न बाद में ही अब तक दिखाई पड़े हैं।"

मानस्यूर थूर्न ने चिन्ता के साथ कहा, "मैंने भी उन्हें नहीं देखा। मुझ से ज्यादा जान पहिचान तो न थी, पर बड़े अच्छे आदमी मालूम होते थे। ऐसा तो नहीं है कि बीमार पड़ गये हों और अपने कमरे से बाहर न निकले हों। ऐसा हो सकता है।"

युवती बोली, "शायद ऐसा हो। पर न जाने क्यों मेरा दिल उनकी तरफ से कुछ चिन्तित हो रहा है। मेरा मन कह रहा है कि उन पर कोई आपत्ति आ गई है। वे जहाज पर नहीं हैं।"

मानस्यूर थूरन जोर से हंस के बोले, "वाह, मिस स्ट्रांग, आपने भी खूब कहा। भला वे चले कहां जायंगे। कई रोज से तो कोई जमीन भी हम लोगों की नजर में नहीं पड़ी है।"

मिस स्ट्रांग बोलीं, "हां सो तो ठीक है। पर मैं अपने दिल की बात आप ही नहीं समझ सकती। अच्छा देखिये मैं उनका पता लगवाती हूँ।" यह कह के उन्होंने पास से जाते हुए जहाज के एक नौकर को इशारे से बुलाया।

थूरन मन ही मन बोले, "उनका पता अब लग चुका!" प्रगट में उन्होंने कहा, "हां हां, जरूर।"

खानसामा को बुला के मिस स्ट्रांग बोलीं, "कृपा कर मि. कैल्डवेल का पता लगाइये, वे कहां हैं, और उनसे कहिये कि उनको न देख के उनके दोस्त चिन्तित हो रहे हैं।"

थूरन मुसकुरा के बोले, "मि. कैल्डवेल की आपको बड़ी फिक्र है।"

युवती बोली, "हां, इसलिये कि वे बड़े ही सभ्य और सज्जन आदमी हैं। मेरी मां भी इन कुछ ही दिनों की मुलाकात में उन्हें बहुत चाहने लग गई हैं। उनके पास रह के ऐसा मालूम होता है जैसे बड़ा भारी सहारा मिल गया हो। कोई भी उनसे जान पहिचान करे, उसका उन पर पक्का विश्वास हो जायगा।"

दो मिनट बाद खानसामा लौट के बोला, "वे अपने कमरे में नहीं हैं, मिस स्ट्रांग, और—और मुझे पता लगा है कि वे रात को अपने बिछौने पर सोये भी नहीं हैं। अच्छा होगा यदि मैं यह समाचार कप्तान को पहुंचा दूं।"

मिस स्ट्रांग ऊंचे स्वर में बोलीं, "जरूर, मैं स्वयं साथ चलती हूं। मैं पहिले ही सोच रही थी कि मामला कुछ गड़बड़ है। मेरा दिल कह रहा था।"

डरी हुई युवती और घबड़ाया हुआ खानसामा दोनों सीधे कप्तान के पास पहुंचे। उसने चिन्ता के साथ दोनों की बातें सुनीं और जब खानसामा ने उसे विश्वास दिलाया कि मैंने समूचा जहाज खोज डाला है, जहां जहां यात्री जाया करते हैं सभी जगहें देख डाली हैं, मि. कैल्डवेल का पता नहीं है—तो कप्तान की फिक्र और भी बढ़ गई।

उसने पूछा, "क्या आपको निश्चय है, मिस स्ट्रांग, कि आपने रात को खिड़की से एक भारी चीज नीचे गिरती देखी थी?"

मिस स्ट्रांग बोलीं, "बिल्कुल शक नहीं है। पर मैं यह नहीं कह सकती कि मैंने जो चीज गिरती देखी वह आदमी का ही शरीर था।

मैंने उसी समय सोचा था कि अगर यह आदमी होगा तो जरूर शोर मचेगा। पर कोई भी आवाज न आई। मैंने समझा किसी ने कूड़ा फेंका होगा। अब अगर मि. कैल्डवेल जहाज पर नहीं पाये जा रहे हैं तो मुझे निश्चय होता है कि रात को मैंने जो चीज गिरती देखी थी वह जरूर मि. कैल्डवेल ही थे !!"

कप्तान ने तुरत आज्ञा दी कि पूरे जहाज की एक सिरे से दूसरे सिरे तक अच्छी तरह तलाशी ली जाय और देखा जाय कि मि. कैल्डवेल जहाज पर हैं या नहीं। मिस स्ट्रांग अपने कमरे में चली गईं और बैठ कर तरह तरह की बातें सोचने लगीं। अब उन्हें याद आने लगा कि इतनी दोस्ती हो जाने पर भी मि. कैल्डवेल ने नाम के अतिरिक्त अपना कोई पता उन्हें न बताया था। केवल यह कहा था कि वे अफ्रिका में पैदा हुये हैं और पेरिस में उन्होंने शिक्षा पाई है। यह इतनी मामूली बात है कि इसके आधार पर कोई पता लगाना असंभव है।

कप्तान ने और बहुत सी बातें पूछीं पर मिस स्ट्रांग कोई जवाब न दे सकीं। जो वे जानती थीं वही उन्होंने बता दिया। अन्त में कप्तान ने पूछा, "क्या वे कभी जहाज पर अपने किसी दुश्मन का जिक्र करते थे ?"

मिस स्ट्रांग ने जवाब दिया, "नहीं, कभी नहीं।"

कप्तान०। क्या उनसे जहाज के और किसी यात्री से भी जान पहिचान थी ?

मिस स्ट्रांग०। बहुत कम लोगों से, और उनसे भी प्रायः

उतनी ही जितनी मुझ से। वे लोगों से ज्यादा बातें न करते थे।"

कप्तान कुछ देर चुप रहा। फिर कुछ रुकावट के साथ बोला, "क्या—क्या वे शराब अधिक पीते थे?"

मिस स्ट्रांग बोलीं, "मेरी समझ में बिल्कुल ही नहीं पीते थे। कम से कम जब मैंने उस शरीर को ऊपर से गिरते देखा उसके आधे घंटे पहिले तक उन्होंने शराब छूई तक न थी। मैं बराबर उनके साथ ऊपर रही थी।"

कप्तान कुछ सोचता हुआ बोला!, "बड़े आश्चर्य की बात है। कुछ समझ में नहीं आता। यह भी नहीं हो सकता कि उनको गश वगैरह आने की बीमारी हो और वे गश में आकर रेलिंग पार कर नीचे समुद्र में गिर पड़े हों। गश भी आता तो वे रेलिंग के भीतर ही गिरते। मेरी समझ में अगर जहाज पर नहीं हैं तो जरूर वे समुद्र में फेंक दिये गये हैं, और चूंकि गिरते समय उन्होंने कोई आवाज न की, या और किसी ने भी शोर न मचाया इससे जान पड़ता है कि वे फेंके जाने के समय मरे हुये थे—किसी ने उनकी हत्या करके उन्हें समुद्र में फेंका।"

बेचारी युवती कांप उठी। उसके मुंह से कोई शब्द न निकला।

करीब घंटे भर बाद सहकारी अफसर जहाज की तलाशी ले के लौटा। उसने आके कहा, "जहाज पर मि. कैल्डवेल नहीं हैं।"

कप्तान ने कहा, "मालूम होता है यह साधारण आकस्मिक घटना नहीं है, मि. ब्रेंटनी, आप स्वयं जाके मि. कैल्डवेल के अस-

बाद की तलाशी लें और इस बात को जानने की चेष्टा करें कि उनके आत्महत्या करने का या दूसरे किसी के द्वारा उनकी हत्या होने का कोई कारण तो नहीं था। पूरी जांच करें और पता लगाने में कोई उद्योग उठा न रक्खें।"

"बहुत अच्छा" कह कर मि. ब्रैंटली अपने काम पर चले गये।

इसके बाद दो रोज तक हेजेल स्ट्रांग इस लायक न रही कि अपनी कोठरी से बाहर निकले और बाद में जब वह डेक पर आई तो लोगों ने देखा कि उसका शरीर पीला पड़ गया है, चेहरा सफेद हो गया है और आंखों के नीचे काले धब्बे दिखाई दे रहे हैं। सोते जागते उठते बैठते, उसे यही मालूम होता था जैसे कोई काली चीज उसकी निगाह के सामने ऊपर से गिरती हुई नीचे समुद्र में जा रही है।

उसके डेक पर आने के थोड़ी देर बाद मानट्यूर थूरन पास आये और बड़ी मीठी आवाज में हाल चाल पूछने लगे। थोड़ी देर बाद वे बोले—

"क्या कहूं, मिस स्ट्रांग, यह इतनी भयानक बात हो गई है कि मेरा तो मन ही सुन के घबड़ा गया है।"

मिस स्ट्रांग बोलीं, "मेरा भी यही हाल है, मैं अपने को दोष दे रही हूं। यदि मैं उसी समय शोर मचा देती तो उनकी जान बच जाती।"

थूरन अफसोस भरी आवाज में बोले, "नहीं आप अपने को व्यर्थ ही दोषी समझ रही हैं। भला आप ऊपर से किसी चीज को

गिरती देख यह कैसे समझ सकती थीं कि यह आदमी होगा। हो सकता था यह कूड़ा ही होता। आपने वही किया जो ऐसे मौके पर लोग करते। फिर अगर आप उसी वक्त शोर भी मचातीं तो कोई फायदा न होता। पहिले तो लोग आपकी बात पर विश्वास न करते। यही कहते कि शक हो गया है। फिर अगर जिद्द करने पर खोजने का इरादा भी करते तो जहाज को रोकने और नावों को समुद्र में उतारते काफी समय बीत जाता और मीलों पीछे उस अनजान स्थान का खोजना भी कठिन होता जहा वह घटना हुई होती। नहीं, आपने जो किया वही बहुत किया। आप ही ने मि० कैल्डवेल का गायब होने का खयाल किया और आप ही ने कप्तान से कह के उन्हें तलाश भी करवाया!"

युवती बेचारी मन ही मन थूरन की आभारी हुई कि उन्होंने ऐसे शब्दों में संतोष दिया। घटना के बाद से वे उसके साथ बहुत ज्यादा समय बिताने लगे थे, और धीरे धीरे हेजल स्ट्रांग उन्हें पसन्द करने लग गई थी। थूरन को किसी तरह मालूम हो गया था कि यह युवती बड़ी मालदार है और इसके पास इसकी निज की बहुत बड़ी सम्पत्ति है। इसी से वे उसके साथ इतना समय बिताने लगे थे। उसके धन ने उनके मुंह में पानी ला दिया था।

पहिले थूरन का इरादा था कि टार्जन के गायब होने बाद जो भी पहिला बन्दरगाह उन्हें मिलेगा उसी पर वे उतर जायंगे, क्योंकि वे केवल टार्जन से अपने कागजात लेने के लिये उस जहाज पर चढ़े

थे। बन्दरगाह से वे गाड़ी पर चढ़ जायंगे और जितनी जल्दी हो सकेगा सेन्टपीटर्सबर्ग के वास्ते रवाना हो जायंगे। पर अब उनके दिमाग में एक नया खयाल चक्कर मारने लगा था, और इस नये खयाल ने पुराने खयाल को ढकेल के एक दम पीछे कर दिया था। वे सोचने लगे कि किसी तर्कीब से उस बड़ी दौलत को हाथ में करना चाहिये जो इस युवती के पास है, फिर यह युवती भी सुन्दरता में किसी से कम नहीं है। क्यों न उद्योग किया जाय कि वह दौलत और उस दौलत का मालिक दोनों हाथ में आ जायं! यह युवती सेन्टपीटर्सबर्ग में तहलका मचा देगी, इसकी सुन्दरता की धूम मच जायगी, और इसकी सुन्दरता और इसके पास की दौलत, दोनों से बड़ा काम चलेगा!

इसी सोच विचार ने थूरन को नजदीक के किसी बन्दरगाह पर उतरने न दिया और वह युवती के साथ केप-टाउन तक चले गये, जहां उसे स्वयं उतरना था। वहां पहुंच के भी वे बिदा न हुये। उन्होंने प्रगट किया कि उन्हें कई जरूरी काम आ गये हैं जिससे वे कई दिन केप-टाउन में ही रहने पर मजबूर होंगे।

हेजेल स्ट्रांग ने पहिले ही उन्हें बता दिया था कि वह केप-टाउन अपने मामा से मिलने जा रही है और यद्यपि यह अभी निश्चय नहीं है वहां कितने दिन लगेंगे, तथापि आश्चर्य नहीं कि वहां महीनों रहना पड़ जाय। यही कारण हुआ कि थूरन को भी केप-टाउन में उतरने का काम निकल आया।

युवती को जब मालूम हुआ कि थूरन भी केप-टाउन में उतरेंगे

थी वह प्रसन्न हुई। उसने सोचा इनका साथ यहां भी हो जायगा और मन बहलेगा। वह बोली, "बड़ी खुशी की बात है कि आप भी यहीं उतर रहे हैं। आशा है हम लोगों के ठिकाने पहुंच जाने पर आपसे मुलाकात होती रहेगी।"

मानस्यूर थूरन ने प्रसन्नता से इस बात का वादा किया। पर जब हेजेल स्ट्रांग की मां को पता लगा तो वह उतनी प्रसन्न न दिखाई दी। एक रोज बात ही बात में वे बोलीं, "न जाने क्यों मानस्यूर थूरन पर मुझे पक्का विश्वास नहीं होता। वे हैं तो देखने में बड़े सज्जन पर जब मैं उनकी आंखों की तरफ देखती हूं तो मुझे जान पड़ता है जैसे उनका हृदय उतना साफ नहीं है।"

हेजेल स्ट्रांग हंस के बोलीं, "तुम तो इसी तरह सच पर शक किया करती हो, मां!"

मिसेज स्ट्रांग बोलीं, "शायद मेरा शक गलत हो, पर कितना अच्छा होता अगर थूरन के बदले मि. कैल्डवेल हमारा साथ देने के लिये यहां होते।"

उनकी लड़की बोली, "तब बात ही क्या थी।"

थूरन बाद में बराबर हेजेल स्ट्रांग के चाचा के यहां आते जाते रहे और धीरे धीरे अपने कामों से वे सभों के प्रिय बन गये। किसी को किसी काम की जरूरत हो, थूरन उस काम को करने को तैयार हैं, किसी के साथ कहीं जाना हो, थूरन साथ जाने को तैयार हैं। कोई काम ऐसा न था जो थूरन से न हो सके। वे एक तरह से लोगों के घर के आदमी, लोगों के लिये जरूरी हो गये। मौका देख के एक

रोज़ उन्होंने मिस स्ट्रांग से विवाह का प्रस्ताव किया ! वह बेचारी चौंक पड़ी। उससे कोई जवाब देते न बन पड़ा।

उसने सोच के कहा, "मैं नहीं जानती थी कि आप मुझे इस दृष्टि से देखते हैं। मैं अब तक आपको दोस्त की निगाह से ही देखती रही। मैं अभी आपको उत्तर न दूंगी। थोड़े दिन तक वैसा ही चलने दीजिये जैसा अब तक चलता रहा है। उस बीच में मैं अपने दिल को जांच लूंगी और देख लूंगी कि वह दोस्ती से बढ़ के और किसी दूसरी निगाह से भी आप को देख सकता है या नहीं, तब मैं आपको बताऊंगी। अभी तक मैं प्रेम दृष्टि से आपको नहीं देखती।"

थूरन बोले, "अच्छी बात है। जैसा आप कहती हैं वैसा ही होगा। मैंने जल्दी की जो अभी ही अपने दिल का भेद आप पर प्रगट कर दिया। पर मैं इतने सच्चे दिल से और इतने गहरे प्रेम से आपको चाहता आ रहा हूं कि मैंने सोचा कि शायद आपका दिल मेरे दिल की बात को जान गया हो, तथापि आप जितना चाहें मैं ठहरने को तैयार हूं।

हेज़ेल कुछ न बोली, मान्श्यूर थूरन कहते गये:—

"पहिली निगाह पड़ते ही मैं आपसे प्रेम करने लग गया हूं; और वह प्रेम देर होने से घटेगा नहीं, बढ़ता जायगा। मुझे विश्वास है कि मेरे ऐसा पवित्र प्रेम अवश्य अपनी पवित्रता का पुरस्कार पावेगा। आप केवल यही बतला दें कि आप किसी दूसरे को तो नहीं चाहतीं। यही जानना मेरे लिये यथेष्ट होगा।"

हेजेल स्ट्रांग बोली, "मैंने अपने जीवन में आज तक किसी से प्रेम नहीं किया है।"

मानस्यूर थूरन संतुष्ट हो गये। रास्ते में लौटते वक्त उन्होंने न जाने कितने तरह के हवाई किले मन में बांधे।

दूसरे रोज एक दूकान से निकलते ही हेजेल स्ट्रांग चौंक पड़ी। उसने देखा सामने जेन पोर्टर खड़ी है।

प्रसन्नता से चिल्ला के वह बोली, "अरे जेन! तुम कहां! क्या आसमान से टपक पड़ी हो! तुम्हें देख के मुझे अपनी ही आंखों का विश्वास नहीं हो रहा है!!"

जेन बोली, "वही सवाल तो मैं तुमसे करने वाली हूं। तुम यहां कहां! मैं तो समझ रही थी कि तुम बाल्टीमोर में होओगी, मेरी हेजेल।" यह कह के जेन पोर्टर ने हेजेल स्ट्रांग के गले में बाहें डाल दीं और बार बार उसका मुंह चूमने लगी।

बातचीत होने पर हेजेल स्ट्रांग को मालूम हुआ कि लार्ड टेनिंगटन का जहाज केप-टाउन में कम से कम एक हफ्ते वास्ते रुका है, और वहां से रवाना हो के अफ्रिका के पश्चिमी किनारे से होता हुआ इंगलैंड चला जायगा। अपने आने का कारण बता के अन्त में जेन बोली, "फिर इंगलैंड जाके मेरा विवाह होगा।"

हेजेल ने पूछा, "क्या अभी विवाह हुआ नहीं?"

जेन पोर्टर बोली, "नहीं, मैं चाहती हूं कि इंगलैंड यहां से कम से कम एक लाख मील दूर हो जाय।"

लार्ड टेनिंगटन के जहाज के यात्रियों और हेजेल स्ट्रांग के घर

के लोगों से भी दोस्ती हो गई और प्रायः रोज साथ का खाना पीना और इधर उधर की सैर होने लगी। मानश्यूर थूरन भी हर एक समय उपस्थित रहते थे और सभी से उन्होंने गहरी जान पहिचान बना ली। खास करके लार्ड टेनिंगटन को उन्होंने अपने ऊपर बहुत ज्यादा मेहरबान बना लिया।

आपस की बातचीत से मानश्यूर थूरन को कई नई बातों का पता लग गया था और अब उनका चतुर दिमाग नये बान्धनू बांधने लगा था। इसी सिलसिले में एक दिन वे लार्ड टेनिंगटन से बोले, "मिस स्ट्रांग ने कृपा कर मुझसे विवाह करना स्वीकार कर लिया है। अमेरिका जाने पर यह बात प्रगट की जायगी। लेकिन आप किसी से एक शब्द भी इस विषय में न कहियेगा।"

लार्ड टेनिंगटन बोले, "वाह, बड़ी खुशी की बात है। बधाई! मैं किसी से इस विषय में कुछ न कहूँगा।"

इतनी बात लार्ड टेनिंगटन को कह के मानश्यूर थूरन चुप हो गये और दूसरे रोज वह मौका आ गया जिसके वास्ते उन्होंने इतनी भूमिका बांधी थी।

मिसेज स्ट्रांग हेजेल और मानश्यूर थूरन लार्ड टेनिंगटन के जहाज पर बैठे हुये थे और मिसेज स्ट्रांग बतला रही थीं कि उन्होंने केपटाउन को कितना पसन्द किया, कितना अभी उनका यहां रहने का इरादा था और किस प्रकार बाल्टीमोर से वकील की चीठी आ जाने से अब उन्हें लाचार होके वहां लौट जाना पड़ेगा।

लार्ड टेनिंगटन ने पूछा, "आप कब रवाना होंगी?"

मिसेज़ स्ट्रांग बोलीं, "अगले सप्ताह में।"

मानश्यूर थूरन बोले, "वाह, मैं भी कैसा भाग्यवान हूं। तब तो आपका मेरा निश्चय संग होगा। मुझे भी एक जरूरी काम आ जाने से अगले सप्ताह रवाना हो जाना है।"

मिसेज़ स्ट्रांग बोलीं, "तब ठीक है, आप ही के साथ हम लोग चलेंगी।" इतना कह के वे मन ही मन सोचने लगीं कि इस आदमी से पिन्ड छूटता तो अच्छा था। न जाने क्यों उन्हें मानश्यूर थूरन पर विश्वास न हो रहा था।

क्षण भर बाद लार्ड टेनिंगटन बोले, "तो एक काम क्यों न किया जाय! मुझे एक बात सूझी है!"

क्लेटन बोले, "अच्छा! आपको एक बात सूझी! वह क्या है? क्या अबकी दक्षिणी ध्रुव की यात्रा करने का इरादा हुआ है?"

लार्ड टेनिंगटन बोले, "देखो क्लेटन, तुम दिल्लगी करते हो। इस यात्रा के शुरू से तुम्हारा ऐसा ही स्वभाव हो रहा है। मेरा दक्षिणी ध्रुव जाने का इरादा नहीं है। मेरा प्रस्ताव यह है कि मिसेज स्ट्रांग, हेज़ेल और अगर चाहें तो मानश्यूर थूरन भी—तीनों मेरे जहाज ही पर चले चलें। मैं इंगलैंड तक उन्हें पहुंचा दूँगा। इसके बाद वे वहां से बाल्टीमोर चली जायंगी। क्यों, कैसी बात कही। ठीक है न?"

क्लेटन बोले, "क्यों नहीं, तुम्हारी सोची बात कभी गलत हो सकती है। मैं नहीं समझता था तुम्हारे में इतनी बुद्धि होगी, टेनिंगटन!"

लार्ड टेनिंगटन बोले, "और आपका जब चलने का इरादा हो तभी हम लोग यहां से चलें, मिसेज स्ट्रांग! अगले सप्ताह जिस रोज भी आप चलना चाहें!"

मिसेज स्ट्रांग बोलीं, "वाह, लार्ड टेनिंगटन, आपने प्रस्ताव किया और आप स्वयं ही उसे पक्का भी समझ बैठे। आपने हमें इतना भी मौका न दिया कि हम उस पर विचार करें और देखें कि हम इस उदारता को स्वीकार कर सकते हैं या नहीं!"

टेनिंगटन बोले, "क्यों, स्वीकार करने में आपको आपत्ति ही क्या हो सकती है? मेरा जहाज उतना ही बल्कि उससे भी ज्यादा चलेगा जितना कि कोई पैसेंजर जहाज चलेगा, उस पर जितना आराम मिल सकता है उससे ज्यादा आराम इस पर मिलेगा, और सब से बड़ी बात यह है कि हम लोग आपको संग ले चलना चाहते हैं और आपका कोई बहाना सुनेंगे नहीं।"

अन्त में मिसेज स्ट्रांग को स्वीकार करना ही पड़ा और निश्चय हुआ कि आगामि सोमवार को यहां से रवाना हुआ जाय।

जहाज के रवाना होने के दो रोज बाद जेन पोर्टर हेजेल स्ट्रांग के कमरे में बैठी हुई थी और हेजेल उसे अपने हाथ की उतारी कुछ तस्वीरें दिखा रही थी। अमेरिका से रवाना होने बाद जितनी तस्वीरें उतरी थीं, सभी एक एक करके हेजेल जेन के हाथ में देती जाती थी, और बताती जाती थी यह किसकी है, कहां उतरी, कैसे उतरी, आदि।

यकायक एक तस्वीर को उठा के हेजेल स्ट्रांग बोली, "अरे लो, बड़े मौके से यह तस्वीर निकल आई। मैंने कितने दफे सोचा कि

इस बेचारे के बारे में तुम से पूछूं, पर तुम्हारा सामना होने पर खयाल ही नहीं आता था।"

मिस स्ट्रांग तस्वीर को इस तरह हाथ में लिये थीं कि उसकी पीठ जेन पोर्टर की तरफ थी। बिना जवाब की राह देखे हेजेल फिर बोली, "इनका नाम जान कैल्डवेल था और ये अंग्रेज थे। तुम्हें याद आता है इनका नाम! ये कह रहे थे कि अमेरिका में तुम्हारी इनकी मुलाकात हुई थी!"

जेन पोर्टर बोली, "मुझे नाम तो नहीं याद आ रहा है। शायद तस्वीर देख के पहिचान सकूं।"

हेजेल स्ट्रांग तस्वीर देती हुई बोली, "केप टाउन आते वक्त रास्ते में बेचारे जहाज से समुद्र में गिर पड़े। फिर उनका पता न लगा।"

जेन तस्वीर पर निगाह पड़ते ही घबड़ाहट के साथ बोली, "जहाज से गिर पड़े! कैसे हेजेल, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता!! तुम दिल्लगी करती होओगी! सच बोलो!" यह कहती हुई जेन बेहोश होके जमीन पर गिर पड़ी।

हेजेल स्ट्रांग जब जेन पोर्टर को होश में लाई तो वह बिना कुछ बोले चाले या कहे थोड़ी देर तक चुपचाप बैठी रही। आखिर हेजेल स्ट्रांग बोली—

"मैं नहीं जानती थी, जेन, कि इस बात को सुन के तुम इतना घबड़ा जाओगी। क्या मि. कैल्डवेल से तुम्हारी बहुत घनिष्ट मित्रता थी।"

जेन पोर्टर बोली, "मि. कैल्डवेल! फिर तुमने वही विचित्र नाम लिया। क्या तुम नहीं जानतीं यह तस्वीर किसकी है?"

हेज़ेल ने आश्चर्य से कहा, "क्यों, क्या यह तस्वीर मि. कैल्डवेल की नहीं है, क्या इनका कोई दूसरा नाम है?"

जेन आंसू गिराती हुई बोली, "ओफ, हेज़ेल, यह सूरत मेरे कलेजे में इतनी गहरी धंसी हुई है कि मैं जीते जी इसे भूल नहीं सकती। मैं लाखों, करोड़ों सूरतों में इस सूरत को तुरत छांट कर अलग निकाल लूंगी। दूसरों को धोखा हो जाय, मुझे न होगा।"

हेज़ेल से आश्चर्य के मारे बोला न गया। वह एक टक जेन पोर्टर की सूरत देखती रही।

जेन पोर्टर बोली, "यह जंगल के राजा टार्ज़न की तस्वीर है, हेज़ेल!!"

हेज़ेल ने ताज्जुब से आंखें फाड़ के कहा, "सचमुच?"

जेन उदास स्वर में बोली, "इसमें कोई भी सन्देह नहीं। लेकिन क्या तुम्हें निश्चय है कि ये मर गये, क्या इसमें कोई शक की जगह नहीं है?"

हेज़ेल बोली, "मेरी समझ में शक कोई भी नहीं है, जेन। कितना अच्छा होता अगर तुम गलती करती होतीं और यह टार्ज़न न होते। पर अब जो मैं सोचती हूं, उनकी हर एक चाल ढाल, बात चीत के तरीके को—तो मुझे अब खयाल आता है कि अवश्य ये टार्ज़न ही होंगे। अपने बारे में उन्होंने इतना ही कहा कि वे अफ्रिका में पैदा हुये हैं और पेरिस में उन्होंने शिक्षा पाई है।"

जेन पोर्टर ने धीमे स्वर में कहा, "शायद वे ठीक ही कहते होंगे।"

हेज़ेल०। सहकारी अफसर ने उनके असबाब की तलाशी ली थी। उसने कोई चीज़ भी ऐसी न पाई जिससे उनके विषय में कुछ जाना जा सकता। उनकी सभी चीजें पेरिस की बनी थीं, या वहीं खरीदी गई थीं। कई चीजों पर या तो केवल "टी" बना था या जे. सी. टी. बना हुआ था। हम लोगों ने समझा वे असल नाम छिपा के जान कैल्डवेल के नाम से सफर कर रहे हैं और जे. सी. से वही मतलब है।"

जेन पोर्टर धीमी आवाज़ में बोली, "टार्जन ने अपना नाम जे. सी. टार्जन रख लिया था, और वे ही अब इस दुनियां में नहीं हैं! ओफ, हेज़ेल, यह कैसी बात है! क्या वे उस अथाह समुद्र में जीते जी डूबे होंगे, क्या उनके वीरता से भरे दिल ने अपनी धड़कन बन्द कर दी होगी, उनके मजबूत और भारी अंग प्रत्यंग अब जीवनहीन और निश्चेष्ट हो गये होंगे, हाय, मुझे विश्वास नहीं हो रहा है, पर अब इसमें सन्देह ही क्या है, हेज़ेल, मैं........." यह कहती हुई जेन पोर्टर ने अपना मुंह हाथों से ढांक लिया और सिसकियें लेती हुई जमीन पर गिर पड़ी। उसके गले से आगे आवाज़ न निकली।

कई दिनों तक जेन पोर्टर बिछौने पर पड़ी रही और इस बीच में हेज़ेल स्ट्रांग और एसमेरेल्डा के सिवाय और कोई उसके पास जाने न पाया। बाद में जब वह डेक पर निकली तो उसकी सूरत देख लोग आश्चर्य में आ गये। अब उसमें वह सुन्दरता और उन्माद न था जिसे देख के उससे बातें करने वाले लोग प्रसन्नता से

भर जाते थे। चेहरा पीला पड़ गया था, आंखें धंस गई थीं और शकल से ऐसा मालूम होता था जैसे महीनों की बीमार हो। किसी से बातें करना भी उसे अच्छा न लगता था, आंखों में एक भयानक निराशा और अव्यक्त वेदना छिपी हुई थी, जो देखने वाले के हृदय को भी दुःख से भर देती थी।

किसी के भी समझ में न आया कि इस भयंकर परिवर्तन का कारण क्या है। सभी उसे प्रसन्न रखने, उसका दिल बहलाने की चेष्टा में लगे रहते थे, लेकिन कोई फल न होता था। उसके चेहरे पर हंसी तो दिखलाई ही नहीं देती थी। हंसमुख लार्ड टेनिंगटन की बात से कभी कभी उसके चेहरे पर क्षीण मुसकुराहट की हलकी आभा दिखाई दे जाती थी, पर ज्यादातर वह जहाज के डेक पर रेलिंग के पास खड़ी होके नम आंखों से समुद्र की तरफ देखा करती थी।

जेन पोर्टर की बीमारी के बाद से ही जहाज पर एक के बाद एक आफतें आनी शुरू हुईं। पहिले तो एक इंजिन टूट गया जिसकी मरम्मत में दो दिन लग गये और इस बीच जहाज वह इधर उधर चक्कर मारता रहा। इसके बाद एक भारी तूफान आया जो डेक पर की सारी चीजों को बहा के समुद्र में ले गया। बाद में दो खलासी आपस में लड़ बैठे, एक ने दूसरे को जान से मार दिया और जो बचा उसे हथकड़ी बेड़ी पहिनानी पड़ी। और अन्त में सब से भारी और बुरी बात यह हुई कि सहकारी कप्तान रात के वक्त समुद्र में गिर पड़ा और पता लगने और तलाशी होने के पहिले ही डूब गया।

...घन्टे तक उस जगह जहाज चक्कर लगाता रहा, पर न तो ...क मिला न उसकी लाश का ही पता लगा।

इन आफतों ने सभी को उदास और उत्साहहीन कर दिया। जहाज के काम करने वाले और मेहमान सभी दुखित और चिन्तित हो गये। प्रायः सभी का यह खयाल हो गया कि अभी और कोई भारी आफत आने वाली है और ये छोटी छोटी बातें उसकी सूचना ... रही हैं। खलासी और मल्लाह जहाज के रवाना होने के समय की बहुत सी छोटी छोटी बातों का अब खयाल करने लगे और कहने लगे कि पहिले ही बहुत से अपशगुन हुये थे जिनका उस समय तो खयाल न किया गया, पर जो अब ठीक समझ में आ रहे हैं।

लोगों का कहना गलत भी न हुआ। सहकारी कप्तान के समुद्र में गिरने के बाद दूसरी रात को, करीब एक बजे के समय, यकायक सारा जहाज भारी धक्के से कांप उठा, सोने वाले अपने अपने बिछौनों और बिस्तरों से उछल के जमीन पर आ रहे, भारी आवाज ने कान के पर्दे हिला दिये। जहाज आगे से एक दम खड़ा हो गया, करीब दो मिनट खड़ा रहा और तब एक किरकिराहट की आवाज के साथ फिसल के फिर पानी में सीधा हो गया।

लोग आंखें मलते हुये डेक पर दौड़े। औरत और मर्द कोई अपनी कोठरी में न रह गया। हवा बिल्कुल न थी, समुद्र शान्त था, और यद्यपि आकाश में कुछ बादल थे तथापि हलका सा प्रकाश चारों तरफ था। लोगों ने देखा एक बड़ी सी काली चीज सामने पानी में तैर रही है।

एक आदमी ने आवाज दी, "बरफ का पहाड़!"

साथ ही नीचे से दौड़ता हुआ इञ्जीनियर ऊपर आया। कांपती आवाज में वह बोला, "इञ्जिन का बायलर फट गया है, अब वह बिल्कुल काम नहीं दे सकता।"

नीचे से हांफते हुए एक मल्लाह ने आके सुनाया, "हे भगवान, हुजूर इसका सारा अगला पेंदा फट गया है। पानी तेजी से आ रहा है। बीस मिनट भी इसका तैरना मुश्किल है।"

टेनिंगटन ने चिल्ला के कहा, "चुप रह, बेवकूफ!" इसके बाद वे औरतों की तरफ घूम के बोले, "आप लोग कृपा कर तुरत नीचे जायं और अपनी कुछ चीजें जिन्हें साथ रखना जरूरी समझती हों लेती आवें। क्या हुआ है इसका मैं ठीक पता लगाता हूं, पर तैयार रहना अच्छा होगा। शायद हमें जहाज छोड़ना पड़े। जल्दी करिये, जाइये! और आप, कप्तान जेरल्ड! आप किसी होशियार आदमी को नीचे भेजिये जो इस बात का पता लगावे कि आखिर पेंदे में कितनी खराबी आई है और वह ठीक हो सकता है या नहीं। साथ ही नावों में खाने पीने का सामान रखवा के उन्हें भी उतारने के लिये तैयार रखिये।"

लार्ड टेनिंगटन की स्थिर और शान्त आवाज ने लोगों के होश हवास कुछ दुरुस्त किये और लोग शीघ्रता से अपने कामों में लग गये। औरतों के नीचे से आते तक नावों में सामान भी रख दिये गये और तब तक वह आदमी भी लौट आया जो नीचे पेंदा देखने गया

था। उसकी सूरत देखते ही लोग समझ गये कि "लेडी एलिस" का आज खातमा हो गया।

कप्तान ने पूछा, "क्यों, क्या हाल है?"

अफसर जवाब देते कुछ हिचकिचाया। फिर बोला, "स्त्रियों के सामने मैं ज्यादा नहीं कहा चाहता, पर यह जहाज अब दस मिनट भी शायद पानी पर न टिक सकेगा। पेंदे में इतना बड़ा छेद हो गया है कि उसमें भैंस घुस जाय।"

पांच मिनट से "लेडी एलिस" बराबर पानी में आगे की तरफ से धंस रहा था। पिछला हिस्सा ऊंचा हो गया था और अब डेक इतना टेढ़ा हो गया था कि उस पर खड़ा होना बड़ा खतरनाक था। उस पर चार नावें थीं, उन पर खाना रख के वे पानी में उतार दी गईं। लोग बैठ गये। जब नावें तेजी से खेके जहाज के पास से हटाई जाने लगीं तो उस पर एक आखिरी निगाह डालने के लिये जेन पोर्टर पीछे घूमी। उसी समय जहाज में से एक बड़े जोर की आवाज आई—उसकी मशीनें और कलपुर्जे टूट के अलग हो गये और लुढ़कते हुये जहाज के आगे की तरफ ढलके। उनके सामने जो चीज पड़ी सब टूट के चूर हो गई। उनके पानी में धंसते ही जहाज का पिछला हिस्सा हलका होके और ऊंचे उठ गया। जरा सर वह रुका रहा, जैसे एक आखिरी निगाह अपने चारो तरफ के समुद्र पर डाल रहा हो, और तब एक गड़गड़ाहट की आवाज के साथ नीचे धंस गया!

नाव में बैठे हुये लार्ड टेनिंगटन ने अपने आंख से आंसू की

एक बून्द पोंछी। उनकी रुपये की एक भारी रकम ही नहीं समुद्र में चली गई थी बल्कि एक प्यारा और सुन्दर दोस्त भी हमेशा के लिये गायब हो गया था।

आखिर रात बीती और प्रातः काल के सूर्य की लाल किरणें उछलते हुये पानी पर पड़ीं। जेन पोर्टर को थोड़ी देर के लिये नींद आ गई थी—सूर्य की कड़ी रोशनी ने उसे जगा दिया। उसने चारों तरफ निगाह घुमाई। नाव में तीन मल्लाह थे, क्लेटन थे और मान-स्यूर थूरन थे। बाकी नावें दिखाई न दे रही थीं। जहां तक निगाह जाती थी सन्नाटा मालूम होता था। अनन्त भूमध्यसागर में वे लोग अकेले थे।

चौदहवां बयान

जंगल में

पानी में पहुंचते ही टार्जन का पहिला इरादा यह हुआ कि जहां तक फुर्ती से हो सके तैर कर जहाज से दूर हट जाना चाहिये, जिससे जहाज के पिछले हिस्से में लगी पानी के अन्दर घूमने वाली चर्खी से उनका बदन अलग रहे। चार हाथ तेजी से मार कर वे दूर हट गये और तब धीरे धीरे अपने को पानी में सम्हालते हुये वहीं रुक कर वे अपनी हालत पर विचार करने लगे। इस बात को तो वे

अच्छी तरह समझते थे कि यह काम उनके पुराने दुश्मन रोकफ का है। उन्हें अफसोस इसी बात का था कि वे इतनी जल्दी उसके धोखे में पड़ गये और उन्हें अपने बचाव का भी मौका न मिला।

कुछ देर तक वे चुपचाप पानी में बहते रहे। तेजी से आगे बढ़ते हुए जहाज की रोशनियें धीरे धीरे उनकी आंखों के आगे धुन्धली होने लगीं, पर उन्हें खयाल न आया कि आवाज दें और लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करें। अपने जीवन के आरंभ में ही उन्होंने मदद के लिये किसी को बुलाना सीखा न था, इससे इस समय भी उन्होंने मदद के लिये आवाज न दी यह कोई आश्चर्य की बात न थी। अपने बल और अपने पौरुष, इन्हीं पर आफत के समय वे भरोसा रखना सीखे हुये थे, और फिर उन्हें मदद के लिये किसी को बुलाने की आदत पड़ ही कैसे सकती थी, कोला के मरने के बाद से उनका रह ही कौन गया था जो बुलाने पर उनकी मदद के लिये आता।

जहाज पास रहते उन्होंने मदद के लिये आवाज न दी, और बाद में जब उनकी आवाज देने की इच्छा हुई भी तो उस समय तक जहाज दूर जा चुका था। उन्होंने सोचा कि इस समय पुकारना व्यर्थ है। रात के वक्त कोई भी उनकी आवाज न सुनेगा। इससे अच्छा होगा कि धीरे धीरे तैर के किनारे की तरफ चला जाय, शायद वे किनारे पहुंच सकें।

लम्बे लम्बे हाथ मारते हुए वे तारों की रोशनी के सहारे पूरब की तरफ बढ़े, पर उनके हाथ धीरे धीरे पड़ रहे थे जिससे मालूम होता

था कि वे जल्दी अपने को थकाना नहीं चाहते थे। थोड़ी दूर जाने बाद उन्हें मालूम हुआ कि उनके जूते तैरने में कुछ तकलीफ दे रहे हैं, उन्होंने खोल कर जूतों को पैर से अलग कर दिया, थोड़ी देर बाद पैजामा भी उतार दिया और जब उनका इरादा हुआ कि कोट भी बदन से अलग कर देना चाहिये तो उन्हें खयाल आया कि जेब में जरूरी कागज पड़े हैं जो कोट उतारने पर साथ ही चले जायंगे। उन्होंने हाथ डाल के जेब टटोला। यकायक वे सन्न हो गये, उन्होंने देखा कि जेब में वे कागज नहीं हैं।

वे समझ गये कि रोकफ ने उन्हें चुरा लिया है। उसके अतिरिक्त और किसी को न तो उनके विषय में जानकारी थी और न किसी के ये काम ही के थे। उन्होंने अपना कोट और कमीज भी उतार के समुद्र में छोड़ दिया और सब चीजों से हलके होकर तैरने लगे।

सुबह की हलकी सुफेदी आसमान पर आ रही थी जब कि टार्जन ने अपने सामने एक काली सी चीज पानी में तैरती देखी। शीघ्र ही उन्हें मालूम हो गया कि यह किसी जहाज का टूटा हुआ पेंदा है जो उलटा हो के पानी में पड़ा है। टार्जन उछल के उस पर चढ़ गये और बैठ कर सुस्ताने लगे। उनका इरादा हुआ कि थोड़ी देर इस पर रुक के आराम कर लेना चाहिये और तब फिर किनारे की खोज में बढ़ना चाहिये। ज्यादा देर यहां रुकने से धूप कड़ी हो जायगी और तब प्यास की तकलीफ उठानी पड़ेगी। बैठे बैठे तक-लीफ पा के जान देने के बदले वे काम करते हुये मरना ज्यादा पसंद करते थे।

हवा तेज न थी इससे पानी शान्त था और टार्जन के आराम करने की जगह भी धीरे ही धीरे हिल रही थी। टार्जन को इस हिलने से आराम मालूम हुआ, वे लेट रहे और शीघ्र ही गहरी नींद में सो गये।

कम से कम चार घंटा वे अवश्य सोये होंगे। जब उनकी नींद खुली, सूर्यदेव जलती हुई किरणों से उनकी देह को तपाना आरंभ कर चुके थे। उन्हें तेज प्यास लगी हुई थी और गला सूखा जा रहा था। पर उनकी प्यास की तकलीफ दो बातों को देख के तुरत ही दूर हो गई और वे प्रसन्न हो उठे। एक तो उन्होंने देखा कि लकड़ी के जिस बड़े टुकड़े पर वे सोये थे उसके बगल में जहाज के टूटे फूटे बहुत से तख्ते बह रहे हैं और उनके बीच में एक नाव उलटी हुई पड़ी है। दूसरी बात उन्होंने यह देखी कि पूरब ओर बहुत दूर पर जमीन की हलकी आभा मालूम हो रही है।

टार्जन गोता मार के नाव के पास पहुंचे। समुद्र के ठंढे पानी ने उनके मस्तिष्क और शरीर को एक दम ताजा कर दिया और उनकी पानी पीने की इच्छा बहुत कुछ कम हो गई। बहुत मेहनत से खींच कर वे नाव को जहाज के पेंदे के पास ले आये और उस पर चढ़ा के उसे उलट दिया। उन्होंने प्रसन्नता के साथ देखा कि नाव बिल्कुल ठीक है। उसमें कहीं भी कोई छेद या दरार नहीं है। ईश्वर को धन्यवाद दे के वे नाव पर चढ़ गये। दो लंबे लंबे तख्ते उन्होंने डांड़ के तौर पर चुन लिये और धीरे धीरे खेते हुये उस ओर बढ़े जिधर जमीन दिखाई दे रही थी।

दोपहर बीत चुकने बाद वे जमीन के इतने नजदीक पहुंचे कि उस पर की चीजों को साफ साफ देख सकें और समझ सकें कि यह कैसा स्थान है। सामने की जगह एक बन्दरगाह के रूप में मालूम होती थी जिसमें एक किनारे जंगल बिल्कुल समुद्र के पास तक आया हुआ था। उनको इस जगह में कोई बात पहिचानी हुई सी जान पड़ी। उन्हें शक हुआ कि वे इस स्थान को पहिले देख चुके हैं। कहीं ईश्वर ने उन्हें ठीक उसी जगह तो नहीं भेज दिया जहां समुद्र के किनारे एक छोटी सी कोठरी में उन्होंने अपने लड़कपन के जीवन के बहुत से वर्ष काटे थे! वे गौर के साथ अगल बगल देखते हुये आगे बढ़ने लगे। जब उनकी नाव बंदरगाह के मुंह में घुसी तो उनका शक निश्चय के रूप में बदल गया। उन्होंने देखा कि बांई ओर किनारे से कुछ दूर पेड़ों की छाया के नीचे उनकी वही कोठरी है जिसे उन्होंने कुछ वर्ष पहिले छोड़ा था और जिसको बहुत दिन हुये उनके पिता लार्ड ग्रस्टोक ने अपने हाथ से बनाया था।

तेजी से नाव को चला के टार्जन किनारे पर आ गये और वह अभी जमीन के साथ पूरी तरह सटी भी न थी कि उछल कर जमीन पर हो रहे। उनकी घूमती हुई आंखें, उनका प्रसन्नता से भरा हुआ दिल धीरे धीरे सभी चीजों को देखने और पहिचानने लगा। वे चारो तरफ इस तरह निगाह डालने लगे जिस तरह सफर पर गया हुआ कोई आदमी बहुत दिन बाद घर लौटे और एक एक चीज को देखे और निगाह में तौले। समुद्र का वह सुन्दर किनारा जिस पर लड़कपन में वे खेले थे, उनकी वह मजबूत पुरानी कोठरी जो एक जमाने

बाद भी अब तक उसी हालत में थी जिस हालत में उसके बनाने वाले ने उसे छोड़ा था, पास में बहता हुआ स्वच्छ पानी का नाला, बड़े बड़े पेड़ जो कोठरी के बिल्कुल पास तक आये हुये थे और वह घना जंगल जिसकी एक एक बित्ता जमीन से टार्जन परिचित थे, सभी टार्जन को एक पुराने दोस्त की तरह मालूम पड़े। पेड़ों में बोलती हुई रंगबिरंगी सैकड़ों तरह की चिड़ियाएं, तरह तरह के जंगली फूल जो हवा में हिल रहे थे—टार्जन को जान पड़ा ये सभी एक साथ मिल कर उनका स्वागत कर रहे हैं, आने पर उन्हें बधाई दे रहे हैं।

टार्जन अब अपने घर में आ गये, सुख और स्वतन्त्रता के बीच में पहुंच गये, उन सा भाग्यवान कौन है ! उन्होंने सिर को ऊंचा किया और उनके मुंह से निकलती 'एप" बन्दर की भारी और डरावनी आवाज जंगल को कंपाने लगी। सब स्तब्ध हो गये, क्षण भर के लिये सारा जंगल शान्त हो गया, और तब बाद में दूर से शेर के गरजने की भयानक आवाज सुनाई पड़ी, बहुत दूर पर "एप" बन्दर की गरज मालूम दी, जैसे ये दोनों टार्जन की आवाज सुनके उनकी चुनौती को स्वीकार करते हों और उन्हें लड़ने के लिये ललकारते हों।

टार्जन ने चश्मे के पानी से प्यास बुझाई और तब अपनी कोठरी के पास पहुंचे। वे और डी. आरनट जिस प्रकार बाहर से सिटकिनी लगा कर छोड़ गये थे, वैसे ही सिटकिनी लगी हुई थी। उसे हटा वे भीतर घुसे। सब ज्यों का त्यों था। उनके पिता का बिछौना, पास का छोटा टेबुल, वह पालना जिस पर लड़कपन में

वे सोये होंगे, आलमारियें और आले, सब उसी तरह थे जिस ठीक विदा होते वक्त उन्होंने देखा था। सब चीजें तेईस वर्ष से उस। हालत में थीं और अब दो वर्ष बाद भी टार्जन की नगाह में वैसी ही थीं।

कोठरी की चीजों पर निगाह डाल टार्जन अब खाने की फिक्र में पड़े। उनके पास कोई हथियार न था, कोठरी में भी इस किस्म की कोई चीज न थी, पर एक खूंटी पर उनका घास का एक पुराना रस्सा लटक रहा था। यह कई जगह से जोड़ा तथा मरम्मत किया हुआ था और नया रस्सा बना के टार्जन ने इसे व्यर्थ समझ के यहां खूंटी पर डाल दिया था। इस रस्से के साथ अगर एक छुरा भी उन्हें मिल जाता तो कितना अच्छा होता! पर उसकी उन्हें ज्यादा फिक्र न थी। वे जानते थे कि इसी रस्से की मदद से वे छुरा, तीर, धनुष, बरछा, सब अपने लिये इकट्ठे कर सकते हैं, पर इसमें कुछ समय और मेहनत लगेगी। तब से यह रस्सा उन्हें खाने की चीज इकट्ठी कर के देगा। कायदे से उसे लपेट के उन्होंने कंधे पर रक्खा और कोठरी का दर्वाजा बन्द कर बाहर निकले।

कोठरी से निकलते ही जंगल शुरू हो जाता था। टार्जन थोड़ी देर तक तो पैदल ही चले, पर जब उन्होंने देखा कि पास में कहीं शिकार की आहट नहीं मिल रही है, न कहीं जंगली जानवरों के चलने के निशान ही दिखाई देते हैं तो वे पेड़ पर चढ़ गये और डालियों पर उछलते कूदते ऊपर ही ऊपर आगे रवाना हुये। थोड़ी ही दूर जाते जाते उनका पहिले का अभ्यास फिर ताजा हो गया,

बात । उसी तेजी और होशियारी से डालों पर दौड़ने लगे जैसे पहिले दौड़ा करते थे। वे एक बार फिर जंगली जानवर बन गये। उनके दिलका दर्द और हृदय का दुःख न जाने सब कहां उड़ गया और वे प्रसन्न हो के मन में कहने लगे, "यही असली जीवन है, सच्ची स्वतन्त्रता है, जब मनुष्य इन बड़े जंगलों में सुख से रह सकता है तो क्यों वह मक्कारी और फरेब से भरे शहरों में जाय और वहां अपने को तरद्दुद और आफत में डाले। कौन ऐसा बेवकूफ होगा जो आजादी को छोड़ के पराधीनता और कृत्रिम बंधनों को खरीदेगा! मैं तो ऐसा मूर्ख नहीं हूं।"

कुछ दिन रहते ही टार्जन घने जंगल के बीच में ऐसी जगह पहुंचे जहां एक छोटी सी नदी बह रही थी और जिसके एक किनारे बांध बंधा हुआ था। सैकड़ों बरस से जंगली जानवर यहां पानी पीने आया करते थे। प्रायः बराबर ही हरिन, बारहसिंघे, नील-गाय या जंगली सूअर पानी पीते दिखाई दे सकते थे, और साथ ही पास की झाड़ी में शेर या चीते भी पाये जा सकते थे जो अपने जंगली भाइयों की आदतों को जानते हुये शिकार की तलाश में यहां बैठे रहा करते थे। टार्जन यहां पहुंच के रुक गये।

जो रास्ता जंगल से बांध को गया हुआ था, टार्जन उसी के ऊपर एक पेड़ की डाल पर बैठ गये और राह देखने लगे। धीरे धीरे अन्धेरा होने लगा और जंगल में शान्ति फैलने लगी। घन्टे भर बाद उनके कानों में दाहिनी तरफ वाली झाड़ी से एक हलकी आहट आई। मुलायम पैरों के जमीन पर पड़ने और भारी शरीर के डालियों

के बीच से सरकने के शब्द को उन्होंने साफ सुना। और कान ठीक चाहे इन आहटों को न पहिचान सकता पर टार्ज़न तुरत जान गए कि यह शेर है। यह भी उसी काम की धुन में है जिस काम के लिये वे यहां आये हैं। यह भी भूखा है! टार्ज़न मन ही मन हंसे।

थोड़ी देर बाद उनके कानों में एक नई आहट गई। कोई जानवर होशियारी से दबे पांव चलता हुआ पगडंडीसे बांध की ओर आ रहा था। थोड़ी देर बाद वह निगाह के सामने आ गया और तब टार्ज़न ने देखा कि यह सूअर है। यह तो बड़ा स्वादिष्ट होगा! टार्ज़न के मुंह से पानी भर आया। वह घनी झाड़ी जिसमें शेर की आहट टार्ज़न ने सुनी थी अब बिल्कुल शान्त थी। कोई भी आवाज उसमें से नहीं आ रही थी। सूअर धीरे धीरे कदम रखता हुआ टार्ज़न के नीचे आया। पांच सात कदम और आगे बढ़ने पर वह शेर की उछाल के अन्दर आ जायगा। टार्ज़न सोचने लगे—शेर की आंखें इस वक्त कैसी चमक रही होंगी, वह अपनी जुबान चटचटा रहा होगा, अपनी सांस रोक के उस भयानक गरज के लिये तैयार होगा जो उछलने के क्षण भर पहिले वह मुंह से निकालेगा और जिसे सुन के पल भर के लिये उसका शिकार स्तंभित, किंकर्तव्यविमूढ़ ज्ञानहीन सा हो जायगा और भागने की बिल्कुल आशा और इच्छा छोड़ देगा।

टार्ज़न का सोचना बिल्कुल ठीक था। अपने पिछले पैरों को सिकोड़ के शेर उछलना ही चाहता था कि एक पतला सा फंदा ऊपर से आके सूअर के गले में पड़ा। वह एक दफे चौंका, पतली सी

उसके गले से निकली, और अचम्भे में आये हुये शेर ने देखा उसका शिकार जमीन पर घसीटता हुआ पगडन्डी पर पीछे की ओर जा रहा है। वह तुरत उछला, पर सूअर का शरीर देखते देखते ऊंचा होके उसकी पंजों की पहुंच के बाहर हो गया। शिकार को हाथ से खो के गुस्से से भरे हुये शेर ने जोर से एक दहाड़ मारी और सिर ऊंचा करके देखा कि आखिर ऐसा होने का कारण क्या है। उसने देखा कि एक हंसता हुआ चेहरा उसकी तरफ मुंह किये हुये है।

उस समय शेर के क्रोध का पारावार न रहा, वह उछला और कूदा, चिल्लाया और गरजा, पिछले पैरों पर खड़े हो हो के उसने झुंझला झुंझला के पेड़ के तने में बड़े बड़े घाव कर दिये, पर ऊपर डाली पर बैठे आदमी का इससे कुछ भी न बिगड़ा। टार्जन ने फंदे से छूटने की कोशिश करते हुए सूअर को ऊपर खींच लिया और फंदे ने जो काम अधूरा छोड़ा था उसे उंगलियों से पूरा कर दिया। जब सूअर मर गया तो टार्जन को ध्यान आया कि उनके पास चाकू वगैरह कुछ नहीं है, जिससे वे मांस का टुकड़ा बदन से अलग कर सकें, पर उन्होंने इसके लिये कुछ विशेष सोच विचार न किया। उनके चमकते हुए बड़े बड़े दांत बड़े सहज में भीतर धंस गये, और वे आराम के साथ अपना पेट भरने लगे। गरजता हुआ शेर नीचे खड़ा हुआ जलती हुई आंखों से उनके इस कृत्य को देखने लगा।

टार्जन को खाते हुये काफी समय लगा और इस बीच में चारो तरफ से घिर आते हुये अन्धकार ने जंगल को अपनी काली चादर

के बाहर जमीन में गाड़ दिया, जिसमें संध्या को आने पर ठीक मिल जाय।

बाद में रस्सा कंधे पर डाल वे फिर जंगल में घुसे। इस बार वे दूसरे शिकार की खोज में थे, वे आदमी को तलाश कर रहे थे। उन्हें इस वक्त हथियारों की जरूरत थी और वे चाहते थे मोंगा के गांव में चल कर देखा जाय कि वहां हबशी अब रहते हैं या नहीं। डी. आरनट को मरा समझ के फ्रांसीसी सिपाहियों ने जब उस गांव पर हमला किया था तो वहां के एक भी पुरुष को जीता न छोड़ा था, बाद में वह गांव वैसा ही उजड़ा रह गया या हबशी फिर भी वहां बसे रहे इसी बात को टार्जन जांचना चाहते थे। अगर हथियार वहां मिल गया तो ठीक ही है नहीं तो उसके लिये उन्हें बड़ा तरद्दुद उठाना होगा।

दोपहर के करीब करीब टार्जन गांव के पास पहुंच गये। उन्होंने देखा कि जंगल बढ़ कर गांव के भीतर के खेतों तक पहुंच गया है और झोपड़े सब टूटे फूटे बर्बादी की हालत में हैं। आदमी का कहीं निशान तक नहीं है। वे आधे घंटे तक इधर उधर घूमते रहे पर कोई हथियार उन्हें न मिला, अन्त में निराश हो के उन्होंने खोज छोड़ दी और नदी के किनारे आगे की तरफ रवाना हुये। वे जानते थे कि पानी के पास ही कहीं न कहीं उन्हें दूसरा गांव मिलेगा।

रास्ते में चलते चलते टार्जन का फिर उसी प्रकार भोजन होने लगा जिस तरह पहिले वे जंगली हालत में किया करते थे। कहीं कोई कीड़ा पाया तो खा लिया, किसी चिड़िया का खोता लूट

लिया; ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कोला ने उन्हें सिखाया था। सभ्य मनुष्य से पलट के वे फिर जंगली जानवर बन गये थे और उनके सब आचरण अब वैसे ही हो गये थे जैसे 'एप' बन्दर के होते हैं। कभी कभी वे यह सोच के मुसकुरा उठते थे कि देखो मैं यहां यह खा रहा हूं और मेरे दोस्त इस समय पेरिस के फैशनेबुल क्लब में बैठे छुरी और कांटे से दूसरी तरह की चीजें खा रहे होंगे। यह खयाल आने से वे यकायक रुक जाते थे और खाना बन्द करके पत्थर की मूर्ति की तरह बैठ जाते थे, जैसे ये विचार उनके हृदय में एक प्रकार का उथल पुथल मचा देते हों।

उस रोज रात को टार्जन ने हरिन मार के उसका मांस खाया और एक ऊंचा पेड़ देख के उसके खोखले में रात काटी। सुबह होने पर उन्होंने अपना सफर फिर शुरू किया। तीन दिन तक वे लगातार नदी के साथ साथ चले गये और अन्त में ऐसे स्थान पर पहुंचे जहां जमीन ऊंची होती गई थी और पेड़ों के बीच में दूर पर ऊंचे पहाड़ों की चोटी दिखाई दे रही थी। जंगल कुछ कम घना और पेड़ ऊंचाई में छोटे होते गये थे। पहाड़ के पास लंबे चौड़े मैदान थे जहां सैकड़ों हजारों बारहसिंघे, हरिन और नील गाय चर रहे थे।

टार्जन ने अपना सफर कायम रक्खा और चौथे दिन के सुबह चलते चलते उनके नाक में एक नई तरह की गन्ध गई, जैसे कोई आदमी पास में कहीं हो। उन्होंने अपने चलने का ढंग बदल दिया। पेड़ों के ऊपर ऊपर बड़ी सावधानी और सतर्कता से बढ़ते हुये थोड़ी

दूर जाके उन्होंने देखा कि सामने एक हब्शी जंगली हथियारों से अपने बदन को सजाए चला जा रहा है।

टार्जन प्रसन्न हो गये। उन्होंने सोचा कि अब मेरा काम बन गया। लेकिन यहां पेड़ इतने घने हैं कि शायद मेरा रस्सा ठिकाने पर न बैठे। आगे बढ़ के साफ जगह आने पर निशाना लगाना उचित होगा। वे चुपचाप उसका पीछा करते गये।

आगे की अपनी कार्रवाई पर विचार करते हुये टार्जन के मन में एक नये तरह के खयाल पैदा हुये। वे सोचने लगे कि क्या इस आदमी को मारना उचित होगा, क्या सभ्य संसार के रहने वाले बिना किसी कारण—चाहे वह कारण छोटा सा ही क्यों न हो—किसी की जान लेते हैं। माना कि उन्हें इसके हथियार छीनने हैं, पर क्या यह आवश्यक है कि हथियार लेने के लिये जान ली जाय!

टार्जन ने जितना इस विषय पर विचार किया उतना ही उनका यह खयाल पक्का होता गया कि व्यर्थ किसी की जान लेना बिल्कुल अनुचित है। वे इसी चिन्ता में आगे बढ़ते गये और अन्त में एक मैदान के पास आ गये जिसके दूसरे सिरे पर लंबी लंबी लकड़ियों कि चहारदीवारी से घिरा हुआ एक गांव था।

जंगल प्रायः खतम हो चला था और खुले मैदान तक पहुंचने में हब्शी को कुछ ही रास्ता तय करना बाकी रह गया था कि यकायक टार्जन की तेज़ निगाहें झाड़ियों के बीच में घुसती निकलती एक लम्बी चमकदार चीज पर पड़ीं, साथ ही वे समझ गये

कि यह चीता है जो कुछ दूर से पीछा करता हुआ आ रहा है और अब अपना काम पूरा किया चाहता है। हबशी लंबे लंबे कदम बढ़ाता बेफिक्र चला जा रहा था। उसे कुछ न मालूम था कि उसके सिर पर कौन है और पीछे से कौन बला आ रही है। चीते को देखते ही टार्जन के खयाल बदल गये। पहिले वे हबशी के दुश्मन थे—उसे अपना शिकार समझते थे, अब वे उस पर आई हुई आफत को देख के उसे अपना दोस्त—अपना भाई समझने लगे और उस तरद्दुद से उसे बचाने का उपाय सोचने लगे जो उसके लिये और उनके लिये—दोनों के वास्ते खतरनाक था।

चीता उछलने के लिये बिल्कुल तैयार था। इतना समय न रह गया था कि तरकीबें सोची जातीं और विचार किया जाता कि अमुक उपाय अच्छा है और अमुक बुरा और अमुक का यह फल होगा। यकायक तीन बातें एक साथ हुईं! चीता झाड़ी से निकल के हबशी की तरफ उछला—टार्जन के मुंह से उसे सावधान करने के लिये एक आवाज निकली और पीछे घूमके हबशी की आश्चर्य भरी आंखों ने देखा कि उछल के आते हुये भयानक जानवर के गले में ऊपर से आके बड़ी सफाई से घास से बने रस्से का एक फंदा पड़ा जिसने उसे बीच हवा में रोक दिया!!

टार्जन ने इतनी फुर्ती यह काम किया था कि उन्हें यह सोचने का मौका ही न मिला था कि चीते की उछाल को रोकने में घास के रस्से पर जो जोर और झटका पड़ेगा उसे वे सम्हाल सकेंगे या नहीं। वे बहुत मजबूती से डाल पर नहीं बैठे हुये थे। फल यह हुआ

कि चीते के गले में रस्सा पड़ने से वह रुक तो गया, उसके खूनी पंजे हब्शी के बदन में धंस तो न सके, पर टार्जन अपने को न सम्हाल सके। उन्होंने धक्का खाया और चीते से पांच कदम के फासले पर आके जमीन पर गिरे।

अपने शिकार को खोके क्रोध से भरा हुआ जानवर एक नये दुश्मन को नजदीक पाके उस पर झपटा। टार्जन के मन में उस समय कोई सन्देह न रह गया, वे मौत के इतने नजदीक हो गये कि उससे भाग जाना या हट जाना संभव न मालूम होता था। उनके पास कोई भी हथियार न था जिससे वे अपने को बचाने का प्रयोग करते। और तब उस समय हब्शी ने उनकी मदद की। उसने पल भर के अन्दर समझ लिया कि इसी गोरे जवान ने उसकी जान बचाई है और उस बचाने वाले की जान ऐसे खतरे के अन्दर है कि शायद उद्योग करने पर भगवान ही उसे बचा सकें।

बिजली की तरह की तेजी से ख्याल उसके दिमाग में दौड़ गया और साथ ही उसका दाहिना हाथ पीछे हटा। अपने बदन की सारी ताकत को हाथ में इकट्ठी करके उस मजबूत जवान ने हाथ के हथियार को निशाने पर फेंका और पड़ा भी वह निशाने ही पर जा कर! हवा में उड़ता हुआ बीच के फासले को पलक भर में पार करके वह चीते की बाईं पसली में घुसा और बायें कंधे के पार बित्ता भर उभड़ आया। क्रोध और तकलीफ से पागल हो के कद्दावर जानवर हब्शी की तरफ घूमा, उसके मुंह से कलेजे को दहला देने वाली एक दहाड़ निकली, पर वह इस बार [illegible] से

ज्यादा न बढ़ पाया होगा कि टार्जन के फंदे ने फिर उसे रोक दिया। वह पीछे घूमा, एक लंबा तीर आके उसकी कमर में आधा घुस गया। वह फिर हबशी की तरफ बढ़ा, पर तब से रस्से को लिये हुये टार्जन एक पेड़ के चारो तरफ दो बार घूम गये और उसे उन्होंने कस के बांध दिया।

हबशी ने टार्जन की यह तर्कीब देखी और उसके चेहरे पर हलकी मुसकुराहट दिखाई दी। पर टार्जन रस्से को बांध के भी संतुष्ट न थे। वे जानते थे कि घास का रस्सा भारी जानवर के झटके को देर तक रोक न सकेगा और अगर उसने अपने बड़े बड़े पैने दांतों से काम लिया तो वह तुरत टूट के दो टुकड़े हो जायगा। उन्होंने झपट के हबशी की कमर से लंबा छुरा खींच लिया और उसे इशारे से यह समझा के कि वह बराबर शेर पर तीर चलाता जाय, स्वयं इस फिक्र में पड़े कि किसी तरह मौका मिले तो उसे खतम कर डाले। चीता बराबर उछल कूद मचा रहा था। उसके मुंह से लंबी लंबी दहाड़ें निकल रही थीं, वह गुर्रा रहा था, गरज रहा था और अपने पिछले पैरों पर खड़े हो के इस बात की कोशिश कर रहा था कि अपने दुश्मनों को किसी तरह चोट पहुंचानी चाहिये।

आखिर टार्जन को मौका मिला और घूमते फिरते उन्होंने एक बार झपट के जानवर का गला बांयें हाथ से पीछे से पकड़ लिया। चीते को इस बात का मौका न मिला कि वह इस नई आफत से अपने को छुड़ाने का उद्योग करे। उनके हाथ का छुरा कम से कम छः बार उसके कलेजे में घुसा और निकला और तब शान्त हो के वह

उनके पैरों के पास जमीन पर गिर पड़ा। सफेद जवान और काले हबशी, दोनों ने एक दूसरे की तरफ देखा। हबशी ने उंगलियों से इशारा कर के बताया कि वह उनकी मित्रता चाहता है, टार्जन ने सिर हिला के उसे मंजूर किया।

पन्द्रहवां बयान

'एप' बंदर से जंगली

शेर के साथ की लड़ाई की आवाज ने वालन के गांव के जंगली बाशिन्दों पर प्रगट कर दिया था कि उनके राज के स्थान के पास एक विचित्र कांड हो रहा है। वे झुण्ड के झुण्ड अपने अपने घरों से यह देखने के लिये निकल पड़े कि मामला क्या है। शेर के मरने के क्षण भर बाद टार्जन और उनका साथी दोनों सैकड़ों आदमियों की भीड़ में घिर गये। सभी शेर और उसके मारने वालों को देख

शीशे के मोती और जवाहिरात वगैरह जो कि वे लोग यूरोपियनों से हाथीदांत वगैरह देकर खरीद लेते थे। उस स्त्री ने जिसने अपना गहना उतार के उन्हें दिखाया था इस बात के लिये बड़ी जिद की कि वे उसे याददाश्त के तौर पर अपने पास रख लें और लौटावें नहीं। जब टार्ज़न ने उससे पूछा कि यह धातु तुम लोगों को मिलती कहां से है तो वह कुछ समझ न सकी कि ये क्या पूछ रहे हैं। वह उनकी बात का कोई भी उत्तर न दे सकी।

नाच के समाप्त हो जाने पर टार्ज़न ने उनसे जाने की आज्ञा मांगी, पर इसे स्वीकार न करके उन्होंने आग्रह किया कि वे रात को उनके गांव में ही रहें। एक बड़ी सी झोंपड़ी उन्होंने टार्ज़न के वास्ते अलग कर दी और उनसे उसमें जाने को कहा। टार्ज़न ने यह मंजूर न किया। यद्यपि उनके बीच में रहते उन्हें कोई भय न लगता था, तथापि वे जंगलियों का हाल जानते थे और समझते थे कि अच्छों के बीच में कोई कोई बुरे भी होते हैं जो अन्य जाति वालों का अपने बीच में रहना बहुत बुरा समझते हैं। झोंपड़े की तंग जगह और गंदी हवा के बीच में रहने की बनिस्बत पेड़ पर स्वतंत्रता से खुली हवा के बीच में रहना उन्हें हजार दर्जे पसंद था। उन्होंने जंगलियों को इशारे से समझाया कि वे इस वक्त तो चले जाते हैं पर सवेरे फिर लौट आवेंगे। उन्होंने उनकी बात को समझा ही नहीं। आखिर लाचार होके टार्ज़न उस तरफ बढ़े जिधर गांव का फाटक था। बहुत से जंगली उनके पीछे पीछे चले। गांव के बाहर पहुंच के टार्ज़न ने उछल के एक पेड़ की डाल पकड़ ली और फुर्ती और चालाकी

से देखते देखते ऊपर हो गये। साथ वाले आधे घंटे तक आवाज देते रहे पर उन्होंने कुछ भी जवाब न दिया। आखिर निराश हो वे सब गांव में लौट गये।

टार्जन पेड़ों के ऊपर ही ऊपर गांव से थोड़ी दूर हट गये और तब अपने लायक एक अच्छा खोखला देख उन्होंने रात काटी। सवेरा होने पर यकायक वे उसी तरह गांव की एक गली में प्रगट हो गये जिस तरह यकायक वे रात को देखते देखते पेड़ पर गायब हो गये थे।

लोग पहिले तो उन्हें देखके चौंके और डरे, पर जब पहिचाना कि यह तो उनके रात वाले मेहमान हैं तो लोग प्रसन्नता से दौड़ के पास आ गये। उन्होंने ले जा के उन्हें आदर से बैठाया और खाने की चीजें सामने रक्खीं। उस रोज दिन चढ़ने पर टार्जन जंगलियों के साथ शिकार खेलने गये और उनके नये साथियों ने उन्हें हथियार चलाने और जानवरों की आदतें पहिचानने में इतना चतुर पाया कि वे उन्हें पहिले से भी ज्यादा आदर और प्रेम की दृष्टि से देखने लगे।

कई हफ्तों तक टार्जन इन जंगलियों के बीच में रहे। मांस के लिये वे बारहसिंघों भैंसों और हिरनों का शिकार करते रहे और हाथीदांत के लिये कभी कभी हाथी भी मार लेते थे। उन्होंने अपने साथियों की बोलचाल, उनके रहने के ढंग, उनकी रस्में और उनकी चालढाल भी सीख लिये और यह देख उन्हें प्रसन्नता और संतोष हुआ कि ये नरभक्षी नहीं हैं, नरभक्षियों से घृणा करते हैं और उनके साथ कोई व्यवहार रखना बुरा समझते हैं।

उस आदमी का नाम बसूली था जिसकी टार्जन ने जान बचाई

गोज हाथी दिखाई दिये थे। वहां से उन्होंने सतर्कता के साथ चलना आरंभ किया और शीघ्र ही उन्हें उस रास्ते का पता लग गया जिस पर से होके भारी जानवरों का झुंड कुछ घंटे पहिले गया था। एक एक आदमियों की लाइन बना कर वे चुपचाप आगे बढ़ने लगे। आध घंटे चले जाने बाद टार्जन ने यकायक उन्हें रोका और बताया कि अब उन्हें और ज्यादा होशियारी से बढ़ना चाहिये, हाथी ज्यादा दूर नहीं हैं।

हबशियों को उनकी बात पर विश्वास न हुआ। जब टार्जन ने उन्हें बताया कि मैं बहुत दूर से ही गंध पा लेता हूं और समझ जाता हूं कि यह कौन जानवर है तो उन्हें यह बात झूठी मालूम हुई। टार्जन बोले, "ठहरो, मैं इस बात का सबूत देता हूं।"

गिलहरी की तरह उछल कर उन्होंने पेड़ पकड़ लिया और तेजी से चढ़ते हुये चोटी पर जा पहुंचे। हबशियों में से एक धीरे धीरे चढ़ता हुआ सावधानी से उनके बगल की एक डाल पर पहुंचा टार्जन ने दक्षिण की तरफ उंगली उठाई। हबशी ने देखा कि करीब चार सौ गज दूर लम्बी घासों के बीच भारी भारी काली पीठें हिलती दिखाई दे रही हैं। उसने नीचे के लोगों को इशारे से वह दिशा बताई जिधर हाथी थे और उनकी संख्या भी, जितने वे मालूम हो रहे थे, बता दी।

तुरत ही नीचे के लोग उस ओर बढ़े जिधर हाथी बताये गये थे। हबशी जो टार्जन के साथ पेड़ पर चढ़ा था नीचे उतर आया, पर टार्जन ऊपर ही ऊपर उस ओर बढ़े जिधर उनके साथी जा रहे थे।

मामूली जंगली हथियार लेकर हाथियों का शिकार करना मामूली काम नहीं है। टार्जन इसे जानते थे। उन्हें मालूम था कि बहुत कम जंगली जातियां यह शिकार करती हैं और यह सोच सोच उन्हें गर्व हो रहा था कि उनकी जाति इतनी बहादुर है कि इस काम को करने की हिम्मत करती है। वे अब अपने को उसी जाति का एक आदमी समझने लगे थे।

पेड़ों में आगे बढ़ते हुए टार्जन ने देखा कि जंगली अर्ध गोलाकार रूप में दबे पांव चलते हुए हाथियों की तरफ बढ़ रहे हैं। धीरे धीरे वे पास पहुंच गये और तब उनमें से प्रत्येक जमीन पर लेट कर पेट के बल घसकता हुआ आगे बढ़ने लगा। हाथियों को जरा कुछ भी पता न था कि उनका कौन दुश्मन आगे आ रहा है। जंगलियों ने आपस में इशारे कर दो बड़े बड़े हाथियों को चुना जिनके दांत बहुत भारी भारी और सुन्दर थे। एक साथ पचासों भाले जमीन से उठे और एक साथ ही [illegible] उन दोनों जानवरों की तरफ फेंके। पचीस पचीस भाले एक एक जानवर के बदन में घुस गये। उनमें से एक तो अपनी जगह से एक कदम भी आगे न बढ़ा। बरछों की बरसात जो [illegible] उसमें से दो बरछे उसके मोटे चमड़े और मांस को पानी की तरह काटते हुये उसके कलेजे तक घुस गये। वह एक दफे [illegible] उसके पैरों ने जवाब दे दिया और वह मुर्दा होकर जमीन पर गिर पड़ा।

दूसरे हाथी को उतना कातिल भाला न लगा। [illegible]

की तरफ सिर किये खड़ा था, इससे यद्यपि प्रत्येक बरछा उसके बदन में घुसा, उनमें से कोई भी उसके कलेजे तक न पहुंच सका। चोट खाके थोड़ी देर वह चिंघाड़ता और गुस्से से तड़पता हुआ अपनी छोटी छोटी आंखों से दुश्मनों को खोजता रहा। हबशी अपने हाथ के भाले फेंक तुरत जंगल में घुस गये थे इससे हाथी की कमजोर निगाहें उनमें से किसी को भी खोज न सकीं पर उसके तेज कानों ने उनके भागने की आहट जरूर सुन ली, और तब सूंड उठा के अपने भारी पैरों से पेड़ की डालियों को तोड़ता और झाड़ियों को कुचलता हुआ वह उनकी ओर दौड़ा।

भाग्य से वह उसी ओर चला जिधर बसूली भाग रहा था। हबशी ने देखा कि उसके पीछे मौत मुंह फाड़े चली आ रही है, उससे बचने का एक मात्र उपाय है केवल भागना। वह दौड़ा तो अपने भरसक बड़ी तेजी से पर दौड़ने में हाथी भी गजब की फुर्ती दिखाता है। क्षण क्षण पर भारी जानवर बसूली के पास होने लगा, यहां तक कि वह भागते हुये हबशी के बिल्कुल पास पहुंच गया और तब बसूली ने समझ लिया कि उसकी जान किसी तरह बच नहीं सकती। हमला करते हुये हाथी से लड़के बचने की चेष्टा करना मूर्खता है, इसे बसूली अच्छी तरह जानता था।

ऊपर पेड़ पर बैठे हुये टार्जन उत्सुकता और चिन्ता के साथ हाथी का चोट खाके दौड़ना देख रहे थे। उनकी निगाहों ने यह भी देख लिया था कि क्रोध से पागल जानवर बसूली के पास होता जा रहा है, और अगर तीन मिनट यही दौड़ जारी रही तो वह उसके

सिर पर पहुंच जायगा। वे जोर से चिल्लाते हुये इस खयाल से हाथी की तरफ दौड़े कि आवाज सुन के शायद उसका ध्यान बंट जायगा और वह पीछा करना भूल जायगा।

टार्जन का चिल्लाना और शोर मचाना बिल्कुल व्यर्थ था। गुस्से से पागल और तकलीफ से व्याकुल हाथी को अपने सामने भागते हुये आदमी के सिवाय और कोई चीज उस वक्त दिखाई न दे रही थी, न कोई आवाज ही उसके कान में जा रही थी। उसका एक मात्र लक्ष्य और ध्यान था उस समय बसूली, जो कमजोर कांपते हुये पैरों पर भागते हुआ प्रत्येक क्षण उसके नजदीक होता जा रहा था। टार्जन ने देखा कि इस समय हबशी का बचना कठिन है, तभी बच सकता है जब ईश्वर स्वयं उसके सहायक हो जायं। यह सोचते ही, जिस तरह राग और द्वेष से रहित हो के वे बसूली को मारने को उद्यत हो गये थे, उसी तरह प्रेम और ममता से रहित हो के उसे बचाने के लिये वे इस समय झट डालियों पर से कूदते हुये हाथी के ठीक रास्ते पर आ खड़े हुये।

उनके हाथ में भाला अब तक मौजूद था और जब वे जमीन पर आये उस समय भी बसूली हाथी से सात आठ कदम आगे था। यकायक अपने सामने, अपने ठीक रास्ते में, एक सफेद शकल को ऊपर से कूदते देख हाथी झिझका, पर उसका झिझकना क्षण भर से भी कम देर के लिये था, उस झिझक का स्थान तुरत ही क्रोध ने ले लिया जब उसने समझा कि उसका यह नया दुश्मन उसके काम में विघ्न डालने, उसे रोकने, उसके शिकार को बचाने आया है। गुस्से

की चिंघाड़ मार वह बगल में इस इरादे से घूमा कि पहले इस नज-दीकी दुश्मन को खतम करके तब आगे बढ़ा जायगा। उसे मालूम नहीं था कि उसके इस नये दुश्मन में उससे भी ज्यादा फुर्ती, हिम्मत और तेजी है, और उससे कई गुना अधिक बुद्धि है।

सूंड़ से पकड़ के अपने वज्र से पैरों के नीचे टार्जन को कुचल देना हाथी ने सहज, पल भर का काम समझा था, पर जब वह झपट के उस जगह आया जहां टार्जन खड़े थे तो उसने उन्हें वहां न पाया, वे क्षण भर पहिले ही उछल के बगल में हो रहे थे। वह घूमा, या यों कहना चाहिये कि उसने घूमने का उद्योग किया, पर मुश्किल से उसने अपना पैर उठाया होगा कि टार्जन पास में आ गये। उनके हाथ का बरछा बिजली की तरह की तेजी से कन्धे के पीछे कान के पास से बदन को छेदता हुआ सीधा कलेजे तक घुस गया और तब बिना एक शब्द मुंह से निकाले हाथी टार्जन के पैरों के नजदीक जमीन पर आ रहा।

बसूली ने यह नहीं देखा था कि उसके पीछे का दुश्मन यकायक इतनी जल्दी मर कैसे गया, पर वजीरी ने और उसके साथ के बहा-दुरों ने टार्जन के इस काम को अच्छी तरह देखा था। वे दौड़ते हुये आके टार्जन और हाथी को घेर के खड़े हो गये। टार्जन ने अपना एक पैर हाथी पर रक्खा और उनके मुंह से कलेजे को कंपा देने वाली जो आवाज निकली उसे सुन सब चकित और स्तंभित हो गये। वे भय से एक कदम पीछे हट गये। उनकी समझ में न आया कि उनके दोस्त को हो क्या गया है कि वह इस तरीके से बोल

ा है। यह आवाज ठीक उनके दुश्मन गोरिल्ले की आवाज से मिलती है।

टार्जन जब अपना सिर नीचा कर चुप हो गये तो उनके होठों पर हलकी मुसकुराहट दिखाई दी। चारों तरफ से घेरे हबशी स्वस्थ हुये। उनकी समझ में न आता था कि यह कैसा जीव है, जो बन्दर की तरह पेड़ पर दौड़ता है, जमीन पर उनके बनिस्बत भी ज्यादा आराम से चलता है, जो रंग का खयाल छोड़ के बिल्कुल उनकी ही तरह है, पर है उनमें से दस के मुकाबले में ताकत में अकेला, जो जंगल के भयानक से भयानक जानवर से अकेला, बिना मदद लड़ सकता है।

बाकी के लोग भी जब इकट्ठे हो गये तो शिकार फिर शुरू हुआ और हाथियों का पीछा फिर किया जाने लगा, पर यकायक उसी समय पीछे से विचित्र तरह की एक भड़ भड़ आवाज आने लगी जो जान पड़ता था बहुत दूर से आ रही है।

लोग आश्चर्य में भर के पत्थर की मूरत की तरह खड़े हो गये। सहसा टार्जन बोले, "बन्दूकों की आवाज है। गांव पर हमला हो रहा है।"

वजीरी बोला, "जान पड़ता है अरबी डाकू फिर चढ़ आये हैं। उनके साथ उनके जंगली गुलाम होंगे और वे आये होंगे हमारा हाथी दांत लूटने और हमारी स्त्रियों का चुराने!"

सोलहवां बयान

डाकुओं की चढ़ाई

वजीरी के आदमी तेजी से चलते हुये अपने गांव की तरफ लौटे। कुछ दूर तक उन्हें बराबर बन्दूकों के छूटने की आवाज सुनाई देती रही, पर धीरे धीरे वह कम होने लगी और अन्त में एक दम बन्द हो गई। बन्दूकों के चलने की आवाज के बन्द होने का केवल एक ही कारण हो सकता था। इससे पता लगता था कि गांव में बचे हुए थोड़े से आदमियों पर डाकुओं ने कब्जा पा लिया है और

अब उस अभागे गांव में में कोई बच नहीं गया है जो दुश्मन का मुकाबिला करे।

जिस जगह हाथी मारे गये थे वहां से गांव करीब पांच मील दूर पड़ता था। उसमें से करीब तीन मील रास्ता ये लोग तय कर चुके होंगे कि दुश्मनों के बर्छों और उनकी गोलियों से बच के भागा हुआ गांव के लोगों का पहिला झुन्ड इन्हें आता मिला। करीब पचीस या तीस औरतें, लड़के और लड़कियें सामने से दौड़ती आती दिखाई पड़ीं। वे इतनी घबड़ाहट में थीं कि रोक के पूछने पर कोई भी स्थिर शब्दों में वहां का हाल बयान न कर सकी। एक ने बहुत समझाने और दिलासा देने पर कहा—

"ओह, उनकी संख्या इतनी है जितनी जंगल के पेड़ों की पत्तियें। पचासों अरब हैं और उनके साथ सैंकड़ों मेनुएमा हैं जिनके सब के पास बन्दूकें हैं। वे इतनी चोरी से गांव के पास तक चले आये कि किसी को भी पता न लगा और तब एक साथ चिल्लाते हुये हम पर टूट पड़े। उन्होंने आते ही मारना शुरू किया, औरत मर्द बच्चे जो मिले सब मौत के घाट उतार दिये गये। लोगों ने भागना शुरू किया, चारो तरफ लोग भागने लगे, लेकिन जितने भागे उनसे ज्यादा मार डाले गये। उन्होंने कैद भी किसी को किया या नहीं यह मैं नहीं कह सकती। मेनुएमा हमें तरह तरह की गालियें देते थे और कहते थे कि अबकी वे हम सभों को मार के खा डालेंगे और उस बेइज्जती का बदला लेंगे जो हम लोगों ने वर्ष भर पहिले उनकी की है, मैंने ज्यादा सुना नहीं, मैं भाग आई।"

जाने पर गांव से भागे हुये और आदमी आते दिखाई पड़े। औरत मर्द सभी थे। मरदों के मिल जाने से वजीरी के के लड़ने वाले आदमियों की संख्या बढ़ गई, पर वे यह अच तरह जानते थे कि जो कुछ हो चुका है उसका वे प्रतिकार नहीं सकते, केवल उसका बदला भर ले सकते हैं।

जब गांव मील भर के करीब रह गया तो वजीरी ने दस बा आदमियों को जासूसों के तौर पर खबर लेने के लिये आगे भे और बाकी आदमियों की एक लम्बी लाइन बना कर जंगल में अर्ध-चन्द्राकार दूर तक फैला दी। टार्जन वजीरी के साथ रहे।

एक आदमी ने लौट के कहा, "वे सब गांव के अन्दर घुस ग हैं और दर्वाजे उन्होंने बन्द कर लिये हैं।"

वजीरी बोला, "ठीक है, कोई हर्ज नहीं, हम हमला करेंगे छ गांव के अन्दर घुस उन सभों को मार डालेंगे।" वह अपने आ मियों को हुक्म भेजवाने लगा कि वे लोग तैयार रहें और जब जंगल पार करके मैदान के पास पहुंचें और अपने सरदार को गांव की तर दौड़ते देखें तो खुद भी पीछे पीछे चले आवें।

टार्जन ने बाधा दे के कहा, "ठहरो, जल्दी न करो। पहिले सो लो कि इस तरह हमला करने का फल क्या होगा। अगर उनके पा पचास बन्दूकें भी हुईं तो पहिले हमले में हमारे पचीस आद कम से कम जरूर बेकाम हो जायंगे। इससे कोई लाभ न होग अपना कोई भी आदमी इस समय हमें व्यर्थ न खोना चाहिये।

ों पर ऊपर ही ऊपर जा के पहिले देखता हूं कि उनकी संख्या कितनी है और अगर हमने हमला किया तो हम उनकी कोई हानि कर सकेंगे या नहीं। इस बीच में तुम लोग यहीं ठहरो। मेरी समझ में इस वक्त बल की अपेक्षा बुद्धि से ज्यादा काम होगा।"

बुड्ढा वजीरी बोला, "अच्छा, मैं ठहरता हूं। आप जाइये।"

टार्जन उछल के पेड़ पर चढ़ गये और गांव की तरफ बढ़े। वे बड़े धीरे धीरे और सावधानी से जा रहे थे क्योंकि वे जानते थे कि अगर दुश्मनों को उनकी आहट मिल गई तो उनके बन्दूक की गोलियें जमीन पर जैसी चोट करेंगी पेड़ों पर भी वैसा ही निशाना मारेंगी।

पांच मिनट के अन्दर टार्जन उस पेड़ पर पहुंच गये जो गांव के बिल्कुल बगल में लकड़ी की चहार दीवारी के ऊपर पड़ता था। वहां पत्तियों के बीच में छिप वे नीचे का हाल देखने लगे। उन्होंने देखा कि अरब करीब पचास के हैं और मेनुएमा ढाई सौ से कम न होंगे। वे लोग अपने खाने पीने का प्रबन्ध कर रहे थे और उस वीभत्स ज्याफत का बन्दोबस्त कर रहे थे जो लड़ाई के बाद उन लोगों की हुआ करती थी और जिसमें मरे हुये दुश्मनों के देह उन्हें खाने को मिल जाते थे।

टार्जन ने देखा कि इन सभों के पास बन्दूकें हैं और गांव का फाटक भी इन्होंने भीतर से बन्द कर लिया है। इन लोगों के ऊपर इस समय हमला करना बिल्कुल व्यर्थ होगा। वे लौट के वजीरी के पास गये और उसे सब हाल सुना के बोले कि तुम कुछ देर रुके रहो।

लिये दुश्मनों को भी तितिर बितिर होना पड़ेगा और उस समय अगर तुमने होशियारी से काम लिया तो तुम बहुतों को अपने हथियारों की मदद से जमीन पर गिरा सकोगे।"

हबशियों का झुन्ड देखते देखते जंगल में गायब हो गया और साथ ही मैदान पार करके अरब डाकुओं ने जंगल में पैर रक्खा।

टार्जन थोड़ी दूर तक दौड़ कर जमीन पर चले और बाद में उछल कर पेड़ पर चढ़ गये। एक दम ऊंचे जा कर पेड़ ही पेड़ चलते हुये वे पीछे लौटे और उस ओर चले जिधर गांव पड़ता था। नीचे वालों को कुछ भी न मालूम हुआ कि उनका एक दुश्मन उन के सिर पर से होता हुआ कहीं जा रहा है।

गांव के पास पहुंच के टार्जन ने देखा कि वहां के सब अरब डाकू और उनके गुलाम मेनुएमा दुश्मनों का पीछा करने चले गये हैं और अब गांव भर में केवल उनका एक संतरी उसकी रक्षा करने रह गया है। वह संतरी उन कैदियों की भी देख देख कर रहा है जो सिक्कड़ से बंधे हुये वहां जमीन पर बैठाये हुये हैं।

पहरेदार दर्वाजे पर खड़ा जंगल की तरफ उस ओर देख रहा था जिधर उसके साथी गये थे। टार्जन धीरे से गांव की दूर की एक गली में उतरे और धनुष और तीर हाथ में लिये दबे पांव उसकी तरफ बढ़ने लगे। कैदियों की निगाह उन पर पड़ गई थी और वे आंखों में आशा और उत्साह भरे आश्चर्य से उनकी तरफ देख रहे थे। चलते हुए टार्जन मेनुएमा से दस कदम के फासले पर आ गये। उनके हाथ का तीर धनुष की मजबूत डोरी पर पीछे खिंचने लगा।

कान तक उसे खींच कर और अपनी तेज और अनुभवी आंखों से सच्चा निशाना साध कर टार्जन ने उसे उंगलियों से छोड़ दिया। एक हलकी आवाज हुई और बिना कोई शब्द मुंह से निकाले या बोले चाले संतरी मुंह के बल जमीन पर गिर गया। जंजीर में बंधे कैदियों ने देखा कि पीठ पीछे से घुसा हुआ तीर छाती पर एक बित्ता आगे निकल आया है।

टार्जन ने कैदियों की तरफ ध्यान दिया, करीब पचास औरत और बच्चे होंगे जो लम्बे सिक्कड़ के सहारे एक दूसरे से बंधे थे और उसमें ताले पड़े थे। वहां यह मौका न था कि ताले खोले जायं और उन्हें छुटकारा दिया जाय। टार्जन ने उसी हालत में उन्हें उठाया और अपने पीछे पीछे आने का इशारा कर गांव के फाटक से निकल जिधर अरब डाकू गये थे उसके ठीक उलटी दिशा में जंगल की तरफ बढ़े।

पचास आदमियों का लम्बी जंजीर के सहारे बंधे चलना मुश्किल काम है, तिस पर ये जंगली औरतें भूखी प्यासी और थकी हुई थीं। कभी कोई ठोकर खाके गिर पड़ती थी तो साथ में कइयों को गिरा देती थी, उससे देर लगती थी। दूसरे टार्जन घूमघुमौये रास्ते से दुश्मन से बचते हुये जा रहे थे जिसमें उनका सामना न पड़ जाय। उनको आहट मिलती थी तो उन बन्दूकों की आवाज से जो बराबर छूट रही थीं और जिससे टार्जन समझते थे कि वे घटना स्थल से मुनासिब फासले पर हैं और लड़ाई अभी हो रही है। लड़ाई का फल क्या होगा इसकी टार्जन को चिन्ता न थी। वे जानते थे

कि हबशी अगर उनके बताये तरीकों पर चलेंगे तो उन्हें कोई हानि न पहुंचेगी, मरेंगे तो उनके दुश्मन।

संध्या होते होते बन्दूकों की आवाज का आना बन्द हो गया। टार्जन समझ गये कि लड़ाई बन्द हो गई है और अरब लोग अपने गांव में लौट गये हैं। यह सोच उन्हें हंसी आई कि वहां संतरी को मरा और कैदियों को गायब देख सब बड़ा कुड़कुड़ायेंगे और उन्हें आश्चर्य होगा। और मजा होता अगर वहां से उनका इकट्ठा किया हुआ हाथीदांत भी सब उठा के ले आया गया होता। तब वे और रंज होते। पर इसकी जरूरत न थी। उन्हें निश्चय था कि अरब डाकू और उनके गुलाम सिपाही हाथीदांत का एक टुकड़ा भी ले के इस प्रान्त के बाहर नहीं जा सकते। एक तरकीब उन्होंने इसके लिये सोच ली थी। इसके सिवाय इन थकी हुई औरतों को बोझा दे के इतनी दूर चलाना भी ठीक न होता।

आधी रात बीत चुकने के बाद टार्जन उस जगह पहुंचे जहां एक रोज पहिले हाथी मारे गये थे। हबशियों ने डालियें लगा लगा कर एक घेरा सा बना लिया था और बीच में आग बाल ली थी जिससे जंगली जानवर दूर रहें। पास पहुंचने पर टार्जन ने उन्हें आवाज दी और बताया कि उनके साथी आ पहुंचे हैं। अपने रिश्तेदारों और जान पहिचान वालों को देख हबशियों को इतनी प्रसन्नता और इतना आनन्द हुआ कि कहा नहीं जा सकता। उनसे मिलने या उन्हें फिर कभी जीता देखने की आशा उन्होंने छोड़ दी थी और टार्जन को भी वे किसी आफत में पड़ गया हुआ समझते थे। वे

लोग रात भर आनन्द मनाते रहते और जागते रहते, लेकिन टार्जन ने उन्हें समझाया कि "इस तरह शोर मचने से डाकुओं को सन्देह हो जायगा और वे आकर सभों को मार डालेंगे, दूसरे कल दिन को बहुत काम करना है, इससे तुम्हारा थोड़ी देर सो रहना जरूरी है।" लाचार हो के उन्हें टार्जन की बात माननी पड़ी। लेकिन कोशिश करने पर भी चुपचाप सो रहना सहज काम न था। जिन औरतों के पति या लड़के मार डाले गये थे, वे जोर जोर से चिल्ला कर अपने दिल का गुब्बार निकाल रही थीं। टार्जन ने उन्हें भी समझा बुझा के शान्त किया।

सुबह होने पर सभों को इकठ्ठा करके टार्जन ने अपना प्रस्ताव सुनाया और बताया कि किस तरह वे दुश्मनों से लड़ना चाहते हैं। सब ने उनकी राय को पसन्द किया, सभों ने स्वीकार किया कि यही एक रास्ता है जिससे वे डाकुओं को नीचा दिखा सकते हैं और उनसे बदला ले सकते हैं। उनकी राय से स्त्रियें और बच्चे करीब बीस बूढ़े हबशियों की हिफाजत में दक्षिण की तरफ भेज दिये गये। उनसे कह दिया गया कि दूर जाकर रहने के लिये मामूली झोंपड़ियें बना लें और कांटेदार पेड़ की डालियों का एक घेरा चारो-तरफ डाल वहीं रहें। टार्जन ने लड़ने का जो उपाय सोचा था उसमें कई दिन या कई सप्ताह लगने की संभावना थी और इस बीच में उनके साथ के लड़ने वालों को बराबर जंगल ही में रहना होगा।

दिन चढ़ने के दो घंटे बाद हबशियों की एक पतली लाइन ने गांव को चारो ओर से घेर लिया। आठ आठ दस दस गज

का फासला दे कर एक एक आदमी उन ऊंचे पेड़ों पर बैठाया जो चहार दीवारी के ऊपर पड़ते थे और जिन पर से भीतर का हाल अच्छी तरह दिखाई दे सकता था। थोड़ी देर बाद भीतर का एक मेनुएमा यकायक मुंह के बल जमीन पर गिर पड़ा। लोगों ने देखा कि उसकी छाती में एक तीर छः अंगुल भीतर तक धंसा हुआ है। कहीं से कोई आवाज न आई थी, कहीं लड़ाई आरम्भ होने का कोई चिन्ह न दिखाई दिया था। अपनी आदत के मुताबिक हबशी झुन्ड बांध कर शोर मचाते चिल्लाते अपने बरछे हवा में हिलाते न आये थे, मालूम तक न होता था वे कहां हैं।

इस नई बात पर अरब डाकू एक दम जल से उठे। वे दौड़ के फाटक तक पहुंचे कि देखें किस बेवकूफ ने उनके बीच ऐसी बेवकूफी का काम करने की हिम्मत की है। पर फाटक के पास कोई न था, न दूर दूर चारो तरफ कोई नजर आ रहा था। वे दुश्मन को खोजने जायं तो किस तरफ? वे खड़े खड़े यह सोच ही रहे थे और मेनुएमा के इस विचित्र प्रकार से मरने पर ताज्जुब ही कर रहे थे कि कहीं से एक तीर आ कर एक अरब की छाती में लगा और वह बिना मुंह से बोले जमीन पर बैठ गया।

टार्जन ने हबशियों में से चुन के अच्छे से अच्छे तीर के निशानेबाज पेड़ पर बैठाये थे और उन्हें समझा दिया था कि जब दुश्मन पास में रहे या तुम्हारी तरफ देख रहा हो तो तुम कभी भी तीर न चलाओ, न अपने को प्रगट करो। उसको मारो तभी जब वह तुमसे दूर हो और उसका ध्यान दूसरी ओर हो। तुम तीर चला

का मरना आरंभ हुये दोपहर से ज्यादा समय बीत गया और लोग बराबर मरते गये तो अरब डाकू तो थोड़ा पर उनके गुलाम मेनुएमा बहुत ज्यादा घबड़ा गये। इस तरह की लड़ाई उन्होंने देखी न थी, न इस तरह मौत के चंगुल में फंसे रहना वे मुनासिब समझते थे। बेमालूम जगह से आये हुये तीर कभी खाली न जाते थे, इतने ठीक वे निशाने पर वे बैठते थे, इतनी ताकत से वे चलाये जाते थे कि जिस को वे लग गये, यह समझ लेना पड़ता था कि उसकी मौत आ गई और सब से बुरी बात यह थी कि दुश्मन का कहीं पता न लगता था जिससे इन कार्यों का बदला लिया जाता और जिसे रोका जाता।

दुश्मन का पता लगने से निराश हो कर अरब लोग अपने साथियों सहित गांव में लौट आये, पर वहां भी मरने का काम बन्द न हुआ। थोड़ी थोड़ी देर पर, कोई न कोई आदमी मुंह के बल जमीन पर गिरता था, और जो गिरता था फिर उसके साथियों को ही उसे पकड़ के उठाना पड़ता था। मेनुएमा गुलामों ने इकट्ठे हो के अपने मालिकों से कहा कि यह जगह तुरत छोड़ देनी चाहिये, नहीं तो हममें से एक भी जीता न बचेगा। अरब लोग गांव छोड़ने को तो तैयार हो गये, पर उनकी हिम्मत न पड़ी कि भयानक जंगल के बीच में से हो कर इस नये दुश्मन की निगाहों के सामने इतना हाथीदांत साथ लेकर वे जायं, और हाथीदांत पीछे छोड़ा न जा सकता था। उसे वे कैसे छोड़ देते, जब कि उनके इतने कष्ट उठाने पर केवल एक वही चीज उन्हें मिली थी।

आखिर अरबों ने एक तरकीब निकाली।

उन लोगों ने वैसा ही किया जैसा उन्हें कहा गया था। जगह जगह आग बाल कर उसके चारो तरफ बड़ी देर तक वे बैठे हुये दिन को हुई भई घटनाओं पर बातें करते रहे। पर टार्जन जाकर तुरत ही सो गये। करीब एक बजे तक वे सोते रहे। इसके बाद धीरे से उठ कर उन्होंने अपने हथियार लिये और अन्धकारमय जंगल में घुसे। एक घंटे बाद वे उस छोटे से मैदान में पहुंच गये जिसके थोड़ी दूर बाद गांव पड़ता था। दबे पांव चलते हुए वे दर्वाजे के पास पहुंचे। छेदों में से उन्होंने देखा कि भीतर गहरा सन्नाटा छाया हुआ है। पास में आग बल रही है और वहीं एक संतरी आती हुई नींद को रोकने की चेष्टा करता हुआ बैठा है।

टार्जन घूम के उस ओर गये जिधर एक ऊंचा पेड़ ठीक चहार-दीवारी के ऊपर पड़ता था। एक डाल पर बैठ उन्होंने अपनी कमान कंधे से उतार हाथ में ली और उस पर एक तीर चढ़ाया। बड़ी देर तक वे ठीक संतरी के ऊपर निशाना साधने की चेष्टा करते रहे, पर उन्होंने देखा कि हिलती हुई डालियां और धुंधली आग की लपटों के कारण ठीक निशाना लगाना कठिन है। तीर बहक जा सकता है, अगर वह ठिकाने से हट गया, ठीक छाती में जाके न लगा तो संतरी मरेगा नहीं, अगर वह तीर लगते ही मरा नहीं, उसने जरा सा भी आवाज मुंह से निकाली तो उनकी सारी सोची हुई तर्कीब मिट्टी में मिल जायगी।

टार्ज़न तीर कमान और रस्से के अतिरिक्त अपने साथ एक बन्दूक भी लाये थे जो उन्होंने दिन को एक मेनुएमा को मार के ली

थी। इन सब चीजों को उन्होंने पेड़ के एक खोखले में रख दिया। केवल लंबा छुरा अपने हाथ में लिये वे चहारदीवारी के भीतर जमीन पर उतर आये। दबे पांव वे संतरी की तरफ बढ़े। उसकी पीठ इन्हीं की तरफ थी इससे और वह नींद में भरा ऊँघ रहा था इस कारण भी इनके चलने की आवाज उसके कानों में न गई। टार्जन उससे दो कदम के फासले पर पहुंच गये, जरा सा वे जमीन पर दबके, छुरे वाला हाथ उन्होंने ऊंचा किया और तब इस इरादे से उछलने को तैयार हुये कि सिर पर पहुंचते ही छुरा दस्ते तक दुश्मन के पेट में घुसेड़ दें।

न जाने क्यों, शायद उसे कुछ आहट लग गई या पीछे से आने वाली मौत ने दिल में खटका कर के उसे होशियार कर दिया—संतरी एक बार चौंका, उसने गर्दन पीछे घुमाई और तब उछल के पैरों पर खड़ा हो गया।

सत्रहवां बयान

वजीरो हबशियों का नया सरदार

जब मेनुएमा की आंखें सामने खड़े उस विचित्र जीव पर पड़ीं और उसने उसके हाथ के लंबे छुरे को देखा तो डर के मारे उसके होश उड़ गये। वह अपने हाथ की बन्दूक को भूल गया, वह चिल्लाना तक भूल गया, केवल उसके दिमाग में यह बात उठी कि जिस तरह हो इस भयानक गोरे रंग के विचित्र दैत्य से बच के भागना चाहिये, इससे अपनी जान बचानी चाहिये।

वह घूमा, पर उसने मुश्किल से कदम उठाया होगा कि टार्जन उसके सिर पर पहुंच गये। उसने चिल्लाना चाहा, पर मुंह से आवाज न निकल सकी। लोहे ऐसी उंगलियों ने उसके गले को शिकंजे की तरह जकड़ लिया। क्षण भर के अंदर वह जमीन पर दिखाई देने लगा। उसने छूटने की चेष्टा की, अपना सारा बल लगा दिया, पर वे उंगलियें इस तरह गला पकड़े हुई थीं जिस तरह बुलडाग कुत्ता अपने शिकार को पकड़ता है। उसकी सांस रुकने लगी, आंखें बाहर निकल आईं, जुबान होठों के बाहर लटकने लगी, चेहरे का रंग नीला हो गया। एक दफे उसके बदन में कंपकंपी आई और तब उसका देह शान्त हो के जमीन पर पड़ रहा।

टार्जन ने संतरी के मरे हुये शरीर को उठा के कंधे पर रख लिया और नींद में गाफिल गांव की सूनसान गली में चलते हुए पांच मिनट से भी कम देर में वे उस पेड़ के पास आ गये जो इस ऊंची चहारदीवारी से घिरे गांव में भी उन्हें इस तरह सुभीते के साथ पहुंचा देना था। शरीर को लिये हुये वे पेड़ पर चढ़ गये।

एक मोटी डाल के सहारे उसे रख अंधेरे में टटोल टटोल के टार्जन ने पहिले तो उसकी कारतूस की पेटी कमर से खोल ली और बाद में उसके सब जंगली गहने वगैरह उतार लिये। इसके बाद उसकी बंदूक ले के टार्जन जरा ऊंचे पर चढ़ गये और एक ऐसी डाल पर जा बैठे जहां से गांव का हर एक झोपड़ा साफ नजर आता था। वे जानते थे कि इन अरब डाकुओं के सरदार किस झोपड़े में सोते हैं। उन्होंने निशाना साधा और एक गोली उसकी दीवार में

मारी, तुरत ही किसी के कराहने की आवाज उनके कान में गई। वे समझ गये कि उनके निशाने ने काम किया है।

थोड़ी देर सन्नाटा रहा और तब नींद से चौंक के उठे हुये अरब और उनके मेहुएमा गुलाम मक्खियों के झुंड की तरह झोंपड़ों के बाहर निकलने लगे। इस तरह बेवक्त उठाये जाने से वे बड़े क्रोध में थे, लेकिन क्रोध का स्थान तुरत ही डर ने दखल कर लिया जब उन्हें पता लगा कि झोंपड़े के अंदर सोया हुआ उनका एक साथी घायल हो गया है और इस मनहूस गांव में रात के वक्त भी वे चैन की नींद नहीं सो सकते। कल दिन भर उन्होंने काफी तकलीफ उठाई था, आज रात के सन्नाटे में इस बन्दूक की एक आवाज ने उनके दिमाग में तरह तरह के खयाल पैदा कर के उन्हें डराना शुरू किया।

जब उन्हें यह मालूम हुआ कि उनका दर्वाजे पर का पहिरेदार भी गायब हो गया है तो उनकी घबड़ाहट का ठिकाना न रहा। अपनी भागती हुई हिम्मत को शायद बटोरने के लिये वे गांव के फाटक की तरफ गोलियें चलाने लगे, यद्यपि वे देख रहे थे और जानते थे कि वहां कोई दुश्मन नहीं है। इस शोर गुल में टार्जन को मौका मिला और उन्होंने बन्दूक उठा के नीचे खड़ी भीड़ पर एक दूसरी गोली चलाई।

दर्वाजे पर बन्दूकों की बाढ़ मारी जा रही थी इससे टार्जन की चलाई गोली की आवाज किसी के कान में न गई। पर उसने जो काम किया वह तुरत दिखाई पड़ा। लोगों के बीच में खड़ा एक

आदमी औंधे मुंह जमीन पर गिरा, देखने पर मालूम हुआ कि वह एक दम मुर्दा है। जंगली मेनुएमा गुलामों के बीच में खलबली सी मच गई, उनका इरादा हुआ कि फाटक के बाहर निकल के जंगल में भाग चलें और इस डरावने गांव को तुरत छोड़ दें। बड़ी मुश्किल से डरा धमका के उनके अरबी मालिकों ने उन्हें रोका।

धीरे धीरे उनमें शान्ति और स्थिरता आने लगी। और उनके बीच का और कोई आदमी फिर न मरा तो उनमें कुछ साहस आया। पर यह स्थिरता और यह साहस ज्यादा देर वास्ते न था। यकायक टार्जन ने अपने गले से एक डरावनी आवाज निकाली और संतरी के मरे हुये देह को उठा के और जोर से झुमा के उसे नीचे खड़े आदमियों के सिर पर फेंका।

जोर से चीखें मारते हुये लोग चारो तरफ भागे। उनकी समझ में न आया कि हाथ पांव फैलाये यह कौन भयानक जीव ऊपर से उन्हें खाने झपटा चला आ रहा है। बहुतेरे चहारदीवारी पर चढ़ गये और बहुतों ने दर्वाजा तोड़ के बाहर जाने का रास्ता बना लिया। संतरी के शरीर के नीचे आते आते तक वहां कोई आदमी न बचा जो देखता कि यह आने वाली चीज आखिर है क्या।

कुछ देर तक पेड़ पर बैठे टार्जन देखते रहे कि डाकू अब क्या करते हैं। उनमें से कोई भी जंगल से निकल के फिर गांव में न घुसा। टार्जन समझते थे कि थोड़ी देर में वे वापस आवेंगे और जब देखेंगे कि यह ऊपर से आई हुई चीज और कुछ नहीं, उनके मरे हुये संतरी की देह है, तो फिर उनके आश्चर्य और डर का ठिकाना न रहेगा।

इस जगह अब उन्हें और कुछ नहीं करना है। वे पेड़ पर और ऊंचे चढ़ गये और ऊपर ही ऊपर वजीरी हब्शियों के कैंप की ओर दक्षिण की तरफ रवाना हुये।

एक आदमी कुछ देर बाद मैदान पार करके दर्वाजे के पास आया और झांक के देखने लगा कि जो चीज गिर के गली में बिना हिले डुले पड़ी है वह क्या है। उसे वह आदमी मालूम हुआ। वह और पास आया, मरे हुये देह के बिल्कुल बगल में पहुंच गया और तब उसने पहिचाना कि वह तो वह मेनुएमा गुलाम है, जो रात के वक्त दर्वाजे पर पहरा दे रहा था।

उसकी आवाज सुन जल्दी ही उसके साथियों ने उसे चारो तरफ से घेर लिया। क्षण भर वे लोग धीरे धीरे आपस में कुछ सलाह करते रहे और तब उन्होंने ठीक वही काम किया जो टार्जन ने पहिले ही समझ लिया था वे करेंगे, और जिसे समझ वे पेड़ पर से हट गये थे। उन्होंने गोलियों की बाढ़ के बाद बाढ़ उस पेड़ पर मारनी शुरू की जिस पर से मुर्दा आया था। अगर टार्जन उस जगह होते तो उनका बदन चलनी हो गया होता।

जब लोगों ने देखा कि मरे हुये आदमी के देह पर चोट का निशान कोई भी नहीं है, केवल फूले हुये गले पर चार उंगलियों और एक अंगूठे का दाग है तो वे और डर गये। उन्हें यह बात बड़े ताज्जुब की और संदेहजनक मालूम हुई कि रात के वक्त गांव के बन्द फाटक और ऊंची चहारदीवारी के भीतर भी कोई आ पहुंचे और उनके संतरी को खाली हाथों केवल गला दबा के मार डाले। वे

लोग, खास कर वे जंगली मेनुएमा इसे भूत प्रेत का काम समझने लगे।

उनके करीब पचास साथी जंगल में इधर उधर भटक रहे थे, बाकी के झोंपड़ों में छिपे हुये बराबर इस संदेह में पड़े हुये थे कि न जाने कब कहीं से बरछा आ जाय तो उनकी जान ले ले, या कहीं से बन्दूक चले जो उनके कलेजे को छेद डाले। इस हालत में यह अप्राकृतिक नहीं था कि उनकी हिम्मत उनका साथ छोड़ दे और वे भाग चलने को तैयार हो जायं। बेचारे मेनुएमा गुलामों ने बची हुई रात भी वहां काटना स्वीकार न किया, वे उसी समय गांव को छोड़ने को तैयार हो गये। अरबों ने उन्हें डराया धमकाया, जान तक ले लेने की धमकी दी। पर किसी तरह भी उन्होंने वहां रहना मंजूर न किया। अंत में उन्होंने वादा किया कि सवेरा होने पर हम भी तुम्हारे साथ चलेंगे। तुम रात भर यहां रहो और सवेरे हमारे साथ चलो। इस कहने पर वे रुक गये।

सुबह जब टार्जन और उनके साथी गांव के पास पहुंचे तो उन्होंने देखा कि उनके दुश्मन गांव छोड़ने की तैयारी में लगे हुये हैं। चीजें और सामान उठाये जा रहे हैं और गांव में इकट्ठा किया हुआ हाथीदांत गुलामों के कन्धों पर लादा जा रहा है। इसे देख टार्जन को हंसी आई, वे जानते थे कि ये लुटेरे इस कीमती चीज को बहुत दूर तक न ले जा सकेंगे। उन्हें उसका मोह छोड़ना ही होगा। बाद में एक बात देख उन्हें चिन्ता हुई, उन्होंने देखा कि कई मेनुएमा फटे कपड़े लकड़ी के सिरों पर लपेट और उन्हें तेल में

हुआ आग में बाल रहे हैं। शायद वे झोंपड़ों में जाते जाते आग लगा देना चाहते हैं।

टार्जन इस समय जिस पेड़ पर बैठे हुये थे वह गांव से प्रायः सौ गज के फासले पर पड़ता था। उन्होंने अपने हाथों को मुंह के सामने लगाया और तेज आवाज में चिल्ला के अरबी भाषा में बोले, "झोंपड़ों में आग न लगाओ, नहीं हम तुम्हें मार डालेंगे, झोंपड़ों में आग न लगाओ, नहीं हम तुम्हें मार डालगे।"

दस बारह दफे टार्जन इस तरह चिल्लाये। उनकी आवाज सुन के वे मेनुएमा जो मशालें बाल रहे थे एक दफे हिचकिचाये, फिर एक ने अपने हाथ की मशाल आग में फेंक दी। देखा देखी दूसरे भी ऐसा करने लगे पर तब से अरब उनके सिर पर पहुंच गये। लकड़ियों से बेरहमी से पीट पीट के वे उन्हें बलती हुई मशालों के साथ झोंपड़ों की तरफ खदेड़ ले चले। टार्जन ने देखा कि उनमें से एक जो सब से आगे है और देखने में उनका सरदार सा मालूम होता है उन्हें झोंपड़ों में आग लगाने को कह रहा है। टार्जन डाल पर सहारा ले के खड़े हो गये और सावधानी से निशाना साध के उन्होंने घोड़ा दबा दिया। जोर से आवाज हुई और वह अरब मुंह के बल जमीन पर लुढ़क पड़ा। पास खड़े मेनुएमा गुलामों ने अपने हाथ की मशालें जमीन पर फेंक दीं और तेजी से जंगल की तरफ भागे, उन्हें भागते देख के अरब उन पर गोलियें चलाने लगे, पर उनमें से कोई भी घायल न हुआ और वे जंगल में घुस गये।

अपने हुक्म का ऐसा निरादर देख अरब क्रोध से लाल हो गये,

पर उन्होंने देखा कि इस समय कुछ बोलना चालना या करना ठीक न होगा। इन गुलामों से पीछे समझा जायगा। इस समय जिस तरह हो गांव से जल्दी हट चलना चाहिये और इन झोंपड़ों को भी न जलाना चाहिये। शायद ऐसा करने से किसी आफत में फंसना पड़े। कुछ दिन बाद हो सका तो और ज्यादा आदमी साथ ले कर यहां आया जायगा और यहां वालों को ऐसा सबक सिखाया जायगा कि ये भी याद करेंगे।

वह आदमी कौन और कहां है जिसने ऐसे मौके पर बोल बेनुरुमा गुलामों को डरा दिया और उनका सारा सोचा विचारा मटियामेट कर दिया, यह कोशिश करने पर भी वे पता न लगा सके। जिस गोली चलने की आवाज के साथ अरब मरा था उसका धूआं उन्होंने एक पेड़ से निकलते देखा था। उस पेड़ पर उन्होंने कई गोलियें चलाईं, पर वहां कोई हो तब तो उसे चोट लगे या वह मरे। टार्जन ऐसे बेवकूफ न थे जो ऐसी भोंडी गलती करके अपनी जान देते। अरब पर गोली चलाने के साथ ही वे पेड़ से कूद पड़े थे और दौड़ते हुये करीब सौ गज दूर एक दूसरे पेड़ पर चढ़ गये थे। वहां बैठ वे फिर अरबों का तमाशा देखने लगे थे।

थोड़ी देर तक अरब डाकू आपस में सलाह करते रहे, इसके बाद वे चलने को तैयार हुये। टार्जन ने पहिले ही की तरह हाथों को मुंह में लगा के फिर चिल्ला के कहा—

"तुम लोग हाथीदांत रख दो, मत ले जाओ, ले जाओगे तो अपनी जान से हाथ धोओगे।"

कई मेनुएमा गुलामों ने हाथीदांत जमीन पर रख देना चाहा, पर अरबों ने अपनी बन्दूकों की नली उनकी छाती से सटा दी और कहा कि "अगर तुम लोग हमारे हुक्म के मुताबिक काम न करोगे तो सब के सब अभी मार डाले जाओगे।" वे गांव में आग लगाना बन्द कर सकते थे पर हाथीदांत को छोड़ देना—उसे कब्जे से बाहर जाने देना उनके लिये असंभव था। वे मौत को पसंद करते पर हाथीदांत न छोड़ते। वह कितना कीमती है यह अंदाजा उनकी अनुभवी आंखों का ही था।

वे लोग गांव से बाहर निकले और उत्तर की तरफ उस ओर रवाना हुये जिधर कांगो का जंगलों से भरा बीहड़ और भयानक प्रान्त पड़ता था, और उनके दोनों तरफ अपने को छिपाते और बराबर उन पर तेज निगाह रक्खे उनके दुश्मन भी चले। हाथीदांत को कंधों पर लादे मेनुएमा बीच में थे और उन्हें चारों ओर से घेरे उनके सिपाही थे।

जंगल के बीच से जो रास्ता उत्तर गया था उसके दोनों ओर घनी झाड़ियों के बीच और पेड़ों के ऊपर टार्जन ने थोड़ी थोड़ी दूर पर अपने आदमी बैठा दिये। डाकुओं की कतार जब बीच से जाने लगी तो कभी तो कहीं से बर्छा आता था जो एक न एक आदमी का खातमा करता था, और कभी कहीं से तीर आ जाता था जो किसी न किसी को जमीन पर सुला देता था। ये अस्त्र कहां से आते हैं पता न लगता था, पर वे आते थे इतने सच्चे निशाने पर कि उनका वार खाली न जाता था। टार्जन ने हुक्म दे दिया था कि

हथियार इस तरह चलाओ कि तुम्हारा पता न लगे, और एक स्थान में उसे चला के वहां रुको मत, तुरत वहां से भाग जाओ और आगे रास्ते पर जाके खड़े हो जाओ, जिसमें दुश्मन जब आगे बढ़ें तो वहां तुम उसे मार सको। इस तरह डाकू ज्यों ज्यों आगे बढ़ते गये उनकी संख्या कम होती गई और उनकी घबड़ाहट बढ़ती गई। अपने मरे हुये साथियों को देख के वे व्याकुल हो रहे थे और यह सोच के व्याकुल हो रहे थे कि न जाने आगे कब किस समय किस पर वार हो और कौन इस दुनिया से उठ जाय।

इस हालत में बोझ से लदे हुये गुलामों को खदेड़ खदेड़ के आगे ले चलना तरद्दुद का काम था। बार बार वे बेचारे चाहते थे कि हम बोझ यहीं फेंक आगे रास्ते पर भाग जायं, और बार बार जान लेने का भय दिखला वे रोके जाते थे। सारा दिन इसी झंझट और लड़ाई झगड़े में बीत गया और जब रात होने को आई तो अरबों ने रुक के लकड़ियों और डालियों का एक घेरा बनाया और उसमें आराम करने का इन्तजाम करने लगे। पास में नदी बहती थी जिसमें पानी ले के उन्होंने खाया पीया और हरारत मिटाई।

रात को भी उन्हें चैन न मिला। उन्होंने चारो ओर कई संतरी बैठा दिये कि वे चारो तरफ निगाह रक्खेंगे और जरूरत पड़ने पर बाकी लोगों को उठा देंगे। रह रह के बंदूक की आवाज होती थी और उन अभागे संतरियों में से एक न एक जमीन पर लुढ़क पड़ता था। किसी को भी रात भर नींद न आई, वे अच्छी तरह सोचते और समझते थे कि इस तरह चलने से धीरे धीरे वे सब मार डाले

जायंगे और अपने दुश्मन के एक आदमी को भी नुकसान न पहुंचा सकेंगे। तिस पर भी उन्होंने हाथीदांत का पिंड न छोड़ा, उसे अपने से अलग न किया। सबेरे उन्होंने मेनुएमा गुलामों को फिर उठाया और उन्हें मारते पीटते आगे ले चले।

तीन दिन तक ये लोग बराबर उसी तरह बढ़ते चले गये और तीन दिन तक बराबर उनमें के लोग मरते रहे। थोड़ी थोड़ी देर पर, घंटे दो दो घंटे पर, तीर या बरछा आता था और एक न एक का प्राण ले लेता था। रात के वक्त संतरी का काम करना प्राण देने के बराबर था, जिसके भी सपुर्द पहरा देने का काम किया जाता था वह समझ लेता था कि आज मेरी मौत आ गई।

चौथे दिन सुबह मेनुएमा गुलामों ने हाथीदांत लेके आगे बढ़ने से इनकार कर दिया। अरबों ने उनमें से दो को गोली मार दी। उसी समय जंगल में कहीं से तेज आवाज आई, "मेनुएमा, अगर आज तुम हाथीदांत ले के एक कदम भी आगे बढ़ोगे तो सब के सब मारे जाओगे। तुम में से एक भी न बचेगा। तुम्हारी कुशल इसी में है कि तुम हाथीदांत जहां का तहां छोड़ दो। क्यों नहीं तुम अपने जालिम मालिकों पर टूट पड़ते और उनमें से हर एक को यम-लोक का रास्ता दिखाते। तुम्हारी संख्या बहुत ज्यादा है, तुम सब के पास हथियार है। तुम्हारे मुकाबले में ये अरब कुत्ते कुछ कर थोड़े ही सकेंगे। तुम अगर इन्हें मार डालो तो हम तुम्हारी कुछ भी हानि न करेंगे, तुम में से किसी को तकलीफ न देंगे। बल्कि तुम्हें अपने गांव ले चलेंगे, वहां खाने को देंगे और फिर तुम्हें तुम्हारे देश भेज

देंगे। सोच क्या रहे हो, हाथीदांत रख दो और बन्दूकें हाथ में लो। हम भी तुम्हारी मदद करेंगे। अगर हमारी बात न मानी तो समझो तुम सब के प्राण गये।"

जंगल से आती इस विचित्र आवाज को सुन के अरब डाकुओं के दल में सन्नाटा छा गया। वे तेज और डरी हुई निगाहों से अपने गुलामों की तरफ देखने लगे। मेनुएमा गुलाम भी एक दूसरे की तरफ ताकने लगे। शायद वे सोचने लगे कि इस छिपे हुये सलाह देने वाले की राय कहां तक ठीक है और उनमें से कौन इतना हिम्मतवर है जो उसे मानेगा। उन सभों के पास बन्दूकें थीं, उनमें बोझा ढोने का जो काम करते थे वे तक अपनी पीठों पर बन्दूकें लटकाये हुये थे।

फैले हुये अरब इकट्ठे हो के साथ हो गये। उनमें जो सरदार था उसने अपनी बन्दूक का घोड़ा चढ़ा लिया और तेज आवाज में चिल्ला के गुलामों को आगे बढ़ने का हुक्म दिया। यकायक एक मेनुएमा ने अपने कंधे का हाथीदांत जमीन पर फेंका और पीठ से बन्दूक उतार के शेख़ पर गोली चला दी। जैसे यह एक तरह का इशारा या लड़ाई के आरंभ होने की सूचना हो। क्षण भर के अन्दर वहां खून खराबे और मौत का बाजार गर्म हो उठा। मेनुएमा अपने मालिकों पर इस तरह टूट पड़े जैसे वे कई दिन से यह बात सोचे हुये हों और आज उन्हें उस बात का मौका मिला हो। छुरे, पिस्तौल, बन्दूक और बरछे इस तरह चलने लगे, इतना शोर गुल और तहलका मचा जैसे मालूम होता था कि कोई बड़ी भारी दो फौजें

आपस में लड़ रही हों। अरबों ने अपने को बचाने की पूरी चेष्टा की, बड़ी बहादुरी से वे लड़े, लेकिन चारों तरफ से उन पर गोलियें इस तरह पड़ रही थीं जैसे पानी बरसता हो, और इसके सिवाय चारो तरफ के पेड़ों पर से तीरों और बरछों की बौछार भी आ रही थी। हुआ वही जो होना था। लड़ाई शुरू होने के बाद दस मिनट के अंदर आखिरी अरब मर कर जमीन पर गिरा दिखाई देने लगा।

जब लड़ाई बन्द हो गई टार्जन ने आवाज दे के कहा, "हाथी-दांत उठा लो, और इसे उसी गांव में उठा ले चलो जहां से तुम इसे उठा के लाये हो। वहां पहुंचने पर हम तुम्हें कोई तकलीफ न देंगे।"

मेनुएमा इकट्ठे हो कर थोड़ी देर तक आपस में कुछ सलाहें करते रहे। इसके बाद उनमें से एक ने जंगल की तरफ मुंह करके जोर से पुकार के कहा, "हमें कैसे विश्वास हो कि आप जब अपने गांव में हमें ले चलियेगा तो कष्ट न दीजियेगा!"

टार्जन ने जवाब दिया, "इस बात का हम वादा करते हैं कि तुम जब हमारा हाथीदांत वहां पहुंचा दोगे तो कोई तकलीफ न देंगे। हम चाहें तो अभी तुम सभों को मार डालें, लेकिन हम वैसा नहीं कर रहे हैं। फिर जब तुम हमारे कहे मुताबिक काम करोगे तो फिर हम तुम्हें नुकसान क्यों पहुंचावेंगे। इस बात को तो सोचो!"

मेनुएमा बोला, "आप कौन हैं जो हमारे मालिकों की भाषा बोल रहे हैं। सामने आइये तो आपकी बात का हम जवाब दें!"

टार्जन जंगल से निकल उनसे दस बारह कदम के फासले पर आ खड़े हुये।

उन्हें देख मेनुएमा के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उन्होंने अब तक कभी गोरे रंग का जंगली न देखा था। भारी और सुडौल बदन तथा रोबीले चेहरे को देख उनमें डर पैदा हुआ और साथ ही कुछ श्रद्धा भी।

टार्जन बोले, "तुम मेरा विश्वास करो और इस बात को निश्चय समझो कि अगर तुम कहे मुताबिक काम करोगे और मेरे किसी साथी को नुकसान न पहुंचाओगे तो तुम्हारा कोई भी अनिष्ट न होने पायेगा। इसके विपरीत अगर तुम अपने मन की करोगे तो हम फिर तुम्हारे पीछे पीछे चलेंगे और उसी तरह तंग करेंगे जिस तरह पिछले तीन दिन तक कर चुके हैं।"

उन तीन दिनों का ख्याल कर मेनुएमा घबड़ा गये। उन्होंने आपस में सलाह की और तब सब ने अपना अपना बोझा उठा लिया और वजीरी के गांव की तरफ रवाना हुये।

तीसरे रोज संध्या को वे गांव के पास पहुंचे। गांव के लोगों ने दर्वाजे पर उनसे भेंट की। जब अरब डाकू गांव छोड़ के चले थे तभी टार्जन ने एक आदमी भेज दक्षिण की तरफ डेरा डाल दे पड़े लोगों से कहला दिया था कि वे अब गांव में लौट आवें, कोई खतरा नहीं है। इस समय अपने साथियों और रिश्तेदारों को सही सलामत लौट आया देख और साथ ही खोया हुआ हाथीदांत भी पा वे बड़े प्रसन्न हुये।

मेनुएमा को अपने हाथ में आया पा बहुत से लोगों का इरादा हुआ कि इन्हें मार के खपा दिया जाय, पर टार्जन ने उन्हें समझाया

और बोले, "नहीं, ऐसा न होना चाहिये, मैं उनसे वादा कर चुका हूँ कि तुम्हें कोई नुकसान न पहुंचाया जायगा, और मेरे इसी वादे पर वे यहां आये हैं। तुम्हारी जीत मेरे ही कारण हुई है इससे तुम्हें मेरी बात माननी पड़ेगी।" लोगों ने टार्जन की बात मान के उन्हें खाने को दिया और गांव में उनके रहने का प्रबन्ध कर दिया।

उस रोज रात को अपने जीतने की खुशी में वजीरियों ने एक जलसा किया और उसमें वे यह राय करने लगे कि नया सरदार किसे चुनना चाहिये। बुड्ढे वजीरी के मरने के बाद से एक तरह से टार्जन ही उनके सरदार बने हुये थे और उनको इस जंगलियों ने सब बातों में इतना होशियार और लड़ाई के फन में इतना चतुर पाया था कि उनको हटा के दूसरे आदमी को उनकी जगह पर वे रखना न चाहते थे। टार्जन की मर्जी के खिलाफ चलने का फल वे देख चुके थे, उसी खिलाफ चलने में बुड्ढे वजीरी ने अपनी जान से हाथ धोया था। इससे उन्होंने लड़ाई भर खुशी खुशी टार्जन की सरदारी स्वीकार की थी। अब किसी न किसी को कायदे से अपना सरदार चुन लेना चाहिये यह वे सोच रहे थे।

विचार करते करते आखिर वसूली बोला, "हमारा पुराना सरदार मर गया और उसका कोई लड़का नहीं है इससे हमें किसी दूसरे आदमी को सरदार बनाना पड़ेगा। मेरी समझ में हमारा सरदार बनने लायक वही आदमी है जिसने पिछली लड़ाई में हमें इतने सहज में जिताया है, जो बन्दूकों और पिस्तौलों से लड़ना जानता है, जो इतना चतुर है कि बेईमान और दगाबाज अरबों तक से लड़

सकता है। मैं उसी को सरदार बनाना चाहता हूं।" इतना कह के बसूली उठ खड़ा हुआ और हाथ में बरछा ले के और कमर को कुछ झुका के यह कहता हुआ टार्जन के चारो तरफ नाचने लगा "वजीरी, वजीरियों का राजा वजीरी, अरबों को मारने वाला वजीरी, वजीरी, हमारा राजा वजीरी।"

धीरे धीरे करके और लोग भी जमीन से उठने लगे और टार्जन के पास आके और नाच में शामिल होके अपनी सम्मति प्रगट करने लगे। औरतें आके चारो तरफ बैठ गईं और बड़े बड़े नगाड़ों को पीट पीट के गाने लगीं, चारो तरफ गांव भर में शोर मच गया। बीच में जंगल के राजा टार्जन, या अब यों कहना चाहिये कि वजीरियों के राजा वजीरी, चुपचाप बिना कुछ बोले चाले बैठे रहे। हबशियों की इस वजीरी जाति में चाल थी कि जाति का जो नाम था वही उनके राजा का नाम होता था, राजा भी वजीरी पुकारा जाता था।

नाचने वालों की तेजी बढ़ती गई और गाने वालों का स्वर भी ऊंचा होता गया। औरतें जोर जोर से चीखने और नगाड़ों को पीटने लगीं और नाचने वाले हबशी अपनी ढालों को जमीन पर पटक पटक और बरछों को हिला हिला अपनी प्रसन्नता प्रगट करने लगे। ऐसा मालूम होने लगा जैसे सब के सब पागल बन बैठे हों।

जब शोर कुछ कम हुआ और नाचने वाले क्षण भर के लिये रुके तो टार्जन उछल के अपने पैरों पर खड़े हो गये और स्वयं भी घूम घूम और कूद कूद बरछे को हिलाते हुये उसी तरह नाचने

लगे जैसे ये जंगली नाच रहे थे। वे इन हबशियों के राजा बन, शायद अपनी रही सही सभ्यता भी भूल गये और पूरे जंगली बन गये।

क्या होता अगर इस समय सुन्दरी ओल्गा डी. कूड की निगाह उन पर पड़ी होती, क्या उन्होंने पहिचाना होता कि जिस शान्त और गंभीर नवयुवक को उन्होंने इतना चाहा था, जिसकी सुन्दर पौशाक और मनोमोहक बोलने और बात करने के ढंग ने उन्हें कुछ महीने पहिले अपने बस में कर लिया था, वही यहां इस रूप में खड़ा चिल्ला चिल्ला के नाच रहा है। और जेन पोर्टर! क्या टार्जन को इस शकल में देख, नंगे जंगलियों के बीच में नंगा खड़ा देख, उसका वह प्रेम कायम रहता जो अपने हृदय में वह इनके लिये छिपा के रक्खा करती थी। और डी. आरनट का क्या हाल होता? क्या उन्हें विश्वास होता कि यह वही आदमी है जिसे उन्होंने पेरिस के प्रसिद्ध फैशनेबुल क्लबों में ले जाके वहां के बड़े आदमियों से मिलाया था, और जो बोलने में इतना शिष्ट और मिष्टभाषी था। और लार्ड सभा के उन सदस्यों का क्या हाल होता जो अपना खिताब और रुतबा स्वीकार करने पर इस समय टार्जन के दोस्त होते और जो उनकी जंगली टोपी और उनके बदन में पड़े विचित्र गहने देख के आश्चर्य से कहते, "माई लार्ड, क्या यही जान क्लेटन, लार्ड ग्रेस्टोक हैं?"

धीरे धीरे ऊपर बढ़ते हुये, बन्दरों के राजा से अब टार्जन जंगली आदमियों के राजा बन गये। क्या यह नहीं कहा जा सकता कि उन्होंने उन्नति की!

अट्ठारहवां बयान

मौत का जूआ

प्रातः काल के सूर्य की किरणों ने जौन पोर्टर की आंखें जब खोल दीं तो उसने देखा कि उसकी नाव सीमारहित महासागर के बीच में एक दम अकेली है, आस पास कोई नाव नहीं है और उसके साथी इधर उधर पड़े हुये गहरी नींद में मस्त हैं।

उसके मन में घबड़ाहट सी होने लगी, साथियों से अलग होने ने उसे चिन्तित, भयभीत, व्याकुल सा कर दिया। वह सोचने लगी

कि जहाज के डूबने से नहीं तो इस भारी आफत से अवश्य उसका जीवन अब अन्तिम छोर पर आ पहुंचा और कोई आशा नहीं रह गई कि वह सभ्य संसार का फिर मुंह देखेगी। कौन इस जगह उसकी मदद करने आवेगा, कौन ऐसे स्थान पर उसे बचावेगा!

थोड़ी देर बाद एक करवट फेर कर क्लेटन ने भी आंखें खोल दीं। थोड़ी देर तक तो उन्हें कुछ भी खयाल न आया कि वे यहां नाव में कैसे पड़े हैं, पर धीरे धीरे उन्हें पिछले दिन की बातें याद आने लगीं और वे सिलसिलेवार घटनाओं को आपस में जोड़ने लगे। यकायक घबड़ा कर उन्होंने चारो ओर निगाह घुमाई और जब उनकी नजर जेन पोर्टर पर पड़ी तो संतोष की एक लंबी सांस लेकर वे बोले, "जेन, तुम हो, ईश्वर को हजार धन्यवाद! उसने तुमको मेरे साथ रक्खा!"

जेन पोर्टर ने उदासी से उंगली उठा के इशारा किया और कहा, "देखो क्लेटन, क्या तुमने इस बात की तरफ ध्यान दिया, हमारी नाव एकदम अकेली है।"

क्लेटन चिल्ला के बोले, "हैं, अकेली है! दूसरी नावें कहां गईं!!" उन्होंने निगाह घुमाई, फिर बोले, "पर समुद्र तो एकदम शान्त था, वे डूब नहीं सकतीं, और जहाज के पानी में धंस जाने बाद भी मैंने उन्हें देखा था!"

उन्होंने बाकी के सोये हुये लोगों को उठाया और उनसे सब हाल बयान किया। एक मल्लाह बोला—

"नावें अलग हो गईं तो कोई हर्ज नहीं हुजूर, उन सभों पर

अलग अलग खाने पीने का सामान है और एक को दूसरी की कोई आवश्यकता नहीं है। अगर तूफान आ गया तो संग रहने पर भी कोई किसी की मदद न कर सकेगा। अगर वे अकेली रहेंगी तो हो सकता है उनमें से कोई किसी जहाज के पास पहुंच जाय और उससे खबर पा कर बाकी नावों की भी खोज हो। साथ रहने की बनिस्बत अकेले चार नावों का चार जगह रहना ज्यादा अच्छा है।"

मल्लाह की बातें सुन लोगों को कुछ संतोष हुआ, पर उनका संतोष थोड़ी ही देर वास्ते था। यह राय हुई कि नाव का मुंह पूरब की ओर घुमा बराबर खेया जाय और जब तक जमीन न दिखाई पड़े उसी तरफ बढ़े चला जाय। जब दोनों डांड़ों की खोज हुई तो पता लगा कि वे नाव में नहीं हैं। उन मल्लाहों से जब पूछा गया जो कल के रोज डांड़ खे रहे थे तो उन्होंने जवाब दिया कि "हमें नहीं मालूम कहां गये।" ये डांड़ खेते ही खेते सो गये थे। आखिर यह समझना पड़ा कि मल्लाहों के सो जाने पर वे पानी में बह गये। इससे लोगों की चिन्ता और बढ़ गई।

मल्लाहों को जब इसके वास्ते डांटा गया तो वे आपस ही में लड़ने लगे। बड़ी मुश्किल से क्रेटन ने दोनों को अलग किया। उसी समय मानश्यूर थूरन बोल उठे "अंग्रेज बेवकूफ होते ही हैं, खास करके अंग्रेज मल्लाहों के बराबर बेवकूफ मल्लाह तो कहीं भी किसी भी जाति में नहीं होते।"

इस पर फिर झगड़ा होने की तैयारी हुई पर मल्लाहों में से एक ने जिसका नाम टामकिन्स था बीचबचाव करके उसे रोका। वह

बोला, "भाइयो, इस वक्त झगड़ने से कोई फायदा नहीं। जो होना था हो गया। अब ऐसी तर्कीब सोचनी चाहिये जिसमें हम सभों की जान बचे।"

मानश्यूर थूरन बोले, "जरूर, जरूर, लड़ने से कोई लाभ नहीं। पर जो मुनासिब बात होगी कही ही जायगी। लाओ जी विलसन, वह टीन का डब्बा तो उठाओ।"

विलसन एक दूसरे मल्लाह का नाम था जिसे थूरन ने यह शब्द कहे थे। वह बुड़बुड़ा के बोला, "नहीं उठाते, क्यों उठावें? क्यों हम किसी विदेशी का हुकम मानें, क्यों नहीं तुम ही उठ के उसे ले लेते? क्या तुम इस नाव पर कप्तान बनना चाहते हो?"

क्लेटन ने स्वयं उठ के डब्बा थूरन के हाथ में दिया। यह देख स्नाइडर नाम का मल्लाह बोला, "ठीक है, आप लोगों की चालाकी मैं समझ गया। आप और मानश्यूर थूरन दोनों का इरादा है कि नाव पर का सब खाने का सामान अपने कब्जे में कर लें और फिर हमें भूखा रक्खें।"

जेन पोर्टर अब तक के झगड़ों को चुपचाप देख रही थी। उसने मुंह से एक शब्द भी न निकाला था। अब उससे चुप न रहा गया। वह बोली, "बड़े अफसोस की बात है कि ऐसे स्थान में और ऐसी हालत में रह के भी तुम लोग लड़ने से बाज नहीं आते। भयानक समुद्र में अकेले रहने का तुम्हें सोच नहीं है, इस आफत से कैसे छुटा जायगा इसकी फिक्र नहीं है, फिक्र है केवल अपने स्वार्थ की! तुम लोग अपने मन से अपना कोई अफसर चुन लो और फिर

नाव के सब लोग उसी का कहना मानो, उसी के हुक्म पर नाव को चलाओ। ऐसा न करोगे तो तुम्हारा काम न चलेगा।"

जेन पोर्टर ने शुरू में सोचा था कि क्लेटन के साथ रहने से उसे सहारा रहेगा। सब झगड़े बखेड़े वह स्वयं निपटा लेगा और उसे बीच में दखल देने का काम न पड़ेगा। पर उसने जब देखा कि क्लेटन एक दम चुप हैं और कुछ भी नहीं बोल रहे हैं तो लाचार उसने ऊपर लिखे शब्द कहे।

युवती की बात सुन नाव पर थोड़ी देर के लिये शान्ति आ गई। सब चुप हो गये और यह तय हुआ कि पानी के दो बर्तन और खाने के सामानों के चार डब्बे थे सब दो बराबर बराबर भागों में बांट लिये जायं। आधा तो तीनों मल्लाह ले लें और आधा तीनों यात्रियों के पास चला जाय। ऐसा ही किया गया। चीजें जब बंट गईं तो जिनको जिनको हिस्सा मिला था वे दोनों दल अपना अपना सामान आपस में बांटने लगे। पहिले मल्लाहों ने अपने खाने के सामान का एक डब्बा खोला। यकायक खोलने वाले के मुंह से चीख की आवाज निकली।

सब लोग ताज्जुब से उधर देखने लगे। क्लेटन ने पूछा कि, "क्या मामला है?"

खोलने वाला मल्लाह बोला, "है क्या, मौत है साहब मौत! यह डब्बा तेल से भरा है, इसमें कोयले का तेल है!!"

क्लेटन ने अपने एक डब्बे का मुंह खोला। वहां भी वही हाल निकला। खाने की चीज के बजाय उसमें तेल भरा था। जल्दी

जल्दी बाकी के डब्बे भी खोल डाले गये और अपनी भयानक अवस्था, अपने ऊपर आई भयानक आफत का हाल उन सभों को मालूम हुआ। सब डब्बे तेल से भरे थे। नाव भर में खाने का एक टुकड़ा सामान न था।

टामकिन्स बोला, "खैर ईश्वर को धन्यवाद है कि उसने पीने को थोड़ा पानी नाव पर छोड़ दिया है। हम लोग खाये बिना शायद रह सकें, पर पानी बिना दो घंटे भी रहना मुश्किल हो जायगा।"

विलसन पानी के एक डब्बे में छेद कर रहा था। छेद हो जाने पर उसने चीनी मट्टी के एक प्याले में उस बर्तन को टेढ़ा किया। काले रंग की एक बारीक सूखी चीज डब्बे से निकल के प्याले के पेंदे में इकट्ठी होने लगी। एक आह की आवाज उसके मुंह से निकली। उसने डब्बे को जमीन पर पटक दिया। लोगों ने देखा कि प्याले में थोड़ी सी बारूद पड़ी हुई है!

कुछ देर तक लोगों के मुंह से आवाज न निकली। खाने के सामान से लोग पहिले ही नाउम्मीद हो चुके थे। इस पानी के अभाव ने लोगों को चिन्ता से, भय से—एकदम किंकर्तव्यविमूढ़ कर दिया। आखिर स्पाइडर धीमी आवाज में बोला, "तेल और बारूद, खाने और पीने का बहुत अच्छा सामान है। जहाज के डूबने पर, सभ्य संसार से दूर, महासागर के बीच में एकदम अकेले, हम लोगों को इससे अच्छी चीजें और चाहिये ही क्या!!"

लोगों को मालूम हो गया कि नाव पर न तो एक टुकड़ा खाने का सामान है न एक अंजुली पानी पीने को, और इस जानकारी

ने उन बदकिस्मतों की भूख और प्यास को पहिले से चौगुना बढ़ा दिया। न जाने इस नाव पर उन्हें के दिन काटने पड़ेंगे, इस पहिले ही दिन से उनको भूखे और प्यासे रहने का अभ्यास करना होगा!

दिन के बाद दिन बीतते गये और साथ ही इन यात्रियों की दशा भी बुरी होती गई। उनकी निगाहें बराबर चारो ओर इस खोज में घूमा करती थीं कि शायद कोई दूसरी नाव दिखाई दे जाय, कोई जहाज नजर आ जाय, कहीं जमीन की सूरत देख पड़े, पर देखते देखते, नजरें दौड़ाते दौड़ाते वे थक के नाव में गिर पड़ते थे, पर रिहाई की सूरत मालूम न होती थी। कुछ थोड़ा आराम तभी मिलता था जब दस मिनट के लिये इन थके भूखे प्यासे आदमियों पर नींद अपनी नशीली चादर डाल देती थी।

भूख से अधमरे मल्लाह अपने चमड़े के कमरबन्द खा गये थे, जूते खा गये थे, अपनी टोपियों में लगे बन्द तक खा चुके थे, पर उनकी भूख की तकलीफ घटने के बजाय बढ़ती गई थी। क्रेटन और थूरन, दोनों उन्हें बराबर समझाते थे कि ऐसा न करो, इन गंदी चीजों को पेट में न जाने दो, पर कौन उनकी बात ही सुनता था।

ऊपर से आग उगलता हुआ सूर्य, ओफ! उसने अगर इन अभागों की जान न ले ली थी तो उन्हें मरे हुओं के बराबर जरूर कर दिया था। उनके होंठ सूख गये थे जुबान फूल आई थी और मुंह ऐसे हो गये थे कि एक शब्द भी बोलने में उन्हें उसके लिये उद्योग करना पड़ता था। जेन पोर्टर, क्रेटन और थूरन इन तीनों ने शुरू से ही कुछ न खाया था, इससे पहिले तो उन्हें तकलीफ मालूम हुई थी

पर अब कई रोज बीतने बाद उनकी भूख प्यास मर सी गई थी, मालूम होती थी केवल भयानक कमजोरी, ऐसा जान पड़ता था कि जैसे उनका हृदय धीरे धीरे अपनी धड़कन बन्द कर देगा। इसके विपरीत मल्लाहों ने कई अंडबंड चीजें खाई थीं। भला उनकी कमजोर अन्तड़ियें उन चमड़े के टुकड़ों को पचा सकती थीं जिनसे उन्होंने उन्हें भरा था! उनकी दशा, उनका कष्ट देखा नहीं जाता था। प्यास और तकलीफ से, पेट की दर्द से वे मछली की तरह तड़पते थे। सब से पहिले टामकिन्स ने इस कष्ट से छुटकारा पाया। लेडी एलिस जहाज के डूबने के ठीक सातवें रोज बड़ी तकलीफ से उसके प्राण निकल गये।

चार घंटे तक उसका शरीर नाव में पड़ा हुआ डरावने चेहरे और अधखुली आंखों से लोगों के मन में मौत की भयानक सूरत खड़ी करता रहा। आखिर जेन पोर्टर से न सहा गया। वह धीमी आवाज में क्लेटन से बोली, "विलियम, उसका शरीर नाव से नीचे क्यों नहीं फेंक देते?"

क्लेटन कांपते पैरों पर मुश्किल से अपने को सम्हालते हुए उसकी तरफ बढ़े। स्पाइडर और विलसन गड्ढे में धुसी हुई दृष्टिहीन आंखों से उनकी तरफ देखते रहे। क्लेटन ने मुर्दे को उठाने का उद्योग किया, उनका पांव लड़खड़ाया और वे घुटनों के बल जमीन पर बैठ गये। उन्होंने चाहा कि धसका के उसे पानी में ढकेल दें पर ऐसा मालूम हुआ जैसे उनकी बाहों में बिल्कुल शक्ति नहीं है। वे हाड़ मांस की न बनी होके कागज की बनी हैं।

क्रूटन ने पास में पड़े विलसन को कहा, "जरा मदद तो देना भाई ! इसे नीचे फेंक दिया जाय।"

अपनी जगह पर पड़ा ही पड़ा विलसन बोला, "क्यों नीचे क्यों फेंकना चाहते हैं ?"

क्रूटन ने कहा, "अभी न फेंका जायगा तो पीछे इस में इतनी भी ताकत न रह जायगी कि हम उसे पानी में ढकेल सकें। फिर इस जलती हुई धूप में एक दिन और रहने से यह एकदम गल जायगा।"

विलसन कुड़बुड़ा के धीमी आवाज में बोला, "रहने दीजिये, क्या कीजियेगा फेंक के। एक दिन पड़ा ही क्यों न रहे। शायद पहिले ही जरूरत पड़ जाय।"

विलसन के शब्दों का मतलब बहुत धीरे धीरे क्रूटन के दिमाग में घुसा, वे धीरे धीरे समझने लगे कि यह क्यों नहीं इस मरे हुये देह को फेंकना चाहता। भय और आश्चर्य से इनके मुंह से जल्दी आवाज न निकली।

उन्होंने भर्राये हुये गले से कहा, "क्या, क्या, तुम्हारा मतलब है कि..........."

विलसन बोला, "हां, हां, मेरा वही मतलब है। क्या हमें अपनी जान नहीं बचानी है, क्या वैसा करने में कोई हर्ज होगा ?"

क्रूटन ने थूरन की तरफ घूम के कहा, "आओ इसे नीचे फेंक दें, नहीं संध्या के पहिले हमारी नाव पर भयानक कांड उपस्थित हो जायगा।"

थूरन को क्रूटन की तरफ बढ़ते देख विलसन अंडबंड बकता

हुआ उठने की कोशिश करने लगा, पर उसके साथी स्पाइडर ने उसे डांट के रोका। स्पाइडर, थूरन और क्ुटन तीनों ने मिल के मल्लाह की मृत देह को नाव से समुद्र में लुढ़का दिया। विलसन जलती हुई आंखों से उनकी तरफ देखता रहा।

स्पाइडर के बीच में दखल देने से विलसन कुछ कर तो न सका पर उसे क्ुटन पर कितना क्रोध रहा यह उसकी आंखों के देखने से साफ मालूम होता था। दिन भर बाद में भी उसकी निगाहें क्ुटन ही पर रहीं, और उन निगाहों से क्रोध के साथ साथ कुछ पागलपन भी झलकता रहा। संध्या होते होते वह दबी जुबान कुछ बड़बड़ाने और बकने भी लगा। लेकिन उसकी नजर क्षण भर के लिये भी क्ुटन पर से न हटी।

सूर्यदेव नीचे धंसते हुये धीरे धीरे आंखों की ओट हो गये और अंधकार ने चारो तरफ फैले हुये पानी के ऊपर अपनी काली चादर डालना आरंभ किया। यद्यपि क्ुटन विलसन को अब साफ साफ देख नहीं सकते थे पर उन्हें यह मालूम हो रहा था जैसे उसकी अंगारे सी आंखें ठीक उन्हीं पर जमी भई हों। उन आंखों के खयाल ने उन्हें नींद न आने दी। यद्यपि वे थके हुये थे, उनका मन और शरीर दोनों शक्तिहीन हो रहा था, तथापि उन्होंने उद्योग करके अपने को सोने से रोका और एक अज्ञात आशंका के भय से आंखों को खोले हुये उसी ओर देखते रहे जिधर विलसन बैठा था। कब तक वे जागते रहे यह उन्हें ध्यान न रहा, अंत में उनका सिर पीछे लटक गया और वे गहरी नींद में मस्त हो गये।

वे कितनी देर सोये होंगे इसका अंदाज लगाना मुश्किल है, पर जब किसी तरह के खटके और सरसराहट की आवाज से उनकी नींद टूटी उस समय भी रात काफी बची हुई थी, और ऊंचे आकाश में चन्द्रदेव अपनी रुपहली किरणों से दिन सा उजाला किये हुये थे। अपनी अधखुली आंखों से उन्होंने देखा कि विलसन हाथ पैर के बल घसकता हुआ उनकी तरफ बढ़ा आ रहा है, उसका चेहरा पागलों सा है, मुंह खुला हुआ है और जुबान बाहर लटक आई है।

जिस हलकी आवाज ने क्रुटन की नींद तोड़ दी थी उसी ने जेन पोर्टर को भी जगा दिया था। विलसन को इस हालत में आगे बढ़ते देख उसके मुंह से हलकी चीख निकली और उसी समय आगे बढ़ के मल्लाह क्रुटन के पास पहुंच गया। भूखे जंगली जानवर की तरह उसके दांत क्रुटन के गले के पास तक पहुंचने का उद्योग करने लगे। पर अधमरी हालत में होने पर भी क्रुटन ने कोशिश कर के हाथों से उसे रोका।

जेन पोर्टर की चीख ने मानस्यूर थूरन और क्रुटन दोनों को जगा दिया था। क्रुटन की दशा देख दोनों अपनी अपनी जगहों से उनकी मदद के लिये बढ़े। दोनों ने मुश्किल से विलसन को क्रुटन के पास से खींचा और तीनों ने मिल के उसे नाव के पेंदे में ढकेल दिया। वहां पड़ा वह थोड़ी देर तक कुड़बुड़ाता और बार बार हंसता रहा। अन्त में जोर से एक चीख मार कर वह पैरों पर उठ खड़ा हुआ और इसके पहिले कि कोई उसे रोक सके उछाल मार कर समुद्र में कूद पड़ा।

इस थोड़ी देर के झगड़े ने तीनों आदमियों को एक दम क्लांत सा कर दिया और वे थक कर नाव में बैठ गये। स्पाइडर हाथों से मुंह ढांक के रोने लगा, जेन पोर्टर हाथ उठा के ईश्वर प्रार्थना करने लगी, क्लेटन धीरे धीरे कुछ बुड़बुड़ाने लगे और थूरन हाथों को सिर पर रख के कुछ सोचने लगे। अंत में थोड़ी देर बाद थूरन बोले—

"देखो भाई, हम लोगों की हालत अब ऐसी हो गई है कि अगर एक दो रोज के अंदर किसी जहाज ने हम लोगों की खबर न ली या जमीन न दिखाई पड़ी तो सब के सब को मरना पड़ेगा। ऐसा हो इसकी भी आशा बहुत कम है। इतने दिन से बहते बहते न तो किसी जहाज का पाल दिखाई दिया है न किसी की चिमनी का धूंआ ही आकाश में बहता नजर आया है। खाने को होता पास में, तो आशा होती कि कुछ दिन और गुजार सकेंगे, पर खाने के सामान और साथ ही पानी के अभाव ने हमें मुर्दा कर दिया है। अब हम लोगों के वास्ते दो ही रास्ते रह गये हैं, और उन दो में से एक हमें इसी वक्त चुन लेना चाहिये। या तो हम संतोष से बैठे रहें और चार दिन बाद सब के सब साथ मर जांय, या हम में से कोई इस वक्त अपनी जान दे और हम सभों की जान बचावे। क्यों, आप लोग मेरा मतलब समझते हैं ?"

थूरन की बातों को जेन पोर्टर सुन रही थी। आखिरी शब्दों को सुन वह कांप उठी। अगर बेवकूफ और अनपढ़ स्पाइडर के मुंह से यह वीभत्स प्रस्ताव निकला होता तो उसे उतना ताज्जुब न होता।

एक पढ़ा लिखा, सभ्य कहलाने की डींग हांकने वाला सज्जन ऐसा घृणित प्रस्ताव करे, यह उसे अविश्वसनीय जान पड़ता था।

क्रुटन बोले, "इस प्रकार जीने की अपेक्षा हम सभों का मर जाना ज्यादा अच्छा होगा।"

थूरन बोले, "इसका फैसला बहुमत से करना पड़ेगा, और चूंकि मिस पोर्टर को इस मामले से कोई संबंध नहीं और उनके ऊपर इस प्रस्ताव से कोई आफत न आवेगी हमी तीनों को इसे तय करना है। हमी में से किसी न किसी को आत्म बलिदान करना पड़ेगा।"

स्पाइडर ने पूछा, "पहिला नंबर किसका होगा?"

थूरन बोले, "यह बात बाजी लगा के तय हो सकती है। मेरे जेब में कई फ्रांक सिक्के पड़े हैं उसमें से किसी सन् का एक सिक्का चुन लिया जाय। जो एक कपड़े के नीचे से सब से पहिले उस सिक्के को खींचेगा वही पहिला नंबर होगा।"

क्रुटन ने धीरे से कहा, "मैं इस तरह की भयानक और गंदी कोई बात नहीं मंजूर कर सकता। ये सब कार्रवाइयें शैतानों को शोभा दे सकती हैं, आदमियों के लायक नहीं हैं। हो सकता है अब भी कोई जहाज नजर आ जाय या जमीन ही दिखाई दे जाय!"

थूरन कड़ी आवाज में बोले, "तुमको वही करना पड़ेगा जो बहुमत से तय होगा। अगर तुम ऐसा करने से इनकार करोगे तो फिर सिक्के उठाने की भी राह न देखी जायगी और पहिला नंबर तुम्हारा ही कायम कर दिया जायगा। आओ, सब को इस प्रस्ताव पर राय

देने दो। मैं इसके पक्ष में राय देता हूं। तुम क्या चाहते हो, स्पाइडर!"

स्पाइडर बोला, "मैं भी इसे पसंद करता हूं।"

थूरन प्रसन्नता भरी आवाज में बोले, "लो तय हो गया। अब तुम्हें इसके बखिलाफ कुछ कहने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्लेटन। इसमें सब को बराबर अवसर मिलता है और यह भी उचित है कि तीन में से किसी दो की जान बचाने के लिये एक का बलिदान कर दिया जाय। नहीं तो कुछ समय बाद तीनों को जान से हाथ धोना होगा।"

मानश्यूर थूरन मौत की बाजी लगाने की तैयारी करने लगे और बेचारी जेन पोर्टर एक कोने में बैठी हुई भयभीत आंखों और कांपते कलेजे से उनके इस पैशाचिक कृत्य को देखने लगी। थूरन ने अपना कोट नाव के पेंदे में बिछा दिया, और जेब से सिक्के निकाल के छः फ्रांक सिक्के उन्होंने उसमें से चुन लिये। दोनों को उन सिक्कों को दिखा के क्लेटन के हाथ में उन्हें देते हुये वे बोले—

"देखो, इन छओं में एक सन् १८७५ का है, उसे गौर से देख लो। उस सन् का और कोई नहीं है।"

क्लेटन और स्पाइडर ने होशियारी से सब सिक्कों को जांच लिया। उनमें सन् के फरक के सिवाय और कोई बात ऐसी न थी जिससे वे पहिचाने जाते। अगर उन दोनों को थूरन के असली जीवन का कुछ परिचय होता और वे यह जानते होते कि यह बड़ा दगाबाज और ताश के खेल में बेईमानी करने में एकता है तो उन्हें

यह भी पता होता कि इसको छू के मालूम करने की शक्ति बहुत तेज है और ताशों के बीच से किसी पहिचानी ताश को यह आंख बन्द करके केवल हाथ से टटोल के निकाल सकता है। वे उसे पूरा सज्जन समझते थे, इसी से उन्होंने थूरन के चुन के निकाले हुये छओं सिक्कों पर ज्यादा गौर न किया, यह न देखा कि उनमें एक सिक्का, सन् १८७५ का—बाकी के पांचों से एक बाल बराबर पतला है। इस पतलेपन को स्पाइडर या क्रेटन कोई भी बिना माइक्रोमीटर यंत्र की मदद के पहिचान न सकता था, पर थूरन की तेज आंखों ने इसे खोज निकाला था, और उनकी होशियार उंगलियें भी इसे बड़ी सरलता से छांट के अलग कर सकती थीं।

थूरन ने पूछा, "हम लोग किस क्रम से सिक्के खींचेगें ?" उन्हें अपने अनुभव से यह बात मालूम थी कि लाटरी में कोई खराब चीज अगर मिलने वाली होगी तो ज्यादातर आदमी बाद का अवसर ही पसंद करेंगे, पहिले न खींचेंगे। वे यह सोचेंगे कि शायद पहिले खींचने वाले के भाग्य में वह आ जाय और हम बरी हो जांय।

स्पाइडर बोला, "सब से आखीर में हमारा नंबर रहेगा।"

थूरन ने कहा, "तो सब से पहिले मैं ही खींच लेता हूं।"

सिक्के कोट के नीचे डाल दिये गये और थूरन ने अपना हाथ अन्दर डाला। उनका हाथ क्षण भर से ज्यादा भीतर न रुका होगा, पर इसी बीच में उन्होंने हर एक सिक्के को टटोल के देख लिया और वह कातिल सिक्का पहिचान के भीतर ही छोड़ दिया। जब उन्होंने हाथ बाहर निकाला तो उनकी उंगलियों में सन् १८८८ का

अब कोट के नीचे तीन सिक्के रह गये। थूरन ने फिर हाथ डाला और फिर एक सिक्का बाहर खींचा जो १८७५ का न था। बाद में क्लेटन ने कोट के नीचे उंगलियें डालीं। स्पाइडर भय और उत्सुकता से आंखें फाड़ के क्लेटन की तरफ देखने लगा। दो सिक्कों में एक १८७५ का था और एक दूसरा होगा। क्लेटन जो खींचेंगे उसका विपरीत सिक्का स्पाइडर को खींचना होगा।

क्लेटन ने हाथ बाहर खींचा और सिक्के को मुट्ठी में कस के छिपा के जेन पोर्टर की तरफ देखा। उंगलियें सिक्के पर से हटाने की उनकी हिम्मत न होती थी।

स्पाइडर ने भर्राये गले से सिर झुका के कहा, "खोलो, ईश्वर के वास्ते मुट्ठी खोलो।"

क्लेटन ने उंगलियें सिक्के पर से हटाईं, सब से पहिले स्पाइडर ने ही पहिचाना कि यह कौन सन् का है। वह उछल के पैरों पर खड़ा हो गया, और इसके पहिले कि कोई उसका इरादा समझ सके नाव से कूद के समुद्र में जा रहा। हरे पानी में डूब के फिर उसने अपना सिर बाहर न उठाया। क्लेटन और थूरन ने देखा कि वह सिक्का १८७५ का नहीं है।

इन घटनाओं ने उन थके हुये भूखे प्यासे अभागों के मन और मस्तिष्क को इतना थका दिया कि दिन का बाकी समय उन्होंने अर्ध निद्रितावस्था में लेटे लेटे बिताया। कई दिन तक फिर दोनों में से किसी ने उस विषय का जिक्र न किया। उनकी कमजोरी अब

इतनी बढ़ गई थी कि बातें करना या जमीन से उठना भी उनके लिये एक भारी बात थी। आखिर एक रोज मानश्यूर थूरन घसकते घसकते वहां पहुंचे जहां क्लेटन पड़े थे। उन्होंने कमजोर आवाज में कहा, "हमें एक बार और सिक्के खींचने चाहियें, नहीं तो हम दो रोज बाद फिर खाने लायक भी न रहेंगे !"

क्लेटन की हालत इतनी बुरी थी कि उनकी सोचने और विचार करने की शक्ति प्रायः लोप सी हो गई थी। जेन पोर्टर तीन रोज से एक शब्द भी मुंह से न बोली थी। क्लेटन जानते थे कि धीरे धीरे वह मृत्यु के नजदीक होती जा रही है। इस वक्त थूरन का प्रस्ताव जितना आश्चर्यजनक उतना ही भयावना भी था, पर क्लेटन ने यह सोच के उसे स्वीकार कर लिया कि इससे अपने और थूरन—इन दोनों में से एक के प्राण जाने से शायद उसकी तबीयत कुछ बदलेगी और दिल में ताकत आवेगी।

उन दोनों ने उसी तरह फिर सिक्के खींचे जिस तरह पहिले खींचे थे, और अब की वही फल हुआ जो होना निश्चित था। क्लेटन ने १८७५ सन् का सिक्का खींचा।

भर्राये गले से क्लेटन ने पूछा, "कब यह काम होगा ?"

थूरन ने हाथ डाल के पैजामे के जेब से एक चाकू निकाल लिया था और कमजोर उंगलियों से उसे खोलने का उद्योग कर रहे थे। क्लेटन की बात सुन ललचौंहीं निगाहों से उनकी तरफ देखते थूरन बोले, "अभी, इसी समय—"

क्लेटन ने पूछा, "अंधेरा होने तक ठहर न सकेंगे ? मिस पोर्टर

को यह काम न देखना चाहिये, आप जानते हैं उससे मेरा विवाह होने वाला था।"

थूरन के चेहरे पर हल्की निराशा की छाया देख पड़ी। वे हिच-किचाहट के साथ बोले, "यही सही—अब रात होने में भी ज्यादा देर नहीं है। मैं कई दिन ठहरा हूँ, कुछ घंटे और ठहर सकता हूँ।"

क्र्टन ने धीमी आवाज में कहा, "धन्यवाद, मेरे दोस्त, अब मैं कोशिश करके उनके पास जाता हूं और तब तक वहीं रहूँगा जब तक मेरा समय न हो जाय। मरने के पहिले मैं उससे आखिरी बिदा ले लूं!"

क्र्टन घसकते हुये जब जेन पोर्टर के पास पहुंचे वह बेहोश थी। वे जानते थे कि वह शीघ्र मरेगी और इस बात का उन्हें संतोष था कि थोड़ी देर बाद होने वाले बीभत्स दृश्य को वह देख न सकेगी उन्होंने उसका एक हाथ उठा के अपने फूले और फटे हुये होठों पर रक्खा। बहुत देर तक बगल में लेटे वे उस सूखे अस्थिचर्मावशेष हाथ को अपने हाथों में लिये प्यार करते रहे जो पहिले किसी समय लोगों में बड़ा सुन्दर और सुडौल कहा जाता था और जो एक समय उसके अंग की शोभा था।

वे कब तक पड़े रहे उन्हें कुछ भी स्मरण नहीं। उनकी तंद्रा तब टूटी जब अंधेरे में से किसी ने उन्हें नाम ले के पुकारा। उन्होंने सुना कि थूरन उन्हें मरने के लिये पुकार रहे हैं।

उन्होंने जल्दी से जवाब दिया, "मैं आ रहा हूं, मानश्यूर थूरन, अभी आया।"

तीन दफे उन्होंने उठने की कोशिश की, तीन दफे उन्होंने उद्योग किया हाथों और घुटनों के बल घसक के अपनी मौत के पास चलें, पर जितनी देर वे जेन पोर्टन के पास रहे, उस थोड़ी ही देर ने उन्हें एकदम असमर्थ और कमजोर कर दिया था।

उन्होंने धीमी आवाज में पुकार के कहा, "आप स्वयं आ जाइये मानश्यूर, मैं चल नहीं सकता, उठने में बिल्कुल असमर्थ हूं।"

थूरन ने कुड़बुड़ा के कहा, "हैं, मुझसे धोखेबाजी, क्या तुम मेरे जीत जाने पर अपना वादा पूरा नहीं किया चाहते ?"

क्लेटन को आवाज से मालूम हुआ कि नाव के पेंदे में थूरन कोशिश करके उठना चाहते हैं, पर तुरत ही आवाज बन्द हो गई और रोनी आवाज में थूरन बोले, "मैं करवट भी नहीं बदल सकता, उठना तो दूर है। तुमने मुझे धोखा दिया, इतनी देर करके मेरा शिकार मुझसे ले लिया। तुम भारी बेईमान हो।"

क्लेटन ने कहा, "मैंने तुम्हें धोखा नहीं दिया, मानश्यूर, मैं आने की कोशिश कर रहा हूं, पर मेरे हाथ पैर कब्जे में नहीं हैं। देखो मैं फिर उद्योग करता हूँ, तुम भी कोशिश करके आगे बढ़ो, शायद दोनों के घसकने से बीच में मुलाकात हो जाय और तुम अपना जीत का शिकार पा जाओ।"

क्लेटन ने फिर अपनी ताकत भर उठने का उद्योग किया और आहट से जान पड़ा कि थूरन भी वैसा ही कर रहे हैं। करीब घंटे भर बाद वे घुटनों के बल उठने में कृत्यकार्य हुये पर जरा सा आगे बढ़ते ही मुंह के बल फिर जमीन पर आ रहे।

साथ ही थूरन की आवाज आई, "मैं आ रहा हूँ, क्रुटन, घबड़ाना नहीं।"

क्रुटन ने फिर घुटनों के बल उठने की कोशिश की, पर फिर वे मुंह के बल जमीन पर गिर पड़े। फिर उनसे उठा न गया। वे पीठ के बल नाव के पेंदे में लुड़क रहे और अधखुली आंखों से तारों की तरफ देखने लगे। उनको मालूम हुआ कि हांफते और घसकते हुये थूरन उनकी तरफ धीरे धीरे बढ़े आ रहे हैं।

उनको जान पड़ा जैसे करीब घन्टे भर तक वे इसी आसरे पड़े रहे हों कि उनकी जान का ग्राहक अन्धेरे से बाहर आवे और उनके सारे दुखों का एक साथ अन्त कर दे। आवाज धीरे धीरे पास आती जाती थी, पर ज्यों ज्यों पास आती थी त्यों त्यों कमजोर और धीमी भी पड़ती जाती थी। जान पड़ता था बहुत अधिक उद्योग शरीर की शक्ति को और कम करता जा रहा है।

आखिर उन्हें जान पड़ा जैसे कोई उनके बहुत पास आ गया हो, उनके कानों में सूखी हंसी की आवाज आई, उनके चेहरे के साथ कोई चीज सटी और साथ ही वे बेहोश हो गये।

उन्नीसवां बयान

सोने का नगर

जिस रात को टार्जन वजीरियों के सरदार बने, उसी रात को वह युवती जिसे वे अपने प्राणों से भी अधिक प्यार करते थे भूमध्य महासागर के बीच उनसे दो सौ मील पश्चिम की ओर एक छोटी सी नाव में पड़ी अपनी आखिरी घड़ियों का इन्तजार कर रही थी। जब वे नाच रहे थे, जब वे स्वर में स्वर मिला के गा रहे थे, जब वे उछल कूद कर रहे थे, वह युवती जो उन्हें जी जान से प्यार

करती थी उस तन्द्रा में पड़ी थी जो भूखे और प्यासे व मरने से पहिले थोड़ी देर के लिये मनुष्यों को आ जाया करती है और जो इस बात की सूचक होती है कि अब जान को शरीर से निकल के भागने में अधिक देर नहीं है।

राजा बनने के बाद दूसरे सप्ताह टार्जन ने मेनुएमा जंगलियों को अपने वादे के अनुसार सही सलामत अपनी उत्तरी सीमा तक पहुंचा दिया और इस बात का वादा करा लिया कि फिर वे कभी उनके गांव पर हमला न करेंगे। उन्होंने बड़ी प्रसन्नता से यह वादा कर दिया, क्योंकि अबकी की इस विचित्र लड़ाई से वे बड़ा डर गये थे और इस बात का उन्होंने निश्चय कर लिया था कि कम से कम वजीरियों की इस जाति को फिर वे कभी भूल के भी दुश्मनी की निगाह न देखेंगे।

मेनुएमा को पहुंचा के अपने गांव लौटने के बाद ही टार्जन ने सफ़र की तैयारी शुरू की और उस सोने के शहर की खोज में जाने का बन्दोबस्त करने लगे जिसका हाल बूढ़े वजीरी ने उन्हें सुनाया था। अपने साथ वास्ते उन्होंने पचास मजबूत और फुर्तीले वजीरियों को चुना, और केवल उन्हीं लोगों को छांट के अलग किया जो नये शहर की खोज में जाने और सब तरह के कष्टों को सहने के लिये तैयार और उसके इच्छुक जान पड़े। जब से टार्जन ने उस नये और विचित्र शहर और वहां के अगाध धन का हाल सुना था, वे वहां जाने को व्याकुल हो रहे थे। वहां उनके जाने का कारण धन की इच्छा थी या घूमने फिरने और नई नई चीजें देखने का शौक—इसका ठीक

उत्तर देना कठिन था। वे नये देशों, नई जातियों, नई चीजों के देखने के भारी शौकीन थे, पर इसका यह मतलब नहीं था कि वे धन को अनादर की दृष्टि से देखते थे और उसके मूल्य को नहीं जानते थे। सभ्य संसार के थोड़े दिन के रहन सहन ने ही उन्हें बता दिया था कि रुपया ही सब से शक्तिशाली चीज वहां समझी जाती है और इसकी मदद से कठिन से कठिन काम भी सहज हो जाते हैं। वे धन चाहते थे, पीली धातु जहां अगाध रूप से पड़ी है वहां जाके उसका कुछ अंश अपने कब्जे में किया चाहते थे, पर उन्होंने यह नहीं सोचा था कि इस जंगली अफ्रिका में वे धन को करेंगे क्या, यहां उसे किस काम में लावेंगे।

एक रोज सुबह पचास आदमियों को साथ लेकर टार्जन अपने गांव से वाहर निकले और उसी रास्ते पर रवाना हुए जो बूढ़े वजीरी ने टार्जन को बताया था। कई दिन तक वे लगातार चले गये। कई नदियें उन्होंने पार कीं, कई पहाड़ों को लांघा और अन्त में रवाना होने के पचीसवें दिन एक ऐसे पहाड़ पर पहुंचे जिसके ऊपर से कि वे सोने के उस अद्भुत नगर को देखने की आशा करते थे।

रात भर उन्होंने आराम किया, सुबह वे पत्थर के उन ऊंचे और अनगढ़ ढोंकों को पार करते हुये चोटी की तरफ बढ़ने लगे जो उनके और उनके अद्भुत शहर के बीच में आखिरी रुकावट के रूप में अब रह गये थे। पांच घन्टे तक लगातार परिश्रम करने बाद टार्जन अपने साथियों के साथ ऊपर पहुंच गये और एक छोटे मैदान में पहुंचे जो पहाड़ की एकदम चोटी पर था।

यद्यपि वे पहाड़ की चोटी पर थे, पर असल में वही एक रास्ता था जिसके जरिये वे उस शहर तक पहुंच सकते थे। जिस चोटी पर वे खड़े थे उसके दोनों ओर उससे भी हजारों फीट ऊंचे पहाड़ खड़े थे जिन्होंने तीन ओर से वहां तक पहुंचने का रास्ता बड़ी खूबी से रोका हुआ था। उनके पीछे वह घना पहाड़ी जंगल था जो ढालुआं होता हुआ पचासों कोस दूर तक चला गया था और सामने एक छिछली तंग घाटी थी जो जगह जगह बड़े बड़े पत्थर के ढोंकों से भरी हुई थी। कहीं कहीं पेड़ भी दिखाई पड़ते जो बहुत कम ऊंचे और छोटे छोटे थे। घाटी के उस ओर, उसके अंतिम छोर पर, एक बड़ा भारी शहर दिखाई दे रहा था जिसकी ऊंची दीवारें, भारी गुम्बज, बुर्ज, मकान सूर्य की रोशनी में चमक रहे थे। टार्जन इतने दूर पर थे कि वे शहर को पूरी बारीकी से देखने में असमर्थ थे, पर उसकी बाहरी बनावट को देख उन्होंने समझा कि अवश्य यह आदमियों से भरा पूरा घना बसा हुआ शहर होगा और यहां अच्छी सड़कें सुन्दर मकान इत्यादि होंगे जो शहरों में हुआ करते हैं।

आधे घन्टे उस छोटे मैदान में आराम करके टार्जन और उनके साथी नीचे उतरने लगे। इस तरफ की उतराई उस तरफ की चढ़ाई की बनिस्बत कम मुश्किल थी, इससे घन्टे भर से भी कम देर में वे नीचे जा पहुंचे और तब सामने का ऊंचा नीचा मैदान पार करके थोड़ा दिन रहते शहर की भारी और ऊंची दीवारों के नीचे पहुंच गये।

बाहर वाली दीवार ऊंचाई में पचास फीट से कम न होगी।

कई जगह वह ऊपर से टूट गई थी, पर तब भी, टूटने पर भी ऊंचाई कहीं भी तीस पेंतीस फीट से कम न हुई थी। दुश्मनों को रोकने के लिये तब भी यह काफी थी। टार्जन को ऐसा मालूम हुआ जैसे टूटी हुई जगहों के पीछे कुछ लोग इधर उधर घूम रहे हों और बहुत सी निगाहें उन पर पड़ रही हों। पर गौर करने पर भी उन्हें किसी आदमी की शकल दिखाई न दी। उन्होंने समझा कि शायद यह उनका भ्रम हो। कोई ऊपर से झांकता होता तो दिखाई तो देता।

रात को उन्होंने दीवार के बाहर ही एक मुनासिब जगह पड़ाव डाला। करीब बारह बजे के उनकी नींद एक तेज आवाज सुन के टूट गई। जान पड़ा कि दीवार के ऊपर सैंकड़ों जीव विचित्र तरह से चिल्ला के रो रहे हों। आवाज बड़ी पतली पर बहुत ही भयानक थी और इसे सुन के टार्जन के साथ के वजीरी हद से ज्यादा घबड़ा गये। बहुतेरे डर से कांपने लगे और बहुतों ने फिर सोने से इनकार किया। आखिर टार्जन ने समझा बुझा के लोगों को शान्त किया। सवेरे उठ के लोग भयभीत निगाहों से दीवार को देखने लगे। जैसे वे समझते हों कि इसके पीछे विचित्र जीव छिपे हैं जो न जाने कब आके हमें मार डालेंगे।

रात की विचित्र आवाज को सुन के जो घबड़ाहट लोगों को हुई थी वह अभी तक लोगों के दिलों से गई न थी। बहुतों का इरादा हुआ कि इस डरावने शहर को छोड़ देना चाहिये। न जाने इसके भीतर के जीवों के हाथ उन्हें कितने कितने कष्ट उठाने पड़ेंगे और कितना दुःख सहना होगा। अभी इस घाटी को पार करके उस

पहाड़ पर चढ़ चला जाय जिससे उतर के वे यहां आये हैं और फिर अपने देश लौट चला जाय। टार्जन ने डरा धमका और समझा के लोगों को ऐसा करने से रोका।

जहां उन्होंने पड़ाव डाला था उसके आस पास कोई जगह ऐसी न थी जिससे वे शहर के भीतर घुस सकते। पन्द्रह मिनट तक वे दीवार के साथ साथ आगे बढ़ते गये। एक जगह उन्हें ऐसी मिली जहां करीब बीस इंच चौड़ा एक दरार था, और उस दरार में छोटी छोटी सीढ़ियें बनी हुई थीं जो सैकड़ों बरस के इस्तेमाल से बिल्कुल घिस गई जान पड़ती थीं। करीब दो गज ऊपर जा के वे सीढ़ियें बगल को घूम के आंखों की ओट हो गई थीं। सामने ऊंची दीवार थी।

मुश्किल से कंधे टेढ़े करके टार्जन इन सीढ़ियों के ऊपर चले, और उनके साथी पीछे पीछे आगे बढ़े। मोड़ घूम के सीढ़ियें खतम हो गईं और सामने बराबर रास्ता दिखाई पड़ने लगा जो सांप की चाल की तरह घूमता फिरता आगे बढ़ गया था। थोड़ी दूर जाके फिर एक मोड़ मिली जिससे निकल के वे एक लम्बी सी गली में पहुंचे जिसके बगल में बाहर वाली दीवार के ही इतनी ऊंची फिर एक दूसरी दीवार खड़ी दिखाई दे रही थी। इस दीवार में जगह जगह गुम्मज और बुर्ज बने हुये थे जो यद्यपि बेमरम्मती की हालत में थे पर तब भी सुन्दर और कारीगरी से बने जान पड़ते थे। यह भीतरी दीवार बाहरी दीवार की अपेक्षा ज्यादा अच्छी हालत में थी।

इसमें से होके एक तंग रास्ता फिर भीतर गया दिखाई पड़ रहा था। टार्जन अपने आदमियों को साथ लिये एक चौड़े मैदान में पहुंचे जहां से सामने की तरफ संगमर्मर के बड़े बड़े ढोंकों की बनी कई भारी इमारतें टूटी फूटी हालत में खड़ी दिखाई दे रही थीं। जगह जगह दीवारों पर पेड़ उग आये थे और जंगली लताओं ने खिड़कियों और दर्वाजों को ढांक सा लिया था। ठीक सामने की तरफ जो इमारत थी वह और इमारतों की अपेक्षा ज्यादा अच्छी हालत में मालूम पड़ रही थी, और उसकी दीवारों और खिड़कियों पर झाड़ झंखाड़ और पेड़ भी कम उगे हुये थे। यह प्रायः गोल थी और ऊपर की ओर एक बड़ा सा गुम्बज ताज की तरह इसके सिर पर रक्खा हुआ था। इसके भारी फाटक के दोनों ओर लंबी कतार में खंभे बने हुये थे जिनके हर एक के सिर पर सफेद पत्थर की बनी एक एक भारी चिड़िया बैठाई हुई थी।

टार्जन और उनके साथी आश्चर्य की निगाहों से अफ्रिका के भयानक जंगल में बनी इस विचित्र नगरी को देखने लगे। उन्हें ऐसा मालूम हुआ कि उनके सामने वाली इमारत में कुछ लोग चल फिर रहे हैं। वे कौन हैं, किस तरह के जीव हैं, आदमी हैं या जानवर। भीतर के हलके अंधकार में उतनी दूर से यह कुछ भी मालूम न होता था। यह जरूर मालूम होता था कि कुछ शकलें घूम फिर रही हैं, इधर से उधर आ जा रही हैं। ऐसी जगह में इतनी भारी इमारतें बनी पाना ही कम आश्चर्य की बात न थी, ऊपर से उसमें विचित्र जीव भी जान पड़े, इस बात का मन को जल्दी विश्वास न होता था।

टार्जन जब पेरिस में थे तो वहां की एक लाइब्रेरी में एक बार उन्होंने एक किताब में पढ़ा था कि मध्य अफ्रिका के घने जंगलों में पहिले गोरों की एक शक्तिशाली जाति रहा करती थी। वह अब कहां है इसका पता नहीं। पर वहां के जंगलियों की जुबानी उसके कुछ निशानातों का पता अब भी लगता है। टार्जन सोचने लगे कि कहीं उसी जाति के पूर्व पुरुषों का बनाया तो यह विचित्र शहर नहीं है, कहीं उसी जाति का कोई अंश तो नहीं यहां बचा खुचा जंगलों में अपना घर बनाये हुये है। हो सकता है कि ऐसा हो। उन्हें फिर मालूम पड़ा कि उनसे सामने वाली इमारत के भीतर कुछ लोग घूमते फिरते हों।

टार्जन वजीरियों से बोले, "चलो आओ, देखें इन इमारतों के भीतर क्या है।"

कोई भी इनके संग आगे न बढ़ना चाहता था। एक तरह का विचित्र डर उनके कलेजों में समाया हुआ था। पर जब उन्होंने देखा कि उनका सरदार अकेला आगे बढ़ा जा रहा है तो वे पीछे पीछे डरते कांपते चले। कल रात को जिस तरह की चीख के रोने की आवाज इन लोगों ने सुनी थी वैसी फिर कोई आवाज अगर इनके कान में पड़ती तो फिर उनकी सारी बची खुची हिम्मत उनका साथ छोड़ देती और वे बिल्ली की तरह दुम दबा के उन दर्वाजों की तरफ भागते जो दीवारों में से हो के बाहरी दुनियां में जाने के रास्ते थे।

टार्जन उस इमारत की तरफ बढ़े जो सामने पड़ती थी। भीतर घुस के फिर उन्हें ऐसा मालूम हुआ कि बहुत सी आंखें उन्हें गौर से

देख रही हैं। पास के एक बरामदे से पैरों की कुछ आहट आई, और उन्होंने निश्चय रूप से देखा कि नजदीक के एक दर्वाजे पर से आदमी का एक हाथ भीतर हटा लिया गया। किसी की शकल उनकी निगाहों के सामने स्पष्ट न आई।

वे जिस बड़े कमरे में घुसे उसकी जमीन कंकरीट की बनी हुई थी और दीवारों पर चिकना संगमर्मर था जिन पर कई तरह की आदमियों और जानवरों की शकलें बनी हुई थीं। दीवार में जगह जगह पीली धातु के बड़े बड़े ढोंके भी दिये हुये थे। जब वे इस तरह के एक ढोंके के पास गये तो उन्होंने देखा कि वह ठोस सोने का है और उस पर तरह तरह की रेखायें और अंक बने हुये हैं। इस कमरे के बाद आगे और कई कमरे थे और पीछे भी इमारत दूर तक फैली हुई जान पड़ती थी। कई कोठरियों में घूमते फिरते टार्जन को निश्चय हो गया कि यहां के अटूट धन के बारे मे उन्होंने जितना भी सुना है सब सच है। निश्चय ही यहां भारी दौलत भरी हुई है। एक कमरे में उन्होंने सात खंभे एक से एक सटे देखे जो सोने के थे, और एक दूसरी जगह कोठरी का सारा फर्श ही उन्होंने इस कीमती धातु का बना पाया। सब जगह उन्हें शक होता रहा कि विचित्र निगाहें हम पर पड़ रही हैं। पर न उन्होंने, न उनके किसी साथी ने ही कोई शकल स्पष्ट अपनी निगाहों से देखी, जिससे वे कह सकते कि हां यहां फलाने तरह के जीव हैं।

इस तरह से घूमना टार्जन को तो नहीं पर उनके साथियों को बड़ा खतरनाक और भयावना जान पड़ रहा था। उन्होंने टार्जन से

बाहर लौट चलने की प्रार्थना की। बहुतों ने कहा कि यहां जानदार आदमी या जानवर नहीं, यहां भूत प्रेत रहते हैं और वे जीते जी हमें यहां चैन न लेने देंगे। यहां से बाहर चले चलना ही सब से अच्छा होगा। बसूली बोला, "वे सब हमें देख रहे हैं, सरदार ! पर अभी तक उन्होंने हम पर हाथ इसलिये नहीं डाला है कि वे पहिले हमें अपने इस भूलभुलैये मकान में फंसा लेना चाहते हैं। जब हम लोग खूब भीतर चले जायंगे, बाहर निकलने का रास्ता जब हम से दूर पड़ जायगा तो ये सब हम पर टूट पड़ेंगे और हमें अपने बड़े बड़े दांतों से चबा जायंगे। यही भूतों और प्रेतों का कायदा है। मेरी मां का चाचा बड़ा भारी जादूगर है। उसने मुझे सब हाल बताया था।"

टार्जन ने हंस के कहा, "अगर तुम्हें डर मालूम होता है तो तुम लोग बाहर चले जाओ। मैं तो यहां से तब तक न निकलूंगा जब तक मुझे यह निश्चय न हो जायगा कि सोना कहां रक्खा है, कहीं रक्खा है या नहीं। अगर और कहीं सोना न मिला तो दीवार में से ही निकाल लेना होगा, क्योंकि खंभे इतने भारी हैं कि हम उन्हें उठा नहीं सकते लेकिन मैं समझता हूँ कोई न कोई ऐसी जगह जरूर होगी जहां सोने के ढेर के ढेर सरिया के रक्खे होंगे। उसी जगह का मुझे पता लगाना है। तब से तुम लोग बाहर जाओ।"

कुछ लोगों ने तुरत ही अपने सरदार की आज्ञा को मानने का प्रबंध किया, बसूली और साथ के कुछ लोग इस फिक्र में पड़े कि अब क्या करना चाहिये, यहां से निकल चलना चाहिये या यहां रुक के मालिक का साथ देना चाहिये। वे लोग यह सोच ही रहे थे कि

एक ऐसी बात हो गई जिसने उनकी सब फिक्रों का फैसला एक दम से कर दिया। उनके पास ही कहीं, बड़े तेज और डरावने रूप में, फिर वही रोने और चीखने की आवाज उठी जिसने पहिली रात टार्जन के साथियों को इतना डरा दिया था। सुनते ही सब के सब डर के मारे कांपने लगे। उन्होंने फिर यह न सोचा कि यहां रुका जाय या बाहर चला जाय। सब के सब घूमें और दौड़ते हुये और दर्वाजों को पार करते हुये बाहर मैदान की तरफ भागे।

टार्जन के मुंह पर हलकी मुसकुराहट दिखाई दी। वे वहीं खड़े रहे। एक कदम भी वहां से न हटे। वे जानते थे कि उनके दुश्मन चारों तरफ छिपे हुये हैं वे इसी आसरे थे कि वे आवें और उन पर हमला करें। किसी की शकल उन्हें न दिखाई देती थी। पर चारो तरफ उनके लोग हैं जरूर इसका उनको निश्चय था।

कुछ देर ठहर के टार्जन फिर आगे बढ़े। इधर उधर घूमते फिरते वे एक ऐसी कोठरी के सामने पहुंचे जिस पर विचित्र तरह का बना एक मजबूत दर्वाजा अब तक मौजूद था। उन्होंने उसको हाथ से दबाया। भीतर से बन्द था उन्होंने कंधे से धक्का दिया। साथ ही उनके बिल्कुल पास वह चीखने की आवाज फिर गूंज उठी। उन्हें जान पड़ा कि यहां के रहने वाले इस तरीके से उन्हें दर्वाजे को खोलने से मना कर रहे हैं, शायद इसके भीतर उनकी कोई पवित्र चीज हो या खजाने की कोठरी में जाने का यही रास्ता हो।

इस मकान के मालिक उन्हें इस कोठरी के भीतर जाने से मना कर रहे हैं इस जानकारी ने टार्जन की भीतर घुसने की

इच्छा को दूना बढ़ा दिया। उन्होंने दर्वाजे में फिर धक्का दिया और यद्यपि आवाज बराबर होती रही वे बराबर धक्का दिये चले गये। आखिर एक चरचराहट की आवाज के साथ अपनी लकड़ी की चूलों पर दर्वाजा खुल गया और भीतर गहरा अन्धकार दिखाई दिया। कोई भी खिड़की या कोई भी दर्वाजा भीतर न था जिसमें से रोशनी की किरणें आके अन्दर के डरावने अन्धकार को दूर करतीं। जिस कोठरी के पास टार्जन थे वह एक अन्धकारमय दालान के अन्दर थी, अस्तु बाहर की हलकी रोशनी भी प्रायः भीतर नहीं पहुंच रही थी। अपने बरछे के सिरे से टटोलते हुये टार्जन भीतर के अन्धकार में घुसे। साथ ही दर्वाजा बन्द हो गया और कई हाथों ने उनको मजबूती से पकड़ लिया।

उन्होंने अपने को छुड़ाने की पूरी चेष्टा की। अपनी सारी ताकत और होशियारी उन्होंने इस्तेमाल कर डाली, पर यद्यपि उनकी चोटें दुश्मनों के बदन पर पड़ती जान पड़ती थीं, उनके पैने दांत मांस में घुसते थे पर जब वे एक हाथ को बदन से हटाते थे तो चट दूसरा हाथ उसकी जगह लेने पहुंच जाता था। न जाने वहां उनके कितने दुश्मन इकट्ठे थे। आखिर धीरे धीरे अपनी संख्या के जोर से लोगों ने उन्हें जमीन पर गिरा दिया और उनके हाथ और पैर किसी किस्म की मजबूत रस्सी से बांध डाले।

इस बीच में इतनी लड़ाई होने पर भी, दुश्मनों की जोर से सांस लेने की आवाज के सिवाय और कोई आवाज टार्जन के कानों में न गई थी। वे नहीं कह सकते थे कि उनके पकड़ने वाले किस किस्म के

हैं। पर वे मनुष्य जरूर हैं यह टार्जन ने इसलिये समझ लिया कि उन्होंने उनके हाथ पैर बांधे थे। किसी और तरह की तकलीफ न पहुंचाई थी।

पकड़ने वालों ने उन्हें जमीन से उठा लिया और घसीटते और ढकेलते हुये एक दूसरे दरवाजे की राह कोठरी के बाहर एक दालान में पहुंचे। यहां टार्जन ने स्पष्ट रूप से अपने दुश्मनों को देखा। कम से कम उनकी संख्या सौ जरूर होगी। उनका कद नाटा, बदन मजबूत और गठीला और पैर बदसूरत और टेढ़े थे। उनके चेहरों पर घनी दाढ़ी थी, जो मुंह के काफी हिस्से को छिपाती हुई नीचे छाती तक उतर आई थी। उनके सिर के बाल बड़े बड़े और जटा के रूप में बने हुये थे, जो आगे भौंह तक आये हुये थे और पीछे कंधो पर फैले हुये थे। उनके हाथ लंबे लंबे घुटनों के नीचे तक पहुंचते थे। कमर में वे चीतों और शेरों की खाल पहिने थे और इन्हीं जानवरों के पंजों को माला के रूप में पिरो कर वे गले में लटकाये थे। वे अपनी बाहों और पैरों में ठोस सोने के मोटे मोटे गहने डाले थे और हाथों में उनके भारी भारी लकड़ी के कुन्दे थे। हरएक के कमर में एक एक कमरबन्द पड़ा था जिसमें एक एक बड़ा छुरा लटक रहा था।

पर जिस बात ने टार्जन को ताज्जुब में डाल दिया वह थी उनके बदन का रंग। उनका बदन खूब गोरा था, उनमें से कोई भी जरा भी काला न मालूम होता था। पर उस गोरेपन ने भी उनमें खूबसूरती न पैदा की थी। अपनी छोटी छोटी आंखों, पीले बड़े बड़े

दांतों और बड़े बड़े बालों से वे बदसूरत और गंदे मालूम होते थे और कुछ भयावन भी लगते थे।

लड़ाई के वक्त पर और जब वे टार्जन को उठा के कोठरी के बाहर लाये थे उस वक्त भी उनमें से कोई कुछ न बोला था। अब उनमें से कुछ आपस में इकट्ठे होकर किसी विचित्र भाषा में बातें करने लगे। टार्जन एक शब्द भी न समझे कि ये क्या बोल रहे हैं। थोड़ी देर बाद उन्होंने टार्जन को वहीं जमीन पर पड़े छोड़ दिया और स्वयं दालान से निकल किसी दूसरी तरफ चले गये।

जमीन पर पड़े पड़े टार्जन ने देखा कि वे जिस जगह हैं वह एक मन्दिर सा मालूम होता है। चारो तरफ ऊंची दीवारें हैं और बीच में एक खुला आंगन। एक तरफ थोड़ा खुला हुआ है जिसमें बाहर हरियाली दिखाई दे रही है। यह हरियाली उसी चौहद्दी के अन्दर है या उसके बाहर यह टार्जन ठीक समझ न सके। चारो तरफ की दीवारों में कई खिड़कियें बनी हुई थीं जिनमें से टार्जन को मालूम हुआ कि कई आंखें बड़े बड़े बालों के नीचे से उनकी तरफ ताक रही हैं। उन्होंने धीरे से उन रस्सियों पर जोर दिया जो उनके हाथ पैर बांधे हुई थीं। मालूम पड़ा कि शायद ताकत खर्च करने पर ये उनका जोर सह न सकेंगी, लेकिन इस वक्त इन रस्सियों पर जोर लगाना ठीक न होगा। जब मौका होगा तो वे इसकी आजमाइश करेंगे, दूसरे ऐसे वक्त यह काम करना चाहिये जिस वक्त अन्धेरा हो या कोई उनकी तरफ देख न रहा हो। लोगों की आंखों के सामने यह काम करना न करने के बराबर होगा।

कई घन्टे टार्जन उसी तरह वहां जमीन पर पड़े रहे, आखिर दोपहर के सूर्य की किरणें ऊपर से आकर उनके ऊपर पड़ने लगीं। उसी समय उनके चारो तरफ के दालानों में पैरों के चलने की आवाज आई, मालूम हुआ कि कुछ लोग चल फिर रहे हैं या यहां आ रहे हैं। ऊपर चारो तरफ बरामदे बने हुये थे, उन पर भी कई लोग आ कर इकट्ठे हो गये। टार्जन ताज्जुब की निगाहों से चारो तरफ देखने लगे वे सोचने लगे कि देखें ये सब अब उनके साथ क्या सलूक करते हैं।

ज्यों ज्यों सूर्य की किरणें सीधी होती गईं त्यों त्यों ऊपर के बरामदे की भीड़ बढ़ती गई। विचित्र बदसूरत शक्लें ऊपर से झांक झांक के नीचे पड़े कैदी को कौतूहल भरी नजरों से देखने लगीं। एक दालान से निकल के कई आदमी टार्जन के पास आ गये और उन्होंने घेर के धीमें स्वर में कुछ गाना आरंभ किया। ऊपर बरामदे में बैठे लोग भी स्वर में स्वर मिला कुछ गाने लगे। थोड़ी देर बाद नीचे के आदमी स्वर पर ताल दे कर नाचने लगे। उन्होंने नाचने में टार्जन पर निगाह न की। वे बराबर अपनी निगाहें सूर्य पर ही रक्खे रहे।

करीब दस मिनट तक नीचे के लोग नाचते और गाते रहे, और तब यकायक, आपस के किसी इशारे पर, उन लोगों ने गाना बन्द कर दिया और अपने हाथ के बड़े बड़े लकड़ी के कुन्दे उठा कर टार्जन पर झपटे। उन्होंने अपनी आंखें और अपनी सूरतें ऐसी बना लीं जैसे उन्हें हद दर्जे का क्रोध चढ़ आया हो और वे अकस्मात पागल बन गये हों।

उसी समय किसी तरफ से निकल के एक औरत दौड़ती हुई इन खूंखार जानवरों के बीच में आ कर खड़ी हो गई। उसके हाथ में भी अपने साथी पुरुषों की तरह लकड़ी का एक कुंदा था, फर्क यही था कि इस कुंदे पर सोने का पत्तर चढ़ा हुआ था। उस कुंदे से मार मार कर उसने टार्जन के खूनी दुश्मनों को पीछे हटा दिया।

बीसवां बयान

ला

क्षण भर के लिये टार्ज़न ने समझा कि भाग्य की किसी अद्भुत कारीगरी से उनकी जान बच गई, पर जब उन्होंने इस बात पर ध्यान दिया कि उस स्त्री ने अकेले ही बड़े सहज में उन बीस खूंखार जान-वरों को पीछे हटा दिया, और पीछे हट के वे फिर उसी तरह नाचने लगे जिस तरह पहिले नाच रहे थे और वह औरत भी विचित्र शब्दों में कुछ गाने लगी—तो टार्ज़न ने समझा कि नहीं, उनका खयाल

गलत है, उनकी जान बच नहीं गई है, यह एक तरह का धार्मिक कृत्य हो रहा है जिसके बीच वे ही प्रधान पात्र हैं।

थोड़ी देर बाद उस स्त्री ने अपनी कमर से छुरा निकाला और टार्जन के पैर की रस्सी काट डाली। चारों तरफ के आदमियों ने नाचना बन्द कर दिया और पास आ गये। स्त्री ने हाथ से इशारा किया और टार्जन उठ के खड़े हो गये। जो रस्सी पैर में बंधी थी वही उसने टार्जन के गले में बांध दी और अपने पीछे आने का इशारा करके आगे बढ़ी। पास के आदमी दो दो की लाइन बना के पीछे चले।

दालान से निकल के कोठेरी में और इसके बाद फिर दूसरे दालानों में से घूमते हुये वे लोग दूर तक बढ़े चले गये और अन्त में एक बड़े कमरे में पहुंचे जिसके बीचोबीच में एक ऊंची वेदी बनी हुई थी। अब टार्जन समझे कि इतने विचित्र कृत्यों का अर्थ क्या था और ये लोग अब तक कर क्या रहे थे। वे प्राचीन सूर्य-पूजकों के वंशजों के हाथ में पड़ गये थे और अब तक जो हो रहा था वह उनके धार्मिक कृत्यों का नाटक था। सूर्य की किरणों के उनकी देह पर पड़ने पर उन खूंखार जानवरों के हाथ से उस स्त्री ने उन्हें इसलिये बचा लिया था कि वह सूर्य की पुजारिन थी और चूंकि सूर्य ने उन पर स्वयं अपनी निगाहें डाल दी थीं इससे संसार के मामूली जीवों के हाथ से बचा कर वह अपने देवता को अपने हाथ से बलिदान चढ़ाना चाहती थी।

टार्जन ने जो बातें सोची थीं उनके ठीक होने में उन्हें बहुत

कम सन्देह था, अगर कुछ था भी तो वह क्षण भर बाद मिट गया। उन्होंने देखा कि वेदी के ऊपर और उसके पास जमीन पर काले काले बहुत से धब्बे पड़े हुये हैं और दीवार पर चारो तरफ पचासों आले बने हुये हैं जिन पर मनुष्य की खोपड़ियें सरिया के रक्खी हुई हैं।

टार्जन को लिये हुये वह स्त्री वेदी की सीढ़ियों के पास पहुंच गई। यहां भी ऊपर बरामदे बने हुये थे जिनमें देखने वालों की भीड़ इकट्ठी होने लगी। पूरब की तरफ एक बड़ा सा दर्वाजा बना हुआ था जो खुल गया और उसमें से निकल के औरतों की एक लंबी कतार भीतर आने लगी। आदमियों की तरह ये भी अपनी कमर में जानवरों की खाल लपेटे हुई थीं जो कि या तो सोने की सिकरी या चमड़े के कमरबन्दों से कमर के साथ कसी थीं। उनके काले बालों पर एक विचित्र बनावट के सोने के ताज थे जिनके दोनों तरफ कान के पास से सोने की दो सिकड़ियें लटकती हुईं कमर तक आ गई थीं।

स्त्रियों के शरीर की बनावट मर्दों की अपेक्षा ज्यादा सुन्दर और सुडौल थी। उनके माथे की ऊंचाई और उनकी काली बड़ी बड़ी आंखों से मर्दों की बनिस्बत ज्यादा बुद्धिमानी और मनुष्यता प्रगट होती थी। हरएक पुजारिन के हाथ में सोने के दो दो प्याले थे। वेदी के एक ओर स्त्रियों ने लंबी कतार बना ली और उसकी दूसरी ओर पुरुष लंबी लाइन में खड़े हो गये। हरएक पुरुष ने अपने सामने वाली स्त्री के हाथ से एक एक सोने का प्याला ले लिया और गाना

फिर शुरू हुआ। थोड़ी देर बाद वेदी के पास के एक दूसरे दर्वाजे से एक और स्त्री निकल के आती दिखाई पड़ी।

देखते ही टार्ज़न समझ गये कि यह प्रधान पुजारिन होगी, यह बहुत कम उमर की और अपनी साथिनों की बनिस्बत देखने में ज्यादा सुन्दर थी। पौशाक इसकी भी अपनी साथिनों ऐसी पर ज्यादा सुन्दर और भड़कीली थी और गहनों पर हीरे जड़े हुये थे। दोनों नंगी बाहों और पैरों पर इसके सोने के भारी भारी जड़ाऊ गहने थे और उसकी कमर की खाल सोने की एक मोटी पर सुन्दर बनावट की चेन से कसी हुई थी। उस चेन पर हीरे जड़े हुये थे। बाईं तरफ जड़ाऊ मूठ का एक छुरा उसकी कमर में था और हाथ में लकड़ी के कुन्दे के बदले एक पतली छड़ी थी।

उसके वेदी के पास पहुंचने पर गाना बन्द हो गया और पुजारी और पुजारिनें घुटनों के बल जमीन पर बैठ गईं। नई आई हुई युवती ने अपनी पतली छड़ी को उनके सिरों पर घुमा घुमा के एक तरह की प्रार्थना करना शुरू किया। उसकी आवाज पतली और मीठी थी—और उसे सुन टार्ज़न के मन में बिल्कुल ही खयाल न हुआ कि यही औरत कुछ देर बाद धार्मिक उन्माद से एकदम ज्ञान हीन सी बन जायगी, हत्यारी और खून की प्यासी हो जायगी, यही उनकी जान लेगी, और फिर खून से रंगे छुरे को दाहिने हाथ में थामे और बायें हाथ में उनके गरम खून का भरा प्याला लिये सब से पहिले वही उसे पीयेगी !!

अपनी प्रार्थना समाप्त करके प्रधान पुजारिन ने अब पहिले

पहिल अपनी निगाह टार्जन पर डाली। सिर से पैर तक खूब गौर से उसने इन्हें देखा और तब विचित्र भाषा में कुछ कह के रुक गई, जैसे इनसे अपनी बात का जवाब चाहती हो।

टार्जन बोले, "मैं तुम्हारी भाषा नहीं समझता, कोई दूसरी भाषा अगर जानती होओ तो उसमें बातें करो।" भावभंगी से मालूम हुआ कि उसने टार्जन की बात बिल्कुल ही नहीं समझी। टार्जन ने बाद में फ्रेञ्च, अंग्रेजी, जर्मन, अरब और अन्त में वजीरी भाषा में उसे अपना मतलब समझाने की चेष्टा की, पर कोई भी यह न समझ सकी वह बराबर अपना सिर हिलाती गई। अन्त में लाचारी की मुद्रा से गरदन हिला कर उसने पुजारियों को फिर अपना काम आरंभ करने का इशारा किया उनका विचित्र नाच फिर शुरू हुआ। कुछ देर बाद उसके कहने पर नाच बन्द हुआ और उसने फिर ध्यान से टार्जन की तरफ देखा।

क्षण भर रुक के प्रधान पुजारिन ने फिर किसी तरह का इशारा किया और साथ ही चारो तरफ के पुजारी एक साथ टार्जन पर टूट पड़े। उन्होंने टार्जन को हाथों में उठा लिया और ले जा के वेदी के पत्थर के ऊपर पीठ के बल रख दिया। उनका सिर एक तरफ लटकने लगा और उनके पैर दूसरी तरफ। पुजारिनों ने फिर उनके दोनों तरफ लंबी लाइनें बना लीं और अपने अपने हाथ के प्याले आगे बढ़ा दिये, जिसमें छुरा जब अपना काम पूरा करे तो बलि के खून का कुछ अंश उन्हें भी मिल जाय।

पुजारियों की लाइन में इस बात का झगड़ा उठा कि सब से

आगे कौन रहेगा। एक लंबे चौड़े कद के गोरिल्लों की शकल के बदसूरत आदमी ने धक्का दे के एक दुबले पतले पुजारी को पीछे हटा दिया और आगे बढ़ आया। उस दुबले पतले आदमी ने प्रधान पुजारिन से इस बात की शिकायत की। प्रधान पुजारिन ने डांट के उस कद्दावर जानवर को लाइन में सब से पीछे जाने का हुक्म दिया। गुर्राता और कुड़बुड़ाता हुआ अपनी जगह जा खड़ा हुआ।

प्रधान पुजारिन ने पतली आवाज में कुछ गाना शुरू किया टार्जन को मालूम हुआ कि यह किसी प्रकार का धार्मिक पाठ कर रही है। धीरे धीरे उसका छुरे वाला हाथ ऊंचा होने लगा। अन्त में टार्जन की खुली छाती के ठीक ऊपर बांह की ऊंचाई पर जा के वह रुक गया।

वह क्षण भर से ज्यादा न रुका होगा। फिर नीचे उतरने लगा। पहिले तो उसकी चाल धीमी रही पर जैसे जैसे गाने की तेजी बढ़ती गई उसकी नीचे आने की तेजी भी ज्यादा होती गई। टार्जन के कानों में अब तक उस लड़ाके पुजारी के गुर्राने और कुड़बुड़ाने की आवाज आ रही थी। पहिले से ज्यादा जोर से अब वह अपना क्रोध प्रगट कर रहा था। उसके सामने खड़ी एक पुजारिन ने धीमे शब्दों में उसे डांटा। छुरा अब टार्जन की छाती के बिल्कुल पास था। जरा रुक कर प्रधान पुजारिन ने एक क्रोध की नजर उस ओर डाली जिधर से कुड़बुड़ाने की आवाज आ रही थी और फिर टार्जन की तरफ देखा।

यकायक पुजारियों की लाइन में कुछ गड़बड़ाहट मची। टार्जन

ने अपनी गर्दन घुमा के देखा कि वह पुजारी जिसे लाइन में पीछे भेज दिया गया था एक चीख मार के अपनी जगह से उछला और उसने हाथ के भारी कुंदे की एक भरपूर चोट उस पुजारिन के सिर पर दी जो उसके सामने खड़ी थी और जिसने उसे डांटा था। और तब टार्जन को वह बात याद आ गई जो टार्जन ने करचक, टबलट और टरकोज के मामले में देखी थी, जो वे जंगल के कई और बाशिन्दों के मामले में देख चुके थे। जंगल के रहने वाले किसी भी जीव को जिससे उन्होंने बरी न देखा था। वह पुजारी यकायक पागल हो गया, उसका दिमाग यकायक बिकृत हो गया। वह अपने खूनी कुंदे को दाहिने बायें घुमाता हुआ भीड़ में इधर उधर घूमने लगा।

उसकी क्रोध भरी चीखें सुनने में भयानक और डरावनी थीं। इधर उधर उछलते कूदते जिस अभागे के सिर पर भी उसका कुंदा पड़ता था, फिर वह सीधा जमीन ही पर लुड़क पड़ता था। खाली कुंदा ही नहीं, उसके बड़े बड़े पीले दांत भी अपना काम करने में बाज नहीं आ रहे थे। खूंखार जानवर की तरह वह जहां दबोचता था मांस का टुकड़ा उखाड़ लेता था। और एक तरफ जब कि यह हो रहा था, दूसरी तरफ प्रधान पुजारिन टार्जन की छाती पर अपना छुरा रोके हुई भयभीत आंखों से उस खूनी के हाथों अपने सहायकों का मारा जाना देख रही थी।

थोड़ी ही देर में कमरा खाली हो गया। रह गये केवल वे लोग जो उसके हाथ की चोट खाके मर रहे थे या बेतरह घायल हो गये थे, और वेदी पर पड़े हुये टार्जन, हाथ में छुरा लिये प्रधान पुजारिन

और वह पागल जिसने इस धार्मिक कृत्य में विघ्न पैदा किया था। घूमती हुई जब उसकी निगाहें उस युवती पर पड़ीं तो उनमें एक नई तरह की चमक और लालच दिखाई दी। धीरे धीरे उसकी तरफ बढ़ते हुये अस्पष्ट शब्दों में वह पुजारी कुछ कहने लगा—और अब टार्जन के आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा। उनके कानों में एक ऐसी भाषा के शब्द पड़े जिसे वे अच्छी तरह समझ सकते थे और जिसे इस स्थान पर सुनने की उन्हें तनिक भी आशा न थी। वह आदमी "एप" बन्दरों की बोली में बात कर रहा था—जो उनकी मातृ-भाषा थी। और उस युवती ने भी उसी भाषा में बोल के जवाब दिया!

पुजारी ने धमका के उसे कुछ कहा, उस स्त्री ने धीमे शब्दों में उसे समझाना बुझाना चाहा। वह अच्छी तरह जानती थी कि यह इस समय अपने आपे में नहीं है और उसका हुकूमत का ढंग इस वक्त कुछ भी काम न करेगा। पुजारी हाथ फैला के उसकी तरफ बढ़ा जा रहा था और वह वेदी के पीछे हटती जा रही थी।

टार्जन ने उन चमड़े की रस्सियों को तोड़ने का उद्योग किया जो उनके हाथों को पीठ के पीछे बांधे हुई थीं। पुजारिन का ध्यान उधर बिल्कुल ही न गया। वह अपने ऊपर आई हुई आफत से बचने का उपाय ढूंढ रही थी। पुजारी ने एक उछाल मारी और टार्जन के पास से होके वह औरत की तरफ झपटा। टार्जन ने अपनी पूरी ताकत लगा के हाथों को उमेठा, पर इस आखिरी उद्योग ने उन्हें वेदी पर से ढुलका दिया और वे करवट लेते हुये उस ओर पत्थर के

फर्श पर गिरे जिधर जगह खाली थी। वेदी के दूसरी ओर पागल पुजारी उस स्त्री को पकड़ने का उद्योग कर रहा था। टार्जन ने लपेटी हुई रस्सियों को हाथ से हटाया और पैरों पर उठ खड़े हुये। उस समय उन्हें मालूम हुआ कि वे अब कमरे में अकेले हैं। वे दोनों पुरुष और स्त्री उस जगह से गायब हो चुके हैं।

टार्जन विचार कर ही रहे थे कि कहां जायं और क्या करें—कि यकायक उनके कानों में किसी के चीख मारने की धीमी आवाज आई। आवाज उस छोटे दर्वाजे से आती मालूम होती थी जो वेदी के पीछे था और जिसमें से हो प्रधान पुजारिन इस कमरे में घुसी थी। उन्होंनें यह खयाल न किया कि अपना बचाव करें, भाग्य ने इतनी कार्रवाइयों के बाद जो मौका दिया है उसे काम में लावें और भाग जायं। उस वक्त उन्होंने आफत में पड़ी औरत की मदद करना ही अपना प्रधान कर्तव्य समझा। एक उछाल में वे उस दर्वाजे के पास जा पहुंचे जो भीतर के अन्धकार में जाने का रास्ता था और फिर दौड़ते हुये तेजी से उन सीढ़ियों पर उतरने लगे जो बड़े पुराने जमाने की बनी मालूम होती थीं और न जाने कहां जाने का रास्ता थीं।

शीघ्र ही वे एक छोटे कमरे में पहुंचे जिसकी छत बहुत नीची थी और जिसमें सामने की तरफ कई दर्वाजे बने हुये थे। छत के बीचो बीच में एक रोशनदान था जिसकी राह आती धुंधली रोशनी में उन्होंने एक ही निगाह में वहां का सब हाल समझ लिया। सामने औरत जमीन पर पड़ी हुई थी, और उसकी छाती पर चढ़ा हुआ

खूंखार पुजारी अपनी लंबी उंगलियों से उसका गला दबाये उसकी सांस की नली को धीरे धीरे बन्द किये जा रहा था।

टार्जन का हाथ कंधे पर पड़ते ही उसने घूम के पीछे देखा—उसे इस जगह अपने काम में विघ्न पड़ने की आशा न थी—और साथ ही वह उठ खड़ा हुआ। उसके होंठो से फेन बह रहा था, उसके पीले दांत बाहर निकले हुये थे और जान पड़ता था पागलपन ने उसके शरीर में दस गुनी ताकत भर दी थी। उस वक्त उसे अपनी कमर में लटकता छुरा न याद आया, जितनी आदमीयत उसमें थी उसे भूल के वह पूरा जंगली जानवर बन बैठा था। खाली हाथ ही वह टार्जन का मुकाबला करने को तैयार हो गया।

शायद बड़े बड़े नाखूनों और पैने दांतों से लड़ने में उसने अपने को बड़ा होशियार समझा था, पर इस तरह की लड़ाई में अपने दुश्मन को उसने अपने से ज्यादा चालाक पाया। एक दूसरे को चीरते फाड़ते काटते और नोचते हुये दोनों जमीन पर गिर पड़े और इस बीच में अपनी तबीयत को सम्हाल के जमीन पर गिरी औरत उठ खड़ी हुई और दीवार के सहारे हो के दोनों हाथों से अपना गला पकड़े हुई इस विचित्र लड़ाई को देखने लगी।

फैसला होने में ज्यादा देर न लगी। लड़ते हुए टार्जन ने मौका पा के अपने बांये हाथ से दुश्मन का गला पकड़ा और दाहिने से उसके मुंह पर थप्पड़ मारने शुरू किये! मजबूत हाथों के दस बारह थप्पड़ खा कर ही पुजारी का मुंह एकदम कुचल सा गया, और क्षण भर बाद उसके प्राण पखेरू दूसरी दुनिया को रवाना हो गये।

टार्जन ने धक्का देके उसे दूर फेंक दिया और बदन को झाड़ते हुये उठ खड़े हुये। उन्होंने उसके शरीर पर एक पैर रक्खा और आदत के अनुसार गर्ज से भारी आवाज निकालने के लिये मुंह खोला ही था कि कुछ सोच कर वे रुक गये। उन्होंने खयाल किया कि सामने ही बलिदान के कमरे में जाने का वह दर्वाजा है जिसके रास्ते वे यहां आये हैं। आवाज होने पर वे व्यर्थ ही किसी नई आफत में तो नहीं पड़ जायंगे।

प्रधान पुजारिन डरी हुई आंखों से इस भयानक लड़ाई को देख रही थी। लड़ाई खतम होने और उस पागल को जान से हाथ धोते देख उसे कुछ संतोप हुआ, पर तुरत ही उसका संतोष चिन्ता और डर में बदल गया। जब उसे खयाल हुआ कि पागल के हाथ से निकल अब वह ऐसे आदमी के हाथ पड़ गई है जो अवश्य ही उसका जानी दुश्मन होगा, थोड़ी देर पहिले वह जिसकी जान लेने वाली थी। उसने भयभीत निगाहों से चारो तरफ देखा और साथ ही उसकी नजर पास के एक खुले दर्वाजे पर पड़ी। वह भागने के लिये घूमी, पर तुरत ही टार्जन उसके बगल में पहुंच गये और उसकी बांह पर हाथ रख के बोले, "ठहरो, अभी जाओ मत!"

टार्जन "एप" बन्दरों की बोली में बोले थे। युवती ने उनकी तरफ आश्चर्य से देखते हुये कहा, "तुम कौन हो, कैसे तुम आदि पुरुषों की बोली बोल रहे हो?"

टार्जन ने जवाब दिया, "मैं जंगल का राजा टार्जन हूँ।"

युवती डरे स्वर में बोली, "तुम मुझसे क्या चाहते हो, क्यों तुमने मुझे था के हाथों से बचाया ?"

टार्जन बोले, "इसलिये कि मैं किसी स्त्री का मरना देख नहीं सकता था।"

उसी स्वर में युवती बोली, "अब तुम मेरे साथ क्या करना चाहते हो ?"

टार्जन ने कहा, "कुछ भी नहीं, मैं तुम्हें हानि नहीं पहुंचाया चाहता। केवल यह चाहता हूं कि तुम यहां से जाने का रास्ता मुझे बता दो और मुझे खतरे के बाहर कर दो।"

टार्जन नहीं समझते थे कि यह युवती उनकी बात मानेगी। उन्हें विश्वास था कि यह अगर हाथ से निकल जायगी तो फिर अपने साथियों में जा मिलेगी और तब फिर वह पैशाचिक धार्मिक कृत्य वहीं से आरम्भ किया जायगा जहां अकस्मात समाप्त हो गया है। उनके पक्ष में कोई बात है तो यही कि वे इस समय स्वतंत्र हैं। उनको अगर एक छुरा दे दिया जाय तो फिर इन सूर्य-पूजकों को पता लगेगा कि यकायक धोखे में पकड़ के बलि देने में और आमने सामने लड़ के स्वतंत्र आदमी को पकड़ के बलि देने में कितना अंतर है। वे जल्दी हाथ थोड़े ही आवेंगे!

युवती क्षण भर तक खड़ी उन्हें ध्यान से देखती रही। फिर बोली—

"तुम बड़े अद्भुत आदमी हो। तुम वैसे ही हो जिस तरह के आदमी का मैं लड़कपन से ले कर अब तक बराबर स्वप्न देखती रही

हूं। तुम्हारा शरीर, तुम्हारा रूपरंग, तुम्हारी आकृति, बोलचाल ठीक वैसी ही मालूम होती है जैसी मेरे उन पूर्वजों की रही होगी जिन्होंने अपनी मातृभूमि को छोड़ के इतनी दूर जंगल और रेगिस्तान में आ के इस भारी शहर और किले को बनाया—जिसमें वे पृथ्वी के गर्भ में छिपे अगाध धन को स्वतंत्रता पूर्वक उससे ले सकें। तुमने मेरी मदद क्यों की, क्यों मुझे उस पागल से बचाया, यह मेरी समझ में नहीं आता, और यह भी समझ में नहीं आता कि अब अपने कब्जे में पा के क्यों नहीं तुम मेरी जान ले लेते, क्यों नहीं मुझे मार के अपना बदला चुका लेते। क्या मेरे ही हुक्म से तुम मरने वाले नहीं थे, क्या मैं ही स्वयं हाथ में छुरा ले कर तुम्हारी जान की ग्राहक नहीं बन गई थी?"

टार्जन धीमी आवाज में बोले, "जो कुछ तुम करने लगी थीं उसमें मैं तुम्हारा कोई भी दोष नहीं देखता कुछ दोष देखता भी हूं तो उस धर्म का जिसने तुम्हें हत्या करना सिखलाया। तुम तो वही कर रही थीं जो बराबर करती आई थीं। कोई नई बात तो तुमने की नहीं थी। पर यह बताओ—तुम कौन हो, ये कौन लोग हैं जिनके बीच मैं पड़ गया हूं!"

युवती बोली, "इस नगर का नाम ओपर है, और मैं यहां के सूर्य के मन्दिर की प्रधान पुजारिन ला हूं। मेरी जाति के पूर्व पुरुष करीब दस हजार वर्ष पहिले इस जंगली दुनिया में सोने की तलाश में आये थे। उन्होंने इतने बड़े बड़े शहर बसाये कि उन शहरों के दोनों सिरों पर समुद्र पड़ते थे और जब कि सूर्यदेव एक समुद्र में से

निकल के हमें प्रकाश देते थे, हमें उत्ताप देते थे, हमारे शहर के दूसरे सिरे पर जा के वे अपनी प्यास समुद्र में बुझाते थे, अपनी गरमी शांत करते थे। वे इतने अमीर थे कि उनके बराबर धन कभी किसी के पास नहीं हो सकता और शक्तिशाली इतने थे कि उनका कोई दुश्मन न रह गया था। पर इतना होने पर भी वे यहां महलों में साल के कुछ ही महीने बिताते थे, अपना बाकी समय वे अपने उस देश में काटते थे जो उनकी मातृभूमि थी और जहां से वे यहां आये थे। उनका यह देश उत्तर की ओर बड़ी दूर पर पड़ता था।

"हमारी इस नई दुनिया और पुरानी दुनिया के बीच बराबर जहाज आते जाते रहते थे। वर्षा के दिनों में यहां बहुत कम आदमी रह जाते थे, सभी अपने देश चले जाते थे। रह वही जाते थे जिनके सपुर्द हबशियों द्वारा खानों से सोना निकलवाने का काम था या वे सौदागर रहते थे जो यहां से सोना ले जाया करते थे। इनके सिवाय वे सिपाही रहते थे जो खानों और नगरों की रक्षा के लिये नियुक्त थे।"

"एक दफे वर्षा के बाद देश से जब आदमियों के आने का वक्त हुआ तो वे न आये। कई हफ्तों तक उनके आने की राह उत्सुकता और चिन्ता के साथ देखी गई। अन्त में जहाजों का एक बेड़ा इस लिये भेजा गया कि वह जा के पता लगावे कि देशवासी मातृभूमि से क्यों नहीं आये, या वहां से चले तो बीच में कहां रह गये। महीनों तक यह जहाजी बेड़ा समुद्रों का चक्कर लगाता रहा। कहीं भी उन्हें वह भारी देश न दिखाई दिया जिसमें हमारे पूर्वज रहते थे

जिसमें वे सैकड़ों हजारों वर्षों से अपनी पुरानी सभ्यता को कायम रखते चले आये थे। पिशाच समुद्र ने उसे अपने गर्भ में छिपा लिया था।

"तभी से मेरी जाति का नाश आरम्भ हुआ। उनका दिल टूट गया, उत्साह भंग होने लगा और उन जातियों के हमले उन पर होने लगे जो पहिले डर के मारे दबी रहती थीं और जिन्होंने मुद्दत से अपना सिर न उठाया था। उत्तर और दक्षिण, दोनों ही ओर से दुश्मन आने लगे। एक एक कर के शहर लूट लिये गये, बर्बाद हो गये, और मट्टी में मिल गये। आखिर बचे खुचे लोगों ने इन पहाड़ों के बीच अपना घर बनाया। इन दीवारों के भीतर आके रहने लगे, धीरे धीरे हम शक्ति में, बुद्धि में, सभ्यता में और संख्या में घटते चले गये और अंत में अब जंगली 'एप' बन्दरों की एक छोटी सी जाति के रूप में रह गये हैं।

"सच तो यों है कि 'एप' बन्दर हमारे साथ ही रहते हैं। पचासों सैकड़ों वर्षों से रहते चले आये हैं। हम उन्हें आदि पुरुष कहते हैं और उनकी भाषा भी उतनी ही बोलते हैं जितनी अपनी भाषा बोलते हैं। केवल अपने धार्मिक कृत्यों में अब तक भी हम अपनी मातृभाषा को प्रयोग करने का प्रयत्न करते हैं। थोड़े दिनों में वह भी भूल जांयगे और तब हमारी भाषा रह जायगी केवल वही 'एप' बन्दरों की भाषा। जो लोग 'एप' बन्दरों का संग करके बच्चा पैदा करते हैं उन्हें भी हम देश निर्वासन का दंड देना भूल जांयगे और धीरे धीरे नीचे गिरते गिरते उन्हीं जानवरों की श्रेणी में मिल जायंगी जिनसे से कि

टार्जन ने पूछा, "तो क्या यहां ऐसे लोग भी हैं जो देखने में उनसे ज्यादा सुन्दर हों ?"

युवती बोली, "यहां और जितने हैं सब उनसे ज्यादा बदसूरत हैं।"

टार्जन उसके भविष्य की बात सोच कांप उठे, वहां के हलके चांदने में भी वह देखने में सुन्दर मालूम होती थी।

वे बोले, "पर मेरा क्या होगा, क्या तुम मुझे यहां से छुटकारा दिला दोगी ?"

वह बोली, "तुम पर सूर्य भगवान ने अपनी नजर डाल दी है इस कारण अगर तुम फिर पकड़ पाये गये तो तुम्हारा बचना असंभव है। जरूर वे तुम्हें बलि चढ़ा देंगे, मैं भी न बचा सकूंगी। पर मैं नहीं चाहती कि उन्हें फिर से तुम्हारा पता लगे। तुमने मेरी जान बचाई है, क्या मैं तुम्हारी जान बचाने से पीछे हटूंगी। मैं तुम्हें हिफाजत से इन किले की दीवारों के बाहर कर सकती हूं। पर यह जल्दी का काम नहीं है। इसमें कई दिन लग जायंगे। इस बीच में तुम्हें और कहीं रहना होगा। चलो यहां से हट चलो। कोई आ गया तो सब भेद खुल जायगा और अगर उन्हें विश्वास हो गया कि मैंने तुम्हारी मदद करनी चाही है, अपने देवता के साथ मैंने विश्वासघात किया है—तो वे मुझे भी तुम्हारे संग ही मार डालेंगे।"

टार्जन शीघ्रता से बोले, "तो तुम इस झंझट में न पड़ो। मैं ऊपर मंदिर में चला जाता हूँ और वहां लड़ता भिड़ता अपने बाहर

जाने का उद्योग करता हूं। ऐसा होने पर तुम्हारे ऊपर कोई शक न करेगा।"

युवती सिर हिलाती हुई बोली, "नहीं, ऐसा करने से भी विशेष लाभ न होगा। हम दोनों यहां इतनी ज्यादा देर तक रह गये हैं कि बाहर निकलने पर जरूर हम पर शक आ जायगा। तुम आओ! मेरे साथ चलो।"

बहुत कहने पर भी उसने न माना तो टार्जन उसके साथ हो लिये! रास्ते में वह बोली, "मैं तुमको छिपा के फिर उनसे जा मिलूंगी और कहूंगी कि था के मरने के बहुत देर बाद तक मैं बेहोश पड़ी रही, और मुझे पता नहीं तुम था को मार के कहां भाग गये!"

अन्धेरी कोठरियों और दालानों के बीच से घुमाती फिराती वह उन्हें एक छोटे से कमरे में ले गई जिसमें छत में बने एक रौशनदान से थोड़ी रोशनी आ रही थी। वहां वह बोली, "यह प्रेत-घर है। यहां तुम्हें कोई खोजने न आवेगा। मैं अन्धेरा होने बाद यहां आऊंगी और इस बीच में तुम्हारे छुटकारे का कोई रास्ता भी खोज लूंगी।"

वह चली गई। टार्जन वहां प्रेत-घर में अकेले रह गये।

इक्कीसवां बयान

'लेडी एलिस' के मुसाफिर

क्लेटन को मालूम हुआ जैसे उनके मुंह में साफ, ताजा और ठंडा पानी गिर रहा है और वे भर इच्छा उसे पी रहे हैं। चौंक के उनकी आंखें खुल गईं। उन्होंने देखा कि आकाश में बादल छाये हुये हैं और पानी तेजी से बरस रहा है। उनका कपड़ा एक दम पानी से तर है। उन्होंने अपना मुंह खोल के भर पेट पानी पिया जिससे उनके बदन में नई शक्ति और जान आती दिखाई पड़ी। कोशिश

करके हाथ के सहारे वे उठ बैठे। उनके पैर के पास थूरन पड़े थे, और कुछ दूर पर नाव के पेंदे में सिकुड़ी हुई जेन पोर्टर पड़ी थी। देखने से जान पड़ा जैसे वह एकदम मुर्दा हो।

मुश्किल से घसक के वे उसके पास जा पहुंचे। सिर उठा के उन्होंने अपनी गोदी में रक्खा और पानी से तर एक कपड़ा उठा के उसके सूखे होठों के भीतर बूंद बूंद टपकाने लगे। उन्होंने सोचा शायद अभी जान बाकी हो, शायद यह जी उठे।

कुछ देर तक तो होश में आने का कोई लक्षण न दिखाई पड़ा पर बाद में एक हलकी सांस आई और आंख की पलकें जरा सा हिलीं। क्लेटन ने थोड़ा सा पानी गले में और टपकाया। एक दफे कांप कर जेन पोर्टर ने आंखें खोल दीं और आश्चर्य से चारो तरफ देखने लगी।

धीरे धीरे पिछली बातें उसे याद आने लगीं। उसने आश्चर्य से पूछा, "हैं, क्या पानी मिल गया, क्या हम बच गये ?"

क्लेटन बोले, "पानी बरस रहा है, उसी को पी कर हमारी जान बची है।"

जेन पोर्टर बोली, "और मानश्यूर थूरन, क्या उन्होंने तुम्हें मारा नहीं, क्या वे स्वयं अपनी जान से हाथ धो बैठे ?"

क्लेटन ने कहा, "मालूम नहीं, देखूं तो पता लगे। अगर वे जीते हुये हैं और इस पानी ने फिर उन्हें होश में ला दिया तो....। कहते कहते क्लेटन यकायक चुप हो गये। उन्होंने सोचा कि वैसी बातें कह के इस बेचारी युवती की तकलीफ बढ़ाना ठीक न होगा।

जेन पोर्टर समझ गई कि वे क्या कहा चाहते थे। उसने तरद्दुद भरी आवाज से पूछा, "वे हैं कहां ?"

क्लेटन ने उंगली से उधर इशारा किया जिधर वे पड़े थे। क्षण भर दोनों चुप रहे।

बाद में धीमी आवाज में वह बोली, "नहीं, उसे होश में मत लाओ। पानी पी के जब उसे ताकत आवेगी तो वह तुम्हारी जान ले लेगा। मरता है तो मरने दो। मुझे इस नाव में उस पिशाच के संग अकेला न छोड़ो।"

क्लेटन थूरन के पास जाते जाते रुक गये। उन्हें समझ में न आया कि इस मौके पर क्या करना चाहिये। मुनासिब तो था कि उन्हें देखा जाय और अगर कुछ भी जान उसकी देह में बाकी हो तो पानी दे के उन्हें जिलाया जाय। पर क्या होश में आने पर वह फिर उन्हें नुकसान पहुंचाने की इच्छा न करेंगे ! इसी उधेड़ बुन में पड़े क्लेटन ने थूरन के देह पर से आंखें उठा के उस ओर देखा जिधर नाव का पिछला हिस्सा पड़ता था। यकायक वे चौंक के उठ खड़े हुये और खुशी भरी आवाज में बोले,—

"जमीन, जेन ! जमीन, ईश्वर को धन्यवाद है, हम लोग जमीन के पास पहुंच गये !"

जेन पोर्टर ने भी आंखें घुमा के देखा। उनसे सौ गज से भी कम फासले पर जमीन का किनारा दिखाई दे रहा था, पीछे हरा भरा जंगल था।

वह बोली, "अब तुम उसे उठा दो।" उसको भी थूरन के संबंध

में अपनी बातों पर कुछ मानसिक कष्ट हो रहा था, और वह नहीं चाहती थी कि रशियन की हत्या का दोष उस पर आवे।

थूरन को उठाने और उन्हें पूरी तरह सब बातें समझाने में आधे घंटे से भी ज्यादा समय लग गया और इस बीच में बहते हुये वे लोग किनारे के और पास आ गये। नाव में एक रस्सी बांध कर और उसका एक सिरा हाथ से पकड़ कर क्लेटन जमीन पर उतर गये और कुछ ऊंचे पर जा कर उसे उन्होंने एक पेड़ के साथ बांध दिया। इस वक्त समुद्र में ज्वार आ रहा था और उन्होंने सोचा कि भाटा आने पर ऐसा न हो कि नाव कहीं दूर बह जाय और उन्हें फिर तरद्दुद उठाना पड़े। अभी जेन पोर्टर को कई घंटे नाव ही पर रहना पड़ेगा इसका उनको निश्चय था, कारण अभी इतनी ताकत उनमें न आ गई थी कि वे उसे हाथों में ले नीचे उतारते।

धीरे धीरे घसकते और चलते हुये वे किनारे पर और ऊपर चढ़ के जंगल में चले गये और वहां खाने लायक फलों की तलाश करने लगे। पहिले कुछ दिन वे टार्जन के जंगल में रह चुके थे इससे वे जानते थे कि कौन फल खाने लायक है और कौन फल नहीं। घंटे भर बाद फलों से अपनी झोली भरे ये किनारे पर आये।

सूर्य अब इतने तेज हो गये कि जेन पोर्टर ने चाहा कि किसी तरह उद्योग करके किनारे पर चले चलना चाहिये। क्लेटन के लाये फल से तीनों के बदन में कुछ और ताकत मालूम हो रही थी। बड़ी देर में कोशिश करके वे नीचे उतरे और उस पेड़ के पास पहुंचे जिसमें नाव की रस्सी क्लेटन ने बांधी थी। इस थोड़ी ही सी मेहनत

में इतनी थकावट आ गई थी कि तीनों जमीन पर लेट रहे और शीघ्र ही सो गये। संध्या तक वे गहरी नींद में पड़े रहे।

एक महीने तक वे समुद्र के उस किनारे पर हिफाजत से रहे कुछ ताकत आने पर थूरन और क्लेटन दोनों ने मिल के एक पेड़ के ऊपर की डालियों पर रहने की एक छोटी सी जगह बना ली और उसके ऊपर छाया वगैरह कर के और नीचे आने का रास्ता बना के इस लायक कर लिया कि वे हवा पानी से अपनी रक्षा कर सकें और जंगल के दरिंदे जानवर वहां उनका कुछ बिगाड़ न सकें। दिन भर वे जंगल में घूम के फल इकट्ठे करते थे या छोटे मोटे जो जानवर दिखाई देते थे उन्हें फंसाने का उद्योग करते थे। रात के पहिले ही वे अपने झोपड़े में चढ़ जाते थे और वहां अपने अपने ठिकाने आराम करने का बन्दोबस्त करते थे। बराबर सारी रात उनके नीचे खूनी जानवर चिघाड़ते और गरजते हुये घूमा करते थे।

वे लोग अपने नीचे जंगल की सूखी घास बिछाते थे और ओढ़ने के लिये जेन पोर्टर के पास क्लेटन का एक चदरा था जिसे उन्होंने उसे दे दिया था। ऊपर की जगह को क्लेटन ने बीच में आड़ करके दो भागों में बांट दिया था। आधी उन्होंने जेन पोर्टर को दे दी थी। आधी में वे स्वयं और थूरन रहते थे।

किनारे पर आने के बाद से ही थूरन ने वे सब आदत प्रकट करनी शुरू कर दी थीं जो कि असल में उसकी चालचलन में शुरू से थीं और जिन्हें सभ्य समाज के बीच वह बड़ी होशियारी से अब तक छिपाये जा रहा था। स्वार्थपरता, चिड़चिड़ाहट, बेहूदापन,

नीचता और डरपोकपना सभी उसमें मौजूद था, कोई ऐसी बुरी आदत न थी जो उसमें न हो। उसके जेन पोर्टर की तरफ जो भाव थे उनके कारण उसमें और क्लेटन में दो बार मार पीट हो चुकी थी और अब क्लेटन की हिम्मत न रह गई थी कि अपनी भावी पत्नी को एक मिनट के वास्ते भी थूरन के पास अकेला छोड़ के वे कहीं जायं। उन दोनों के लिये थूरन ऐसे नीच के साथ दिन काटना एक बड़ी भारी समस्या और आफत हो गई थी, पर वे इसी आशा में दिन गुजारे जाते थे कि कभी न कभी उनका छुटकारा इस स्थान से होगा।

जेन पोर्टर को कभी कभी वह जमाना याद आ जाता था जिन दिनों वह यहीं के जंगलों में एक दूसरे स्थान पर टार्जन की कोठरी के पास रही थी। क्लेटन से तो उसे किसी तरह का सहारा नहीं मिल रहा है पर अगर टार्जन यहां इस समय होते तो न तो उसे जंगली जानवरों से डरने की जरूरत होती न इस नीच थूरन से ही उसे दबना पड़ता। वे दोनों बातों का बड़े सहज में इन्तजाम कर लेते। एक दिन जब क्लेटन सोते के पास पानी लेने चले गये और थूरन ने कोई कड़ी बात उससे कह दी तो वह बोली, "यह तुम अपना भाग्य समझो, थूरन, कि यहां इस समय मानस्यूर टार्जन नहीं हैं। बेचारे उस जहाज से समुद्र में गिर गये जो तुम्हें और मिस स्ट्रांग को केपटाउन ले जा रहा था। अगर वे होते तो............।"

थूरन बात काट के बोला, "क्या तुम उस पाजी को जानती थीं?"

जेन पोर्टर ने कहा, "हां, मैं उस आदमी को जानती थी। मैंने बहुतेरे आदमी दुनिया में देखे, पर अब तक सच्चा मर्द उसी को पाया।"

जेन पोर्टर के भाव से थूरन समझ गये कि टार्जन में और इस युवती में केवल मामूली दोस्ती ही नहीं थी, यह उनको किसी दूसरी निगाह से भी देखती थी। वे तो अब इस दुनिया में हैं ही नहीं, लेकिन उनको बदनाम करने का यह मौका हाथ से न जाने देना चाहिये। इससे मेरा बदला और पूरा हो जायगा और इस युवती को जो सुन के दुःख होगा, उससे मुझे और प्रसन्नता होगी। वह बोले,—

"वह पाजी ही नहीं, गदहा और भारी बेईमान भी था। उस डरपोक को तो हिजड़ा होना चाहिये था, व्यर्थ ही वह मर्द बना। एक भली औरत के साथ उसने बुराई की और जब उसके पति ने मुनासिब तौर से बदला लेना चाहा तो उसने अपना सारा दोप बेचारी औरत के सिर मढ़ दिया। इससे भी काम न चला, और उस औरत के पति ने मैदान में आने को उसे ललकारा, तो वह फ्रांस छोड़ के भाग निकला। मैं और मिस स्ट्रांग जिस जहाज पर केप-टाउन जा रहे थे, वह भी उसी पर भागा जा रहा था। ये सब हाल मैं इसलिये जानता हूं कि वह स्त्री जिसका मैं हाल बयान कर रहा हूं खास मेरी बहिन है। और एक बात मैंने किसी से नहीं कही, पर तुमसे कहता हूं। तुम्हारे बहादुर टार्जन जहाज से किस लिये पानी में कूद पड़े जानती हो? मैंने उसे जहाज पर पहिचान लिया।

मैंने कहा कि मेरी बहिन के साथ जो तुमने बुराई की है उसका बदला मैं तुमसे लूंगा तुम्हें मुझसे लड़ना होगा। बस, सुनते ही उसके तो देवता कूच कर गये। मुझसे लड़ने की बनिस्बत उसने समुद्र में कूद पड़ना अच्छा समझा।

जेन पोर्टर जोर से हंस के बोली, "मैं तुमको और मानश्यूर टार्जन दोनों को अच्छी तरह जानती हूं। क्या तुम्हें विश्वास होता है, कि मैं इस अनहोने किस्से को सच मान लूंगी और तुम्हें सच्चा समझूंगी !

थूरन ने पूछा, "तो टार्जन को नाम बदल के सफर करने की क्या जरूरत थी?"

जेन पोर्टर ने तेज आवाज में जवाब दिया, "मैं नहीं कह सकती क्या जरूरत थी। कोई कारण होगा। तुम झूठे हो जो ऐसी गन्दी बातें मुझसे कह रहे हो।" थूरन चुप हो रहे, पर यद्यपि जेन पोर्टर ने डांट के उसे चुप करा दिया था उसके मन में सन्देह का पौधा पैदा हो गया था। उसे याद था कि हेजेल स्ट्रांग से भी टार्जन ने अपना नाम जान कैल्डवेल ही बताया था।

जिस स्थान पर इन तीनों ने अपना डेरा बनाया था उससे पांच मील से भी कम दूर पर उत्तर की ओर टार्जन की वह कोठरी थी जिसमें एक बार जेन पोर्टर पहिले रह चुकी थी। पर जेन पोर्टर को जरा भी न मालूम था कि वह स्थान उससे इतनी नजदीक है, वह उसे हजारों कोस दूर ही समझती थी। और थोड़ा बढ़ कर, तीन चार मील बाद, फूस पत्ती के बने झोपड़ों में अट्ठारह आदमियों की

एक और छोटी मंडली रहती थी। ये उन तीन नावों के यात्री थे जो क्लेटन की नाव से अलग हो गई थीं।

'लेडी एलिस' के यात्री इन तीन नाव के आदमियों को यद्यपि अपने ऊपर आई इस आफत का दुःख जरूर था—जहाज के डूब जाने का उन्हें काफी रंज हुआ—पर उन्हें उन तकलीफों में से कोई भी न उठानी पड़ी जो चौथी नाव के मुसाफिरों को उठानी पड़ी थी। न तो उन्हें किसी तूफान का सामना करना पड़ा, न खाने पीने की ही तकलीफ हुई। तीन दिन तक वे बराबर एक दिशा में खेते गये और चौथे दिन के प्रातःकाल जमीन के पास पहुँच गये। वे यही समझते थे कि चौथी नाव उनसे अलग हो के किसी जहाज के पास पहुँच गई है और यात्री उस पर चढ़ गए हैं। शीघ्र ही वे बाकी नावों की भी खोज करावेंगे, समुद्र तट ढूंढा जायगा और तब उन लोगों को भी इस जंगली जीवन से छुटकारा मिलेगा। जहाज पर जितना गोली बारूद था सब लार्ड टेनिंगटन की ही नाव पर रक्खा गया था इससे किनारे लगने पर उन्हें खाने पीने का और आराम हो गया। वे जानवरों का शिकार कर सकते थे और अपनी रक्षा भी साथ ही साथ करते थे।

उन लोगों को यदि कोई चिन्ता थी तो केवल प्रोफेसर आरकिमेडिस क्यू. पोर्टर की। प्रोफेसर को अपने मन में किसी तरह पूरा निश्चय हो गया था कि उनकी लड़की किसी जहाज द्वारा उठा ली गई है और अब पूरी तरह खतरे के बाहर है और इस निश्चय ने उन्हें इस बात की पूरी स्वतन्त्रता दे दी थी कि वे अपने ऊंचे विभाग

से भारी भारी वैज्ञानिक समस्याओं को हल करना आरंभ कर दें और उन गहरे विषयों के अध्ययन और अन्वेषण में लग जायं जो उनके ही ऐसे महानुभावों के विभाग में उठा करते हैं। उनको फुरसत ही नहीं मिलती थी कि वे अन्य सांसारिक बातों की तरफ ध्यान भी तो दें।

उनके परिश्रमी सेक्रेटरी मि० सैमुएल टी० फिलेंडर लार्ड टेनिंगटन से बोले, "क्या कहूं, प्रोफेसर पोर्टर कभी ऐसे न थे जैसे आज कल हो गये हैं। न जाने उनको क्या हो गया है। आज ही की बात सुनिये। मैंने मुश्किल से आधे घन्टे के लिये उन पर से अपनी आंखें हटाई होंगी। मैं आके देखता क्या हूं कि जहां मैं छोड़ गया था वहां से वे एकदम गायब हैं। थे कहां! समुद्र में आधी मील दूर पर नाव में चढ़े हुये और अपनी पूरी तेजी से उसे खेते हुये। मेरे समझ में न आया वे कैसे नाव पर चले गये और फिर कैसे उसे इतनी दूर खेके ले गये! उनकी नाव पर एक ही डांड़ा था, और वे खेके सीधे नहीं चल रहे थे, नाव को गोलाकार घुमा रहे थे! भला बताइये तो सही! सो इसकी भी उन्हें फिक्र न थी। वे पूरे आनन्द-मग्न जान पड़ते थे।"

"एक दूसरी नाव पर चढ़ के मैं उनके पास गया और उनसे बोला कि 'चलिये किनारे पर लौट चलिये!' वे तो एकदम बिगड़ खड़े हुये। बोले कि 'मि० फिलेंडर, तुम खुद बुद्धिमान और पढ़े लिखे आदमी हो, क्या तुम चाहते हो कि मैं अपना वैज्ञानिक अनुसंधान छोड़ के किनारे चला चलूं। मुझे तुम्हारी गलती पर आश्चर्य

होता है। गत कई रातों से उत्तर की ओर आकाश में मैं एक नये तारे को देख रहा हूं। इस तारे का अभी तक किसी वैज्ञानिक ने पता नहीं पाया है और ज्योतिषियों को इसका जब पता लगेगा, संसार में हलचल मच जायगी। मुझे न्यूयार्क की एक लायब्रेरी में जाके एक किताब में इस विषय में कुछ देखना है। तुम मुझे रोकोगे तो बड़ा भारी अनर्थ हो जायगा। मुझे जाने मे देर हो जायगी। तुम रोको मत और जाने दो।' बड़ी मुश्किल से बड़ी देर बाद मैं उन्हें समझा बुझा के किनारे पर लाया और तब वे नाव से उतरे।"

मिस स्टांग और उनकी मां दोनों ने सफर के तरद्दुदों को और इन नई आपत्तियों को बड़े धीरज और संतोष के साथ सहा। उन दोनों के खयाल में जेन पोर्टर, क्लेटन और थूरन किसी जहाज पर नहीं चढ़ गये थे बल्कि अभी तक किसी तरद्दुद ही में थे। एस-मेरेल्डा बेचारी बराबर अपनी जेन को याद करके रोआ करती थी।

लार्ड टेनिंगटन के हृदय की विशालता या उनका अच्छा स्वभाव थोड़ी देर के लिये भी उनका साथ न छोड़ता था। जिस प्रकार जहाज पर उस प्रकार यहां जंगल में भी उनके साथ के लोग अभी तक उनके मेहमान ही थे और वे बराबर सभों का खयाल रखते और उनके आराम के बन्दोबस्त में लगे रहते थे। अपने नौकरों के वास्ते वे उसी तरह कड़े मालिक थे जिस तरह पहिले थे, यहां जंगल के बीच आके यह सवाल नहीं उठा था कि मालिक कौन है और हुक्म किसका माना जाना चाहिये। वे हमेशा सब मामलों में, सब मौकों पर अपने आदमियों को बातें बता ने और हुक्म देने में तैय्यार रहते थे।

करीब करीब आराम से रहने वाले मंडली के इन लोगों को अगर मालूम होता कि उनसे कुछ ही मील दक्षिण की ओर उनके साथी तीन आदमी किस कष्ट और किस असुविधा के साथ अपने दिन काट रहे हैं अगर इन लोगों ने उनकी सूरत उस समय देखी होती, तो ये आश्चर्य में भर जाते, पहिचान न सकते, इन्हें विश्वास न होता कि वे ही हँसमुख आदमी हैं जो कुछ समय पहिले 'लेडी एलिस' पर हंसते और बातचीत करते रहते थे !

थूरन और क्लेटन को शिकार की खोज में बराबर घने पेड़ों और कांटेदार झाड़ियों के बीच से होके जंगलों में इधर उधर घूमना पड़ता था, इस कारण उनके कपड़े फट के बिल्कुल बुरी दशा में हो गये थे। जेन पोर्टर के कपड़े उतनी खराब हालत में न थे, पर तब भी वे अच्छी हालत में नहीं कहे जा सकते थे।

और कोई जरूरी काम न रहने के कारण और अपना वक्त काटने के लिये यहां आने के बाद से ही क्लेटन ने ऐसा सिलसिला बना लिया था कि वे जिस भी जानवर को शिकार में मारते थे उसका चमड़ा साफ करके अलग रख लेते थे। अब जब उन्होंने देखा कि पहिनने के कपड़े बिल्कुल खराब हो गये हैं और उनसे अपना बदन ढांकना भी मुश्किल हुआ जा रहा है तो उन्होंने सोचा कि इन चमड़े की खालों का किस किस्म का पहिनने का कपड़ा बनाना पड़ेगा। उन्होंने एक जंगली पेड़ के कांटे की सूई बनाई और मजबूत घासों और जानवरों के बदन की नसों को डोरे की तरह इस्तेमाल करके अपने लिये बड़ी मेहनत बाद एक कपड़ा तैयार किया। यह

कपड़ा बिना बांह का था और लंबाई में घुटने से भी नीचे उतर आता था। बनाने में कई खाने आपस में जोड़नी पड़ी थीं इससे यह देखने में बड़ा विचित्र और बदसूरत मालूम होता था और इसमें से महक ऐसी आती थी कि उसके पास खड़ा रहना मुश्किल था। लाचार क्लेटन को इसे पहिनना पड़ता था, उनके पास बदन ढाकने को और कुछ था ही नहीं।

क्लेटन की देखा देखी थोड़े दिन बाद थूरन को ऐसा ही एक कपड़ा अपने लिये तैयार करना पड़ा। दोनों जब कपड़े पहिन के खड़े हो जाते थे तो उनकी बढ़ी हुई दाढ़ी, उनकी अद्भुत पौशाक उनकी नंगी बाहें और नंगे पैर देख के कोई उन्हें सभ्य संसार का बाशिन्दा नहीं कह सकता था। वे पहिले जमाने के जंगली मालूम होते थे।

इन तीनों आदमियों को उस जंगल में उसी हालत में रहते प्रायः दो महीने बीत गये और तब एक दिन ऐसी घटना हुई जिसने उनमें से दो के प्रायः प्राण ले लिये। थूरन को बुखार आ गया था और वे पेड़ के ऊपर अपने झोपड़े में पड़े हुये थे। क्लेटन फल की खोज में जंगल में थोड़ी दूर पर गये हुये थे। जब वे लौटे तो जेन पोर्टर उनसे मिलने थोड़ी दूर आगे बढ़ गई। क्लेटन के पीछे पीछे एक बुड्ढा शेर धीरे धीरे चला आ रहा था। महीनों से इस बेचारे को भरपेट खाने को न मिला था, महीनों से यह अपने रहने की जगह छोड़ के दूर दूर घूमता हुआ कमजोर कमजोर पंजो और टूटे हुये दांतों से सहज शिकार की खोज कर रहा था, तीन दिन से वह एक-

दम भूखा था और उसकी शक्ति ने प्रायः जवाब दे दिया था। आज अकस्मात ऐसे बढ़ियां और सीधे साधे अपने बचाव में असमर्थ शिकार को पाके वह खुश हो उठा था और उसे किसी तरह हाथ से न निकलने देना चाहता था। उसे निश्चय था कि यह अब भाग के जा नहीं सकता, इससे संतोप के साथ हमला करने का मौका देखता हुआ आगे बढ़ा आ रहा था।

क्लेटन को नहीं मालूम था कि भयानक मौत रेंगती हुई उनके पीछे चली आ रही थी। ये जंगल से निकल के करीब सौ कदम आगे बढ़ आये और प्रायः जेन पोर्टर के पास पहुंच गये, तब यकायक युवती की निगाह उनके पीछे गई और उसकी तेज आंखों ने झाड़ी में से निकलते बड़े से सिर और उसमें चकमती पीली आंखों को देखा। उसने देखा कि एक बड़ा सा शेर अपनी नाक जमीन की तरफ किये धीमे कदमों से घास के बाहर आ गया है।

डर के मारे उसके बदन का खून पानी हो गया, उसने बोलने की कोशिश की, कुछ कहना चाहा, पर भय ने गले को ऐसा दबाया कि मुंह से एक शब्द न निकला। वह बोली तो नहीं पर क्लेटन ने उसकी चढ़ी हुई और भय से व्याकुल आंखों से उतना ही समझ लिया जितना शब्द उन्हें बताते। उन्होंने जल्दी से एक निगाह पीछे डाली और तुरत ही जान गये कि उनका दोनों का किसी तरह भी बच के निकल जाना मुश्किल है। शेर उनसे तीस कदम से ज्यादा फासले पर न था, और हिफाजत की जगह भी उनसे उतनी ही दूरी पर थी। क्लेटन के हाथ में सिर्फ एक छड़ी थी जो कि शेर के सामने

उतनी ही कारगर होती जितनी हाथी के सामने एक छोटा सा चाकू।

भूख से पागल शेर ने बहुत दिनों से गरजने और गुर्राने की आदत छोड़ रक्खी थी। उसका कमजोर बदन जब अपने लिये खाना जुटाने लायक न रह गया तो उसने इन दोनों बातों को भी व्यर्थ समझा। पर आज उसने देखा कि शिकार बिल्कुल पास में एकदम पंजे के नीचे है, तो उसे अपनी पुरानी आदत फिर याद आ गई। उसने अपने बड़े बड़े जबड़ों को भर पूर खोल के जोर की एक दहाड़ मारी जिससे सारा जंगल गूंज उठा।

क्रूटन ने चिल्ला के कांपते स्वर में कहा, "भागो जेन भागो, झोपड़ी पर चढ़ जाओ!" पर आवाज कान में जाने पर भी पैर हिलाने की जेन पोर्टर में शक्ति न रही। वह पत्थर की मूर्त्ति की तरह अटल, निश्चल चुपचाप खड़ी आंखें फाड़े हुये सफेद चेहरे से अपने तरफ बढ़ी आती मौत को देख रही थी।

शेर के गरजने की आवाज सुन थूरन झोपड़ी के दरवाजे पर आ गया था। उसकी जब नीचे के दृश्य पर निगाह पड़ी तो उसने जोर से उछलते हुये रूसी भाषा में चिल्ला के कहा, "भागो भागो, भागो आओ, नहीं तो मैं इस भयानक जंगल में अकेला रह जाऊंगा इतना कहते हुये वह वहीं बैठ गया और रोने लगा।

एक मिनट के लिये इस नई आवाज ने शेर का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रक्खा। उसने सवाल की निगाह उस पेड़ पर डाली जिस पर झोपड़ी थी। क्रूटन अब अपने को सम्हाल न सके,

उन्होंने शेर की तरफ पीठ कर ली और बांहों में मुंह छिपा चुपचाप खड़े हो गये।

युवती ने ताज्जुब और भय की निगाह अपने साथी पर डाली। ये चुपचाप क्यों खड़े हैं, अगर मरने का निश्चय भी है तो क्यों नहीं ये बहादुरी से लड़ते हुये जान देते। क्यों नहीं अपनी पतली छड़ी से इसका मुंह पीटना आरम्भ करते, चाहे वे यह समझें भी कि इससे कोई लाभ न होगा। क्या इस मौके पर टार्जन इस तरह चुपचाप रहते। क्या वे बहादुरी से लड़ाई करते हुये अपनी जान न देते?

शेर अब उछलने के लिये पिछले पैर सिकोड़ रहा था। उस उछाल की तैयारी कर रहा था जो उन दोनों की जानों का खातमा कर देने को थी। क्लेटन चुपचाप खड़े थे। आंखें हाथों से ढांप के जेन पोर्टर घुटनों के बल जमीन पर बैठ गई, जिसमें इस आखिरी दृश्य पर उसकी निगाह न पड़े। ऊपर झोपड़े में बैठे हुये थूरन बुखार की कमजोरी के कारण बेहोश हो गये।

सेकेन्ड के बाद मिनट बीते, और मिनट भी बीत के लम्बे समय में परिवर्तित हो गये पर शेर न उछला। क्लेटन डर के मारे ज्ञान-हीन से हो रहे थे। उनके पैर कांप रहे थे और जान पड़ता था कि थोड़ी देर बाद वे बेहोश हो जायंगे।

जेन पोर्टर उस अवस्था में और अधिक न रह सकी। उसने कलेजे पर पत्थर रख के आंखें खोल दीं। पर हैं! क्या वह स्वप्न देख रही थी!

उसने धीरे से कहा, "विलियम! देखो!!"

क्लेटन ने भागी हुई हिम्मत को बटोर के शेर की तरफ गर्दन घुमाई, और साथ ही उनके मुंह से ताज्जुब की एक हलकी चीख निकल गई। ठीक उनके पास शेर मरा पड़ा था। एक लंबा बरछा उसके बदन में घुसा हुआ था। दाहिने कन्धे के पास पीठ पर वह घुसा था और कम से कम डेढ़ हाथ मास काटता हुआ कलेजे तक चला गया था।

जेन पोर्टर उठ के खड़ी हो गई। साथ ही उसका पैर लड़खड़ाया और क्लेटन ने हाथ का सहारा देके उसे रोका। उन्होंने धीरे से उसे अपने पास खींच लिया और उसका सिर अपनी छाती के साथ सटा ओठों को चूमने के लिये मुंह नीचा किया। धीरे से उन्हे अपने पास से हटा के वह बोली—

"नहीं, ऐसा अब न करो, विलियम! इस थोड़ी देर के बीच में मुझे जान पड़ा है कि जैसे मैं हजारों बरस जीती रह गई होऊं और अपने उन वर्षों का अनुभव मैंने एकदम निचोड़ के अपने पास कर लिया हो। मौत के सामने आने पर मैं मरी नहीं। पर मैंने उससे यह जरूर सीख लिया कि जिया किस तरह जाता है। मैं तुम्हारा दिल जरूरत से अधिक नहीं दुखाना चाहती। केवल इतना कह दिया चाहती हूं कि बहुत दिन पहिले मैंने जो तुमसे वादा किया था, उसे पूरा करने में मैं असमर्थ हूं। मैं न तो तुम्हें धोखा दिया चाहती हूं न अपने दिल को। मैंने अपने दिल में निश्चय कर लिया है, तुम्हें भी बता देती हूं। अगर हमलोग सभ्य संसार में पहुंच भी गये, तो—तो मैं तुम्हारी स्त्री न बन सकूंगी।"

क्लेटन आश्चर्य से चिल्ला के बोले, "हैं, जेन तुम क्या कह रही हो। तुम्हारा मतलब क्या है। हमलोग ईश्वर की कृपा से बच गये, तो उससे तुम्हारा भाव मेरे प्रति क्यों बदल गया। तुम शायद थक और घबड़ा गई हो, अपने आपे में नहीं हो, इसी से ऐसी बातें कह रही हो, कल तुम ठीक हो जाओगी।"

जेन पोर्टर बोली, "मैं इस वक्त जितनी होश में हूं, पिछले एक वर्ष में कभी भी किसी समय भी उतने होश में न थी। इस समय इस घटना से मुझे खयाल हो आया है कि एक बड़े बहादुर आदमी ने अपना प्रेम मुझे देना चाहा था, और चूंकि उस वक्त मुझे मालूम न था कि मैं भी उसे प्यार करती हूं या नहीं, उस प्रेम को मैंने वापस फेर दिया। अब वह आदमी इस दुनिया में नहीं है, दूसरी दुनिया में चला गया, इसले मैं भी अब विवाह करने की इच्छा नहीं करती। करके करूंगी ही क्या, क्या विवाह करने पर कभी इस बात का खयाल मेरे दिल से हटेगा कि मेरा पति अपेक्षाकृत उस आदमी से कम बहादुर है जिससे विवाह करना मैंने अस्वीकार कर दिया था! क्यों, तुम मेरा मतलब ठीक समझ रहे हो या नहीं?"

क्लेटन का चेहरा शर्म के मारे लाल हो आया था, उन्होंने सिर झुका के कहा, "हां!" इसके बाद उनके मुंह से और कोई शब्द न निकला।

दूसरे रोज एक और बड़ी आफत उनके ऊपर आ के पड़ी।

बाईसवां बयान

ओपर का खजाना

रात अच्छी तरह जा चुकी थी जब कि टार्जन को अपने प्रेत-घर के बाहर कुछ खटका सुनाई पड़ा, और साथ ही उन्होंने हाथ के सहारे दीवार को टटोल के आती हुई प्रधान पुजारिन ला को भीतर घुसते देखा। उसके हाथ में कोई रोशनी न थी, शायद इस जगह रोशनी लाना उसने पसन्द न किया हो, और उसके एक हाथ में खाने का सामान और दूसरे में पानी से भरा बर्तन था। ऊपर के छेद से

होके आती चन्द्रमा की रोशनी भीतर हलका सा प्रकाश पैदा कर कर रही थी। उसने ला के सब सामान जमीन पर रख दिये।

टार्जन कोठरी के उस सिरे पर अन्धेरे में बैठे थे। आहट पा के वे उठे और आगे बढ़ आये। युवती ने उन्हें देखते ही धीमी आवाज में कहा, "वे पागल हो रहे हैं, गुस्से के मारे वे अपने आपे में नहीं हैं। आज तक कोई बलि उनके हाथ से निकल के भागी नहीं है, इससे सूर्य भगवान के क्रोध के डर से वे बड़ी तत्परता से तुम्हारी खोज कर रहे हैं। उन्होंने पचास आदमी तुम्हें खोजने किले के बाहर भेजे हैं और इस समूचे मन्दिर को शुरू से आखीर तक खोज डाला है। केवल यही कोठरी बच गई है।"

टार्जन ने पूछा, "वे यहां क्यों नहीं आये?"

युवती बोली, "इसलिये कि यह प्रेतघर है, यहां प्रेत पूजा करने आते हैं और अगर कोई आदमी यहां पाते हैं तो—यह वेदी तुम देख रहे हो यहीं उसका बलिदान वे देते हैं। इसी भय से मेरे आदमी यहां नहीं आते। वे जानते हैं कि यहां घुसेंगे तो फिर जीते बाहर न निकल सकेंगे!"

टार्जन बोले, "पर तुम कैसे आती हो?"

वह बोली, "मैं यहां की प्रधान पुजारिन हूं, प्रेत मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। मैं ही उनके लिये बाहरी दुनिया से मनुष्य पकड़ के बलिदान वास्ते लाती हूं। इससे वे मुझसे प्रसन्न रहते हैं।"

टार्जन ने हंस के कहा, "लेकिन तुम्हारे प्रेतों ने मुझे तो अभी तक बलिदान नहीं चढ़ाया है!"

युवती ने विचित्र निगाह से क्षण भर टार्जन की तरफ देखा, इसके बाद बोली, "प्रधान पुजारिन का कर्तव्य है कि धर्म को समझे दूसरों को उसकी शिक्षा दे, पूर्वज जो लिख गये हैं, जो नियम बांध गये हैं उन पर लोगों को चलावे, पर यह उसके लिये आवश्यक नहीं है कि सब बातों पर स्वयं भी विश्वास करे। जो अपने धर्म को जितना अधिक जानता है, उतना ही उसका विश्वास उस पर कम होता जाता है।"

"तब तुम भागने में मेरी मदद करने से डरती केवल इसलिये हो कि शायद लोग तुम्हारे धोखा देने का भेद जान जायं और तुम पकड़ ली जाओ!"

युवती ने कहा, "हां, असल बात यही है। पर अब ज्यादा सोचने विचारने से भी काम न चलेगा। मैं तुम्हारे खाने पीने का सामान आज उन्हें धोखा देकर और आंख बचा कर ले आई। रोज ऐसा न कर सकूंगी। इससे यहां से निकल जाना ज्यादा अच्छा होगा। चलो उठो और मेरे साथ आओ।"

युवती टार्जन को संग लिये फिर उसी कोठरी में पहुंची जो बलिदान के कमरे के नीचे था और जिसमें वे पहिले थोड़ी देर वास्ते आ चुके थे। उसके कई दर्वाजों में से किस एक में वह घुसी यह टार्जन अन्धेरे में देख न सके। घूमघुमौवे रास्ते में टटोल के चलते हुये वे दोनों एक बन्द दर्वाजे के पास पहुंचे। युवती ने टटोल के कपड़ों से ताली का एक गुच्छा निकाला और उसे छेद में लगाया। हलकी करकराहट की आवाज देता दर्वाजा खुल गया और वे दोनों भीतर घुसे।

टार्जन की साथिन बोली, "तुम यहां कल रात तक हिफाजत से रहोगे। मैं फिर आऊंगी।"

इतना कह के वह बाहर चली आई और दर्वाजे में फिर उसने ताला बन्द कर दिया।

टार्जन जिस जगह खड़े थे एकदम अन्धकार था। उनकी अभ्यस्त आंखों को भी यहां कुछ दिखाई न दे रहा था। उन्होंने हाथ फैलाया और अन्दाज से एक तरफ बढ़े। क्षण भर बाद उनके हाथ एक तरफ की दीवार में टकराये। उसी के सहारे चलते हुये वे कमरे में चारो तरफ घूमने लगे।

अन्दाज से यह कोठरी करीब बीस फीट लंबी और उतनी ही चौड़ी मालूम हुई। जमीन पक्के चूने की मजबूत बनी हुई थी और दीवारें उस तरह की थीं जिस तरह की ऊपर उन्होंने इसी मकान में कई जगह बने देखा था। संगमर्मर के छोटे बड़े टुकड़े एक के ऊपर एक इस तरकीब और कारीगरी से बैठाये थे कि उनमें मसाला लगाने की जरूरत ही न पड़ी थी और दीवार उतनी ही मजबूत बन गई थी जितनी मसाले की बनती।

कोठरी का पहिला चक्कर लगाने पर टार्जन को उसमें कोई नई बात न मालूम हुई, इस बात का आश्चर्य उन्हें जरूर हुआ कि इस कोठरी में केवल एक ही दर्वाजा क्यों है। कोई और खिड़की या दर्वाजा क्यों नहीं है वे फिर से ऊपर से नीचे तक हाथ से टटोलते हुये कोठरी का चक्कर लगाने लगे। यकायक वे दर्वाजे के सामने वाली दीवार के पास बीचोबीच में क्षण भर के लिये रुके, फिर बगल

में हटे, और फिर उसी जगह खड़े हुये। वे फिर हाथ के सहारे आगे बढ़े और दो तीन चक्कर लगा कर फिर उसी ठिकाने आ खड़े हुये जहां पहिले रुके थे। अब की उन्हें कोई शक न रहा। उस स्थान पर जहां वे रुके थे, पत्थर के ढोंकों के बीच से साफ और ठंढी हवा आ रही थी।

टार्जन ने उस जगह के ढोकों को एक एक करके हाथ से टटोला सभी मजबूत मालूम दिये, केवल एक ऐसा जान पड़ा जो कुछ हिल रहा था टार्जन ने उसे खींचा और वह बड़े सहज में बाहर चला आया उसकी लंबाई प्रायः दस इंच और चौड़ाई चार इंच होगी। टार्जन ने उसके पास के और पत्थर हिलाये, एक एक करके सब निकल आये करीब बारह चौदह पत्थर निकाल के टार्जन को मालूम हुआ कि इधर की दीवार पूरी इसी तरह के गढ़े हुये पत्थरों की बनी हैं। उन्होंने और पत्थर निकालने का इरादा छोड़ दिया और हाथ डाल के इस बात को जांचने लगे कि इन पत्थरों के पीछे क्या है। उन्हें विश्वास था कि जरूर इसके पीछे कोई और रुकावट होगी, पर उनकी सारी बांह भीतर चली गई और हाथ में कोई चीज न लगी।

वे ताज्जुब में आये, पर उन्होंने सोचने विचारने में ज्यादा समय नष्ट न किया। कुछ और टुकड़े हटा के टटोलते हुये वे छेद के अन्दर घुस गये और सरकते हुये आगे बढ़े। दीवार को उन्होंने बहुत ज्यादा करीब पन्द्रह फीट के चौड़ी पाया और इसके बाद वह एकदम खतम हो गई और नीचे गड़हा मालूम हुआ। उन्होंने हाथ बगल में और नीचे किये, अपना एक पैर डाला और बाद में किनारा पकड़ के सारा

शरीर उन्होंने गड़हे में लटका दिया पर उनके पैर जमीन पर न टिके जान पड़ा कि गड़हा बहुत गहरा है। चौड़ा भी वह खूब मालूम हुआ।

यहां की छत कुछ ज्यादा ऊंची थी और आते ही ऊपर की ओर टार्जन को कुछ चांदना मालूम हुआ था। अब जो उन्होंने गौर से देखा तो ऊपर छत में एक छेद दिखाई दिया जिसमें से आकाश के तारे धुंधले धुंधले दिख रहे थे। उन्होंने जहां तक हाथ जाता था ऊपर की तरफ टटोला और उन्हें मालूम हुआ कि दीवार ऊपर छत की तरफ ढालवीं होती गई है। इससे ऊपर से निकल भागने का रास्ता भी उनका जाता रहा।

उसी दीवार पर बैठ टार्जन सोचने लगे कि यह गड़हा कैसा है और ऊपर यह छेद कैसा बना हुआ है। बैठे बैठे उन्हें आधे घंटे से ऊपर हो गया और चन्द्रदेव आकाश में धीरे धीरे घसकते हुये उस छेद के बिल्कुल ऊपर आ गये जिसमें से टार्जन ने पहिले तारे देखे थे। उसकी रुपहली रोशनी से भीतर हलका प्रकाश फैल गया और तब टार्जन ने उन बातों का मतलब समझा जो अब तक उन्हें सोच में डाले हुई थीं उनके नीचे पानी चमकता हुआ दिखाई दे रहा था, वे अचानक एक पुराने कूंए के पास आ निकले थे, पर इस कूंए और उस कोठरी का क्या संबंध था जिसमें वे छिपाये गये थे! यहँ टार्जन न समझ सके।

कुछ और चांदना बढ़ने पर टार्जन ने देखा कि दीवार में छेद किये जहां वे बैठे हैं उसके ठीक सामने दीवार में एक बड़ा सा छेद दिखाई दे रहा है जो हो सकता है किसी सुरंग का मुहाना हो।

उन्होंने सोचा कि इस बात का पता लगाना चाहिये। शायद उधर से निकल भागने का कोई रास्ता मिल जाय।

टार्जन फिर अपनी कोठरी में गये और जितने पत्थर उन्होंने दीवार से निकाल के जमीन पर इकट्ठे किये थे उन्हें उठा के उस ओर ले आये जिधर कूंआं पड़ता था। उधर बैठ के उन्होंने दीवार अपनी तरफ से उसी तरह बन्द कर डाली जिस तरह पहिले बन्द थी। उन्होंने उस तरफ दीवार पर बहुत गर्द पड़ा देखा था जिससे वे समझ गये थे कि इस कोठरी में बहुत कम लोग आते हैं और इस छिपे रास्ते का आजकल किसी को पता नहीं है मगर किसी ने बहुत दिन से उसे इस्तेमाल नहीं किया है। उन्होंने सोचा कि इस तरह बन्द करने से कोई इस बात का पता न पा सकेगा कि यहां की दीवार तोड़ी गई है और पत्थर हटाये गये हैं। दीवार बना के टार्जन फिर कूंयें पर आये। यहां कूंयें का मुंहं करीब पन्द्रह फीट चौड़ा था। इतनी जगह को कूद के पार करना उनके लिये मामूली बात थी। पलक झपते में वे उस पार सुरंग के मुंहं पर पहुंच गये और धीरे धीरे चलते हुए उसमें आगे बढ़े।

करीब सौ फीट जाने बाद टार्जन को आगे सीढ़ियें दिखाई दीं जो नीचे उतर कर अन्धकार में गायब हो गई थीं। उनसे नीचे आकर टार्जन को फिर सुरंग मिली जो थोड़ी दूर जा कर समाप्त हो गई और सामने मोटी लकड़ी का एक भारी दर्वाजा नजर आया जो टार्जन की तरफ से भारी भारी लकड़ी के बेवड़ों से बन्द था। दर्वाजे को भीतर से मजबूती से बन्द देख टार्जन को खयाल हुआ कि हो सकता है यह

बाहरी दुनिया में निकलने का रास्ता हो और बन्द इसी लिये हो कि इसे खोल कोई बाहर से भीतर न आ सके। दर्वाजे पर और उसे बन्द करने वाली सारी लकड़ियों पर भी गर्द की मोटी तह पड़ी हुई थी जिसके देखने से जाना जा सकता था कि इसे बहुत दिन से किसी ने इस्तेमाल नहीं किया है। टार्जन ने लकड़ियें अलग कीं और दर्वाजे को अपनी तरफ खींचा। किरकिराहट की एक तेज आवाज देता हुआ वह अपनी चूलों पर झूल गया और टार्जन उसे खोल यकायक यह सोच रुक गये कि देखें रात की इस नई और विचित्र आवाज ने इस मकान के किसी रहने वाले की नींद तो नहीं खोल दी है! जब उन्होंने खटके की कोई आवाज न सुनी तो वे आगे बढ़े।

हाथों से टटोलते हुये उन्होंने अपने को एक कोठरी में पाया जिसमें दीवार के संग संग तमाम और तथा फर्श पर एक तरह की ईंटें कमर के बराबर ऊंचाई तक सरियाई हुई थीं। बीच में एक लंबा रास्ता छोड़ा हुआ था। ये उठा के देखने पर बड़ी भारी मालूम हुई और अगर उस जगह उनकी संख्या इतनी ज्यादा न होती तो टार्जन अवश्य कहते कि ये सोने की हैं। पर अगर ये सोना होंगी तो समझना पड़ेगा कि यहां वालों ने इस कोठरी में करोड़ों रुपये की दौलत इकट्ठी कर रक्खी है, ऐसा होगा इसका टार्जन को विश्वास न हुआ। उन्होंने समझा कि सोना नहीं यह कोई दूसरी सस्ती धातु होगी। सोना यहां कहां से इतना इकट्ठा हो जायगा।

टार्जन जिस दर्वाजे से घुसे थे उसके सामने की ओर दीवार में

एक दूसरा दर्वाजा था जो भीतर से उसी तरह बन्द था जिस तरह पहिला दर्वाजा उन्हें मिला था। इस दर्वाजे को देख उनकी यह आशा फिर हरी हुई कि शायद वे इससे बाहर निकल जायं। दर्वाजे के बाद सुरंग एकदम सीधी चली गई थी वह किस दिशा में जा रही है इसे जानने का उनके पास कोई साधन न था, पर अगर पश्चिम की ओर जाती होगी तो अवश्य वे मन्दिर की बाहरी दीवार पार कर चुके होंगे और अब शहर की दीवारों के भी नजदीक या उनके नीचे ही होंगे।

मन में तरह तरह की आशायें बांधते हुये वे आधे घंटे तक बराबर बढ़े चले गये और इसके बाद सीढ़ियें दिखाई दीं जो ऊपर चली गई थीं। नीचे ये सीढ़ियें कंकरीट की थीं पर थोड़ा ऊपर जाने पर अंदाज से उन्हें मालूम हुआ कि कंकरीट के बदले ये ऊपरवाली सीढ़ियें संगमर्मर की बनी हैं और यह संगमर्मर टुकड़े टुकड़े काट के बैठाया हुआ नहीं है बल्कि ठोस पहाड़ काट के इन्हें बनाया गया है।

करीब सौ फीट तक ये सीढ़ियें ऊपर चली गईं और तब यकायक एक मोड़ घूम के दो ऊंची चट्टानों के बीच के बाहर निकल आईं। ऊपर तारों से भरा आस्मान था और आगे फिर सीढ़ियें दिखाई दे रही थीं जो पहाड़ काट के बनाई जान पड़ती थीं और ऊपर चढ़ गई थीं। ऊपर चढ़ के टार्जन संगमर्मर के एक बड़े भारी ढोंके पर जा खड़े हुये।

एक मील दूर ओपर का शहर दिखाई दे रहा था। उसके ऊंचे

बुर्ज और गुम्बज चन्द्रमा की सफेद रोशनी में दूर से धुंधले धुंधले दिखाई दे रहे थे। टार्जन ने अपनी नजर धातु की उस ईंटा पर डाली जिसे वे नमूने के तौर पर अपने साथ लेते आये थे। कुछ देर तक उलट पुलट कर और हाथ में तौल कर वे उसे जांचते रहे। इसके बाद उन्होंने उस टूटे फूटे शहर की तरफ निगाह उठा के धीमे से कहा—

"ओपर, भूतकाल की स्मृति को मन में जगाने वाला अनूठा शहर! शहर जिसमें सुन्दरता भी है और बदसूरती भी, जिसमें जानवर भी रहते हैं और देवता भी, जिसमें अटूट धन भरा हुआ है, जो सचमुच सोने का बना हुआ है!"

टार्जन के हाथ में जो ईंटा थी वह शुद्ध सोने की और एकदम ठोस थी!

पत्थर का वह भारी ढोंका जिस पर टार्जन खड़े थे शहर और उस पर्वत-श्रेणी के बीच में पड़ता था जिस पर चढ़ के वे और उनके साथ के पचास वजीरी दो रोज पहिले यहां आये थे। वह इतना ऊंचा और तिरछा था कि उस पर से उतरना टार्जन के लिये भी थोड़ी कठिन बात थी। खैर थोड़ी देर की मेहनत में वे नीचे जमीन पर आ रहे। ओपर की तरफ उन्होंने निगाह उठा के न देखी। उन्होंने अपना मुंह सीधा उन पहाड़ों की तरफ किया जो यहां आने के रास्ते थे और घाटी को पार करते हुये तेजी से उसी तरफ रवाना हुये।

सूर्य देव की पहिली किरनों के आकाश पर फैलते फैलते टार्जन

उस पहाड़ की चोटी पर पहुंच गये जो घाटी के पश्चिम ओर पड़ता था। उन्होंने झांक के देखा कि पहाड़ के दूसरी ओर उसकी जड़ के पास के जंगल में पेड़ों की चोटियों के ऊपर हलका धूंआं उठ रहा है। वे बोल उठे, "आदमियों के होने का चिन्ह मालूम होता है कुछ लोग यहां मौजूद हैं। कौन हैं! वही पचास तो नहीं जो मुझे खोजने ओपर से भेजे गये हैं!"

टार्जन जल्दी जल्दी नीचे उतरने लगे और घंटे भर के अंदर पहाड़ की जड़ में उस जंगल के पास पहुंच गये जिसके बीच से उन्होंने धूंआं उठते देखा था। मील भर दूर से ही वे पेड़ों पर चढ़ गये और ऊपर ही ऊपर धीरे धीरे चलते हुये धूंयें की तरफ रवाना हुये। पास पहुंच के उन्होंने देखा कि कांटेदार डालियों का एक घेरा बनाया हुआ है। जिसके बीच में आग बल रही है और उस आग के चारो तरफ उनके पचास वजीरी बैठे और लेटे हुये आपस में बातें कर रहे हैं।

उन्होंने ऊपर ही से आवाज दी, "उठो मेरे दोस्तों, तुम्हारा राजा तुम्हारे पास लौट आया!"

चौंक के सब के सब उठ खड़े हुये। उन्हें समझ में न आया आवाज कहां से आई! और वे उसे सुन के भी रुके रहें या भाग जायं! इसी समय उनके बीच में टार्जन जमीन पर कूद पड़े। जब लोगों की समझ में आया कि ये सचमुच उनके सरदार ही हैं, कोई भूत प्रेत उनकी सूरत बना के नहीं आया है—तो वे खुशी के मारे पागल से हो उठे। बसूली बोला, "हम लोग बड़े डरपोक हैं, सरदार!

आते वक्त हमने इतना भी खयाल न किया कि आप वहां अकेले रहेंगे और न जाने किस किस आफत में फंसेंगे। यहां आके हमें इस बात का खयाल हुआ और हमने निश्चय किया कि जरूर लौट के चलेंगे और जिस तरह होगा आपको बचा के लावेंगे या आपकी जान लेने वालों से बदला लेंगे। अभी भी हम उसी बारे में बात कर रहे थे। थोड़ी देर बाद हम लोग उस शहर की तरफ रवाना हो जाते।"

टार्जन ने पूछा, "तुम लोगो ने विचित्र सूरत शकल के पचास आदमियों को इधर से कहीं जाते देखा है?"

बसूली बोला, "हां वजीरी, कल संध्या को उन्हें हमने देखा था। उनमें जरा भी होशियारी या चालाकी न थी। मील भर दूर से ही हमें उनके आने का पता लग गया और चूंकि हम उनसे लड़ना नहीं चाहते थे हम रास्ते से अलग होके बगल के जंगल में छिप रहे। उनकी टांगें बड़ी छोटी छोटी थीं जिनके सहारे वे अपने भरसक बड़ी तेजी से चल रहे थे। और थोड़ी थोड़ी देर पर उनमें से कुछ लोग चारो हाथ पैर के बल से बन्दर और गोरिल्लों की तरह चलने लगते थे। वे ऐसा क्यों करते थे समझ में न आया। सचमुच वे बड़े विचित्र और देखने में भयानक थे।"

टार्जन ने उन्हें अपना सब हाल सुनाया और वह सोने की ईंट दिखाई जिसे वे वहां खजाने से लाये थे। इसके बाद उन्होंने प्रस्ताव किया कि रात के वक्त वहां चला जाय और जितना सोना ढोके लाया जा सके ले आया जाय। सभों ने खुशी खुशी उनकी राय को मंजूर किया। एक आदमी भी असहमत न हुआ। अस्तु संध्या

अच्छी तरह होने पर उन्होंने अपना डेरा छोड़ा और उस ओर रवाना हुये जिधर शहर के पास पत्थर का बड़ टीला पड़ता था।

अकेले ही आदमी का उस पर चढ़ना मुश्किल काम था। पचास आदमी जल्दी से चढ़ जायं यह बिल्कुल असंभव था। टार्जन कोई ऐसी तरकीब सोचने लगे जिससे यह काम किसी तरह पूरा हो जाय। थोड़ी देर बाद उन्होंने अपने आदमियों को हुक्म दिया कि दस भाले एक में एक जोड़ के लंबे बांधे जायं। भाले बंधने पर उसका एक सिरा उन्होंने कमर में बांधा और उसे लिये दिये धीरे धीरे चोटी पर पहुंच गये। इसके बाद ऊपर वाले सिरे को मजबूती से पकड़ उन्होंने अपने आदमियों को ऊपर चढ़ने का हुक्म दिया। एक एक करके पचासों अरब की चोटी पर जा पहुंचे। ऊपर सब के पहुंचते टार्जन सीढ़ियें उतर के सुरंग की राह उधर चले जिधर खजाने वाली कोठरी पड़ती थी।

हरएक आदमी को दो दो ईंटाये दे दी गईं। इससे ज्यादा उठाके वे चल न सकते थे, कारण एक एक ईंटा वजन में मन मन भर से कम न होगी। आधी रात तक वे लौट के टीले के नीचे आ पहुंचे और घाटी पार उस ओर चले जिधर पहाड़ी पड़ती थी। उस पर चढ़ने में उन्हें तकलीफ हुई, कारण उनके पास बोझा काफी था और दूसरे उन्हें बोझा ढोने की आदत न थी। वे लड़ाई के काम लायक थे। खैर दूसरे रोज सबेरा होते होते वे चोटी पर पहुंच गये और बाद से बिना किसी खतरे या घटना के तीस रोज बाद अपनी सीमा में आ गये। यहां उत्तर पश्चिम चल के गांव की तरफ जाने

के बदले टार्जन ने उन्हें सीधे पश्चिम की ओर चलने का हुक्म दिया। तेंतीसवें दिन वे एक छोटे से मैदान के बीच में पहुंचे जहां टार्जन ने उन्हें बोझा रख देने को कहा और उनको बताया कि थोड़ा आराम कर बाद में वे अपने गांव लौट जा सकते हैं।

उन्होंने पूछा, "और आप वजीरों आप कहां रहेंगे?"

टार्जन बोले, "मैं कुछ दिन यहीं ठहरा चाहता हूं, मेरे दोस्तों पर तुम्हें अब मैं नहीं रोकना चाहता। तुम अपने बच्चों और अपनी स्त्रियों के पास चले जाओ!"

उनके चले जाने बाद टार्जन ने दो ईंटायें उठा लीं और पेड़ों पर चढ़के खूब ऊपर जा पहुंचे। यहां से करीब सौ गज दक्षिण की तरफ जा कर वे ऐसी जगह पहुंचा जहां बीच में एक टीला और उसके ऊपर एक छोटा सा मैदान था और चारो तरफ बड़े ऊंचे ऊंचे पेड़ पहरेदारों की तरह खड़े उस मैदान को अपनी छाती में छिपाये उसकी रक्षा कर रहे थे। यहां टार्जन जमीन पर उतर पड़े।

पहिले पचासों दफे वे 'एप' बन्दरों के इस दम दम के स्थान पर आ चुके थे। यही जगह थी जहां समय समय पर इकट्ठे होकर 'एप' बन्दर अपनी सभा किया करते थे। चारो तरफ के ऊंचे पेड़ों और उन पर चढ़ी घनी लताओं ने इस जगह को इस तरह चारो तरफ से घेर लिया था कि एक हरी दीवार सी वहां खड़ी हो गई थी, जो इतनी घनी और मजबूत थी कि जंगल का मजबूत बाशिन्दा शेर और भारी डीलडौल वाला हाथी तक उसके अन्दर नहीं घुस

सकता था। उसके अन्दर घुसने का रास्ता था तो केवल ऊपर से, पेड़ों पर से।

टार्जन ने पचास चक्कर इस जगह के लगाये, और सोने की सब ईंटायें ला के मैदान के बीच में इकट्ठी कर दीं। इसके बाद सैंकड़ों वर्ष पुराने एक बड़े ऊंचे पेड़ के खोखले में से उन्होंने वही कुदार निकाला जिससे उन्होंने प्रोफेसर आरकिमेडिस क्यू. पोटर का खजाने का सन्दूक जमीन में से खोद के निकाला था। उससे उन्होंने एक लंबा गड़हा बनाया और उस गड़हे में उन्होंने उस अगाध धन को छिपा दिया जिसे उनके वजीरी ओपर के खजाने से ले आये थे।

वह रात उन्होंने उसी मैदान में काटी। दूसरे रोज सुबह उनका इरादा हुआ कि पास आ गये हैं तो एक बार उस कोठरी को भी देखते चलना चाहिये जिसमें उन्होंने अपने लड़कपन के दिन काटे थे। वहां पहुंच के अपनी सब चीजें उन्होंने कायदे से पड़ी पाईं। वे इस इरादे से बाहर निकले कि कुछ शिकार करके लावें तो इसी कोठरी में बैठ के खायें और बाद में यहीं कोच पर सो के आराम से रात काटें।

उनकी कोठरी से छः मील के फासले पर दक्षिण की ओर एक नदी पड़ती थी जहां शिकार बहुतायत से मिलने की उनको आशा थी। नदी के पास पहुंच वे किनारे किनारे उधर रवाना हुये जिधर समुद्र पड़ता था। आध मील के करीब गये होंगे कि उनके तेज नाक में एक नई महक आई—वह महक जिसे सूंघ जंगल के सब जानवर

अपने कान खड़े कर लेते हैं—उन्हें मालूम हुआ कि पास में कहीं पर मनुष्य हैं। हवा समुद्र की तरफ से आ रही थी इससे वे समझ गये कि ये लोग जिनकी महक आ रही है उनसे पश्चिम हैं, और साथ में शेर की भी गन्ध मिली जान पड़ी। यह मालूम हो गया कि आदमी और उनका प्रबल शत्रु शेर दोनों पास ही पास या एक साथ हैं। ये कौन लोग हैं और शेर उनका पीछा कर रहा है यह उन्हें मालूम है या नहीं यह जानने के कौतूहल से टार्जन उसी ओर रवाना हुये जिधर से महक आई थी।

जंगल पार कर जब टार्जन किनारे आये तो उन्होंने देखा कि एक स्त्री घुटनों के बल बैठी प्रार्थना कर रही है, एक आदमी जो यूरोपियन मालूम होता है, पर जो जंगली पौशाक से अपना बदन ढके है पास खड़ा बांहों में अपना मुंह ढांके हुये है और एक भारी पर बुड्ढा शेर इस सहज में मिलने वाले शिकार की ओर धीमे धीमे पैर रखता बढ़ रहा है। आदमी की पीठ शेर की तरफ थी और उसका मुंह छिपा हुआ था, औरत मुंह झुकाये हुये थी, दोनों में से किसी की भी वे सूरत न देख सकते थे।

शेर अब उछलने के लिये बिल्कुल तैयार था। इतना भी मौका न था कि टार्जन अपना धनुष कंधे से उतारते और उसमें तीर लगा के जानवर पर चलाते। वे इतने दूर थे कि छुरा कोई काम न कर सकता था। उनके पास एक उपाय था—सिर्फ एक उपाय, और, बिजली की तेजी से टार्जन ने उसी से काम लिया।

उनका बरछे वाला हाथ पीछे हटा, एक सेकेंड के सौवें हिस्से

से भी कम देर टार्जन ने उसे कंधे पर निशाना लगा के रोका—और तब बांह झटके से आगे बढ़ी। मजबूत हाथों से फेंकी हुई मौत बीच की पत्तियों को काटती हुई शेर के कंधे के पीछे ठीक निशाने पर बैठी और मांस को चीरती हुई कलेजे तक उतर गई। बिना एक आवाज मुंह से निकाले शेर मर कर अपने शिकारों के पैरों के पास लेट गया।

क्षण भर तक एकदम सन्नाटा रहा। न मर्द ही हिला न औरत ही ने मुंह से कोई आवाज निकाली। इसके बाद स्त्री ने यकायक आंखें खोलीं और आश्चर्य से अपने उस दुश्मन की तरफ देखा जो थोड़ी देर पहिले उन्हें अपना भोजन बनाने वाला था। सिर जब ऊंचा हुआ तो टार्जन के मुंह से ताज्जुब की एक हलकी आवाज निकली। अरे! वे होश में हैं या स्वप्न देख रहे हैं क्या यह वही युवती है जिसे वे प्यार करते हैं! यह यहां कहां से आई!!

युवती धीरे से पैरों के बल उठ खड़ी हुई। पास खड़े पुरुष ने उसे बाहों में ले लिया और उसके होठों को चूमने के लिये सिर झुकाया। टार्जन इससे अधिक न देख सके। उनकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया, सिर का घाव का दाग एकदम लाल हो उठा, जैसे उसमें से खून टपकना चाहता हो। एक तरह का असीम क्रोध उनके हृदय में उबाल खाने लगा। उनकी आंखों में एक विचित्र और डरावनी चमक दिखाई दी। उन्होंने कांपते हाथों से कंधे से धनुष उतारा और तरकस से निकाल के एक जहरीला तीर उस पर चढ़ाया। हाथों को उठा के उन्होंने पुरुष की पीठ पर निशाना साधा और

तेईसवां बयान

पचास डरावने आदमी

कई मिनटों तक खड़े हुये क्र टन और जेन पोर्टर उस शेर की तरफ देखते रहे जो एक तरह पर इन्हें अपना शिकार बना चुका था।

क्र टन को दिल दुखाने वाली बातें कह के जब जेन पोर्टर कलेजे का गुबार निकाल चुकी तो बोली, "यह किसका काम है!"

क्र टन ने रूखे स्वर में जवाब दिया, "ईश्वर ही जाने!"

युवती बोली, "हमारा कोई दोस्त है जो सामने क्यों नहीं आता हमें मुनासिब है कि उसे बुलावें और धन्यवाद दें !"

क्लेटन ने पुकारा, पर कोई जवाब न आया। युवती ने कांप के कहा, "ओफ, जंगल भी कितना भयानक है, कितने गुप्त भेदों से भरा है ! यहां अपने साथ किये गये उपकार को भी देख के डर लगता है !"

क्लेटन बोले, "अपने झोपड़े में चली चलो, वहां तुम ज्यादा हिफाजत में रहोगी, मैं समय पर कोई मदद न कर सकूंगा।"

उनके स्वर में दुःख और निराशा की गंध पा जेन पोर्टर बोली, "तुम दुखी मत हो, क्लेटन, मैं अपने शब्दों से तुम्हें क्लेश नहीं पहुंचाया चाहती थी। तुमने किया वही जो तुम कर सकते थे, जो तुम से हो सकता था। तुम बराबर बहादुर, निःस्वार्थ और मेरे ऊपर मेहरबान बने रहे हो। तुमने मनुष्य से बढ़ के काम नहीं किया इसमें तुम्हारा दोष नहीं है। मैं केवल एक ही ऐसे आदमी को जानती हूं जो तुम से बढ़ के काम कर सकता था। पर वह..............खैर मैं तुम्हें रंज नहीं करना चाहती। केवल इतना समझा देना चाहती हूं कि मैं तुमसे विवाह न कर सकूंगी, ऐसा करना मेरे लिये अपने ही हृदय को धोखा देने के समान होगा।"

क्लेटन बोले, "मैं समझ गया। अच्छा होगा कि हम में से कोई भी अब इस बात का जिक्र न करे—कम से कम सभ्य संसार में पहुंचने तक इस बात को भूले रहना ही मेरे लिये अच्छा होगा।"

दूसरे रोज थूरन की तबीयत और ज्यादा खराब हो गई। बरा-

वर वह बकना झकना रहता था। उसके दोनों साथियों ने जो कुछ हो सकता था, अपने भरसक किया, पर वे उसकी ज्यादा मदद नहीं कर सकते थे। क्लेटन चाहते भी नहीं थे कि ज्यादा मदद की जाय। मन ही मन वे रशियन से डरते थे और उन्हे सदा भय रहता था कि कहीं ऐसा न हो कि यह युवती इस जानवर के संग अकेली रह जाय और इसे तकलीफ में पड़ना पड़े। शेर के युवती के पास आ जाने पर उतना उन्हें सोच न होता, उतना वे भयभीत न होते, जितना उन्हें इस बात का सोच सता रहा था कि अगर यह अकेली इसके संग रह गई तो क्या होगा!

उन्होंने बरछा शेर के बदन से निकाल लिया था और अब उसके पास रहने से उन्हें कुछ ज्यादा साहस मालूम होता था। दूसरे रोज सुबह जंगल में जब वे शिकार करने गये तो बरछा पास रहने के कारण रोज जितनी दूर जाया करते थे उससे बहुत ज्यादा दूर निकल गये। जेन पोर्टर बुखार में पड़े रशियन का बकना झकना सुनते सुनते घबड़ा गई और पेड़ की सीढ़ी से नीचे उतर वहीं पास में जमीन पर बैठ अधखुली आंखों से समुद्र की तरफ देखने लगी। उसे बराबर आशा रहती थी कि कोई न कोई जहाज जरूर कभी न कभी दिखाई देगा। सीढ़ी से ज्यादा दूर जाने का उसे साहस न हुआ, क्योंकि कल शेर वाली घटना उसके दिल में ताजी थी।

उसकी पीठ जंगल की तरफ थी इससे उसने अपने पीछे घास को हटते न देखा, न उस भयानक चेहरे पर ही उसकी निगाह पड़ी जो घास के बीच से उसकी तरफ ताक रहा था। छोटी छोटी, शैतानी

से भरी लाल आंखें बड़े गौर से उसे देख रही थीं, और बड़े ध्यान से यह भी देख रही थीं कि वह अकेली है या उसके पास कोई और भी है।

क्षण भर बाद एक दूसरा सिर उस पहिले सिर के बगल में दिखाई दिया। एक तीसरा आया, और बाद में एक चौथा भी पहुंच गया। ऊपर पेड़ के झोंपड़े में रशियन ने फिर बकना और बरबराना शुरू किया, जिसकी आवाज सुन वे सिर जिस तरह चुपचाप आये थे उसी तरह चुपचाप अपने ठिकाने से गायब भी हो गये। करीब दो मिनट वे गायब रहे, पर जब जमीन पर बैठी औरत ने उस आवाज पर कोई ध्यान न दिया और अपने ठिकाने बैठी रही, तो वे फिर झाड़ी में नजर आने लगे।

एक एक करके विचित्र शकलें जंगल से निकल के युवती के चारों ओर इकट्ठी होने लगीं। पत्ते के खड़कने की हलकी आवाज पा उसने घूम के पीछे देखा और जैसे ही उसकी निगाह अपने पास के जीवों पर पड़ी वह डर से भरी एक चीख मार उठ खड़ी हुई। चारों तरफ से लोग उस पर झपट पड़े। उनमें से एक ने अपने गोरिल्लों की तरह के लंबे लंबे हाथों में उसे उठा लिया और जंगल की तरफ भागा, दूसरे ने अपना गंदा और बदसूरत हाथ उसके होठों पर रखके उस चीख को रोक दिया जो उसके मुंह से निकलना चाहती थी। जेन पोर्टर हफ्तों से तकलीफ सह रही थी, अभी कल उसके कोमल कलेजे को गहरा धक्का लगा था, आज इस भयानक आफत में पड़ वह अपने को और न सम्हाल सकी और बेहोश हो गई।

जब उसे होश हुआ उसने अपने को घने जंगल के बीच पाया। रात हो गई थी और उसके नजदीक आग बल रही थी जिसके चारों तरफ बैठे पचास विचित्र शकल सूरत के आदमी किसी अद्भुत भाषा में बोल रहे थे। उनके सिर और मुंह को घने बालों ने छिपा रक्खा था, उनकी बांहें लंबी और पैर टेढ़े और छोटे छोटे थे। देखने में वे बड़े ही बदसूरत मालूम होते थे। वे लोग कच्चा मांस नोच नोच के खा रहे थे और बीच की आंच में एक बर्तन में कुछ उबल रहा था। ठहर ठहर के कोई कोई आदमी उसमें से मांस का लोथड़ा एक लंबी नोकदार लकड़ी से घसीटता था और उसे चबाने लगता था।

कैदी को होश में आया देख खाने वालों में से एक ने अपने गंदे हाथों से मांस का एक टुकड़ा जेन पोर्टर की तरफ भी फेंक दिया। उसके पैर के पास ही वह आके गिरा। खाना तो दूर उसे देखते ही जेन पोर्टर को मचली आने लगी और उसने हाथ से अपनी आंखें ढांक लीं।

कई दिन तक जेन पोर्टर को लिये उसे पकड़ने वाले घने जंगलों से होते आगे बढ़ते गये। उसका पैर चलते चलते फटने सा लगा, उसका शरीर थक के चूर हो गया, धूप से चेहरा काला पड़ गया, पर उसकी क्या हालत हो रही है इस पर किसी का खयाल न गया। कभी कभी, जब चलते चलते वह ठोकर खा के गिर पड़ती थी, या असमर्थ हो के बैठ जाती थी, तो मार मार के, धक्का दे देके और खींच के वे उसे उठाते थे और फिर जबर्दस्ती आगे घसीट ले चलते थे। आधा रास्ता तय करते करते उसके जूतों के तल्ले फट गये और

उसे उन्हें फेंक देना पड़ा, कपड़े फट गये और कांटे लग के बदन से जगह जगह खून बहने लगा। वह बदन जो किसी समय बड़ा सफेद और कोमल था, अब फटे चिथड़ों के बीच से भांवरा और कड़ा मालूम होने लगा।

सफर समाप्त होने को दो दिन बाकी रहते रहते जेन पोर्टर की हालत इतनी खराब हो गई कि बहुत उद्योग करने पर भी वह अपने चुटीले बदन को जख्मी पैरों पर नहीं खड़ा कर सकती थी। पैर के तलवे में जगह जगह घाव हो के उनमें से खून बह रहा था, चेहरे पर मुर्दनी छा गई थी, और बदन इतना थक गया था कि वह कितनी ही मार खाती थी, उसे उठाने की कितनी ही कोशिश होती थी, वह घुटनों के बल भी उठ नहीं सकती थी।

पचास बेरहम जानवर जब उसे घेरे खड़े थे, तो उनमें से कई उसे लकड़ी से कोंच रहे थे, कई उसे अपनी भाषा में गालियें दे रहे थे और कई उसे मुक्कों से मारते और पैरों से पीट रहे थे, पर वह चुपचाप आंखें बन्द किये जमीन पर पड़ी मृत्यु को अपने पास बुला रही थी, जिसमें वह आवे और सब दुखों से उसे मुक्ति दे दे। अभी शायद इतने ही से उसके दुःखों का अन्त नहीं हुआ था, मृत्यु ने भी उसके पास आने से इनकार किया। उन पशुओं ने उसे अच्छी तरह तकलीफें दे के भी जब देखा कि यह नहीं उठ रही है तो उन्होंने समझ लिया कि अब यह चल न सकेगी। तब उन्होंने उसे हाथों में उठा लिया और बाकी रास्ता उठाये उठाये तै किया।

आखिर एक दिन संध्या के समय उन लोगों को सामने एक बड़े

भागी शहर की टूटी दीवारें नजर पड़ीं। यह कौन स्थान है, कहां उसके दुश्मन उसे उठा लाये—यह जानने की जरा भी उत्सुकता जेन पोर्टर के मन में न उठी। वह इतनी कमजोर दुःखी और शक्तिहीन हो रही थी कि अब उसके मन में एक ही आकांक्षा रह गई थी–मृत्यु–केवल इसी की उसको चाह थी। इन जानवरों के बीच में रह के वह जल्दी उसे मिल जायगी इसका उसको निश्चय था।

दोनों दीवारों को पार कर के वह भीतर लाई गई और उसके दुश्मनों ने उसे बड़े से टूटे मकान के भीतर पहुंचाया। यहां जिन आदमियों ने उसे पकड़ा था उसी शकल के सैकड़ों आदमी उसे देखने चारो तरफ इकट्ठे हो गये। उनमें औरतें भी थीं जो मर्दों की बनिस्वत कुछ कम बदसूरत और कुछ ज्यादा दया वाली मालूम होती थीं। पर उनमें से भी किसी ने उसके ऊपर कोई मेहरबानी न दिखाई। अधिक से अधिक यही किया कि उसे न तो कोई तकलीफ दी और न अपनी विचित्र भाषा में गालियें ही सुनाईं। सभों ने उसे कौतूहल की दृष्टि से अच्छी तरह देखा और बाद में उसे मकान के नीचे के एक अन्धेरे तहखाने में पहुंचा दिया गया। यहां पत्थर के फर्श पर उसे छोड़ कर लोगों ने उसके पास दो बर्तन रख दिये, एक में खाना और दूसरे में पानी और तब दर्वाजा बाहर से बन्द कर दिया गया।

एक हफ्ते तक वह उसी तहखाने में बन्द रही, और उसके पास केवल वे औरतें आती थीं जो खाना और पानी पहुंचाने के लिये तैनात थीं। उसको धीरे धीरे ताकत आ रही थी, धीरे धीरे जब वह अच्छी हो जायगी, जब उसका गया स्वास्थ्य लौट आवेगा तो वह

भगवान सूर्यदेव को बलि चढ़ा दी जायगी ' ईश्वर की बड़ी कृपा थी कि उसे वह काम न मालूम था। जसके लिये वह यहां लाई गई थी।

× × × ×

क्लेटन और जेन पोर्टर को शेर के खूनी पंजों से बचा के जब टार्जन जंगल में लौटे तो उस समय उनके हृदय का वह घाव फिर ताज़ा हो उठा जिसको अच्छा करने की कोशिश में वे दो वर्ष से लगे हुये थे।

जेन पोर्टर और क्लेटन पर यकायक एक साथ निहाह पड़ते ही उनके हृदय में क्रोध और डाह की आग बल उठी थी, उसी आग में जल के उन्होंने क्लेटन पर तीर का निशाना लगाया था। पर जिस प्रकार तुरत उन्हें क्रोध चढ़ आया था, उसी प्रकार तुरत ही वह उतर गया। उन्होंने शीघ्र ही अपने को सम्हाला, और उस मौत को हाथ ही में रोक लिया जो उनकी उंगलियों से छूट के पल भर के अन्दर क्लेटन को सदा के लिये सुला देती। अब उनको प्रसन्नता हो रही थी कि उन्होंने वही किया जो उचित था।

टार्जन को यकायक जो क्रोध चढ़ आया और अपनी प्रेमिका को दूसरे के गले लगते देख इस तरह जो वे यकायक भभक उठे इसमें उनका विशेष दोप न था। उन्होंने वही किया जो जंगल के रहन सहन ने उन्हें जन्म से सिखाया था, जो अपनी अब की जंगली स्थिति में वे करने के अधिकारी थे। जिस युवती को वे चाहते थे, जिसे मन में अपनी स्त्री चुन चुके थे, वही दूसरे की बांहों में थी,

उसे वे ले सकते थे तो केवल लड़ कर, दुश्मन को मार कर। इसके सिवाय दूसरा साधन उनके पास न था। पर ऐन वक्त पर, अच्छे भावों ने उनके क्रोध पर विजय पा ली थी और वे निरर्थक अपने ऐसे एक जीव की जान लेने के पाप से बच गये थे। उन्होंने इसके लिये ईश्वर को धन्यवाद दिया।

उनकी इच्छा न हुई कि फिर लौट के वे वजीरियों के गांव में जायं। उनके दुःखी हृदय में मनुष्यों का मुंह देखने की जरा भी इच्छा अब बाकी न बची थी। कम से कम वे कुछ समय तो जरूर इस धोखेबाज और अकृतज्ञ जाति से अलग रहेंगे और अपने कष्ट और अपनी वेदना को अकेले एकान्त में सहेंगे!

उस रात को वे 'एप' बन्दरों के "दम दम" के स्थान पर सोये और बाद में कई दिन वहीं पर रहे। दिन को वे जंगलों में शिकार खेलते थे और रात को वहां आ आराम करते थे। तीसरे रोज दिन को वे शिकार से जल्दी ही लौट आये और मैदान में हरी घास के ऊपर लेट तरह तरह की बातें सोचने लगे। यकायक उनके कानों में एक पहिचानी हुई आवाज आई। उन्हें मालूम हुआ कि "एप" बन्दरों का एक झुन्ड पास ही में जंगल में चल रहा है। इसके सिवाय यह आवाज दूसरी चीज की नहीं हो सकती। थोड़ी देर बाद उन्हें समझ में आ गया कि वह झुन्ड इसी स्थान पर आ रहा है जहां वे लेटे हैं।

टार्जन ने उठ के अंगड़ाई ली और फिर गौर से उस आवाज की तरफ ध्यान दिया। आवाज उसी ओर से आ रही थी जिधर से हवा बह रही थी और अब उनके कानों में हवा में मिली हुई उनकी

गन्ध भी आने लगी थी। वे मैदान पार करके उस ओर बढ़ गये जो उनके आने की दिशा के विपरीत पड़ता था और पेड़ों के ऊपर छिप कर राह देखने लगे।

उन्हें ज्यादा ठहरना न पड़ा। दो ही मिनट बाद उनके सामने के पेड़ की पत्तियों में एक सिर दिखाई दिया। छोटी छोटी पर तेज आंखों ने एक ही निगाह में सब देख लिया जो देखना था, और तब उस आगे वाले 'एप' बन्दर ने अपनी विचित्र भाषा में पीछे वालों को कुछ आवाज दी। टार्जन समझ गये। वह अपनी जाति वालों को कह रहा था कि "मैदान साफ है, चले आओ।"

सब से पहिले आगे वाला बन्दर कूद के घास पर आ गया, और उसके बाद उसके करीब सौ कद्दावर और मजबूत बदन के साथी मैदान में आ उतरे। उनके साथ बहुत से कम उम्र के लड़के भी थें और बहुत से बच्चे अपनी माताओं की छाती में चिपके थे।

टार्जन ने उनमें से कइयों को पहिचान लिया। यह वही जाति थी जिसमें वे लड़कपन में पले थे। "एप" बन्दरों में से कई जो इस वक्त लम्बे चौड़े डील डौल के थे उनके लड़कपन में छोटे बच्चे थे और उनके साथ खेला कूदा करते थे। क्या जाने देखने पर अब वे उन्हें पहिचान सकें या नहीं! 'एप' बन्दरों की स्मरण शक्ति बड़ी खराब होती है और दो वर्ष भी उनके लिये बड़ा लम्बा समय है।

उनकी आपस की बातचीत से उन्होंने सुना कि इनका सरदार पेड़ के ऊपर से गिर के मर गया है और ये यहां राय करके एक दूसरा सरदार चुनने आये हैं। टार्जन पत्तियों के बीच से निकल

के नीचे की एक डाली पर उन लोगों के ठीक सामने आ गये। एक बन्दरी की सब से पहिले उन पर निगाह पड़ी। घबड़ाई हुई आवाज में गुर्रा के उसने अपने साथियों का ध्यान उस ओर दिलाया। कई बूढ़े बड़े 'एप' बन्दर अच्छी तरह उन्हें देखने के लिये उठके खड़े हो गये, कई गर्दन फुला के दांत निकाले भारी आवाज में गुर्राते हुये धीरे धीरे उनकी तरफ बढ़े।

टार्जन ने उन्हीं की बोली में कहा, "करनथ, मैं जंगल का राजा टार्जन हूं, क्या मुझे पहिचानते नहीं। तुम और हम मिल के एक साथ ऊंची डाल पर बैठ जाते थे और नीचे शेर पर डालियों के टुकड़े और गुठलियें फेंका करते थे, तुम्हें याद होगा!"

जिसको टार्जन ने संबोधन किया था वह ताज्जुब और तरद्दुद की नजर से उनकी तरफ देखने लगा। टार्जन ने दूसरे की तरफ देख के कहा, "और तुम मेगोर, क्या तुम भी अपने पहिले के राजा को नहीं पहिचानते। देखो, मुझे अच्छी तरह याद करो, मैं ही ने लड़ाई में लड़ के ताकतवर करचक को मारा था, मैं ही भारी लड़ाका और प्रसिद्ध शिकारी टार्जन हूँ। क्या मैं बहुत दिनों तक तुम्हारे साथ नहीं रह चुका हूं।"

'एप' बन्दर आगे बढ़ आये, पर उनके चेहरे पर अब क्रोध के बदले आश्चर्य था। उन्होंने आपस में कुछ सलाह की और करनथ ने पूछा, "अब तुम हमारे पास क्यों आये हो?"

टार्जन ने जवाब दिया, "तुम से मेल करने और तुम्हारे बीच रहने के लिये!"

फिर उन लोगों ने सलाह की। बाद में करनथ बोला,

"तुम हमारे बीच में रह सकते हो, जंगल के राजा टार्जन!"

टार्जन जमीन पर कूद के उन भयानक जानवरों के बीच में आ मिले। उनके पास आने पर वैसी साहब सलामत या सलाम बन्दगी न भई जैसी दोस्तों में बहुत दिन बाद मिलने पर होती है। सब अपने अपने काम में फिर लग गये, जैसे उनका आना बिल्कुल साधारण बात हो या वे जाति को छोड़ के कहीं कभी गये ही न हों।

दो तीन छोटी उमर के 'एप' बन्दर जो उन्हें नहीं जानते थे पास आके उन्हें सूंघने लगे, और एक ने गुर्रा के अपने दांत निकाले, जैसे वह उनका आना नापसन्द करता हो और यह जान लेना चाहता हो कि उनका दर्जा इस जाति में कैसा रहेगा। अगर टार्जन गुर्रा के एक कदम पीछे हट जाते तो वह बन्दर संतुष्ट हो जाता और कुछ न बोलता, पर आगे के लिये जाति वालों के सामने टार्जन का दर्जा उस बन्दर से बराबर नीचा रहता जिससे वे डर के हट गये थे। टार्जन पीछे नहीं हटे। उन्होंने अपना हाथ घुमा के ऐसा एक थप्पड़ उसकी खोपड़ी पर दिया कि वह लुढ़क के दूर घास पर जा गिरा। तुरत ही वह उठा और टार्जन और वह दोनों पंजों और दांतों से नोचते खसोटते हुये आपस में गुथ गये। अगर उस जवान 'एप' बन्दर का इरादा टार्जन को नीचा दिखाने या लड़के हरा देने का था तो वह बिल्कुल ही पूरा न हुआ। दोनों को लड़ाई शुरू किये दो मिनट भी न बीता था कि टार्जन की उंगलियें अपने दुश्मन के गले पर पहुंच गईं। धीरे धीरे उसका बदन सुस्त पड़ने लगा, उसका उछलना

कूदना बन्द हो गया और वह चुपचाप पड़ गया। टार्ज़न ने गले पर से हाथ हटा लिया। वे उसे मारना न चाहते थे बल्कि उसे और उसके उन साथियों को जो देख रहे हों यह सबक सिखाया चाहते थे कि अब भी उनमें ताक़त काफ़ी है और वे उन सभों से मज़बूत हैं।

टार्ज़न जो चाहते थे वही हुआ। इस घटना के बाद कम उमर के बन्दर फिर कभी उनके पास न आये, और ज्यादा उमरवालों ने कभी उनके अधिकारों में दस्तंदाज़ी न की। 'एप' बन्दरियें अलबत्ता उनसे झिझकती थीं और वे पास आते थे तो दांत निकाल के उनकी तरफ़ दौड़ती थीं। उस समय टार्ज़न पीछे हट के अलग हो जाते थे और उन से लड़ते न थे। 'एप' बन्दरों में कायदा है कि कोई नर कभी बन्दरियों पर हमला न करेगा। करेगा वही जो पागल हो गया होगा या जिसका दिमाग बिगड़ गया होगा।

टार्ज़न अपने नये साथियों के साथ फिर उसी तरह घूमने फिरने और शिकार खेलने लगे जिस तरह पहिले करते थे, जब वे उनमें रहते थे। वे उन्हें ऐसी जगहों में ले जाते थे जहां खाने को बहुतायत से और सहज में मिल जाता था। अपने रस्सों से पकड़ के जंगली जानवरों का शिकार करके ऐसा ऐसा खाना खिलाते थे जो उन्हें बड़ी मुश्किल से पहले कभी कभी ही मिला करता था। इन सब बातों से धीरे धीरे उनके साथी फिर उन्हें उसी निगाह से देखने लगे जिस निगाह से पहिले देखा करते थे, जब वे उनके राजा थे। दस दिन बाद 'एप' बन्दरों की इस जाति ने जब दमदम का स्थान छोड़ा तो टार्ज़न उनके चुने हुये राजा थे।

टार्जन अपने इस जीवन से पूरी तरह संतुष्ट थे। पर इससे यह न समझ लेना चाहिये कि वे सुखी थे। सुखी कभी होंगे इसकी उन्होंने आशा छोड़ दी थी। संतुष्ट थे कहने का यह मतलब है कि यहां कोई चीज ऐसी न थी जो उन्हें अपने भूतकाल के जीवन की याद दिलाती और उन्हें फिर रंज में डालती। बहुत दिन हुये उन्होंने निश्चय किया था कि वे सभ्य संसार में फिर कभी न जायंगे, अब उनका निश्चय था कि अपने दोस्त वजीरियों का भी कभी मुंह न देखेंगे। उन्होंने मनुष्य मात्र से हमेशा के लिये नाता तोड़ लिया था। 'एप' बन्दर बनके उन्होंने जीवन आरंभ किया था, 'एप' बन्दर बनके ही वे जीवन का अन्त करेंगे। यह उनका इरादा था।

पर कितना ही वे मन को कड़ा करें और बातों को भूलें यह बात उन्हें सदा याद रहती थी कि वह युवती जिसे वे प्यार करते हैं उनके बन्दरों के रहने के स्थान से थोड़ी ही दूर पर है। न जाने वह किस हालत में होगी, कौन आपत्ति उस पर आ रही होगी, यह डर टार्जन को हमेशा सताया करता था। क्लेटन उसकी रक्षा नहीं कर सकते यह टार्जन ने उसी समय देख लिया था जब उन्होंने उन दोनों की जान बचाई थी। तो फिर क्यों उन्होंने डाह और क्रोध में पड़ के उसे आफत में डाला, क्यों न वे उसके पास रुक रहे कि समय पर उसकी मदद कर सकते! टार्जन की अन्तरात्मा बराबर उन्हें इसके लिये कोंचा करती थी।

ज्यों ज्यों दिन बीतते गये टार्जन की तबीयत ज्यादा चिंतित और उदास होती गई। अन्त में वे और न रुक सके और उन्होंने

निश्चय किया कि चल के उन के पास ही कहीं रहेंगे और उन दोनों की देख रेख करते रहेंगे। इसी बीच में उन्हें एक ऐसी खबर मिली जिससे उनका सब सोचा हुआ मट्टी हो गया और उन्हें जान और खतरे की परवाह छोड़ के तेजी से पूरब की ओर रवाना हो जाना पड़ा।

टार्जन के जाति में आने के पहिले उसमें का एक 'एप' बन्दर जिसे अपनी जाति में कोई स्त्री न मिलती थी जंगल की अन्य जातियों में उसे खोजने के लिये बाहर निकल पड़ा था। बहुत दिन बाद वह अपने लिये स्त्री खोज के उसे लिये हुये फिर लौट के अपनी जाति में आया। अपने सफ़र का हाल साथियों को सुनाते हुये वह बोला, "मैंने बड़ी ताज्जुब की बातें देखीं। मैंने 'एप' बन्दरों की एक जाति देखी जिनके सिर पर बड़े बड़े बाल थे और उनके साथ में एक बन्दरी देखी जिसके बदन का रंग बिल्कुल सफेद, इस अजनबी से भी ज्यादा गोरा था।" उसने टार्जन की तरफ उंगली उठाई।

टार्जन एक दम से चौंक उठे। उन्होंने ताज्जुब से पूछा, "क्या उन बन्दरों की टांगें छोटी छोटी और टेढ़ी थीं!"

वह बोला, "हां!"

"क्या वे शेर की खालें अपनी कमर में लपेटे थे और उनमें चाकू खोंसे थे?"

"हां!"

"और क्या वे अपने हाथ और पैर में पीले रंग के छल्ले पहिने थे?"

"हां।"

"और वह बन्दरी—क्या वह खूब नाजुक, कमजोर और रंग में गोरी थी?"

"हां।"

"वह बन्दरी भी उन्हीं की जाति की मालूम होती थी या उनके साथ कैद जान पड़ती थी?"

"वे उसे जबर्दस्ती साथ लिये जाते थे। कभी बांह पकड़ के खींचते थे और कभी सिर के बड़े बड़े बाल पकड़ के घसीटते थे। वे खूब पीटते और मारते थे, पर तिसपर भी वह धीरे धीरे चलती थी।"

टार्जन मन ही मन बोले, "हे भगवान, जेन किस दुर्दशा में पड़ गई!" उन्होंने फिर पूछा, "तुमने जब उन्हें देखा वे कहां पर थे, और किस रास्ते जा रहे थे?"

'एप' बन्दर ने दक्षिण की ओर उंगली उठा के कहा, "वे उधर दूसरे पानी के पास थे जब मेरी उन पर निगाह पड़ी। वे पानी के किनारे किनारे उस ओर जा रहे थे जिधर आग का गोला निकलता है।"

टार्जन ने पूछा, "यह कितने दिन की बात है?"

वह बोला, "इस बात को करीब आधा चन्द्रमा बीत गया।"

बिना एक शब्द बोले टार्जन उछल के पेड़ पर चढ़ गये और बिजली की तरह की तेजी से पूरब की ओर ओपर के शहर की तरफ रवाना हुये।

चौबीसवां बयान

टार्जन फिर ओपर में आये

जब क्लेटन लौट के किनारे पर आये और उन्होंने जेन पोर्टर को वहां न पाया तो वे डर और रंज के मारे पागल से हो गये। थूरन अपने बिछौने पर पड़े हुये थे पर उनका बुखार उतर गया था और यद्यपि वे बहुत ही कमजोर और सुस्त थे पहिले की बनिस्बत अब उनकी दशा बहुत अच्छी थी।

क्लेटन ने आते ही थूरन से जेन पोर्टर के बारे में पूछा और जब

"हां।"

"और वह बन्दरी—क्या वह खूब नाजुक, कमजोर और रंग में गोरी थी?"

"हां।"

"वह बन्दरी भी उन्हीं की जाति की मालूम होती थी या उनके साथ कैद जान पड़ती थी?"

"वे उसे जबर्दस्ती साथ लिये जाते थे। कभी बांह पकड़ के खींचते थे और कभी सिर के बड़े बड़े बाल पकड़ के घसीटते थे। वे खूब पीटते और मारते थे, पर तिसपर भी वह धीरे धीरे चलती थी।"

टार्जन मन ही मन बोले, "हे भगवान, जेन किस दुर्दशा में पड़ गई!" उन्होंने फिर पूछा, "तुमने जब उन्हें देखा वे कहां पर थे, और किस रास्ते जा रहे थे?"

'एप' बन्दर ने दक्षिण की ओर उंगली उठा के कहा, "वे उधर दूसरे पानी के पास थे जब मेरी उन पर निगाह पड़ी। वे पानी के किनारे किनारे उस ओर जा रहे थे जिधर आग का गोला निकलता है।"

टार्जन ने पूछा, "यह कितने दिन की बात है?"

वह बोला, "इस बात को करीब आधा चन्द्रमा बीत गया।"

बिना एक शब्द बोले टार्जन उछल के पेड़ पर चढ़ गये और बिजली की तरह की तेजी से पूरब की ओर ओपर के शहर की तरफ रवाना हुये।

उन्होंने बताया कि वह नीचे भी कहीं नहीं है तो थूरन ने आश्चर्य प्रगट किया। वह बोला, "मैं नहीं कह सकता वे कहां गईं, नीचे लड़ाई झगड़े की कोई आवाज तो नहीं सुनने में आई। मैं ठीक नहीं कह सकता, कारण मैं प्रायः ज्यादा देर बेहोश ही रहा !"

क्लेटन को पहिले तो संदेह हुआ कि शायद इसी रशियन की इसमें कुछ चालबाजी हो, शायद इसी ने उसे किसी तकलीफ में डाल दिया हो, पर जब उन्होंने उसके कमजोर शरीर और पीले चेहरे पर ध्यान दिया तो उनका यह खयाल बदल गया। उन्होंने मन में सोचा कि यह इस हालत में कुछ भी करने में असमर्थ है, ऐसा नहीं हो सकता कि यह नीचे उतरा हो और उसे किसी खतरे में डाल के फिर ऊपर चढ़ आया हो। इसमें इतनी ताकत ही नहीं है। जेन पोर्टर पर कोई और ही आफत आई होगी।

उस वक्त से लेकर संध्या हो जाने तक क्लेटन जंगल में घूम घूम कर चारो तरफ जेन पोर्टर को खोजते रहे और यद्यपि उनकी निगाह के सामने बीसों दफे वे चिन्ह पड़े जो जेन पोर्टर को पकड़ ले जाने वाले पचास आदमी अपने रास्ते में बनाते गये थे, क्लेटन उनको जरा भी पहिचान न सके। किसी भी जंगल के रहने वाले के लिये वे चिन्ह उतने ही साफ थे जितने कि क्लेटन के लिये कागज पर लिखे हुये अंग्रेजी भाषा के हर्फ होते, पर चूंकि क्लेटन जंगली बातों के बारे में बहुत ही कम जानकारी रखते थे उनके लिये ये चिन्ह बेकार से थे। वे नाम ले ले कर बार बार पुकारते थे पर इससे जेन पोर्टर का पता लगना तो दूर रहा एक आफत उन पर आ गई। उनकी

आवाज सुन के अपने रास्ते पर जाता हुआ एक शेर उधर आ निकला और धीरे धीरे उनकी तरफ बढ़ने लगा। कुशल यह हुई कि समय रहते क्लेटन की निगाह उस पर पड़ गई और वे झट से लपक के एक पेड़ पर चढ़ गये। इससे उनकी जान बच गई पर खोज ढूंढ़ का अन्त हो गया। रात होने तक वह शेर पेड़ के नीचे टहलता रहा और अन्त में बहुत देर पर जब वह गया, तब भी क्लेटन की हिम्मत न पड़ी कि नीचे उतरें। तरद्दुद और कष्ट में उनकी रात पेड़ ही पर बीती और जब सबेरा हुआ तब थके मांदे जेन पोर्टर के मिलने से निराश हो वे किनारे पर लौटे।

इसके बाद एक हफ्ते तक कोई विशेष घटना न हुई। थूरन बराबर पेड़ के ऊपर अपने झोंपड़े में आराम करता रहता था, इससे उसकी तबियत ठीक होती गई और गई हुई ताकत लौटने लगी। क्लेटन शिकार करने जाते थे तो अपने और थूरन दोनों के लिये खाने का सामान लाते थे और थूरन का हिस्सा उसको दे देते थे। थूरन क्लेटन से बहुत ही कम बात करता था। किसी चीज की जरूरत हुई तो केवल मांग लेता था। क्लेटन भी इस कारण कम बोलते थे और अपने रहने का इन्तजाम भी थूरन के संग से हटा के उन्होंने दूसरी ओर उस तरफ कर लिया था जिधर जेन पोर्टर रहती थी। तिस पर भी वे रशियन का खयाल रखते थे और उसे कोई कष्ट न होने देते थे।

धीरे धीरे थूरन एक दम ठीक हो गया और झोंपड़े के नीचे उतर के शिकार के लिये भी जाने लगा और इसके बाद ही एक दिन

क्रेटन को बुखार आ गया और वे बिछौने पर पड़ गये। कई दिन तक वे कष्ट में पड़े इधर से उधर करवटें बदलते रहे पर एक बार भी थूरन यह पूछने के लिये न आया कि तुम्हारा क्या हाल है और तुम्हें कोई चीज चाहिये तो नहीं! खाना तो क्रेटन खा ही न सकते थे, इसकी तो उन्हें आवश्यकता ही न थी, पानी की अलबत्ता उन्हें कई रोज भयानक तकलीफ हुई, आखिर उन्होंने नियम बांधा कि बुखार जब उतर जाता था और वे होश में आते थे तो धीरे धीरे कदम कदम चल कर वे झोंपड़े के नीचे उतर जाते थे और पास में झरने के पास जा एक टीन के डब्बे में अपने लिये पानी भर लाते थे।

कई दिन तक यह सिलसिला चला और इस बीच थूरन प्रसन्नता मिले डाह के साथ उनके इस कृत्य को देखता रहा। उसको उनका कष्ट देख एक तरह की खुशी हो रही थी. उसने जरा भर के लिये भी न सोचा कि इस आदमी ने बीमारी के वक्त उसकी सेवा की थी और सभ्यता और मनुष्यता कहती है कि वक्त पर उसकी भी मदद की जाय।

आखिर क्रेटन इतने कमजोर हो गये कि उनके लिये सीढ़ी उतर के नीचे आना भी कठिन हो गया। वे बिछौने से उठ तक नहीं सकते थे। एक रोज दिन भर उन्होंने प्यास की तकलीफ सही, बाद में जब न रहा गया तो उन्होंने थूरन को पुकार के थोड़ा पानी मांगा।

हाथ में पानी से भरा प्याला लिये थूरन दर्वाजे के पास आके खड़ा हो गया। उसने क्रेटन की दशा देख के पिशाच की हंसी हंस

के कहा, "देखो, यह पानी है, यह मैं तुम्हें दे सकता हूं। पर पहिले इस बात को याद कर लो कि तुमने जेन पोर्टर के सामने मेरी बेइज्जती की थी, उसको तुमने अपने वास्ते अलग रक्खा और मेरे साथ हिस्सा न लगाया......।

क्लेटन धीमी आवाज में बोले,"चुप रहो, अपना मुंह बन्द करो। तुम कैसे पतित हो कि एक भली स्त्री के संबंध में ऐसी बात जुबान से निकाल रहे हो। तुम्हे शर्म नहीं आती। तिस पर भी इस हालत में कि वह इस दुनिया में नहीं है, जब कि समझा जाता है कि वह मर गई। मैंने गलती किया जो मौका पाके भी तुम्हें मारा नहीं, जीता रहने दिया। तुम तो इस लायक हो कि ...।"

बात काट के थूरन बोला, "बस बस, मैं समझ गया कि तुम्हारे साथ क्या सलूक करना चाहिये। लो यह पानी!" इतना कह के उसने पानी के प्याले में मुंह लगा दिया और सारा पानी पी गया। जो बचा सो उसने जमीन पर फेंक दिया। इसके बाद दर्वाजे से हट के वह नीचे उतर गया।

क्लेटन ने करवट बदल के अपना मुंह हाथों में छिपा लिया। उनकी आंखों में आंसू भर आये।

दूसरे रोज थूरन ने उस जगह को छोड़ने का निश्चय किया। उसका इरादा हुआ कि समुद्र के किनारे किनारे उत्तर की ओर चलना चाहिये। कहीं न कहीं बस्ती मिलेगी ही, और फिर न मिली तो जैसे यहां अकेले वैसे वहां भी अकेले। उसमें कोई फर्क न पड़ेगा। कम से कम दूसरी जगह इस बीमार अंग्रेज की चिल्लाहट तो न सुननी पड़ेगी!

उसने क्लूटन का बरछा निगाह बचा के चुरा लिया और उसे लिये हुये दूसरे रोज उत्तर की तरफ रवाना हो गया। चलते वक्त उसका इरादा हुआ कि क्लूटन को जान से मारते चलें, पर फिर उसने सोचा कि नहीं ऐसा करना भी एक तरह की दया दिखाना होगा। ऐसा करने से ये पूरी तकलीफ न भोगेंगे। इन्हें इसी तरह छोड़ दो!

जिस रोज थूरन रवाना हुआ उसी रोज संध्या को वह उस कोठरी के पास पहुंच गया जो टार्जन की थी। उसको देख उसे कुछ आश्चर्य हुआ, पर उसने समझा कि यह भी बस्ती के नजदीक होने का चिन्ह है। पास के गांव के किसी आदमी ने इसे बनवाया होगा। अगर वह जानता कि यह उसके जानी दुश्मन टार्जन की कोठरी है तो वह उससे इस तरह भागता जिस तरह लोग मौत से भागते हैं। पर उसे इसका गुमान भी न था। उसने वह रात और फिर बाद का कई दिन उसी कोठरी में काटा। वहां रहने में उसे कई बातों का आराम मिला। करीब एक हफ्ते बाद वह वहां से फिर उत्तर की ओर रवाना हुआ।

इधर का जब कि यह हाल था उधर लार्ड टेनिंगटन के डेरे में सलाह हो रही थी कि यहां रहने के अच्छे स्थान बना लेने चाहियें और कुछ आदमी उत्तर की ओर भेज के इस बात का पता लगाना चाहिये कि यहां कहीं बस्ती है या नहीं। उनको यहां आये इतने दिन बीत गये, कोई भी जहाज उनकी खबर लेने न आया, इससे जान पड़ता था कि मानश्यूर थूरन, क्लूटन और जेन पोर्टर किसी जहाज पर नहीं

चढ़ गये बल्कि इधर उधर कहीं किसी तकलीफ में पड़े हैं अथवा न जाने उनका क्या हाल हुआ होगा। उनके बारे में प्रोफेसर पोर्टर से बात करना भी लोगों ने एक दम बन्द कर दिया इससे केवल उन्हें दुःख होता, दूसरे वे अपनी वैज्ञानिक उलझनों में इतना डूबे रहते थे कि उन्हें इस बात का पता हीं न लगता था कि समय किस तेजी से बीत रहा है।

यह नहीं कि प्रोफेसर पोर्टर को अपनी लड़की की बिल्कुल चिंता ही न थी। अकसर जिक्र चलने पर वे कहते थे कि दो चार रोज के अंदर ही कोई न कोई जहाज आवेगा और उसमें से जेन पोर्टर उतरेगी। लोग भी उनकी हां में हां मिला देते थे, उनकी बात को काट के, उनके मन में सन्देह पैदा करके कोई उन्हें कष्ट नहीं देना चाहता था।

एक रोज जब कि मैदान में टहलते हुये लार्ड टेनिंगटन मिस स्ट्रांग से बात कर रहे थे वे बोल उठे, "क्यों मिस स्ट्रांग, तुमने आज प्रोफेसर पोर्टर की बात सुनी। वे कह रहे थे कि मेरी जेन अगर जहाज से न आई तो शायद रेल से आवे। उसी वक्त मुझे हंसी आई और मेरा इरादा हुआ कि कहूं कि क्या यह भी कोई शहर समझ रक्खा है कि यहां रेल चलेगी। पर मैं रुक गया। कहना तो नहीं चाहिये, पर मुझे अकसर शैक होता है कि प्रोफेसर का दिमाग कुछ—कुछ कायदे में नहीं है। उसमें कुछ खराबी है।"

हेजेल स्ट्रांग गंभीरता से बोली, "नहीं, ऐसा नहीं है। मैं उनको बहुत दिनों से जानती हूं। वे बराबर ऐसे ही भुलक्कड़ और लापरवाह

रहे हैं। अपनी विज्ञान संबंधी गुत्थियों के सुलझाने में वे बराबर इतने उलझे रहते हैं कि उन्हें पता ही नहीं रहता कि वे दुनियां के किस हिस्से में हैं और उनके चारों तरफ क्या हो रहा है। देखने में इसी तरह वे अपनी लड़की की तरफ से भी लापरवाह जान पड़ते हैं, पर मैं जानती हूं कि उसके प्रति इनके हृदय में बड़ा ही गहरा प्रेम है।"

लार्ड टेनिंगटन बोले, "जरूर होगा। बेचारे बड़े सीधे आदमी हैं। उनमें ऐब यही है कि वे हद्द दर्जे के भुलक्कड़ हैं। अभी कल की घटना सुनो। मैं शिकार करके जंगल से लौट रहा था। आधे रास्ते आके देखता क्या हूं कि प्रोफेसर साहब सामने से सिर झुकाये टह-लते हुये चले आ रहे हैं। उनकी टोपी टेढ़ी थी, दोनों हाथ कोट के जेब में थे और वे इस तरह चिन्ता में डूबे मालूम होते थे जैसे उन पर सारी दुनिया की आफत आ पड़ी हो। मैंने पूछा, "क्यों प्रोफेसर साहब, आप इधर कहां जा रहे हैं?" वे बोले, "जा कहां रहा हूं, पोस्ट आफिस, इस बात की शिकायत करने कि यहां मुझे चीठियें कायदे से नहीं मिलतीं। न जाने कितनी चीठियें मेरी जेन भेज चुकी होगी। सब कहां चली गईं। एक भी मुझे नहीं मिली। अगर यहां वाले ठीक इंतजाम न कर सके तो मैं वाशिंगटन इस बात की शिकायत भेजूंगा।" तुमको यह सुन के ताज्जुब होगा मिस स्ट्रांग, कि बड़ी मुश्किल से समझाने बुझाने पर तब कहीं जा के उन्हें इस बात का विश्वास हुआ कि यहां कोई पोस्ट आफिस नहीं है, चीठियें यहां नहीं आ सकतीं और वाशिंगटन यहां से हजारों मील दूर है।

"मैंने जब उन्हें सब बातें समझाईं तो वे अपनी लड़की के बारे में चिन्ता में पड़ गये। तब उन्हें खयाल हुआ कि यहां हम लोग अफ्रिका के भयानक जंगलों में पड़े हैं और हो सकता है हमारे जहाज के तीनों साथी भी जो हम से अलग हो गये हैं किसी आफत में पड़ गये हों। यह पहिला ही मौका था कि मैंने उन्हें अपनी जेन पोर्टर के बारे में गंभीर भाव से चिंता करते देखा।"

हेज़ेल स्ट्रांग जो चुपचाप लार्ड टेनिंगटन की बात सुन रही थी बोली, "क्या कहूं, मुझे भी जेन पोर्टर के बारे में बड़ी फिक्र है। मेरे दिल से उसकी चिन्ता एक मिनट वास्ते हटाये नहीं हटती।"

टेनिंगटन बोले, "चिन्ता से लाभ ही क्या। जो होना है होगा ही। मुझे बड़ा संतोष तो तुम्हें देख के हो रहा है कि तुमने अपने को खूब सम्हाला, क्योंकि सब से ज्यादा चोट तुम्हें ही लगी होगी।"

हेज़ेल बोली, "हां जरूर, जेन पोर्टर को मैं बहिन से भी बढ़ के प्यार करती थी।"

लार्ड टेनिंगटन चुप हो गये उन्होंने देखा कि हेज़ेल स्ट्रांग उनका मतलब नहीं समझी, तभी उसने ऐसा उलटा जवाब दिया। इधर 'लेडी एलिस' जहाज के डूबने बाद से लार्ड टेनिंगटन का हेज़ेल स्ट्रांग से बहुत ज्यादा साथ रहा था और वे उसे मुनासिब से अधिक चाहने लग गये थे। मुनासिब से अधिक उन्होंने इसलिये सोचा कि उन्हें अभी तक मानश्यूर थूरन की बात याद थी जो उसने मिस स्ट्रांग के बारे में कही थी। वह बात ठीक थी या गलत यही लार्ड टेनिंगटन के समझ में नहीं आ रहा था। देखने में इस युवती में

और उस रशियन में मामूली से अधिक दोस्ती या दोस्ताने से अधिक कुछ और बात नहीं जान पड़ती थी।

वे बोले, "अगर मानश्यूर थूरन का पता न लगा तो तुम्हें बड़ा भारी दुःख होगा!"

हेज़ेल स्ट्रांग ने कुछ ताज्जुब की नज़र से देख के कहा "मानश्यूर थूरन से मेरी जान पहिचान यद्यपि बिल्कुल नई थी तथापि वे एक तरह से मेरे दोस्त हो गये थे!"

टेनिंगटन बोले, "तुमने क्या उनसे विवाह करने का वादा नहीं किया था?"

हेज़ेल स्ट्रांग बोली, "नहीं तो, मैंने तो ऐसा वादा कभी भी नहीं किया। मैं उनसे इतना प्रेम ही नहीं करती थी कि उनसे विवाह करने को तैयार हो जाती!"

लार्ड टेनिंगटन बहुत देर से हेज़ेल स्ट्रांग से एक बात कहा चाहते थे, पर मौका मिलने और उद्योग करने पर भी वे उसे कह न सकते थे। बात उनके गले तक आके रुक जाती थी। उन्होंने तीन दफे शुरू किया शुरू करके फिर रुक गये, और फिर सिलसिला दूसरी तरफ फेर के उन्होंने दूसरी बात कह दी। असल बात मुंह से न निकली। पर वे चाहे न जानते हों, हेज़ेल ने वह बात समझ ली जिसे वे कहा चाहते थे, और समझ के उसे मन ही मन बड़ी प्रसन्नता—बड़ा आनन्द हुआ।

आगे और बात न हो सकी। यकायक लार्ड टेनिंगटन और हेज़ेल स्ट्रांग की निगाह अपने सामने जंगल के दक्खिनी किनारे की

ओर पड़ी। उन्होंने देखा कि विचित्र शकल सूरत का एक आदमी चमड़े का कपड़ा पहिने, बड़ी बड़ी दाढ़ी बढ़ाये, सामने से चला आ रहा है। न जाने यह कौन है, दोस्त या दुश्मन यह सोच लार्ड टेनिंगटन ने अपनी बंदूक कंधे से उतारनी चाही। पर उस आदमी ने हाथ उठा के वैसा करने से मना किया और उनका नाम ले के पुकारा। उसे सुन लार्ड टेनिंगटन रुक गये। बात की बात में वह आदमी पास आ पहुंचा और तब लार्ड टेनिंगटन और हेज़ेल स्ट्रांग ने पहिचाना कि यह दुबला पतला जंगलियों की शकल का आदमी असल में मानश्यूर थूरन हैं जो 'लेडी एलिस' जहाज पर उनके साथ थे।

औरों को उनके आने का पता देने के पहिले ही लार्ड टेनिंगटन और हेज़ेल स्ट्रांग ने उनसे और लोगों के बारे में पूछा—कि उनके और साथी कहां हैं। थूरन बोले, "वे सब मर गये। तीनों मल्लाह तो जमीन के पास पहुंचने के पहिले ही खतम हो गये थे, जेन पोर्टर को कोई जानवर जंगल में उठा ले गया, जिस वक्त कि मैं बुखार में बेहोश पड़ा था। उसको बहुतेरा खोजा गया पर पता न लगा। क्लेटन पांच छः रोज हुआ बुखार में मर गये। इतना सब हो गया और हम में और आप में फासला कितना था, सिर्फ पांच छः मील का। सोच के आश्चर्य होता है!"

× × × × ×

कई दिन तक जेन पोर्टर ओपर के शहर में मन्दिर के नीचे तहखाने में पड़ी अपने दुर्भाग्य के दिन काटती रही। आने के तीन चार

रोज बाद तक उसे बराबर बुखार आया। पर फिर बुखार चला गया और उसकी कमजोरी धीरे धीरे जाने लगी। वह औरत जो खाना देने आती थी रोज उसे उठने का इशारा करती थी। पर रोज जेन पोर्टर सिर हिला के जवाब देती थी कि मैं बहुत कमजोर हूं, उठ नहीं सकती।

आखिर धीरे धीरे जेन पोर्टर इस लायक हो गई कि वह बिछौने से उठ के और दीवार को थाम के दो चार कदम इधर उधर चल फिर सके। उसके पकड़ने वाले अब पहिले की बनिस्बत ज्यादा दिलचस्पी से उसे देखने लगे। क्योंकि वह दिन आ रहा था जब कि उसका बलिदान दिया जाने वाला था। उसके दुश्मन चाहते थे कि उस समय तक वह खूब सबल और तन्दुरुस्त हो जाय।

वह दिन आ पहुंचा जिसकी राह उसके पकड़ने वाले देख रहे थे। कई औरतें उसके कैद खाने में आईं और उन्होंने वहां किसी तरह की पूजा आरंभ की। इस पूजा की मुख्य पात्री मैं ही हूं यह देख और यह समझ कि यह लोग किसी तरह के धर्म को मानने वाले हैं और इस कारण निश्चय ही दयालु तथा कोमल हृदय के होंगे जेन पोर्टर को कुछ संतोष हुआ। उसने समझ लिया कि जितना कष्ट उठा चुकी उठा चुकी। अब मेरे साथ ये लोग मेहरबानी का ही बर्ताव करेंगे। पूजा समाप्त होने बाद उसे लेकर जब वे लोग अंधकार-मय कोठरी और दालानों को पार करते हुये सीढ़ी चढ़ के एक आंगन में आये तो भी उनके साथ वह सहज में—एक तरह प्रसन्नता से चली आई। ये लोग ईश्वर को मानने वाले, उसकी सेवा करने वाले

हैं, क्या हुआ जो इनका धर्म उसके धर्म से भिन्न, अजीब तरह का है। क्या हुआ जो ये सर्वशक्तिमान को किसी दूसरे ढंग से याद करते हैं। आखिर ईश्वर का अस्तित्व तो मानते हैं। ये कड़े हृदय के और बुरे बर्ताव करने वाले कभी नहीं हो सकते !

लेकिन उसने जब आंगन के बीच में पत्थर की एक वेदी बनी हुई देखी और उस वेदी पर और उसके चारो तरफ काले धब्बे पड़े देखे तो उसके हृदय में संदेह और आश्चर्य पैदा हुआ, और वह संदेह और आश्चर्य तुरत ही भय में परिवर्तित हो गया जब उसके पैर और हाथ पीछे कर के बांध दिये गये और वह वेदी पर सुला दी गई, तब उसने सारी आशा छोड़ दी और समझ गई कि इन लोगों के हाथों से आज उसका अंत है।

इसके बाद वे कृत्य आरंभ हुये जो उनके वीभत्स काम की एक तरह की भूमिका के तौर पर थे। नाच हुआ, मंत्र पढ़े गये, और हाथों में प्याले ले लेकर पुजारी और पुजारिनें इधर उधर घूमे। इसके बाद प्रधान पुजारिन के कमर का छुरा उसके हाथ में आया। जेन पोर्टर भय से सुध बुध खोये अधखुली आंखों से सब देख रही थी। जब छुरा ऊपर उठ के फिर नीचे गिरने लगा तो उसके कोमल हृदय की गति एक तरह से रुकने सी लगी। उसने आंखें बन्द करके ईश्वर की एक बार प्रार्थना की और फिर बाद में तुरत ही बेहोश हो गई।

× × × × ×

दिन रात तेजी से जंगल में चलते हुये टार्जन उस ओर रवाना हुये जिधर ओपर का प्राचीन और बर्बाद शहर पड़ता था। 'एप' बन्दर के मुंह से सब किस्सा सुन उन्हें निश्चय हो गया था कि जिसको पकड़ के लोग ले गये हैं वह जेन पोर्टर ही है और उसके पकड़ने वाले वही ओपर के बदसूरत बाशिन्दे होंगे जो उन्हें खोजने उस शहर से रवाना हुये थे। निश्चय ही वे उसे पकड़ के वहां ले जायंगे, निश्चय ही कुछ समय बाद वह उस वेदी पर आवेगी और बाद में निश्चय ही उसका वही अंत होगा जो वहां जाने वाले बाहरी दुनिया के आदमियों का होता है। वह वेदी पर कब जायगी, इस समय भी वह जीवित है या मर गई, यह टार्जन को नहीं मालूम था, पर वहां जल्दी से जल्दी पहुंचना चाहिये यह इरादा उनका पक्का हो गया था।

टार्जन जानते थे कि घने जंगल में नीचे जमीन पर सफर करने में देर लगती है, इससे वे पेड़ों के ऊपर ही ऊपर चले और बराबर चलते हुये एक रात और एक दिन में उन्होंने इतना रास्ता तय कर लिया जितना कि जेन पोर्टर के पकड़ने वालों ने एक हफ्ते में न तय किया होगा। अंत में वे उन पहाड़ियों पर पहुंचे जिनके नीचे ओपर की घाटी पड़ती थी और उससे नीचे उतर उस ओर रवाना हुये जिधर पत्थर का वह टीला पड़ता था जिधर से भीतर मंदिर में घुसने का रास्ता था।

क्या वे समय पर जेन पोर्टर के पास पहुंच जायंगे। टार्जन को इसका निश्चय न था। पर यह उन्होंने सोच लिया था कि अगर उनके

पहुंचने में देर भी हो गई तो वे कम से कम बदला लेने का जरूर प्रयत्न करेंगे। क्रोध में भरे रहने के कारण उनके दिल में खयाल हुआ कि उद्योग करने पर वे इस सारी जाति को ही नाश कर डालेंगे, दस बीस को मारने की कौन बात है। उनका कसूर इतना बड़ा होगा कि उसकी सजा भी उन्हें बड़ी भारी मिलनी चाहिये।

दोपहर के लगभग वे उस टीले के पास पहुंचे। उस पर चढ़ के वे सुरंग में घुसे और दौड़ते हुये कोठड़ियों और रास्ते में मिलती सुरंगों को पार करते वे उस जगह पहुंचे जहां सामने कूंआ पड़ता था और बाद में वह कोठरी थी जिसकी दीवार फोड़ वे बाहर निकले थे। यहां क्षण भर के लिये वे रुक गये। उनके कानों में गाने और नाचने की हलकी आवाज आई। प्रधान पुजारिन के बोलने की आवाज भी सुनी। उन्हें शक हुआ कि यह आवाज, यह नाचना गाना वही है जो बलिदान के वक्त पर हुआ करता है। इसके सिवाय यह दूसरा नहीं है!

तो क्या वह काम शुरू हो गया जिसके रोकने के उद्योग में वे यहां पहुंचे हैं। टार्जन चिन्ता और क्रोध से कांप उठे। उन्होंने सोचा कि ऐसा न हो कि उन्हें पहुंचने में देर हो जाय और सारा काम चौपट हो जाय! एक उछाल मार के उन्होंने कूंआ पार किया और उस ओर पहुंचे जिधर झूठी दीवार पड़ती थी। जोर से धक्का दे के उन्होंने उसे गिराया और उस दर्वाजे के पास दौड़ के पहुंचे जो बाहर से बन्द था।

उन्होंने समझा था कि वह दर्वाजा सहज में टूट जायगा। उन्हें

ज्यादा तकलीफ न देगा। पर दो ही तीन धक्के दे के उन्होंने देख लिया कि वह उनकी ताकत के बाहर है। दर्वाजे के दूसरी ओर जो बेंवड़े लगे थे वे टूट जायं यह एक तरह से असंभव था। तब क्या किया जाय? इस रास्ते को छोड़ के फिर एक ही रास्ता दूसरा रह जाता है। सुरंग के बाहर निकल के उस टीले पर पहुंचा जाय और उससे उतर के बाहर बाहर फिर उस रास्ते शहर में घुसा जाय जिस रास्ते वे वजीरियों के साथ घुसे थे। पर इस काम में अवश्य ही बहुत ज्यादा देर लग जायगी और इस बीच में अगर जेन पोर्टर ही वेदी के ऊपर हुई तो उसकी जान जाने के पहिले वे उसके पास कदापि नहीं पहुंच सकते। पर इसके सिवाय और उपाय ही कौन सा है। वे पीछे लौटे और दौड़ते हुये उस कूंयें के पास पहुंचे जिसको पार करके सुरंग में जाने का रास्ता था। यहां उन्हें फिर प्रधान पुजारिन की आवाज सुनाई दी। ऊपर देखने पर कूंयें के ऊपर की गोल छत जो कम से कम बीस फीट ऊंची होगी उन्हें इतनी नजदीक मालूम हुई कि उनका इरादा हुआ कि उछल के ऊपर हो रहें और फिर दौड़ के उस दालान में चले जायं जहां बलि देने का काम हो रहा है।

अगर उनका घास का रस्सा किसी तरह इस छेद के ऊपर जा के अटक जाता तो वे उसके सहारे ऊपर चढ़ जाते। पर यह अटके किस तरह! उन्होंने क्षण भर गौर किया। यकायक उन्हें एक तरकीब सूझी। दीवार पार करके वे कोठरी के भीतर घुसे और वहां से उनमें से एक पत्थर ले आये जिनसे दीवार बनी थी। इस पत्थर में उन्होंने घास के रस्से का एक सिरा बांधा और फिर पत्थर को हाथ

में ले के और घुमा के जरा तिरछे उन्होंने छेद के मुंह की तरफ इस तरह फेंका कि वह रस्से को लिये दिये छेद के बाहर जा के गिरा।

टार्जन ने रस्से का दूसरा सिरा धीरे धीरे खींचा। थोड़ा सा खिंच के वह रुक गया और टार्जन ने समझा कि अब यह ऊपर मजे में अटक गया है और फिसल के नीचे नहीं आ सकता। रस्से को पकड़ के वे कूंये के बीच में लटक गये। उनका बोझा पड़ते ही रस्सा ऊपर से धीरे धीरे घसक के नीचे आने लगा। वे सांस रोके हुये इस बात को देखने लगे कि रस्सा ऊपर रुकता है या सब का सब नीचे चला आता है। अगर यह ऊपर न अटका, नीचे आ गया तो फिर जेन पोर्टर को बचाने की इच्छा उनके मन ही में रह जायगी, स्वयं उन्हें नीचे अथाह पानी में गिर के अपनी जान देनी होगी।

पचीसवां बयान

जंगल में

क्षण भर तक टार्जन चुपचाप रस्से का खसकना सुनते रहे। धीरे धीरे नीचे आते आते यकायक एक झटके के साथ उतरना आना बन्द हो गया और ऊपर से खरखराहट की आवाज आने से टार्जन ने समझ लिया कि एकदम किनारे पर वह दीवार में अड़ गया है। उन्होंने ऊपर चढ़ना शुरू किया और आधी मिनट बाद उनका सिर छेद के ऊपर आ गया। कूंएं वाले दालान में एकदम

जिस कोठरी में उसने टार्जन को बाहर से बन्द कर दिया था उसमें से वे गायब किस तरह हो गये थे। उसका इरादा नहीं था कि टार्जन ओपर से लौट के जायं। उसने टार्जन को प्रधान पुजारिन की निगाह से नहीं—एक स्त्री की निगाह से देखा था और वह चाहती थी कि उनको अपना पति बना के वहीं रोक रक्खे और वहां से बाहर न जाने दे। अपने आदमियों को समझाने के लिये उसके तेज दिमाग ने एक तरकीब भी सोच ली थी। वह लोगों से कहती कि यह अजनबी भगवान सूर्य का भेजा हमारे पास आया है और इससे लोगों का कल्याण होगा। उसकी जाति वाले इस बात को मान जाते इसका उसको निश्चय था। पर टार्जन के भाग जाने ने सब तरकीब उसकी खराब कर दी थी। अब वही आदमी न जाने कहां से लौट के फिर यहां आ मौजूद हुआ था और उसके आदमियों को भेंड़ बकरों की तरह मार रहा था! थोड़ी देर के लिये हाथ में छुरा लिये ला अपने सामने के वेदी पर पड़े शिकार को भी भूल गई, और इसके पहिले कि वह अपनी बिखरी हुई बुद्धि को फिर बटोर के अपने कब्जे में कर सके टार्जन उसके सामने आ खड़े हुये और वेदी पर की स्त्री उनकी गोद में दिखाई देने लगी।

उन्होंने चिल्ला के कहा, "हट जाओ ला, बगल हो जाओ, तुमने एक बार मेरी जान बचाई थी इससे मैं तुम्हें तकलीफ नहीं पहुंचाना चाहता, पर अगर तुमने मेरे काम में दखल दिया या मेरा पीछा करने की कोशिश की तो तुम्हें अपनी जान से हाथ धोना होगा!"

यह कहते हुये टार्जन उस दर्वाजे की तरफ बढ़े जो नीचे सुरंग में जाने का रास्ता था। ला ने कांपती आवाज में जेन पोर्टर की तरफ उंगली उठा के पूछा, "यह कौन है?"

टार्जन बोले, "यह मेरी है!"

ला के मुंह से आवाज न निकली। वह आंखें फाड़ के उन दोनों की तरफ देखने लगी। यकायक उसके चेहरे पर भयानक दुःख की छाया आ गई, आंखों में आंसू भर आये। उसके मुंह से चीख की आवाज निकली और वह बेहोश हो कर फर्श पर गिर पड़ी।

टार्जन जेन पोर्टर को बांहों में दबाये तेजी से भाग रहे थे। जब तक कि उनके दुश्मन उनके इस अचानक हमले से सम्हल के अपने होश हवास दुरुस्त करें और उन पर स्वयं हमला करने की तैयारी करें तब तक टार्जन उसे लिये नीचे के तहखाने में घुस गये और तेजी से दौड़ते हुये सुरंग में उस टीले की तरफ रवाना हुये जो ओपर के मंदिर से निकलने का गुप्त रास्ता था। उनके दुश्मन उन्हें खोजते हुये जब तहखाने में आये तो उन्होंने उनको वहां न पाया। वे सोचने लगे कि आखिर ये यहां से निकल के गये कहां। यहां से जाने का तो केवल कूंये के ऊपर वाला ही रास्ता है और उस रास्ते से हो के अगर ये आवेंगे तो जरूर ही हमारे हाथ पकड़ जायंगे।

टार्जन जिस रास्ते हो के भागे थे उसका पता उनके दुश्मनों को न था। यही कारण हुआ कि उनका पीछा किसी ने न किया। लोग ऊपर कूंये के मुंह के पास ही रुके उनके निकलने की राह देखते

रहे। जब बहुत देर बाद तक भी टार्जन उसमें से बाहर न आये तो उन सूर्य पूजकों को संदेह पैदा हुआ। उन्होंने सोचा कि यह आदमी पहिले भी एक बार इसी तरह हमारे मंदिर से गायब हो चुका है। यह कहां से अचानक आता और कहां चला जाता है! इसे खोजने के लिये फिर पचास आदमी भेजने चाहियें जो बाहर जाके इन्हें पकड़ेंगे।

टार्जन जब ऊपर से भाग के उस तहखाने में पहुंचे जिसमें उन्होंने दीवार तोड़ी थी तो उन्होंने कूंयें की तरफ से पत्थर लगा के फिर उसे बराबर कर दिया जिसमें उधर से देखने वाले किसी आदमी को पता न लगे कि यहां कोई आदमी दीवार हटा के उस पार गया है। वे चाहते थे कि मंदिर में घुसने के इस गुप्त रास्ते का किसी को पता न लगे, कोई उस खजाने की कोठरी का भेद न जानने पावे जिसमें सोने की ईंटें रक्खी हैं, और न कोई उनका पीछा करे। उनका इरादा था कि थोड़े दिन बाद फिर यहां लौटेंगे और थोड़ी सी और ईंटें उठा के ले जायंगे। वे कूंये को पार करके सुरंग में घुसे, उस कोठरी में आये जिसमें खजाना रक्खा था। उसे पार किया और बाद में उस सुरंग में घुसे जो उस टीले तक पहुंचाती थी। तब तक भी जेन पोर्टर बेहोश ही थी।

टीले पर पहुंच के टार्जन ने ओपर के शहर की तरफ निगाह फेरी। उन्होंने देखा कि वहां के पचास बाशिंदे तेजी से कदम रखते हुये मैदान में चले आ रहे हैं। उन्हें देख के टार्जन जरा सा हिचकिचाये। वे सोचने लगे कि यहां से उतर के और दौड़ के दुश्मनों

के आने के पहिले पहाड़ियों तक पहुंच जाने का उद्योग करें या यहीं रात होने तक छिपे रहें और इन्हें आगे निकल जाने दें। उन्होंने जब जेन पोर्टर के सफेद चेहरे पर नजर डाली तो फिर उनका इरादा न हुआ कि यहां और रुक के अपने को खतरे में डाला जाय। हो सकता है सुरंग से भी पीछा करते दुश्मन आ रहे हों। पीछे और आगे भी वे अगर पड़ जायंगे तो फिर जेन पोर्टर को सम्हालते हुये उनका लड़ना और भागना मुश्किल हो जायगा। यही अच्छा होगा कि टीले से नीचे जाके पहाड़ियों तक पहुंचने का उद्योग किया जाय।

जेन पोर्टर को लिये हुये टीले की तिरछी ढाल से नीचे उतरना बड़ा ही कठिन काम था। पर उन्होंने उसको घास के रस्से से अपनी पीठ पर बांध लिया और किसी तरह नीचे आ गये। जिस ओर वे उतरे थे टीले का वह हिस्सा शहर के दूसरी ओर पड़ता था, अस्तु उतरते वक्त किसी की उन पर निगाह न पड़ी। न पीछा करने वालों में से किसी ने यही समझा कि उनका शिकार उनके इतने पास है।

टीले को अपने और अपने पीछा करने वालों के बीच में रखते हुये टार्जन एक मील तक बराबर बढ़े चले गये और किसी की उनपर निगाह न पड़ी। इसके बाद जब ओपर वालों ने टीले को घूम के पार किया और वहां से आगे बढ़े तो उन्होंने शिकार को सामने भागते देखा। प्रसन्नता से जोर जोर की चीखें मारते हुये वे उस ओर दौड़े। उन्होंने सोचा कि इतने करीब होने के कारण वे जरूर उन्हें पकड़ लेंगे। पर ऐसा सोच के उन्होंने गलती की। टार्जन की दौड़ने

की शक्ति को वे न जानते थे, न वे यही पूरी तरह समझते थे कि उनके टेढ़े मेढ़े और छोटे छोटे पैरों और टार्जन के लांबे पैरों में बहुत ज्यादा फर्क है और वे उनकी बनिस्बत बहुत अधिक ज्यादा तेजी से दौड़ सकते हैं।

जरा सा चाल को तेज करके ही टार्जन ने देख लिया कि वे अपने और दुश्मनों के बीच के फासले को बराबर एक सा रख सकते हैं। उन्होंने जेन पोर्टर के चेहरे पर निगाह डाली और गौर करके देखा कि वह कितना सूखा हुआ और सफेद हो रहा है। अगर उसकी छाती की धड़कन बराबर टार्जन को न मालूम दे रही होती तो उनको शक हो जाता कि यह जी रही है या इसके प्राणों ने इसका साथ छोड़ दिया है! अस्तु तेजी से चलते हुये टार्जन पहाड़ों के पास पहुँच गये और ऊपर चढ़ने लगे। ऊपर चढ़ने में उन्होंने बड़ी शीघ्रता की, कारण उन्होंने सोचा कि ओपर वालों के पहाड़ की चोटी पर पहुँचने के पहिले उन्हें उसके दूसरी ओर नीचे उतर जाना चाहिये। कहीं ऐसा न हो कि वे ऊपर से पत्थर के ढोके लुड़काने शुरू करें और वे बीच ही में रहें और उनसे चोट खा जायं। वे पहाड़ के प्रायः नीचे पहुँच गये तब ओपर वाले हांफते और दौड़ते हुये उसकी चोटी पर पहुँचे।

ऊपर पहुँच के जब टार्जन को उन्होंने बहुत दूर नीचे उतर गया हुआ देखा तो वे क्रोध में बावले होकर उछलने कूदने और चिल्लाने लगे, पर इस बार अपनी सीमा को छोड़ कोई भी उनका पीछा करने नीचे न उतरा। न जाने यह सोच के कि पहिली बार पीछा

करने और खोजने पर भी उनका पता न लगा था इससे इस बार भी जाना व्यर्थ है, या यह सोच के कि इनकी चाल बहुत तेज है इससे पीछे जाना फजूल है, कोई भी पहाड़ से नीचे न उतरा। टार्जन जब पहाड़ तय कर के पास के जंगल में घुसे तो उन्होंने देखा कि पीछा करने वाले चोटी से उतर के पीछे ऊपर की ओर लौटे जा रहे हैं।

जंगल मे थोड़ी दूर जाके टार्जन एक साफ जगह देख ऐसे स्थान पर रुक गये जहां से पहाड़ की चोटी साफ दिखाई दे रही थी। उन्होंने जेन पोर्टर को जमीन पर सुला दिया और पास के झरने से पानी लाके उन्होंने उसके चेहरे को तर किया और रुक के देखने लगे कि उसे होश आती है या नहीं। कुछ रुक के उन्होंने फिर सिर पर पानी डाला, पर जब उससे भी वह होश में आती दिखाई न पड़ी तो उन्होंने उसे फिर उठा लिया और पश्चिम की ओर रवाना हुए।

दोपहर के समय हवा लग के जेन पोर्टर की बेहोशी दूर हुई। उसने तुरत ही आंखें न खोल दीं। वह उन घटनाओं को याद करने की चेष्टा करने लगी जिन्हें उसने अन्तिम बार देखा था। वह वेदी, पास में खड़ी निर्दयी पुजारिन और उसके हाथ का भयानक छुरा जो उसकी छाती को लक्ष्य करके नीचे उतर रहा था! जेन पोर्टर आंखें बन्द किये किये ही कांप उठी! उसने सोचा कि जरूर मैं मर गई हूं, या शायद छुरा मेरी छाती में लग गया है और मरने के पहिले बेहोशी में मैं स्वप्न देख रही हूं।

उसने धीरे से साहस करके आंखें खोलीं। जो देखा उससे उसका

यह खयाल और पक्का हो गया कि हां मेरी मौत हो गई है। उसने देखा कि उसका मरा हुआ प्रेमी उसे बांहों में लिये सुहावने जंगल में से होता आगे बढ़ रहा है। धीरे से वह बोली, "अगर मरने बाद ऐसा ही सुख मिलता है तो ईश्वर करे मैं बराबर मरी ही रहूं।"

टार्जन प्रसन्नता से बोले, "जेन, क्या तुम बोल रही हो। बड़ी देर बाद तुम्हें होश आई है!"

जेन पोर्टर का चेहरा आज कई महीनों बाद सुख और संतोष भरी मुस्कुराहट से खिल उठा। वह बोली, "हां मैं ही हूं, टार्जन!"

टार्जन ने जेन पोर्टर को एक झरने के पास पेड़ का ढासना लगा के जमीन पर बैठा दिया और बोले, "ईश्वर को धन्यवाद है कि उन्होंने मुझे समय पर तुम्हारे पास पहुंचा दिया!"

जेन पोर्टर आश्चर्य से बोली, "समय पर! कैसा समय पर! इसका क्या मतलब?"

टार्जन ने कहा, "ऐसे समय पर पहुंचा दिया कि मैं बलिवेदी पर से तुम्हारी जान बचा सका। क्यों तुम्हें याद नहीं है क्या?"

उसी स्वर में जेन पोर्टर बोली, "जान बचा लिया क्यों कहते हो, मेरे टार्जन, क्या हम दोनों मरे हुये नहीं हैं?"

टार्जन हंस के बोले, "नहीं, बिल्कुल नहीं, हम दोनों पूरी तरह से जीते जागते हैं। क्यों, तुमने मुझे मरा कैसे समझ लिया?"

जेन पोर्टर ने कहा, "इस लिये कि हेजल और मानश्यूर थूरन दोनों ने मुझे विश्वास दिलाया कि तुम जहाज से पानी में, समुद्र

से गिर पड़े और चूंकि वहां पास में कोई जहाज न था और जमीन कोसों दूर थी निश्चय ही मर गये होंगे !"

टार्जन बोले, "कैसे मैं तुम्हें विश्वास दिलाऊं कि मैं जी रहा हूं, मरा नहीं हूं। यह सच है कि नाम्प्यान मानस्यूर रूरन ने मुझे जहाज से ढकेल दिया था, पर मैं उससे मरा नहीं—सब हाल तुम्हें पीछे सुनाऊंगा—मैं जीता बच गया और इस वक्त फिर उसी जंगली आदमी की शक्ल में हूँ जिसमें तुमने मुझे पहिले देखा था।"

जेन पोर्टर उठ खड़ी हुई और टार्जन की तरफ बढ़ के उनकी बांह पर हाथ रखती हुई बोली, "अपने ऐसे अच्छे भाग्य पर मुझे विश्वास नहीं हो रहा है, मेरे टार्जन। 'लेडी ऐलिस' के डूबने के बाद से मैंने बड़े बड़े कष्ट उठाये हैं। उन कष्टों के बाद यह सुख कहीं स्वप्न न हो. मुझे बार बार यही सन्देह हो रहा है। ऐसा न हो कि यह सुख-स्वप्न टूट जाय और मैं फिर उसी भयानक शहर में उसी पुजारिन के छुरे के नीचे जा पड़ूं। मुझे चूम लो, मेरा मुंह चूम लो, मेरे टार्जन, जल्दी करो। नहीं मैं होश में आ जाऊंगी !"

टार्जन को दूसरी बार कहने की जरूरत न थी। उन्होंने जेन-पोर्टर को बांहों में ले लिया और एक दो दफे नहीं, सैकड़ों दफे उसके मुंह को चूमा, यहां तक कि वह हांफने लगी। जब टार्जन ने अपना सिर हटा लिया तो जेन पोर्टर ने उनके गले में अपनी बांहें डाल के फिर उनके होंठ अपने होंठों पर खींच लिये।

टार्जन बोले, "क्यों अब तुम्हें विश्वास हुआ कि मैं जीता जागता हूं और तुम स्वप्न नहीं देख रही हो ?"

जेन पोर्टर बोली, "हां अब मैं समझ रही हूं कि तुम जीते जागते हो और मैं भी होश में हूं। पर अगर हम दोनों मरे हुये भी हों तो कोई हर्ज नहीं। मैं इस हालत में मरे रहने में भी सुखी हूँ, मेरे टार्जन !"

दोनों कुछ देर चुप रहे, दोनों आंखें फाड़ फाड़ कर एक दूसरे की तरफ देख रहे थे। जैसे अपने अच्छे भाग्य पर उन्हें अब तक न विश्वास हो और वे अपने सुख स्वप्न को सच समझने की कोशिश कर रहे हों। भूतकाल को, उसके दुःख, उसकी वेदनाओं, उसकी निराशाओं को वे भूल गये थे, भविष्य से उन्हें कोई मतलब न था, वह उनके हाथ में न था, उनको मतलब था केवल वर्तमान से, जिसे अब कोई उनसे छीन न सकता था।

थोड़ी देर बाद जेन पोर्टर बोली, "प्यारे टार्जन, अब हम लोग कहां जायंगे और क्या करेंगे ?"

टार्जन बोले, "तुम कहां जाना चाहती हो, और अब तुम्हारा क्या करने का इरादा है ?"

जेन पोर्टर बोली, "मैं वहीं जाऊंगी जहां तुम जाओगे। मैं वही करूंगी जो तुम करोगे, मेरे टार्जन !"

क्षण भर टार्जन चुप रहे। जैसे वे मन ही मन कोई गंभीर बात सोच रहे हों। फिर उन्होंने पूछा, "और क्लेटन, उनका क्या होगा। हम लोग तुम्हारे पति को एक दम भूल गये, जेन !"

जेन पोर्टर चिल्ला के बोली, "मेरा विवाह उनसे नहीं हुआ है। न उनसे मेरा अब विवाह का वादा ही रह गया है। जिस रोज इन

भयानक आदमियों ने मुझे पकड़ा उसके एक रोज पहिले मैंने उनसे कह दिया कि मैं तुम्हें प्यार नहीं करती और इस कारण तुमसे विवाह करना व्यर्थ समझती हूं। वे समझ गये और फिर इसके बारे में मुझसे कुछ न बोले। जिस रोज शेर से मेरी जान बची......।" इतना कहते कहते जेन पोर्टर रुक गई और सन्देह की दृष्टि से टार्जन की तरफ देखती हुई बोली, "......टार्जन, मैं समझ गई। तुम्हीं ने शेर से हम लोगों की जान बचाई होगी। ऐसा दूसरा कोई नहीं कर सकता!"

टार्जन ने आंखें नीची कर लीं। जेन पोर्टर उलाहने के रूप में बोली, "तुम से ऐसा कैसे किया गया, टार्जन! क्यों तुमने मुझे देख के भी छोड़ दिया?"

टार्जन दुःख भरे स्वर में बोले, "वह बात न उठाओ जेन! उसे याद करके मुझे लज्जा आती है। पहिले क्रोध से और बाद में पश्चात्ताप से मैंने कितना कष्ट उठाया यह मैं तुम्हें बतला नहीं सकता जेन! मैं दोष देता था तो अपने भाग्य को, और किसी को नहीं! तुम्हारे पास से आके फिर मैं 'एप' बन्दरों की जाति में जा मिला और इरादा कर लिया कि जीते जी फिर किसी मनुष्य की सूरत न देखूंगा।" इतना कह के टार्जन ने पेरिस से आने, वजीरियों से मिलने और फिर 'एप' बन्दरों के पास जाने का हाल पूरा पूरा सुनाया।

जेन पोर्टर ने और कई बातें पूछीं और बाद में डरते डरते वह बात उठाई जो थूरन ने उससे कही थी—पेरिस की एक स्त्री के बारे में! टार्जन ने अपने पेरिस के जीवन का पूरा पूरा हाल जेन पोर्टर

को कह सुनाया। कोई बात छिपाई नहीं। क्योंकि उनका हृदय हमेशा साफ रहा था और उन्हें अपने वहां के किसी काम वास्ते लज्जा न आ रही थी। सब बातें कह के वे चुप हो रहे और इस आशा से जेन पोर्टर का मुंह देखने लगे कि देखें इन बातों पर इसकी क्या सम्मति होती है।

जेन पोर्टर बोली, "मैं पहिले ही समझती थी कि वह झूठ कहता होगा। कैसा भयानक आदमी है!"

टार्जन ने पूछा, "तो उन बातों के कारण तुम मुझ से नाराज तो नहीं न हो?"

जेन पोर्टर के होंठों पर हलकी मुसकुराहट दिखाई दी। वह दिल्लगी के तौर पर बोली, "क्या ओलगा डी० कूड बड़ी खूबसूरत हैं?"

टार्जन जोर से हंस के बोले, "तुमसे आधी भी नहीं, मेरी जेन!" इतना कह के उन्होंने जेन का मुंह चूम लिया।

जेन पोर्टर ने उनके कंधे पर सिर रख के ठंडी सांस ली। टार्जन समझ गये कि उनका कसूर माफ हो गया है।

उस रात टार्जन ने एक बड़े से पेड़ में डालियों के अन्दर जेन पोर्टर के सोने के लिये एक जगह बना दी और स्वयं उसी में नीचे एक खोखले में सो गये।

उन लोगों को किनारे तक पहुंचाने में कई दिन लग गये। जहां जंगल साफ होता था वे दोनों एक दूसरे का हाथ थाम कर जमीन पर चलते थे, जहां जंगल घना और पेड़ आपस में गुथे हुये होते थे

टार्जन जेन पोर्टर को बांहों में उठा लेते थे और ऊपर पेड़ों पर चलते थे। उन दोनों प्रेमियों को इस तरह के सफर में इतना आनन्द आता था कि उनका मन कर रहा था कि बराबर इसी तरह सफर करते रहें।

समुद्र किनारे पहुंचने के एक रोज पहिले टार्जन के नाक में गंध आई—हबशियों की। उन्होंने जेन पोर्टर को चुप रहने का इशारा किया और बोले, "यहां जंगल में दोस्त बहुत कम हैं।"

आधे घंटे बाद पेड़ों में छिप के चलते हुये उनकी निगाह हब-शियों के एक छोटे से दल पर पड़ी जो पश्चिम की ओर जा रहा था। उन पर निगाह पड़ते ही टार्जन के मुंह से प्रसन्नता की एक आवाज निकली। उन्होंने पहिचाना कि ये उनके वेही वजीरी हैं जो उनके साथ ओपर गये थे। साथ में बसूली भी था। टार्जन को पहिचान के वे प्रसन्नता के मारे नाचने कूदने और उछलने लगे। उन्होंने बताया कि वे कई दिनों से जंगलों में टार्जन को खोज रहे हैं।

टार्जन के साथ में गोरी युवती को पा के उनको बड़ा आश्चर्य हुआ और जब उन्हें यह मालूम हुआ कि यह टार्जन की स्त्री होने वाली है तो वे उसकी इज्जत करने और उसे आराम पहुंचाने में कोई बात उठा नहीं रखने लगे। प्रसन्नता से भरे वजीरियों को साथ लिये टार्जन उस झोंपड़े के पास पहुंचे जिसे क्लेटन आदि ने पेड़ों में बनाया था।

वहां किसी आदमी के रहने का कोई चिन्ह न दिखाई दिया, न पुकारने पर किसी ने जवाब ही दिया। टार्जन सीढ़ी के रास्ते ऊपर

चढ़ गये और थोड़ी देर तक भीतर ही रहे। जब बाहर निकले तो उनके हाथ में टीन का एक खाली डब्बा था। वह उन्होंने बसूली के पास फेंक के उसमें पानी लाने को कहा और तब इशारे से जेन पोर्टर को उन्होंने ऊपर बुलाया। दोनों आदमी एक साथ झुक के हड्डी के उस ढांचे की शकल देखने लगे जो किसी समय में एक खान्दानी रईस कहे जाते थे। क्लेटन का चेहरा सूख के पीला पड़ गया था, आंखें धंस गई थीं, गाल गड़हे में घुस गये थे और देखने में वे एकदम मुर्दे मालूम होते थे। जेन पोर्टर की आंखों में आंसू भर आये।

टार्ज़न बोले, "अभी जान है। इनको बचाने का पूरा उद्योग किया जायगा। पर मुझे आशा कम है। हम लोग बहुत देर से आये!"

बसूली पानी लाया तो टार्ज़न ने फूले और फटे हुये होठों के भीतर दांत खोल के कुछ बूंदें टपकाईं और बदन भी कई जगह पानी से तर किया। सिर पर पानी देते ही क्लेटन ने आंखें खोल दीं। जेन पोर्टर को पास में अपने ऊपर झुके देख उनके होठों पर हलकी मुसकुराहट आई। टार्जन पर जब निगाह पड़ी तो आंखों में आश्चर्य दिखाई दिया।

टार्जन बोले, "घबड़ाओ मत, दोस्त, हम लोग वक्त पर पहुंच गये। तुम्हें अच्छा होते अब देर न लगेगी।"

सिर हिला के बड़ी धीमी आवाज में क्लेटन बोले, "नहीं, अब मैं अच्छा न होऊंगा। अच्छा होने का समय निकल गया। खैर मेरा मरना ही ठीक है!"

युवती ने पूछा, "मानश्यूर थूरन कहां हैं?"

क्लेटन बोले, "मेरा बुखार जब ज्यादा तकलीफ देने लगा तो वह पिशाच मुझे अकेला छोड़ के भागने को तैयार हुआ। जब मैंने पानी मांगा तो मुझे देने के बदले वह सारा पानी पी गया और जो बचा वह उसने जमीन पर फेंक दिया। वह जानवर है, जानवर!" यह कहते कहते क्लेटन को कुछ जोश चढ़ आया और एक घुटने पर उठ के वे चिल्ला के बोले, "नहीं, मैं मरूंगा नहीं। बिना उस नर-पिशाच से बदला लिये मैं इस दुनिया को छोड़ नहीं सकता!" इतना कहके क्लेटन थकावट के मारे बिछौने पर गिर गये! उनसे आगे कुछ कहा न गया।

टार्जन ने क्लेटन के कंधे पर हाथ रख के दिलासा देने के तौर से कहा, "थूरन के बारे में फिक्र न करो। वह मेरे जिम्मे है और मैं उससे समझ लूंगा। मुझसे भाग के वह जा नहीं सकता!"

बहुत देर तक क्लेटन सुस्त और बेहोश से पड़े रहे। टार्जन बार बार उनकी छाती में कान लगा के हृदय की मंद गति को सुनने का उद्योग करते थे। संध्या के समय उनकी तंद्रा फिर टूटी। उन्होंने इशारे से जेन पोर्टर को पास बुलाया। युवती ने पास आके मुंह के पास कान किया तो धीमी आवाज में वे बोले, "जेन, मैंने तुम्हारे साथ बड़ी बुराई की है और साथ ही में तुम्हारे—टार्जन के साथ भी! मैं तुम्हें कितना प्यार करता था, करता हूं, कह नहीं सकता—लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि तुम्हें नुकसान पहुंचा के मैंने उचित काम किया। इसके लिये तुमसे क्षमा भी मैं मांगना नहीं चाहता।

मैं आज केवल वही किया चाहता हूं जो वर्ष भर पहिले करना मुनासिब था!"

क्लेटन ने सिर के नीचे रक्खे कोट के जेब में टटोल के पीले कागज का एक टुकड़ा निकाला और उसे जेन पोर्टर के हाथ में पकड़ा दिया। इसके बाद उनका हाथ उनकी छाती पर गिर पड़ा, सिर लटक गया, आंखें उलट गईं और एक दफे कांप कर सारा बदन ढीला हो गया। टार्जन ने उनके मुंह पर एक कपड़ा ढांक दिया।

क्षण भर तक घुटने टेके दोनों क्लेटन के शरीर के पास बैठे रहे। जेन पोर्टर मन ही मन कुछ प्रार्थना कर रही थी और टार्जन आंखों में आंसू भरे जमीन की तरफ ताक रहे थे। उनको भी क्लेटन के इस तरह मरने से दुःख हुआ था।

थोड़ी देर बाद अपने को सम्हाल के जेन पोर्टर ने उस मुड़े हुये पीले कागज को खोला जो क्लेटन ने उसे दिया था और उसमें लिखी इबारत पर निगाह डाली। साथ ही उसकी आंखों में आश्चर्य का चिन्ह दिखाई दिया। उसने दो तीन दफे पढ़ा, तब उसके समझ में उसका मतलब आया। यह लिखा था—

"उंगलियों की छाप से मालूम हो गया कि तुम ग्रेस्टोक हो। बधाई!"

डी० आरनट

टार्जन को कागज पकड़ा के जेन पोर्टर बोली, "ये इस बात को बहुत दिनों से जानते थे, पर इन्होंने तुमसे कहा नहीं!"

टार्जन ने जवाब दिया, "यह कागज सब से पहिले मुझी को

गिला था, उस समय जब कि रेल स्टेशन पर मैं वेटिंगरूम में बैठा था और तुम जा रही थीं। शायद उसी समय मेरे हाथ से यह गिर गया और क्लेटन ने उठा लिया। मुझे नहीं मालूम था कि यह क्लेटन के हाथ में पड़ गया होगा!"

जेन पोर्टर बोली, "तिस पर भी पूछने पर तुमने यही जवाब दिया कि मेरी मां 'एप' बन्दरी थी, और पिता कौन थे मैं नहीं जानता!"

टार्जन मुलायम स्वर में बोले, "तुम समझती नहीं हो जेन। खिताब और जायदाद तुम्हारे बिना मेरे किसी काम के न थे। फिर अगर मैं उन्हें क्लेटन से छीन लेता तो इसका मतलब यह होता कि साथ ही साथ उन्हें तुमसे भी ले लेता। यह मेरे से हो न सकता था!"

जेन पोर्टर ने टार्जन का हाथ अपने दोनों हाथों में लेते हुये कहा, "ऐसे प्रेम का भी मैंने निरादर किया!"

छब्बीसवां बयान

दूसरे दिन प्रातःकाल टार्ज़न और जेन पोर्टर उस कोठरी की ओर रवाना हुये जो समुद्र के किनारे टार्ज़न के पिता की बनाई हुई थी और जिसमें वे लड़कपन में रहे थे। चार वजीरी क्लेटन का मृत शरीर उठाये उनके साथ चले। टार्ज़न की राय हुई थी कि क्लेटन को वहीं गाड़ा जाय जहां उनके पिता लार्ड ग्रेस्टोक का शरीर गाड़ा गया था और जेन पोर्टर ने प्रसन्नता पूर्वक इस बात को स्वीकार किया था। यह प्रस्ताव करने के लिये मन ही मन उसने टार्ज़न की

सहृदयता और सज्जनता की तारीफ की ! उसे कुछ आश्चर्य हुआ कि जंगल में पैदा होने और वहीं जानवरों के बीच में पाले पोसे जाने पर भी इनका दिल इतना मुलायम और सुन्दर कैसे हुआ। यह मुलायमियत और सुन्दरता तो केवल सभ्य संसार में पैदा हुये और पाले गये मनुष्य में ही आती है।

पांच मील में से करीब तीन मील रास्ता उन लोगों ने तय किया होगा कि आगे आगे चलने वाले वजीरी यकायक रुक गये और उन्होंने उंगली से सामने की तरफ इशारा किया। उधर से समुद्र के किनारे किनारे एक आदमी चला आ रहा था जिसके सिर पर रेशमी हैट थी, निगाहें जमीन की तरफ थीं और उसके हाथ उसके कोट के जेब में पड़े थे। देखने से वह गंभीर चिन्ता में डूबा जान पड़ता था।

उस पर निगाह पड़ते ही ताज्जुब और प्रसन्नता की एक चीख मार कर जेन पोर्टर आगे झपटी। आवाज सुन कर उस बूढ़े आदमी ने भी सिर उठाया और जब उसकी निगाह जेन पोर्टर पर पड़ी तो उसने भी खुश हो के उसे बाहों में दबा लिया। बेचारे प्रोफेसर पोर्टर के आंखों से आंसू की बूंदें गिरने लगीं। उन्हें आशा नहीं थी कि उनकी लड़की फिर उनसे मिलेगी। थोड़ी देर बाद जब उन्होंने टार्जन को पहिचाना तो फिर उनके ताज्जुब का ठिकाना न रहा। उन्हें लोगों ने पूरी तरह विश्वास दिला दिया था कि वे मर गये। अब उन्हें जीते जागते सामने खड़े देख अपनी आंखों का प्रोफेसर पोर्टर को विश्वास नहीं हो रहा था। क्लेटन के मरने का हाल सुन उन्हें दुःख

हुआ। वे बोले, "मेरी समझ में नहीं आ रहा है। मानस्यूर थूरन ने तो हम लोगों से कहा कि उन्हें मरे बहुत दिन बीत गये !"

टार्जन ने पूछा, "क्या थूरन आपके साथ है ?"

प्रोफेसर बोले, "हां, अभी हाल ही में तो वे हम से आके मिले। और वे ही हम लोगों को आपकी कोठरी तक ले गये। हम लोग आपकी कोठरी से कुछ ही दूर उत्तर की ओर टिके हुये थे। मानस्यूर थूरन आप दोनों को देख के प्रसन्न होंगे।"

टार्जन बोले, "जरूर और साथ ही उन्हें आश्चर्य भी कम न होगा।"

थोड़ी देर बाद ये लोग उस छोटे से मैदान में पहुंचे जिसमें टार्जन की कोठरी थी। बहुत से आदमी इधर उधर घूम रहे थे। पर सब से पहिले जिस आदमी से टार्जन की मुलाकात हुई वे डी. आरनट थे।

टार्जन चिल्ला के बोले, "ओह पाल, यह तुम्हीं हो कि मेरी आंखों को भ्रम हो रहा है। तुम यहां कहां ?"

डी. आरनट से बातें करने पर पता लगा कि उनका जहाज किनारे किनारे गश्त लगाता हुआ दक्खिण की ओर जा रहा था। जब इस जंगल के पास पहुंचा तो डी. आरनट और उनके साथी अफसरों की राय हुई कि यहां एक दिन वास्ते उतर के उस जंगल और उस कोठरी को देख लेना चाहिये जिसमें वे पहिले आये थे और जहां विचित्र घटनाओं में उन्हें भाग लेना पड़ा था। उतरने पर लार्ड टेनिंगटन और उनके साथियों से उन लोगों की मुलाकात हुई और

बाद में निश्चय हुआ कि दो रोज यहां ठहर के सब लोग जहाज पर चले चलेंगे और फिर सभ्य संसार में पहुंच जायंगे।

हेज़ेल स्ट्रांग, उसकी मां, एसमेरेल्डा और मि० सैमुयेल टी० फिलैंडर भी जेन पोर्टर को देख के बड़े प्रसन्न हुये और देर तक उसका हाल चाल पूछते रहे। सब की राय थी कि अगर टार्जन मदद न करते तो जेन पोर्टर का जीते जी आफत से बच निकलना मुश्किल था। उन्होंने टार्जन की इतनी तारीफ की कि टार्जन को आखिर उन लोगों के सामने से हट जाना पड़ा।

सभी लोगों को वज़ीरियों को देख के आश्चर्य हुआ और प्रायः सभी ने तोहफे के तौर पर कुछ न कुछ उन्हें दिया। बेचारों को जब पता लगा कि उनके राजा अब उनका साथ छोड़ के चले जायंगे तो सभी अफसोस करने लगे और उदास हो गये।

अब तक लार्ड टेनिंगटन और मानश्यूर थूरन से इन लोगों की मुलाकात न हुई थी। वे दोनों सबेरे से ही शिकार की खोज में गये थे और अब तक न लौटे थे।

जेन पोर्टर टार्जन से बोली, "यह आदमी जिसका नाम तुम रोकफ बता रहे हो—तुम्हें देख के कितना ताज्जुब में आवेगा?"

टार्जन गंभीरता से बोले, "उसका आश्चर्य ज्यादा देर रहने न पावेगा।" उनके रूखे स्वर को सुनके जेन पोर्टर ने सिर उठा के उनके मुंह की तरफ देखा। और वहां जो चिन्ह उसने पाये उनसे वह घबड़ा उठी। उसे सन्देह हुआ कि कहीं ये अपने मन से कोई ऐसा काम न कर बैठें जिससे पीछे अफसोस में पड़ना पड़े। वह बोली

"मेरे टार्जन! जंगल में न्याय करने के लिये न तो कोई न्यायालय होता है न कोई जज! वहां फैसला होता है तो केवल ताकत से! अगर तुम सभ्य मनुष्यों के पास न पहुंच गये होते, सभ्य संसार में न जाने वाले होते तो तुम जो भी चाहे इसको सजा दे सकते थे। अब जब तुम इसका फैसला दूसरे तरीके से कर सकते हो, इसको मुनासिब दंड दिला सकते हो, तो इस समय उसकी जान लेना एक तरह की हत्या करना कहलायेगा। कानून अगर तुम्हें गिरफ्तार करना चाहेगा तो उसकी बात तुम्हारे दोस्तों को भी माननी होगी। अगर तुम गिरफ्तार होने से इनकार करोगे, बात बढ़ेगी तो हम सभों को दुःख होगा! तुम्हारे कारण हम सभों को तरद्दुद और चिन्ता में पड़ना पड़ेगा। मैं फिर तुम्हें अपने से अलग नहीं कर सकती, मेरे टार्जन! वह पाजी इस लायक नहीं है कि उसके कारण हम अपने सुखों का बलिदान कर दें। मुझसे वादा करो, कि वह आवेगा तो तुम उसके साथ कुछ न करोगे, केवल कैप्टेन डफ्रेन के सुपुर्द उसको कर दोगे!"

टार्जन ने देखा कि जेन पोर्टर का कहना उचित है। उन्होंने उसके कहे मुताबिक वादा कर दिया। आधे घन्टे बाद लार्ड टेनिंगटन और रोकफ जंगल से बाहर निकले। पहिले टेनिंगटन की ही निगाह उन वजीरियों पर पड़ी जो जहाज के मल्लाहों से बातें कर रहे थे, फिर उन्होंने एक ऊंचे डील डौल के कद्दावर आदमी को लेफ्टेनेंट डी. आरनट और कप्तान डफ्रेन से बातें करते देखा। वे समझ गये कि कुछ नये आदमी उनके डेरे पर आये हैं। उन्होंने

रोकफ़ से कहा, "वह कौन है पहिचानते हो ?" रोकफ़ ने घूम के उधर देखा जिधर लार्ड टेनिंगटन ने इशारा किया था। टार्ज़न पर निगाह पड़ते ही और उन्हें अपनी तरफ देखते देख के ही उसका पैर लड़-खड़ाया और चेहरा सफेद हो गया।

उसके मुंह से हल्की चीख की आवाज निकली। इसके पहिले कि लार्ड टेनिंगटन समझ सकें कि वह क्या करना चाहता है उसने अपनी बन्दूक कन्धे पर रक्खी और सीधे टार्ज़न पर निशाना साध के घोड़ा दबा दिया। टेनिंगटन बिल्कुल पास ही थे, बन्दूक का घोड़ा [illegible] उसके पल भर पहिले उन्होंने हाथ का झटका उसकी [illegible] पर दिया और वह गोली जो टार्ज़न के कलेजे को लक्ष्य करके छोड़ी गई थी सनसनाती हुई उनके सिर के ऊपर से निकल गई।

इसके पहिले कि रोकफ़ फिर से गोली चला सके टार्ज़न उसके पास पर पहुँच गये और झटका मार के उन्होंने बन्दूक उसके हाथ से ले ली। कैप्टन डूरैन्ड, लेफ्टेनेन्ट डी. आरनट और जहाज के दस बारह मल्लाह गोली चलने की आवाज सुन के ही दौड़ पड़े थे। टार्ज़न ने रोकफ़ को चुपचाप उनके सुपुर्द कर दिया। उन्होंने [illegible] के कप्तान को पहिले ही सब हाल सुना दिया था। उसके हुक्म से हथकड़ी बेड़ी पहिना के रोकफ़ जहाज पर पहुँचा दिया गया।

कैदी के ले जाये जाने के पहिले अफसर से आज्ञा लेकर टार्ज़न ने उसकी तलाशी ली और उन्हें उसके कोट के भीतरी जेब में वे कागज मिल गये जो रोकफ़ ने उनसे चुराये थे।